# कठिन नहीं है शुद्ध हिन्दी

(चन्दन मिश्रा)

# सारिणी

## अध्याय -1

### लिपि

मनुष्य अन्य जीवों से दो ही बातों में भिन्न है। पहला, उसके पास श्रम करने के साथ नये औजार बना सकने की क्षमता है और दूसरा, उसके पास भाषा है। दुनिया की हज़ारों भाषाओं में एक है - हिन्दी। हिन्दी की लिपि नागरी है, जिसे देवनागरी भी कहा जाता है। नागरी लिपि हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत, नेपाली, मराठी, भोजपुरी, मैथिली, मगही सहित कई भाषाओं के लिए इस्तेमाल की जाती है। भोजपुरी की पुरानी लिपि कैथी थी, जो आज की गुजराती लिपि से काफी हद तक मेल खाती है। लिपि एक खास अक्षर समूह से जानी जाती है, जिसके अक्षरों का प्रयोग भाषा के लिखित रूप के लिए किया जाता है। हिन्दी आर्य भाषाओं में सबसे ज़्यादा बोली और लिखी जाने वाली भाषा है। आर्य भाषा का अर्थ इससे ज़्यादा लगाना उचित नहीं है कि यह उन भाषाओं में शामिल है, जो संस्कृत से निकलकर स्वतंत्र रूप में स्थापित हो गईं। संस्कृत को सभी भाषाओं की माता मानना अज्ञानता और ज़िद्द के कारण है। वैज्ञानिक प्रमाणों की बात करने पर यह धारणा धराशायी हो जाती है कि संस्कृत से दुनिया की सारी भाषाएँ निकली हैं। भारत के दक्षिणी राज्यों की तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ भाषाएँ आर्य भाषाओं से उत्पन्न नहीं हैं। तमिल काफी पुरानी, समृद्ध और संस्कृत से स्वतंत्र भाषा है।

यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि चीन, वियतनाम, ताइवान, जापान, कोरिया आदि देश चित्रलिपियों वाले देश हैं। भाषा कैसे उत्पन्न हुई, क्या ईश्वर ने भाषाओं का निर्माण किया जैसे प्रश्न लंबी चर्चा वाले हैं। फिलहाल हम अपने विषय पर वापस आकर बात करते हैं।

यह मानना कि ए बी सी डी अंग्रेज़ी वर्णमाला के अक्षर हैं, उतना उचित नहीं है। ये रोमन वर्णमाला के अक्षर हैं। उसी तरह हिन्दी की वर्णमाला भी मूल रूप से संस्कृत से निकलती है। लेकिन हिन्दी में कई अक्षर अरबी और अंग्रेज़ी के संपर्क में आने के बाद जुड़ गए हैं। अक्षर भाषा या कहें भाषा के लिखित रूप की कोशिकाएँ हैं। अक्षर वे चित्र हैं, जो किसी भाषा में एक स्थान (लिखते या छापते समय) लेते हैं। हिन्दी में स्वर और व्यंजन, दो प्रकार हैं जो पूरी वर्णमाला को दो भागों में बाँटते हैं। स्वर वे अक्षर हैं, जिनके उच्चारण के लिए मुँह के अंदर जीभ का किसी अंग से स्पर्श नहीं होता। हम कह सकते हैं कि स्वर वे अक्षर हैं, जिनका उच्चारण गूंगा व्यक्ति भी कर सकता है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अँ, अः और ऑ वर्तमान हिन्दी के आवश्यक स्वर हैं। अं और अः को व्यंजन मानने वाले भी कई वैयाकरण हैं। ऋ, ऋ का दीर्घ रूप और अं भी स्वर माने जाते हैं, लेकिन वे वास्तव में बिना जीभ की सहायता के नहीं बोले जाते। ऑ अंग्रेज़ी से लिया गया स्वर है।

व्यंजन वे वर्ण या अक्षर हैं, जिनके उच्चारण में स्वर की सहायता ली जाती है। व्यंजन अक्षरों के पूर्ण उच्चारण में अ की सहायता ली जाती है, लेकिन आधे उच्चारण में स्वर की सहायता नहीं ली जाती। क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श स ष और ह के साथ-साथ क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ड़ ढ़

भी व्यंजन माने जा सकते हैं आज की हिन्दी में। ड और ड़, ढ और ढ़, क और क़, ख और ख़, ग और ग़, ज और ज़ तथा फ और फ़ अलग-अलग हैं, इन्हें एक न समझें।

हिन्दी में कुछ चिन्हों का प्रयोग भी होता है, उनकी जानकारी भी आवश्यक है, वे हैं-

, . ! ?। % ~ [ ] < > { } @ # * - + = ( ) _ ₹ " ' : ; / € $ © × ÷

इसके बाद 1 2 3 4 5 6 7 8 9 और 0 हिन्दू अरबी अंक तथा १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ और ० देवनागरी लिपि के अंक भी हैं। बहुत सारे संयुक्ताक्षर जैसे ज्ञ क्ष त्र श्र क्र स्र आदि भी हैं। गणित या विज्ञान के लिए बहुत सारे संकेतों का प्रयोग भी हिन्दी में होता है। यूनानी भाषा के अक्षर अल्फा, बीटा, गामा, सिग्मा, डेल्टा आदि कई अक्षर भी आवश्यक हैं। इसी तरह रोमन वर्णमाला के ए बी सी डी के दोनों रूपों

को भी सीखना हिन्दी के लिए आवश्यक मान सकते हैं क्योंकि यह लिपि दुनिया की कई भाषाओं के लिए इस्तेमाल होती है।

ये सब मिलकर वर्तमान समय में हिन्दी के संकेत समूह को समग्रता में दिखाते हैं। एक विशेष बात यह है कि **'ऐ' कोई अक्षर नहीं है**।

## अध्याय– 2

### उच्चारण

लिपि और लिखे को उसी रूप में पढ़ने की परंपरा के साथ शब्दों के उच्चारण पर आज हम चर्चा करेंगे। हिन्दी में जो लिखते हैं, वही पढ़ते हैं। अंग्रेज़ी की तरह कोई अक्षर अनुच्चरित नहीं रह जाता। 'नाइफ़', 'साइकोलॉजी', 'डेट', 'काम' जैसे बहुत सारे ऐसे उदाहरण हैं। दुनिया की समृद्ध भाषा फ़्रांसीसी की बात करें, तो इसमें Mot को मो, Faux को फो, Parlent और Parles दोनों को पार्ल, Maneger को माँजे, तो Gourmand को गुरमाँ पढ़ते हैं। अंग्रेज़ी से हम परिचित ही हैं। एक उदाहरण यहाँ हम दे रहे हैं। 'ई' को अंग्रेज़ी में कम से कम नौ प्रकार से व्यक्त करते हैं। e, ee, ea, ei, ey, eo, i, ie और uay, ये सिर्फ़ एक ईकार के लिए हैं, जिनके उदाहरण क्रमशः be, bee, sea, receive, key, people, machine, believe और kuay हैं। भारतीय भाषाओं की बात करें, तो बाँग्ला में 'भव्य' लिखते हैं, 'भोव्ब' पढ़ते-बोलते हैं; 'लक्ष्मी' लिखते हैं, 'लोक्खी' बोलते हैं। मैथिली की ऑनलाइन पत्रिका विदेह के संपादक डॉ गजेन्द्र ठाकुर ने कहीं लिखा था कि हिन्दी से भी वैज्ञानिक मैथिली का उच्चारण है। उन्होंने 'साठि' शब्द का उदाहरण दिया है, जिसे मैथिली में 'साइठ' पढ़ते हैं। उनका कहना है कि इकार की मात्रा व्यंजन के पहले लगती है और मैथिली में उसका उच्चारण भी पहले होता है। लेकिन 'सिनेमा' को 'इसनेमा' नहीं पढ़ा जाता मैथिली में। इस प्रकार उनका दावा हमेशा सही नहीं रह पाता और सर्वमान्य सामान्य नियमों को जान या समझ पाना मुश्किल हो जाता है। तमिल भाषा में क ख ग घ ङ यानी कवर्ग में दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण हैं ही नहीं। वहाँ सभी वर्गों के दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण लिपि में हैं ही नहीं। गाँधी के लिए काँधी लिखना पड़ेगा उसमें। शुद्ध अंग्रेज़ी के अनुसार ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ड़, ढ़, त, ध, भ, ष, ण, ङ, ञ , क़, ख़, ग़ जैसे अक्षर बोले ही नहीं जा सकते। प्रमाण के लिए आप एबीसीडी के 26 वर्णों का उच्चारण करके देख सकते हैं। वहाँ भारत के लिए बारट, तुम के लिए टुम, झगड़े के लिए जगडे कहना पड़ता है। हमलोग यहाँ भारत में अपनी वर्णमाला के कारण इन बाकी अक्षरों का उच्चारण भी कर लेते हैं। हम लोग अधिकतर एबीसीडी में क्यू को किउ, वी को भी और डब्ल्यू को डब्लू कहते हैं, जो ग़लत माना जाएगा। रूसी में ह नहीं है, वहाँ ह के स्थान पर ख लिखते हैं, जैसे नेहरू को नेखरू।

भाषाशास्त्र में जब भी लिपि और उच्चारण की परीक्षा होगी, ऐसे परिणाम मिलेंगे। ये हमारे लिए श्रेष्ठताबोध के कारण नहीं बनने चाहिए। भाषा, लिपि और वर्ण भौगोलिक कारणों से भी प्रभावित होते हैं। हमें इनको हीनताबोध या श्रेष्ठताबोध से नहीं जोड़ना चाहिए। छपाई के लिहाज से अंग्रेज़ी या रोमन लिपि की भाषाएँ हिन्दी, संस्कृत आदि से बेहतर हैं। रोमन में सारे अक्षर प्रायः अलग अलग होते हैं, जबकि हिन्दी में साथ और एक दूसरे से लगे हुए। नागरी में हर शब्द या अक्षर के ऊपर एक रेखा खींची जाती है, जिसे शिरोरेखा कहते हैं। इसकी परंपरा अंग्रेज़ी में नहीं है। हिन्दी में मात्राएँ भी कई बार व्यंजन से पहले लग जाती हैं। व्यक्ति में क्त के पहले इकार की मात्रा लिखी या छापी जाती है।

लिपियों या भाषाओं की तुलना का उद्देश्य बस नागरी और हिन्दी की विशेषता दिखाना है, न कि किसी श्रेष्ठताबोध का प्रदर्शन करना जो अक्सर संस्कृत प्रेमियों में घर बना लेता है।

## अध्याय -3

### वर्ण का उच्चारण

किस वर्ण का उच्चारण कैसे करें, यह एक महत्त्वपूर्ण सवाल है। अक्सर हम देखते हैं कि व्यक्ति अपने क्षेत्रीय उच्चारण से इस कदर घिरा या बँधा रहता है कि उच्चारण का कोई स्पष्ट मानक रूप सामने नहीं आ पाता। कुछ वर्ण तो ऐसे हैं, जिनका उच्चारण अब समाप्ति की ओर है क्योंकि न तो कोई सिखाने वाला मिलता है, न कोई इतना सीखने के लिए किसी योग्य प्रशिक्षक की तलाश करता है। उच्चारण से यह पता लगता है कि व्यक्ति भाषा को लेकर कितना सजग है। बिहार में इसे लेकर कोई गंभीरता हमें नहीं मिलती। हिन्दी के शिक्षक भी लापरवाही से पेश आते हैं। हम यहाँ व्यंजन, स्वर, अंग्रेज़ी और अरबी से लिए गए अक्षरों के साथ मात्राओं के (जब व्यंजन में लगती है तब) उच्चारण पर चर्चा करेंगे।

नागरी के वर्णों के उच्चारण के लिए संस्कृत व्याकरण का उच्चारण प्रकरण हमारी सहायता करता है। अगर उन छोटे सूत्रों को याद कर लें, तो यह आसान हो जाता है। कंठ से कवर्ग, क़, ख़, ग़, ह, विसर्ग, अ, आ और अंग्रेज़ी के ऑ का उच्चारण होता है। व्यंजनों के स्वरों से स्वतंत्र होने की पुष्टि के लिए एक छोटा सा खेल खेल सकते हैं। आप अगर जीभ को हाथ की अंगुलियों से पकड़ लें, तो आप पाएंगे कि आप बहुत सारे वर्णों के उच्चारण में असमर्थ हो जाते हैं। ये वर्ण ही व्यंजन हैं। तालु से चवर्ग, ज़, इ, ई, य और श; मूर्द्धा से टवर्ग, र, ष और ऋ; ओठ से पवर्ग, फ़, उ और ऊ; दाँत से तवर्ग, ल, स और लृ; नाक से ङ, ञ, ण, म और न; ए और ऐ कंठ तथा तालु से; व दाँत तथा ओठ से और ओ-औ कंठ और ओठ से उच्चरित होते हैं। यह कठिन लग सकता है लेकिन मुश्किल स, ष, श, न, ण, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि के उच्चारण में ही आती है। शेष अक्षरों का उच्चारण विशेष प्रशिक्षण या सतर्कता के बिना कोई भी कर सकता है। ऋ और लृ की परंपरा संस्कृत से आती है, जो हमारी समझ में बहुत ज़रूरी नहीं रह गई है। लृ तो अनुपयोगी ही है। किसी ज़माने में संस्कृतज्ञ इसे ज़रूरी मानते रहे हों, लेकिन आज यह अप्रासंगिक है। स का उच्चारण सहज है और ग़लत उच्चारण करने वाले भी इसका सही उच्चारण करते हैं। अतिरिक्त सतर्कता ष और श में आवश्यक है। मूर्द्धन्य अक्षर यानी ट ठ ड ढ जहाँ से निकलते हैं, वही मूर्धा है और ष के लिए आपको वहीं से प्रयास करना होता है। श के उच्चारण के लिए च छ ज झ के उच्चारण स्थान यानी तालु की सहायता लेनी पड़ती है। फिर भी ष और श का उच्चारण श के रूप में ही प्रचलित है। ण के लिए भी ट ठ ड ढ के उच्चारण स्थान की सहायता लेनी होती है।

तालु वाले वर्ण तालव्य कहे जाते हैं। तालव्य को तालब, तालाबे आदि कहा जाना ग़लत है। इसी प्रकार मूर्धा वाले मूरधन, मूरधने नहीं मूर्धन्य और दाँत वाले दन्ते नहीं दन्त्य वर्ण कहे जाते हैं। ड़ के उच्चारण में जीभ ऊपर की ओर मुड़ जाती है। जीभ का ऊपर की ओर मोड़कर ड का उच्चारण ड़ का सही उच्चारण है। वांटेड फ़िल्म में सलमान खान ने यह करके बताया है। ढ़ का उच्चारण र्ह है। र्+ह ही ढ़ है। ढक्कन को ढ़क्कन लिखना ग़लत है। बिन्दी वाला ढ यानी ढ़ ढ से अलग वर्ण है। वर्णमाला सिखाते समय ड़ और ढ़ टवर्ग में नहीं मिलाने चाहिए। क, ख, ग, घ, ङ यानी कवर्ग के अंतिम अक्षर 'ङ' को लोग 'ड़' लिख रहे हैं, टवर्ग के 'ड' को 'ड़' लिख रहे हैं और टवर्ग के 'ढ' को 'ढ़' लिख रहे हैं। ऐसे लिखना तनिक भी उचित नहीं है। यह ध्यान रखना पड़ेगा कि कवर्ग के 'ङ' को 'ड' के दायीं ओर बगल में बिन्दु(थोड़े बड़े आकार का हो, तो ठीक रहेगा) लगाकर लिखना चाहिए, जबकि 'ड़' को, जिसे बड़ी 'र' भी कहते हैं 'ड' के ठीक नीचे बिन्दु लगाकर लिखना चाहिए। इसे विशेष रूप से बच्चों को वर्णमाला सिखाने वालों को ध्यान रखना चाहिए। ढ़ और ड़ पर आगे विस्तार से चर्चा करेंगे। लोकभाषाओं में ष को ख भी कहा जाता है। संतोष को सन्तोख कहना गाँवों में आम बात है। वर्षा से बरखा शायद इसी कारण बना है। भोजपुरी समाज में किसी के मरने के साल भर होने को बरसी न कहकर बरखी कहते हैं। भोजपुरी की पहली वेबसाइट अँजोरिया के संचालक सहित कई विद्वान भोजपुरी में स के तीनों रूपों के पक्षधर हैं। जबकि देश, सात

और धनुष को भोजपुरी में क्रमशः देस, सात और धनुस कहते हैं। अवधी में तुलसी भी संकर का प्रयोग शंकर के लिए करते हैं। हमारी समझ से लोकभाषाओं में एकमात्र 'स' की परंपरा को मानना अनुचित नहीं है। बिहार के सारण प्रमंडल में ही ण के न और ण तथा ड़ के ड़ और र दोनों उच्चारण मिलते हैं। कुछ लोगों द्वारा ण को ड़ कहा और लिखा जा रहा है, जो ग़लत माना जाएगा। अक्सर टिप्पणी को टिप्पड़ी लिखते देखा है इंटरनेट की दुनिया में।

## अध्याय- 4

### संयुक्ताक्षर

पिछले भाग में हम उच्चारण पर चर्चा कर रहे थे। पहले हिन्दी के संयुक्ताक्षरों पर विचार करते हैं। फिर उर्दू, जो स्वतंत्र रूप में कोई भाषा ही नहीं है, के अक्षरों पर भी आएंगे।

क्ष, त्र, ज्ञ, स्र और श्र पर विचार करते हैं।

क्ष = क् + ष, त्र = त् + र, ज्ञ = ज् + ञ, स्र = स् + र, श्र = श् + र

क्ष का उच्चारण अक्छ करना ग़लत है। इसके उच्चारण में पहले क्, फिर ष आता है। जैसे क्षेत्र को छेत्र न कहकर क्-षेत्र कहेंगे। क्ष का प्रचलित उच्चारण क्छ है। त्र में कोई समस्या नहीं है। ज्ञ का उच्चारण ग्य, ग्यँ, द्न, द्यँ, ज्यँ, ज्न आदि बोलकर किया जाता है। महाराष्ट्र में विद्गान या विद्याँन कहा जाता है विज्ञान को। आर्यसमाजी ज्यँ कहते हैं, लेकिन सामान्य उच्चारण ग्यँ है। इसका शुद्ध उच्चारण समय के साथ छूटता चला गया। सामान्यतया इसका उच्चारण ग्य ही हो रहा है। चाहें तो हम इसका उच्चारण ज्यँ जैसा कर सकते हैं, जो ज् और ञ के सम्मिलित रूप के करीब है। मिस्र देश का नाम है, जिसमें स के साथ र है, जबकि मिश्र जातिसूचक शब्द है वहाँ श और र हैं। अंग्रेज़ी में क्ष के लिए ksh, त्र के tr लिए और ज्ञ के लिए gy, jn, jyn आदि का प्रयोग हम सब करते हैं। ज्ञ के jn का प्रयोग ठीक रहेगा। क्ष के लिए x भी लिखा जाता है।

अब हम ऋ और र पर आते हैं। ऋ को किसी व्यंजन में लगाने पर व्यंजन के नीचे रोमन अक्षर सी (c) जैसा दिखता है। इसका उच्चारण र के रूप में मध्यप्रदेश और राजस्थान आदि में हो रहा है। ग्रह और गृह दोनों को ग्रह पढ़ना नागरी और हिन्दी की वैज्ञानिकता के विरुद्ध है। गृह को ग्रिह जैसा पढा जाता है और यह ठीक भी है क्योंकि ऋ का उच्चारण भी खत्म सा हो चला है। संस्कृति और दृष्टि को संस्क्रति और द्रष्टि न पढ या लिख कर संस्कृति और दृष्टि लिखा जाए और संस्क्रिति जैसा पढा जाय। गृह घर है और ग्रह खगोलीय पिंड; इस अंतर को बना और बचा कर रखना ठीक होगा। ऋकार को महाराष्ट्र और उड़ीसा में रु भी पढने की परंपरा है; जैसे - कृति को क्रुति। हरियाणा के एक लेखक की किताब में हमने ऋकार का पूरा लोप देखा है। पूरी किताब में कहीं ऋकार नहीं लगा है, जैसे कृति को कति, सृष्टि को सष्टि। इसे भी उचित नहीं मान सकते। अंग्रेज़ी में तो प्रायः संस्कृत को Sanskrut लिखते देखा जा सकता है। ऋ और रि में उच्चारण की दृष्टि से कोई भेद नहीं है। हम रि या ri की ही अनुशंसा करेंगे। यह ज़रूरी बात है कि ध्वनियों में अनेक परिवर्तन हो गए हैं, फिर भी लिपि में परंपरा का पालन किया जा रहा है।

स्कूल, स्त्री, स्थान, श्लोक, स्मृति, स्थापना, स्कंद, स्पष्ट, स्मार्ट, स्काई और स्टूडेंट को क्रमशः इस्कूल, इस्त्री, अस्थान, अश्लोक, इस्मृति, अस्थापना, अस्कंद, अस्पष्ट, एस्मार्ट, एस्काई और एस्टुडेंट पढने का प्रचलन बिहार में तो खूब है। ऐसे शब्दों का ग़लत उच्चारण करने वाले को श्याम, स्वामी, स्वाति, क्या, ख्वाब, त्याग आदि बोलकर देखना चाहिए कि वे सीधे आधे अक्षर का उच्चारण तो करते ही हैं। क्या को अक्या और स्वामी को इस्वामी तो कहते नहीं हैं। ध्यान देने पर वे सही उच्चारण करने में कठिनाई महसूस नहीं करेंगे।

उर्दू में पाँच या छह प्रकार के ज की परंपरा है। वहाँ सबके उच्चारण में सूक्ष्म अंतर होता होगा और यह सिखाया जाता होगा। यहाँ हम नुक्ते वाले पाँच अक्षरों की बात करेंगे। क़ का उच्चारण क और ख के बीच होता है। जीभ को थोड़ा ऊपर ले जाकर हल्का सा मोड़ें तो नुक्ते वाले अक्षर ठीक ठीक उच्चारित हो सकते हैं। ख़ ग़ ज़ फ़ में ह्हह्ह... जैसी आवाज़ निकलती है। अंग्रेज़ी में ज़ और फ़ के उच्चारण मौज़ूद हैं। full को फुल, soft को सॉफ़्ट, film को फ़िल्म, bridge को ब्रिज़, freeze को फ़्रीज़ कहते हैं। jump को जम्प कहेंगे, न कि ज़ंप। कई लोग एलकेजी को एल के ज़ी कहते मिलते हैं, यह ग़लत उच्चारण है। अंग्रेज़ी वर्णमाला में क के लिए k, क़ के लिए q, फ के लिए ph, फ़ के लिए f, ज के लिए j और ज़ के लिए z

इस्तेमाल करते हैं। हालांकि अंग्रेज़ी के शब्दों में क़, ख़, ग़ उच्चारित नहीं होते हैं। संस्कृत में शब्द के अंत में अकार होने पर अ का उच्चारण करते हैं, लेकिन हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू आदि में यह परंपरा सामान्य रूप से नहीं है। जैसे हिन्दी में आकाश को आकाश् ही पढ़ते हैं, जबकि संस्कृत में एव को एव् नहीं एव (अकार के साथ) पढ़ते हैं। संस्कृत, भोजपुरी, हिन्दी आदि में एक अवग्रह चिन्ह भी है, जो s की तरह लिखा जाता है।

# अध्याय- 5

## मात्रायुक्त व्यंजन

हम आज स्वर वर्णों और मात्रायुक्त व्यंजनों के उच्चारण पर चर्चा करेंगे। आगे वचन, लिंग, विशेषण आदि पर यानी शब्दों पर विस्तार से बात करेंगे।

अ का दीर्घ रूप आ, इ का दीर्घ रूप ई, उ का दीर्घ रूप ऊ, ए का ऐ और ओ का औ है। दीर्घ रूपों का उच्चारण ज़्यादा समय लेकर किया जाता है। कई बार राजनीति को राजनीत कहते इसी कारण सुना जाता है। तुलसी, रहीम, कबीर आदि के दोहों में आप बात, प्रात जैसे अकारांत ( अकार के साथ समाप्त होने वाले) शब्दों के तुक जाति, भाँति जैसे इकारांत (इकार के साथ समाप्त होने वाले) शब्दों से मिलते देख सकते हैं। यही बात उकारांत (जैसे राहु, केतु, हेतु, सेतु आदि) शब्दों के साथ भी आप देख सकते हैं। यानी प्रेत का तुक सेतु से मिल सकता है। इसका कारण है - ह्रस्व मात्रा वाले वर्ण और अकार के उच्चारण में समानता का माना जाना। दीर्घ स्वर वाले वर्ण को बोलने में अधिक समय लिया जाता है। कलि और कली, हरि और हरी, रुपया और रूप आदि पर ध्यान दीजिए। कलि में लि तुरंत बोला जाता है, कली में ली लम्बे समय तक ईकार के उच्चारण के साथ बोलेंगे। अगर यह फर्क नहीं समझेंगे तो भीख और भिखारी, पूजा और पुजारी, भूलना और भुलाना, लूटना और लुटना, फुल (full), फ़ूल(fool) और फूल (पुष्प) आदि का उच्चारण दोषपूर्ण हो जाएगा। यही नहीं, इस गड़बड़ी से गीतों को ठीक ठीक धुन और संगीत के साथ भी नहीं गा पाएंगे। सोचिए अगर 'ऐ मेरे वतन के लोगो तुम खूब लगा लो नारा' की जगह 'ए मैरे वतन के लौगौ तूम खुब लग्गा लो नारा' गाएँ, तो कैसा लगेगा! संगीत की शिक्षा के लिए भी उच्चारण ज्ञान ज़रूरी है। कूल ( अंग्रेज़ी का ठंढा या हिन्दी का किनारा ) और कुल (टोटल, सब, समूचा, सारा) दोनों में ऊकार और उकार का उच्चारण सही सही करना होगा। कूल में कू बोलते समय मुँह खुलने के बाद कुछ देर खुला ही रहेगा और ज़्यादा खुल सकता है, जबकि कुल में कु बोलते समय तुरंत मुँह से कु निकलेगा और अगला अक्षर उच्चारित होगा। ईकार, ऊकार, ऐकार, औकार और अनुस्वार के उच्चारण में मुँह ज़्यादा खुल सकता है; जबकि इकार, उकार, एकार और ओकार के उच्चारण में सामान्यतः मुँह कम खुलता है। मुन्ना को मून्ना या चिता को चीता बोलना ठीक नहीं होगा। कवीता बोलना ग़लत होगा, कविता सही। इसी प्रकार एकार का उच्चारण ऐकार करना ठीक नहीं होगा। बेल को बैल या थैला को थेला कहना, गोल को गौल या मौर्य को मोर्य कहना; ग़लत होगा।

ऑ का उच्चारण करना भी ध्यान देने पर ठीक से किया जा सकता है। आ और ओ-औ के बीच का उच्चारण ऑ को माना जा सकता है। कॉल को काल या कौल न कहकर कॉल कहना चाहिए। आ के उच्चारण में मुँह दोनों गालों की ओर फैलता है या अगल बगल फैलता है, औ में मुँह ऊपर नीचे (यानी नाक और ठुड्डी की ओर) और अगल बगल दोनों तरफ़ फैलता है , जबकि ऑ के उच्चारण में औ की तरह अव् नहीं निकलेगा। ऑ में जीभ ऊपर की ओर तो जाती है लेकिन मुँह ऊपर नीचे नहीं खुलता। कालेज या कौलेज कहने की जगह कॉलेज कहने की आदत डालनी चाहिए। इस ऑ को अर्धचंद्र कहते हैं। हाट, होट, हौट और हॉट बोलकर आप अभ्यास कर सकते हैं और उच्चारण की भिन्नता महसूस कर सकते हैं। यह अंग्रेज़ी से आए शब्दों में ही होता है, संस्कृत, अरबी आदि के शब्दों में नहीं। हॉल, कॉल, जॉन, ऑक्सीजन, डॉक्टर, बॉल, फुटबॉल आदि इसके कुछ उदाहरण हैं। इसकी जगह चंद्रबिन्दु का प्रयोग भी लोग कर देते हैं लेकिन यह ठीक नहीं है। डॉक्टर की जगह डाँक्टर कहना या लिखना सही नहीं है।

चंद्रबिन्दु के उच्चारण में नाक की मदद ली जाती है। अँ, आँ, उँ, ऊँ आदि का उच्चारण चंद्रबिन्दु वाले शब्दों में करना होता है। कँवल, गाँव, उँगली, ऊँचा, कूँची आदि कुछ शब्द इसके उदाहरण हैं। कई पेंटरों को अक्सर गाँधी को गाॅधी लिखते हुए देखा जा सकता है। यह ग़लत है और इससे बचना चाहिए। गाँव, पाँव, माँ, यहाँ आदि को गाॅव, पाॅव, माॅ, यहाॅ नहीं लिखना चाहिए।

अब हम दोहरे वर्णों पर विचार करते हैं। पका और पक्का दो अलग अलग शब्द हैं। पका परिपक्वता, फल का तैयार होना या समय के साथ गुणों की वृद्धि को बताता है और पकना क्रिया से जुड़ा है , जबकि पक्का निश्चय को या किसी वस्तु आदि की पूर्व स्थिति या कच्चेपन के विपरीत या ऊँची या बाद की अवस्था को बताता है। पक्का में क् + क है, जिसके उच्चारण में दो बार क बोलना होता है लेकिन ध्यान रहे कक नहीं बोलना है। बचे और बच्चे, मज़ा और मज्जा, कटा और कट्टा, पता और पत्ता, हम और हम्म, गदा और गद्दा आदि में भेद करने के लिए दोहरे वर्णों पर ध्यान देना होगा। भोजपुरी भाषी बत्ता देम और बता देम का फर्क समझ सकते हैं।

# अध्याय- 6

## सही प्रयोग

अक्षरों पर चल रही चर्चा अभी ज़ारी है। इस सिलसिले में आज हम ड, ड़, ढ, ढ आदि पर नज़र डालेंगे।

पहले भी यह बात आई थी कि ड़ और ढ़ मुख्य वर्णमाला में न आकर बाद में जुड़ते हैं। पहली बात हम कहना चाहते हैं कि बिन्दी वाले ड यानी ड़, बिन्दी वाले ढ यानी ढ़, ङ, ञ और ण से कोई शब्द शुरू ही नहीं होता। इसलिए शब्द की शुरूआत में ड़ या ढ़ लगाना ठीक नहीं है। बहुत सारे लोग, लेखक, अच्छे पढ़े लिखे लोग भी यह ग़लती करते देखे जाते हैं। यह परंपरा ज़्यादा पुरानी नहीं लगती, यह नई परंपरा ही लगती है, जो कुछ दशक पुरानी हो सकती है। अंग्रेज़ी या यूरोपीय भाषाओं और संस्कृत के शब्दों में ड़, ढ़ आते ही नहीं हैं। जैसे बैड़, कामरेड़, एड़ल्ट, एड़जस्ट, काड़ आदि ग़लत हैं क्योंकि उच्चारण के लिहाज से इनमें ड आता है, ड़ नहीं। आप काड़ का उच्चारण भी नहीं कर पाएंगे। शुद्ध रूप बैड, कामरेड, एडल्ट, एडजस्ट, कार्ड हैं। र् (आधा र) के बाद तो ड़ या ढ़ आते ही नहीं कभी। आप ड बोलते हैं, तो ड़ लिखना और ड़ बोलते हैं तो ड लिखना, दोनों ही ग़लत है। गुड (अंग्रेज़ी का अच्छा), गुर (तरीका, कौशल) और गुड़ (गन्ने या चुकंदर से बनी चीज़ जो मीठी होती है) का फर्क आप जानते हैं। आप अगर अंग्रेज़ी के सही उच्चारण देखें तो आप पाएंगे कि वहाँ ड़ है ही नहीं। ढ़ की तो बात छोड़ ही दें, क्योंकि वहाँ ढ ही नहीं है। ड़ और ढ़ के लिए अंग्रेज़ी में क्रमशः d और rh लिखा जाता है।

सवाल ड़-ड और ढ-ढ़ के सही प्रयोग का है। यह आसान है। बस इन बातों का ध्यान रखें। ड़ और ढ़ कभी संयुक्ताक्षर में नहीं आते (या कहें कि ड़ या ढ़ न तो किसी आधे अक्षर के बाद आते हैं, न इनका आधा रूप प्रयोग होता है), जैसे हड्ड़ी या गड्ढ़ा, दोनों ग़लत हैं। इनके शुद्ध रूप हड्डी और गड्ढा हैं। ढ़ेर, ढ़क्कन, ढ़ोल, ढ़कोसला, ढ़ोना, ढ़ाबा, ड़ब्बा, ड़गर, ड़ंका, ड़ायरी आदि सारे शब्द अशुद्ध हैं। इन सबमें पहला अक्षर ढ या ड होना चाहिए क्योंकि ड़ या ढ़ से हिन्दी पट्टी में कोई शब्द शुरू ही नहीं होता। सही रूप ढेर, ढोल, ढक्कन, ढाबा, ढकोसला, डब्बा, डंका, डायरी आदि हैं। एक आसान सा नियम आप यह भी मान सकते हैं कि अनुस्वार के बाद ड़ या ढ़ का प्रयोग नहीं कर सकते, जैसे कांड, दंड, ठंढ आदि को कांड़, दंड़, ठंढ़ नहीं लिख सकते। अनुस्वार के बाद ड़ या ढ़ का उच्चारण करना भी असंभव सा है। हाँ, चंद्रबिन्दु के बाद ड़ या ढ़ का प्रयोग कर सकते हैं। संस्कृत पढते लिखते समय भी हम ड़ या ढ़ का प्रयोग नहीं करते। इनके उच्चारण पर हम चर्चा कर चुके हैं। यहाँ ड़ और ढ़ कब कब नहीं लिखते, यह बताया गया है। फिर इनका प्रयोग करेंगे कहाँ! शब्द के बीच में या अंत में इनका प्रयोग कर सकते हैं, वह भी बिना चिंता किए। बीच या अंत के प्रयोग में कुछ शब्दों को अपवादस्वरूप छोड़ दें तो यह छूट काफी हद तक है कि हम ढ या ढ़ दोनों में से किसी का प्रयोग कर सकते हैं। ड या ड़ के मामले में यह छूट नहीं है। एक वाक्य में कहें तो जहाँ आप उच्चारण ड का करते हैं, वहाँ ड लिखें, जहाँ ड़ का करते हैं, वहाँ ड़ लिखें। ढ बोलते हों तो ढ लिखें और ढ़ बोलते हों तो ढ़। जैसे झंडा, भाड़ा, गाड़ी, गार्ड, कीड़ा, गुड्डी, गड्ढा, आढ़त, गड़बड़ आदि उदाहरण के तौर पर आप देख सकते हैं। कई शब्दों के दो रूप प्रचलित हैं, खासकर उन शब्दों के जिनमें ढ और ढ़ बीच में या अंत में आए। पढना-पढ़ना, गढ-गढ़, चढाई-चढ़ाई, बाढ-बाढ़, गाढी-गाढ़ी आदि ऐसे कुछ उदाहरण हैं। दोनों रूपों वाले शब्द प्रायः क्रियाओं से जुड़े होते हैं। हाँ, उच्चारण की बात करें, तो पढना और पढ़ना में अंतर है। पढना को padhna और पढ़ना को parhna से समझ सकते हैं। ढाँढस, ढिंढोरा, ढिंढोरची, निढाल आदि कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनमें ढ बीच में आता है। इनमें ढ की जगह ढ़ का प्रयोग ठीक नहीं माना जाएगा।

मर्डर, हार्ड, बोर्ड, डोमेस्टिक, डस्टर, एडमिशन, डर्टी, डांस, डैश, डल, एडवोकेट, वर्ड, संस्कृत में गरुड, फ़्रांसीसी में मैडम आदि कुछ शब्दों में ड का प्रयोग हुआ है। खास बात यह है कि उच्चारण तो लोग

सही करते हैं, लेकिन लिखते ग़लत हैं। संस्कृत में गरुड और क्रीडा लिखते हैं, जबकि हिन्दी में गरुड़ और क्रीड़ा। घबराना और घबड़ाना दोनों रूप सही माने जाते हैं, यह भी बताते चलें।

अस्मुरारी नंदन मिश्र जी ने बताया कि नियम यह है कि दो स्वरों के बीच में आने पर उच्चारण ड़ और ढ़ होता है! संयुक्त होने पर यानी किसी भी एक तरफ स्वर के नहीं होने पर ड और ढ होता है। बूढ़ा- बुड्ढा, गुड्डी- गुड़िया!

यह बहुत हद तक सही व्याख्या प्रस्तुत करता है, लेकिन यूरोपीय और संस्कृत शब्दों पर लागू नहीं होता। निढाल, निडर, अडिग आदि में भी यह नियम काम नहीं करता। यह कहा जा सकता है कि ध्यान देने पर ही ठीक ठीक प्रयोग करने की आदत डाली जा सकती है। ढ़ का प्रयोग वहीं करें जहाँ र्ह (र् +ह) का उच्चारण होता हो।

ड़ वाली कुछ क्रियाएँ अकड़ना, लड़ना, सड़ना, झगड़ना, पड़ना, ताड़ना, फाड़ना, गाड़ना, छोड़ना, जोड़ना, झाड़ना, निथाड़ना, निचोड़ना, तोड़ना, फोड़ना, छिड़ना, छिड़कना, छेड़ना, बड़बड़ाना, खड़ा होना, उखड़ना, तड़पना, फड़फड़ाना आदि हैं। क्रियाओं में ड की जगह ड़ ही मिलता है अक्सर। शायद ही कुछ क्रियाओं में ड हो। ढ़ वाली कुछ क्रियाएँ काढ़ना, गढ़ना, चढ़ना, चिढ़ना, पढ़ना, बढ़ना, मढ़ना आदि हैं।

जब एक साथ र और ड़ आते हैं, तो पहले र, फिर ड़ होता है; ऐसा अधिकांश स्थितियों में होता है। करोड़, रोड़ा, अरोड़ा, रोड़ी, मरोड़, गरुड़ आदि उदाहरण के तौर पर देखे जा सकते हैं।

## अध्याय- 7

### लेखन

गाँधी जी की सलाह पर स्वर वर्णों को कई लोगों और नवजीवन, गुजरात द्वारा इस प्रकार लिखा और छापा जाने लगा- अ आ अि अी अु अू अे अै ओ औ

यह आज भी नवजीवन द्वारा प्रकाशित किताबों में देख सकते हैं, लेकिन हिन्दी समाज ने इसे स्वीकारा नहीं। इसके पीछे विचार था कि कम संकेतों से काम चलाया जा सकता है। इसी प्रकार आज भी पुराने लोग कुछ अक्षरों को पुराने ढंग से लिखते हैं। पुरानी किताबें मिलें, तो हम कुछ अक्षरों के पुराने रूप पाएंगे। कम से कम पढने के लिहाज से उनकी जानकारी और पहचान ज़रूरी है। लिखित रूप की कुछ बातों पर चर्चा करने में हमें हाथ से कागज पर लिखकर यहाँ रखना पड़ रहा है, क्योंकि कंप्यूटर, टैबलेट, मोबाइल आदि नये साधनों पर सब कुछ नहीं लिखा जा सकता। यहाँ चित्र में 1 से 16 तक संख्याएँ लिखी हैं, हम उनसे संबद्ध बातों पर चर्चा करेंगे। अगले भाग में फिर इसी तरह की चर्चा होगी क्योंकि हमसब लिखते अलग ढंग से हैं, छापते अलग हैं।

1, 2 और 3 में घेरे हुए संकेत क्रमशः अ, ण और झ के हैं, जो अब नये रूप में लिखे जा रहे हैं। झ के नये रूप को ही नयी पीढ़ी को लिखना सिखाया जाना चाहिए।

घ, ध और द्य को प्रायः ग़लत तरीके से लोग लिखते हैं। घ में शिरोरेखा (इसका जिक्र पहले किया जा चुका है, गुजराती में इसकी परंपरा संभवतः नहीं है लेकिन हिन्दी में है) से पाई (।) के साथ बायाँ मुड़ने वाला भाग भी पूर्ण रूप से मिला रहता है। चित्र 4 में घ को दिखाया गया है। ध में पाई तो शिरोरेखा से मिलती है, लेकिन बायाँ भाग नहीं मिलता और यह ऊपर की ओर खुला रहता है, घ की तरह बंद नहीं। इसके लिए चित्र 5 देखें। ध के स्थान पर द्य लिखते और छापते अक्सर देखा जा सकता है। चित्र 6 में द् और य के मिलने से बने इस वर्ण के तीनों रूप दिखाए गए हैं। यह भी अंग्रेज़ी, उर्दू आदि में नहीं होता। संस्कृत मूल के शब्दों में ही यह दिखाई पड़ता है। द्य वाले शब्द बहुत ज़्यादा नहीं हैं। ध की जगह द्य लिखने से मध्य (बीच) और मद्य (शराब), विधा (तरीका, शास्त्र) और विद्या (शिक्षा, ज्ञान), वैध (कानूनन जायज, लीगल, उचित) और वैद्य (हकीम, डॉक्टर) आदि में अंतर ही खत्म हो जाएगा। द्य वाले कुछ शब्द हैं- विद्युत, विद्या, विद्यालय, विश्वविद्यालय, आद्य, विद्यमान, आद्य, खाद्य, खाद्यान्न, पद्य, गद्य, प्रतिपाद्य, अद्य (आज के लिए संस्कृत शब्द), द्युति, प्रौद्योगिकी, प्रद्युम्न, उद्योग, उद्यान, उद्योगपति, वाद्य, सद्यः आदि। इनमें ध का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

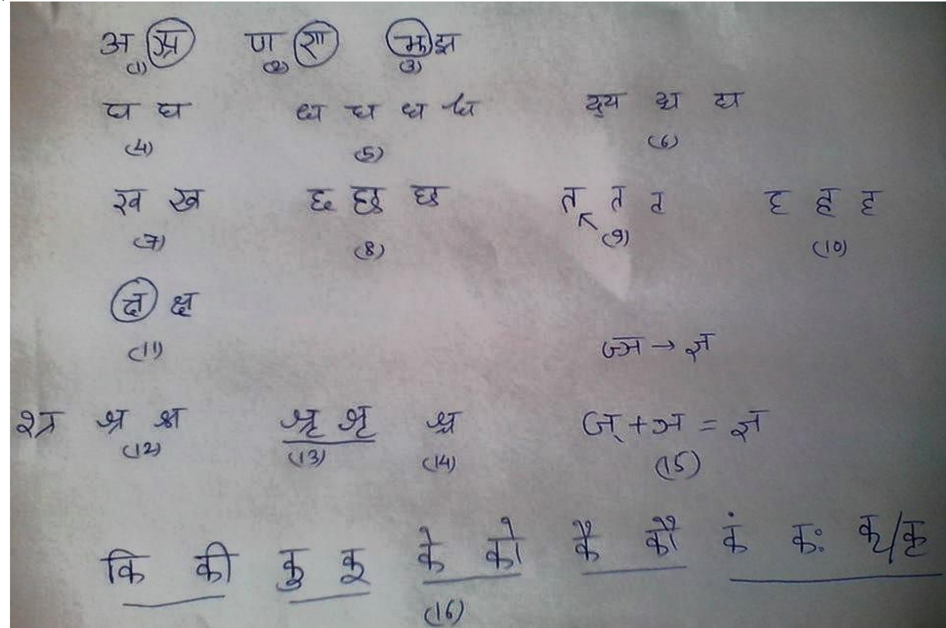
ख को पहले रव की तरह लिखने और छापने की परंपरा थी। इससे जुड़ा एक हास्य आपने सुना ही होगा। बिना शिरोरेखा के लिखा 'रविवार को स्कूल बन्द रखा जाता है' को 'रविवार को स्कूल बन्दर खा जाता है', यह कहा जाता है। ख को र व जैसा न लिखकर ख जैसा लिखें, तो यह भ्रम समाप्त हो जाता है। छ को लिखते समय हम चित्र 8 में दिखाए गए ढंग से लिखते हैं। यह सब अंग्रेज़ी की ही तरह है, जिसमें ए, आर आदि के छापने और लिखने के ढंग या रूप में अंतर है। चित्र 9 में त को दिखाया गया है। त को इस तरह लिखना चाहिए कि ट न समझकर कोई भी त ही पढ़े। किसी भी प्रकार की अस्पष्टता से बचना चाहिए क्योंकि लिखने का उद्देश्य सिर्फ खुद ही पढ़ना नहीं है। चित्र 10 और 11 में ह और क्ष को दिखाया गया है। क्ष के पुराने रूप को घेरे में डालकर दिखाया गया है। चित्र 15 में ज्ञ को ज् ञ के मिलने से बनकर नये रूप में आने को दिखाया गया है। यह कैसे हुआ होगा, इसे हम आगे किसी भाग में देखने का प्रयास करेंगे।

16वें चित्र में यह दिखाया गया है कि ह्रस्व मात्राएँ व्यंजनों के बायीं ओर या पीछे की ओर जाती हैं, जबकि दीर्घ मात्राएँ आगे की ओर (नागरी लिपि में बायें से दायें लिखते हैं) या दायीं ओर लगती हैं। अनुस्वार व्यंजन के ठीक ऊपर लगता है। अकुंर या एंव न लिखकर अंकुर या एवं लिखना चाहिए। अक्सर

लोगों में दो वर्णों के बीच में ऊपर अनुस्वार लगाते देखा जाता है, जैसे बंधन में ब और ध के बीच में अनुस्वार लगाते। अनुस्वार उसी वर्ण पर लगाते हैं, जिसके बाद उसका उच्चारण आता है। विसर्ग व्यंजन के दायीं ओर और संस्कृत मूल के शब्दों में लगाते हैं। अब इस चिन्ह को नागरी लिपि में लिखते समय उर्दू में भी लगाया जा रहा है। विसर्ग वाले कुछ शब्द दुःख, दुःखी, प्रातःकाल, संभवतः, मुख्यतः, अंततः, क्रमशः, सामान्यतः, पूर्णतः, अंशतः, साधारणतः आदि हैं।

यहाँ 'के' और 'को' एक साथ रखे गए हैं, क्योंकि इनमें ऊपर एक ऊकार की मात्रा जैसा संकेत है। लिखते समय ध्यान रखें कि एकार की मात्रा ठीक उसी व्यंजन पर लगे, जहाँ होनी चाहिए। इसी तरह ओकार की मात्रा लिखते समय वर्ण के दायीं ओर की पाई पर लगे, न कि मूल व्यंजन पर। यही बात ऐकार और औकार के लिए भी सही है। अगले भाग में चित्र से समझेंगे इसे।

श्र में श् और र हैं, इसमें ऋकार नहीं लगा सकते। इसलिए श्रृंगार, श्रृंखला आदि ग़लत हैं। यहाँ श्रृ लिखा गया है जो श्, र और ऋ के मिलने से बना है। सही रूप शृंगार और शृंखला हैं। चित्र 12 में श्र के लिखित रूप दिखाए गए हैं। इनमें पहला सही है लेकिन प्रचलित नहीं है, दूसरा शुद्ध और प्रचलित है और तीसरा रूप भी लोग प्रयोग करते हैं लेकिन यह सही नहीं माना जा सकता क्योंकि यह क्ष का भ्रम पैदा करता है। चित्र 13 में शृ के ग़लत और सही लिखित रूप दिखाए गए हैं। चित्र 14 श् और च के मिश्रित रूप को दिखाता है।



## अध्याय- 8

### लेखन

इस बार भी तस्वीर के माध्यम से कई चीज़ों पर बात करेंगे। यहाँ चित्र 17 में कोई और कौन में को और कौ में पाई(।) के ऊपर चिन्ह न लगाकर, व्यंजन यानी क पर लगाकर दिखाया गया है। ऐसा करना ग़लत होगा, इसकी जगह पाई पर ऊपर चिन्ह लगना चाहिए।

18वें और 19वें चित्र में यह दिखाया गया है कि लिखने और छापने के तरीकों में फर्क देखा जाता है। द्वित्व वाले वर्ण जैसे ल्ल, क्क, न्न आदि को इन दोनों तरीकों से लिख सकते हैं। पहला रूप ही ज़्यादा प्रचलन में है, इसलिए हमें भी उसी रूप में लिखना चाहिए। बचपन में सीखते समय अक्सर न्न के दूसरे रूप को त्र समझ या पढ लिया जाता है, जैसे मुन्ना को मुत्रा। हम पहले रूप को ही प्रयोग में लाने की सिफारिश करेंगे।

चित्र 20 त्त यानी त् + त के लिखने के ढंग को लेकर है। त् + त को त में एक छोटी और बायें से दायें जाने वाली रेखा लगाकर व्यक्त करते हैं, यह रेखा(घटाव के चिन्ह जैसी -) त में चित्र में दिखाए ढंग से लगती है। उतर (चढ़ना का विपरीत, नीचे आना) और उत्तर (जवाब, दिशा), सता (सताना क्रिया का रूप) और सत्ता (ताकत), पता (ठिकाना) और पत्ता (पेड़ का पत्ता), मत(निषेध, विचार) और मत्त(नशे की हालत में), पतन(गिरना, अवनति) और पत्तन(बंदरगाह), लता(बेल) और लत्ता(कपड़े का टुकड़ा), भूतत्व (भूत होने का गुण) और भूतत्त्व (भूगर्भ से संबद्ध) आदि में अंतर इसी सावधानी के कारण कर सकते हैं, वरना हमारा लेखन भाषायी अशुद्धि का शिकार हो जाएगा। त के द्वित्व वाले कुछ शब्द महत्त्व (महत् में त्व लगाने से महत्त्व बनता है, इसका महत्व रूप भी चलन में है), तत्त्व, पुरातत्त्व (यहाँ त के बाद त्, फिर त है), चित्त, वृत्त, वृत्ति, निवृत्त, आवृत्त, अनावृत्त, आर्त्त, प्रवृत्ति, उत्तर, गुणोत्तर, उत्तरार्ध, उत्तराधिकारी, उत्तराखंड, उत्तरांचल, गुणवत्ता, सत्तू, आपत्ति, भत्ता, अलबत्ता, लोकोत्तर, शोकार्त्त, दत्त, प्रदत्त, उत्तीर्ण, अनुत्तीर्ण, उदात्त, सत्तर, तैत्तिरीय, सात्त्विक, कृत्तिका, निमित्त, कर्त्ता, गत्ता, आवर्त्त, आवर्त्ती, अपवर्त्तक, आर्यावर्त्त, महत्तम, छत्ता, बत्ती, बत्तीस, सत्तर, छत्तीस, सत्ताईस, रत्ती, पत्तर, पत्तल आदि हैं। हालांकि तत्व, महत्व, आवर्त, कर्तव्य, कर्ता, आर्यावर्त आदि भी प्रचलन में हैं। लघुतम, इतर आदि शब्द त के द्वित्व वाले नहीं हैं, यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। मानवेतर, विवाहेतर, शिक्षकेतर जैसे शब्द त के द्वित्व वाले नहीं हैं और त्त का इनमें प्रयोग उचित नहीं होगा। वृत्ति और वेत्ता से जुड़े शब्द त्त वाले होते हैं, इनमें त नहीं लिखना चाहिए, जैसे प्रवृत्ति, अभिवृत्ति, विज्ञानवेत्ता, पुरातत्ववेत्ता आदि। बृहत्तर या वृहत्तर, उत्पत्ति, व्युत्पत्ति, सम्पत्ति, महत्ता, पत्ती, मित्तल आदि शब्द त के द्वित्व वाले शब्द हैं। अनावृत का अर्थ 'जो ढका हुआ न हो' है और अनावृत्त का अर्थ 'जिसे दोहराया न गया हो' है। प्राकृत में त का द्वित्व नहीं होता।

चित्र 21 व्यंजनों के आधे रूपों को दिखाता है। जिन अक्षरों में '।' बीच में होती है, उनके आधे रूप दायीं ओर के भाग को आधा लिखकर बनाते हैं, जैसे क और फ। जिन अक्षरों में दायाँ भाग पाई है, उनके आधे रूप बिना पाई के लिखे या छापे जाते हैं, जैसे ख, ग, घ, च आदि में। जो अक्षर बिना पाई के हैं, उनमें हल का चिन्ह (्) लगाकर आधा रूप दिखाते हैं, जैसे ङ्, छ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, द्, ह्। चित्र में ध के आधे रूप को हल लगाकर और बिना हल लगाए दोनों रूपों में दिखाया गया है। एक खास बात यह भी है कि ढ, छ आदि का आधा रूप कहीं नहीं आता। इस पर अलग से बाद में चर्चा की जाएगी। आधा व लिखते समय पूरा गोल चिन्ह ० लिखना चाहिए, जैसा कि चित्र में है। र का आधा रूप लिखा नहीं जाता, वह रेफ का रूप में ले लेता है। चित्र में आधे व्यंजनों के सामान्य रूप दिखाए गए हैं, इनके दूसरे रूप भी देखने को मिल सकते हैं।

चित्र 22 और 23 क् +त और क्र के दूसरे रूप को दिखाते हैं। पुरानी किताबों में क्र का यह रूप देखने को मिलता है।

चित्र 24 उन अक्षरों में र लगाकर दिखाता है, जिनमें '।' कहीं नहीं होता। इनमें नीचे ^ लगाते हैं। जिनमें पहले से एक रेखा नीचे दायीं ओर रहती है, उनमें ^ न लगाकर, बायीं ओर तिरछी रेखा खींच देते हैं, जैसे द्र। छ के लिखित रूप में ऐसा ही किया जाना चाहिए। हालांकि छ के लिखित रूप और मुद्रित रूप में अंतर है।

चित्र 25 में ह्+र यानी ह्र को लिखकर दिखाया गया है। ह्रास, ह्रासमान, ह्रासोन्मुख, ह्रस्व जैसे गिने चुने शब्द ह्र वाले हैं। 26वें चित्र में हृ लिखकर दिखाया गया है। हृ वाले शब्द भी अधिक नहीं हैं। हृ वाले कुछ शब्द हृदय, हृदयरोग, हृदयाघात, हृत, अपहृत, हृतंत्री, हृदयाकाश, हृष्ट, हृदयंगम, हृदयेश, सुहृद, सहृदय आदि हैं। यहाँ ह में ऋ और र कैसे जोड़े गए हैं, यह देखा जा सकता है। ह के बीच वाले भाग में र के लिए एक तिरछी रेखा (क्र, ज्र आदि की ही तरह) बायीं ओर खींचकर ह्र लिखते हैं और हृ के लिए ह के बीच वाले भाग में c(ऋकार) जैसा संकेत जोड़ देते हैं।

26 रु और रू यानी र् + उ और र् + ऊ को दिखाता है। लिखने में उकार और ऊकार सभी व्यंजनों के साथ लगाना आसान है, लेकिन र में लगाते वक्त परेशानी शुरू से ही यानी बचपन से ही दिखती है। उकार की मात्रा बायीं ओर या पीछे की ओर मुड़ती है, जबकि ऊकार की मात्रा दायीं ओर या आगे की ओर। र को छोड़कर सभी व्यंजनों में उकार और ऊकार की मात्रा व्यंजन के नीचे लगती है। र में यह दायें भाग में बीच में लगाई जाती है। चित्र में त्रिभुज में ऊकार की और वर्ग में उकार की मात्रा के वे रूप दिखाए गए हैं, जो र के साथ दिखते हैं। रू (ऊकार) वाले कुछ शब्द रूप, स्वरूप, ग़रूर, रूठना, रूखा, रूस, रूसी, रूमाल, रूढ़, रूढ़ि, रूई, रूम, रूल, रूह, रूहानी, शुरू, जागरूक, ज़रूर, ज़रूरत आदि हैं। रु (उकार) वाले कुछ शब्द रुँधना, रुकना, रुपया, गरुड़, रुख, रुखसत, रुचि, रुग्ण, रुझान, रुत, रुदन, पुरुष, अनिरुद्ध, अभिरुचि, कुरु, रुधिर, रुबाई, रुलाई, रुष्ट, रुसवा, अरुण, अरुणाचल, तरुण, वरुण, करुण, करुणा, तरुणाई, चरु, दारुण, मरु, मरुभूमि, तरु, चारु, मारुति, गुरु, गुरुवार आदि हैं। कुछ शब्द दोनों रूपों में चलन में हैं, जैसे गुरु-गुरू, रूमाल-रुमाल आदि। दारु(देवदारु वृक्ष) और दारू(शराब) में अंतर रु और रू का ही है।

27वाँ चित्र यह दिखाता है कि र को छोड़कर सारे वर्ण अपने द्वित्व वाले रूप में दोहरे (साफ़ साफ़ दो बार) दिखते हैं, जैसे क्क, च्च, ट्ट, न्न आदि, लेकिन र इनसे अलग व्यवहार रखता है और 'र्र' जैसा दिखता है।

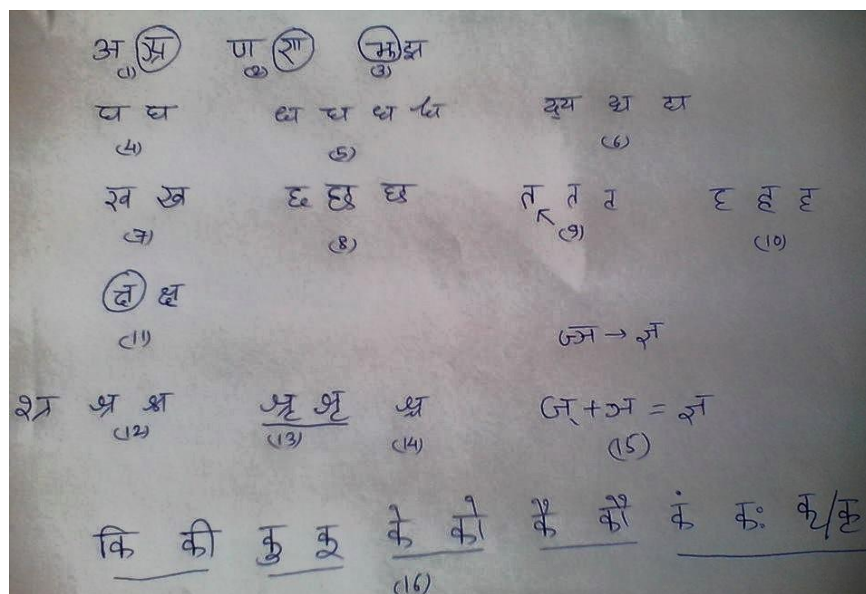
28वाँ चित्र यह बताता है कि संयुक्ताक्षरों में इकार की मात्रा का पाई पहले अक्षर के बायीं ओर लगता है और अर्धगोलाकार भाग दूसरे अक्षर के दायें भाग को छूता है। जैसे आरम्भिक में म पहला अक्षर है और उसके पहले '।' लगा है और भ दूसरा अक्षर है, जिसकी पाई को अर्धगोलाकार भाग छू रहा है।

29वाँ चित्र भ लिखने के तीन तरीकों को दिखा रहा है। म में शिरोरेखा के साथ म घ की तरह बंद है, जबकि भ में ऊपर से ध की तरह खुला स्थान है। म और भ लिखते समय इसे ध्यान में रखा जा सकता है।

30वें चित्र में ढ और ठ को लिखने का बहुप्रचलित ढंग दिखाया गया है।

31वाँ चित्र ह् + म को लेकर है। ब्राह्मण, ब्रह्मा, ब्रह्म, ब्राह्मी, ब्राह्मणवाद आदि शब्दों में ह्म लिखते हैं। शुद्ध रूप तो यही हैं लेकिन ब्राम्हण, ब्रम्ह, ब्राम्हणवाद जैसे शब्द भी अब चलन में आ गए हैं। पहले वाले रूप ही शुद्ध हैं, इसलिए अभ्यास में इन्हें ही रखा जाना चाहिए।

32वाँ चित्र द् + म को दिखाता है। पद्म, छद्म, पद्मिनी, पद्मा आदि शब्द द्म वाले हैं, इन्हें पदम, छदम, पदमिनी, पदमा नहीं लिख सकते क्योंकि यह शुद्ध नहीं हैं।


जग → ज्ञ
ज् + ञ = ज्ञ
कि की कु कू के को कै कौ कं कः

# अध्याय- 9

## अच्छी हिन्दी

अच्छी हिन्दी के लिए संस्कृत की कुछ जानकारी (सैद्धांतिक न सही, व्यावहारिक ही सही) होनी चाहिए, यह हम भी मानते हैं। यहाँ आज हम एक अलग आधार पर वर्णों के दो भेदों पर बात करेंगे।

सभी मूल वर्णों (यानी संयुक्ताक्षरों को छोड़कर) को उच्चारण के हिसाब से अल्पप्राण और महाप्राण, दो भागों में बाँटा गया है। जिन वर्णों के उच्चारण में हकार की ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती है, उन्हें अल्पप्राण कहते हैं और जिन वर्णों के उच्चारण में हकार की ध्वनि सुनाई पड़ती है, उन्हें महाप्राण कहते हैं। अगर आप महसूस करना चाहें तो आप ख बोलकर देखें। ख का उच्चारण करते समय ऐसा लगता है, जैसे क और ह मिल रहे हों। अंग्रेज़ी में ख के लिए kh होने का यह कारण हो सकता है। इसी प्रकार घ में ग जैसा लगता है पहले। सभी वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवे वर्ण, य, र, ल और व; अल्पप्राण हैं। कवर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) के क, ग और ङ; चवर्ग के च, ज और ञ; टवर्ग के ट, ड और ण; तवर्ग के त, द और न तथा पवर्ग के प, ब और म अल्पप्राण हैं। वर्गों के दूसरे(जैसे ख, छ आदि) और चौथे वर्ण(जैसे घ, झ आदि), श, ष, स और ह महाप्राण हैं। अंग्रेज़ी में जिन वर्णों में एच(h) लगाते हैं, वे महाप्राण हैं और जिनमें नहीं लगाते, वे अल्पप्राण हैं; यह भी याद रखने का एक आसान तरीका है। एक अपवाद 'स' है, जिसमें 'एच(h)' नहीं लगता, फिर भी यह महाप्राण है।

अब हम शब्दों में इनकी भूमिका पर विचार करेंगे।

अधिकांश स्थितियों में महाप्राण वर्णों का द्वित्व नहीं मिलता, जैसे घ्घ, ख्ख, छ्छ, झ्झ, ठ्ठ, ढ्ढ, थ्थ, ध्ध, भ्भ और ष्ष किसी शब्द में नहीं हैं। फ्फ(लफ्फाजी, मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरनगर आदि में), श्श(निश्शंक, निश्शब्द आदि में) और स्स(ठस्स, निस्सीम, निस्सहाय आदि में) , इसके अपवाद हैं। बात श, ष और स को छोड़कर करें, तो दो महाप्राण मिलकर कभी संयुक्ताक्षर नहीं बनाते। उदाहरण के लिए ख्झ, ह्छ, फ्भ आदि किसी शब्द में नहीं मिलते। जब एक ही वर्ग(कवर्ग से पवर्ग) के महाप्राण और अल्पप्राण मिलकर जब संयुक्ताक्षर बनाते हैं, तब दूसरा वर्ण अल्पप्राण होता है, महाप्राण नहीं, जैसे पत्थर, गट्ठर आदि में देखा जा सकता है। घ्ग, थ्त जैसे संयुक्ताक्षर कहीं नहीं मिलेंगे, इसका कारण एक ही वर्ग के दो वर्णों के संयुक्ताक्षर बनाने में पहले वर्ण का महाप्राण नहीं होना है। हाँ, अल्पप्राण का द्वित्व होता है (ङ और ञ को छोड़कर), जैसे चक्का, जग्गा, बच्चा, मज्जा, खट्टी, हड्डी, पत्ता, गद्दी, अक्षुण्ण, ठप्प, डिब्बा, अम्मा, वेंकय्या, कार्रवाई, हल्ला आदि में हुआ है। मक्खन, रक्खा, बग्घी, अच्छा, मुट्ठी, चिट्ठी, बुड्ढा, गड्ढा, पत्थर, बुद्धि जैसे शब्दों को देखिए। इनमें एक ही वर्ग के महाप्राण और अल्पप्राण मिलकर संयुक्ताक्षर बनाते हैं, जिनमें पहला वर्ण अल्पप्राण है और दूसरा महाप्राण। अगर कोई बुढ्डा या बुध्दि लिखता है, तो यह सही नहीं माना जा सकता, क्योंकि ढ ड के पहले और ध द के पहले लिखना न तो उच्चारण की दृष्टि से और न ही संयुक्ताक्षरों के प्रयोग की दृष्टि से उचित है। मख्खन चिठ्ठी या चिठ्टी नहीं लिखा जाता। दो असमान महाप्राणों से या एक ही वर्ग के पहले महाप्राण, फिर अल्पप्राण से बने संयुक्ताक्षर का उच्चारण उच्चारण के ही लिहाज से एक समस्या है। हम बघ्गी या मुठ्टी के उच्चारण का प्रयास करने पर यह महसूस कर सकते हैं। एक ही वर्ग के दो भिन्न अल्पप्राण भी संयुक्ताक्षर नहीं बनाते यानी क्ग, ग्क, च्ज, ज्च, ट्ड, ड्ट, त्द, द्त, प्ब और ब्प किसी शब्द में नहीं आते। कब्जा, सब्ज़ी, कुब्जा, ज्योति, राज्य, आप्टे, इप्टा, शल्य, सत्य, वैराग्य आदि में इस नियम का उल्लंघन नहीं होता क्योंकि ब और ज या ज और य एक ही वर्ग के अल्पप्राण नहीं हैं।

अब बात उन संयुक्ताक्षरों की करें, जो एक ही वर्ग के वर्णों से नहीं बनते। ख्याति, आख्यान, संख्या, सभ्य, दफ़्न, फाख्ता, हफ़्ता, जिस्म, ज़ख्म, सख्त, तख्त, शिनाख़्त, मस्ती, अभ्यस्त, वस्तु, नादेझ्दा(रूसी), ब्रेख्त आदि में हम देखते हैं कि पहला वर्ण महाप्राण है और दूसरा अल्पप्राण। यह ऊपर बताए नियम के

विरुद्ध नहीं है। ऊपर एक ही वर्ग वाले वर्णों से बने संयुक्ताक्षरों की चर्चा है और यहाँ वे नियम लागू नहीं होते। पश्चिम, पश्चाताप, निष्कलंक, निश्चय, निष्पादन, निष्पक्ष, निष्कर्ष, प्रस्ताव, प्रश्न, प्रस्तावना, स्पंज, स्कंद, श्रम, श्याम, कष्ट, कृष्ण, फिफ्टी, गिफ्ट, शिफ़्ट, बाध्य, बाह्य, सह्य, कथ्य, तथ्य, हश्र, इश्क, भास्कर, गह्वर, गुह्य, धनाढ्य आदि शब्द भी देखे जा सकते हैं। इनमें अल्पप्राण महाप्राण के बाद आए हैं।

स्थान, स्थगन, विस्फोट, निष्ठा, निष्फल, स्फटिक, स्फुरण, मुद्रास्फीति, फिफ्थ जैसे शब्दों में दो महाप्राण मिलकर संयुक्ताक्षर बना रहे हैं। हम कह सकते हैं कि एक ही वर्ग के नहीं रहने पर दो महाप्राण भी संयुक्ताक्षर बना सकते हैं। हालांकि ऐसे शब्द बहुत कम हैं।

ष्ष हमारी जानकारी में किसी शब्द में नहीं आता। लगातार दो समान महाप्राण भी ज़्यादा नहीं मिलते, जैसे खख, घघ, छछ आदि। घोंघा, छिछोरा, ठिठकना, ढिंढोरा आदि में दो समान महाप्राण मात्राओं के साथ आ रहे हैं, लेकिन ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम है। लगातार दो पूर्ण ष मात्रा के साथ या बिना मात्रा के भी देखने में नहीं आते। षष्ठी, षष्टि आदि में दो ष हैं तो, लेकिन संयुक्ताक्षर के रूप में, पूर्ण रूप में नहीं।

क से म तक के वर्ण स्पर्श वर्ण कहलाते हैं। अब हम कह सकते हैं कि दो स्पर्श महाप्राण मिलकर संयुक्ताक्षर नहीं बनाते यानी ख्ख, ख्घ, ख्छ, ख्झ, ख्ठ, ख्ढ, ख्थ, ख्ध, ख्फ, ख्भ, घ्ख, घ्घ, घ्छ, घ्झ, घ्ढ, घ्ठ, घ्थ, घ्ध, घ्फ, घ्भ, छ्ख, छ्घ, छ्छ, छ्झ, छ्ठ, छ्ढ, छ्थ, छ्ध, छ्फ, छ्भ, झ्ख, झ्घ, झ्छ, झ्झ, झ्ठ, झ्ढ, झ्थ, झ्ध, झ्फ, झ्भ, ठ्ख, ठ्घ, ठ्छ, ठ्झ, ठ्ठ, ठ्ढ, ठ्थ, ढ्ध, ढ्फ, ढ्फ, थ्ख, थ्घ, थ्छ, थ्झ, थ्ठ, थ्ढ, थ्थ, थ्ध, थ्फ, थ्भ, ध्ख, ध्घ, ध्छ, ध्झ, ध्ठ, ध्ढ, ध्थ, ध्ध, ध्फ, ध्भ, फ्ख, फ्घ, फ्छ, फ्झ, फ्ठ, फ्ढ, फ्ध, फ्भ, भ्ख, भ्घ, भ्छ, भ्झ, भ्ठ, भ्ढ, भ्थ, भ्ध, भ्फ और भ्भ किसी शब्द में नहीं आते। फ्फ(यह अरबी और फारसी के शब्दों में मिलता है) और फ्थ(यह अंग्रेज़ी या यूरोपीय शब्दों में मिलता है) अपवाद हैं, जिनका जिक्र ऊपर किया जा चुका है।

ऐसे शब्दों की संख्या काफी है, जिनमें आनेवाले संयुक्ताक्षर दो स्पर्श अल्पप्राणों से नहीं बने होते और संयुक्ताक्षर का दूसरा वर्ण य, ल और व होता है। सत्य, शल्य, सर्व, गर्व, वाक्य, गद्य, पद्य, तारतम्य, नित्य, पार्थक्य, ग्यारह, भोग्या, योग्य, वाच्य, सूर्य, च्यवनप्राश, राज्य, ज्योति, अकाट्य, अन्य, गण्य, प्राप्य, अक्षम्य, सुनम्य, प्रणम्य, कार्य, अनार्य, प्राचुर्य, स्वीकार्य, अनिवार्य, प्राचार्य, प्रत्यय, अक्ल, शक्ल, ग्लूकोज़, प्लवन, ब्लॉग, ब्लॉक, अम्ल, कार्ल, शार्ल, चार्ली, दिल्ली, बिल्ली, हल्ला, परिपक्व, ग्वाला, ग्वाटेमाला, ज्वलन, प्रज्वलन, त्वरण, तत्त्व, द्विपद, द्वार, द्वारपाल, अद्वितीय, धन्वन्तरि, कण्व, सम्वाद, सम्वत्सर, उर्वर आदि इसके उदाहरण हैं।

अंत में हम ऊपर की सारी बातों, नियमों और उदाहरणों के आधार अल्पप्राण और महाप्राण के मामले को सूत्रबद्ध कर रहे हैं-1) अंग्रेज़ी में जिन वर्णों में एच(h) या एस(s) लगता है, वे महाप्राण हैं और बाकी सब अल्पप्राण हैं। 2) अल्पप्राण का द्वित्व होता है। 3) फ, श और स को छोड़कर किसी महाप्राण का द्वित्व नहीं होता। 4) एक ही वर्ग के दो अल्पप्राण या दो महाप्राण मिलकर संयुक्ताक्षर नहीं बनाते। 5) एक ही वर्ग के अल्पप्राण और महाप्राण मिलकर जब संयुक्ताक्षर बनाते हैं, तब पहला वर्ण अल्पप्राण होता है और दूसरा महाप्राण। 6) दो अल्पप्राण जब एक ही वर्ग के न हों, तब संयुक्ताक्षर बना सकते हैं। 7) दो महाप्राण यदि एक ही वर्ग के न हों, तब संयुक्ताक्षर नहीं बनाते। फ्थ इसका अपवाद है। अंग्रेज़ी में नागरी के अधिकतर महाप्राणों का उच्चारण नहीं होता, इसलिए महाप्राण के मामले में अंग्रेज़ी के शब्दों को लिखते समय चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। 8) जब एक वर्ण महाप्राण और दूसरा अल्पप्राण हो और दोनों एक ही वर्ग के नहीं हों, तब संयुक्ताक्षर में पहला वर्ण महाप्राण और दूसरा वर्ण अल्पप्राण होता है। इस सूत्र को हम बहुत कम अपवादों को छोड़कर कहीं भी लागू कर सकते हैं।

सूत्र 8 के अपवाद के लिए हम नात्सीवाद, क्ष और क्ष वाले सभी शब्द, बरक्स(बरअक्स), बॉक्स,, दुग्ध, स्निग्ध, पाट्र्स, काड्र्स, लुत्फ, नीत्शे, कप्स, हॉब्स, मूर्ख, दीर्घ, अर्थ, अर्ध, हर्फ, गर्भ, फर्श, हर्ष, नर्स, अर्हता, तल्ख, कुल्फी, अल्हड़, चार्ल्स, व्हाइट आदि को देख सकते हैं।

एक विशेष बात ध्यान में रखनी चाहिए कि बुद्ध, पश्चिम, श्रम, क्रम आदि में संयुक्ताक्षर में दूसरा वर्ण नीचे है, पहला नहीं; जैसे द्ध द् और ध से बना है, लेकिन ध पहले न लिखकर बाद में या नीचे लिखते या छापते हैं। यह नहीं समझना चाहिए कि बुद्ध में ध पूरा नहीं दिख रहा, तो वहाँ ध् है और इसे बुध्द मान लिया जाय। ऐसी स्थितियों में ऊपर के अक्षर ही आधे हैं और नीचे के पूर्ण रूप में। इसी प्रकार द्व में भी द् पहले है, व बाद में, लेकिन व नीचे लिखते हैं और द् ऊपर।

ध्यान रहे कि भाषा गणित नहीं है, इस कारण कुछ अपवाद भी होते हैं। खासकर विदेशज शब्द अपवाद बना देते हैं।

## अध्याय- 10

### चिन्ह

हल चिन्ह `\` जैसा होता है, जो आकार में छोटा होता है और प्रायः शब्द के अंतिम अक्षर में लगाया जाता है। इसे सामान्यतः हलंत कहा जाता है। ध्यान रहे कि यह प्र या ज्र के र की तरह नहीं लिखा जाता है। यह ऊपर से नीचे आगे की ओर यानी दायीं ओर बढ़ता है। अंत में यह संस्कृत के शब्दों में ही लगता है। अंग्रेज़ी हिन्दी शब्दकोश में भी हल का प्रयोग किया जाता है, जब उच्चारण में व्यंजन में अकार नहीं होता, जैसे 'लिसन्'। यह सामान्य प्रवृत्ति है कि हिन्दी के शब्दों के अंतिम व्यंजन का अकार उच्चारित नहीं होता, जैसे लिखते मोहन हैं, पढते मोहन् हैं। संस्कृत में ऐसा नहीं होता, वहाँ एव बोलते समय अकार के साथ व का उच्चारण होता है। हम जिन्हें आधा अक्षर कहते हैं, वे ही मूल व्यंजन हैं, जैसे क्, ख्, ग्, च्, त् आदि।

हल का प्रयोग अर्थ भी स्पष्ट कर सकता है, जैसे अहम् और अहम के अर्थ का बोध हल के कारण ही स्पष्ट रूप से हो सकता है। अहम् संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ अहंकार है, जबकि अहम अरबी का शब्द है, जिसका अर्थ महत्त्वपूर्ण और गंभीर है; सन् ईस्वी का बोध कराता है, तो सन हवा की सनसनाहट और एक फसल या पौधे का; कीर्तिमान का अर्थ रिकार्ड है और कीर्तिमान् का यशस्वी; अंतर् का अर्थ अंदर है और अंतर का अर्थ फर्क या दूरी। अर्थात्, अकस्मात्, आपात्, सम्यक्, पृथक्, सम्वत्, परिषद्, महान्, जगत्, एवम्, वाक्, एतद्, तद्, हठात्, विराट् आदि ऐसे कुछ प्रमुख शब्द हैं, जिनमें अंत में हल लगाकर लिखा जाना चाहिए। यदि जगत् या उत् को बिना हल के लिखें तो जगज्जननी, जगन्नाथ, उज्ज्वल आदि शब्द हमें समझ नहीं आएंगे। हल के बिना संधि का एक प्रकार व्यंजन सन्धि समझ ही नहीं आएगा। विद्, पुरम्, पट्टनम्, पत्तनम्, या वत् के साथ समाप्त होने वाले शब्द भी हल से खत्म होते हैं, जैसे मूर्तिवत्, पूर्ववत्, मित्रवत्, भाषाविद्, मसूलीपट्टनम् आदि। आत् से समाप्त होने वाले शब्दों को समझने के लिए संस्कृत के शब्दरूप से परिचित होना आवश्यक होगा। जिस शब्द के अंत में अनुस्वार लगा हो, उसमें अनुस्वार की जगह 'म्' भी लिख सकते हैं, जैसे वयं, एवं और स्वयं को वयम्, एवम् और स्वयम्। ऐसा संस्कृत के शब्दों में होता है। हल शब्द के मध्य आ आरंभ में भी लगता है। संयुक्ताक्षर का पहला वर्ण हल से युक्त रहता है, जैसे ड्वार्फ़, धनाढ् य, विद् यालय आदि उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं।

अधिकतम, अष्टम, कार्यरत, अध्ययनरत आदि रत से समाप्त होनेवाले शब्द, दशम, नवम, पंचम, परम, श्रीयुत, सतत आदि शब्दों के अंतिम अक्षर बिना हल के होते हैं। तम वाले शब्द जैसे महानतम, उच्चतम, निम्नतम, न्यूनतम आदि बिना हल के होते हैं, इसका कारण व्याकरण बताता है। 'तम' ('तम्' नहीं) एक शब्दांश है जो सर्वोच्च अवस्था या स्थिति का बोधक है। हम आगे ऐसे शब्दांशों (प्रत्ययों) के बारे में चर्चा करेंगे।

कई बार संयुक्ताक्षर में दूसरे वर्ण को पहले वर्ण के नीचे लिखा जाता है। सबसे ज़्यादा प्रचलन में द् वाले संयुक्ताक्षर हैं। लोग अक्सर द् और ध से मिलकर बने द्ध को द्व लिखते हैं। द में व न जोड़कर ध जोड़ना चाहिए, अगर उद्धार, प्रबुद्ध, क्रुद्ध आदि लिखें। द्व में द् और व मिले हुए हैं, द्वार, द्वंद्व आदि इसके नमूने हैं। उद्घाटन, उद्गार, उद्विकास, उद्धरण आदि को लिखते समय द के निचले हिस्से में बायीं ओर वह अक्षर लिख देते हैं, जो संयुक्ताक्षर में द के बाद आता है या उच्चरित होता है। मात्राएँ द में लगाकर लिखी जाती हैं, जैसे उद्भूत, उद्वेदन, उद्विग्न आदि में द में व्यंजन जुड़ा है और ऊकार, एकार, ईकार द में लगाए गए हैं।

हालांकि हिन्दी में हल नहीं लिखने की परंपरा प्रबल हो चली है, फिर भी शुद्धता की बात करें, तो इसका प्रयोग व्यर्थ नहीं है। बाकी जगहों पर हल को न भी लगाएँ तो कम से कम उन शब्दों में हल लगाना ठीक रहेगा, जो हल के रहने और न रहने पर भिन्न भिन्न अर्थ देने लगते हैं। शब्द के मध्य या आरंभ में अपेक्षित स्थान पर हल लगाना ज़रूरी भी है और ऐसी परंपरा भी है।

## अध्याय- 11

### अनुस्वार और चंद्रबिन्दु

अनुस्वार और चंद्रबिन्दु इस भाग की चर्चा के विषय हैं। धीरे धीरे चंद्रबिन्दु का प्रयोग कम होता जा रहा है। भारत सरकार का प्रकाशन विभाग भी अनुस्वार का ही प्रयोग करता है, चंद्रबिन्दु का नहीं। अगर हम चंद्रबिन्दु की जगह अनुस्वार का प्रयोग करते हैं, तो हंस और हँस या बाकी(शेष) और बाँकी(तिरछी) में फर्क कैसे करेंगे! परंपरा यह रही है कि अ या अकारयुक्त व्यंजन; आ या आकारयुक्त व्यंजन; उ या उकारयुक्त व्यंजन; ऊ या ऊकारयुक्त व्यंजन और ए के साथ चंद्रबिन्दु का प्रयोग करते हैं। अँधेरा, फँसना, डँसना, अँतड़ी, कहानियाँ, काँटा, आँख, आँसू, उँगली, पहुँच, ऊँघना, ऊँच, ऊँट, पूँछ, हूँ, भाषाएँ, माँएँ आदि शब्द उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं। चंद्रबिन्दु का प्रयोग इ, इकारयुक्त व्यंजन, ई, ईकारयुक्त व्यंजन, ऐ, ऐकारयुक्त व्यंजन, ओ, ओकारयुक्त व्यंजन, औ और औकारयुक्त व्यंजन के साथ नहीं होता, लेकिन समांतर कोश(थिसारस) वाले अरविन्द कुमार का मानना है कि अब कम्प्यूटर युग में तकनीकी समस्या नहीं होने के कारण इनके साथ भी चंद्रबिन्दु का प्रयोग होना चाहिए, जैसे इँटकोहरा, चीँटी, औँस, छौँक, पैँच, चौँच आदि। मोबाइल पर अनुस्वार की जगह चंद्रबिन्दु कई बार दिखता है। हम यह कहना चाहेंगे कि परंपरा से चंद्रबिन्दु का प्रयोग कहाँ नहीं होता, यह तो पता है ही, तब हम अरविन्द कुमार की सलाह को न भी मानें तो कोई परेशानी नहीं है। हाँ, उनकी सलाह नागरी लिपि को और वैज्ञानिक बना सकती है, यह कहा जा सकता है। हमसब चंद्रबिन्दु का उच्चारण जहाँ करते हैं, वहाँ अनुस्वार का प्रयोग करने से बचना और चन्द्रबिन्दु का प्रयोग करना ठीक रहता है। नागरी लिपि में जो लिखते हैं, वही पढते हैं, यह मान्यता चन्द्रबिन्दु के प्रयोग से बल प्राप्त करती है।

माँ को हिन्दी पट्टी वाले बिना अतिरिक्त ध्यान दिए माँ कहते हैं, मा नहीं। 'मैं', 'हूँ' और 'नहीं' को लेकर भी यही बात कही जा सकती है। स्थान का बोध कराने वाले शब्द जैसे यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, यहीं, वहीं आदि वाले शब्द चंद्रबिन्दु के उच्चारण वाले हैं। स्त्रीलिंग बहुवचन रूपों में भी चंद्रबिन्दु का उच्चारण होता है, जैसे लड़कियाँ, सब्ज़ियाँ, गाएँ, भाषाएँ, बहनें, किताबें, कलमें आदि। जिन शब्दों के अन्त में अकार नहीं होता, लेकिन अनुस्वार या चंद्रबिन्दु लगता है, उनमें अन्त में चंद्रबिन्दु का उच्चारण होता है, जैसे माँ, आसमाँ, कहाँ, हिन्दोस्ताँ, चटाइयाँ, मिठाइयाँ, कहीं, ज़मीं, उन्हीं, तुम्हीं, थीं, कहूँ, चलूँ, हैं, मैं, चलें, मरें, जिएँ, कहें, सहें, रहें, भाषाएँ, आहें, राहों, गाँवों, साधुओं, बसौं, कहौं आदि। चन्द्रबिन्दु का उच्चारण नाक की सहायता से होता है। कहा और कहाँ के उच्चारण में जो अन्तर है, उसे आप उच्चारण द्वारा स्वयं महसूस कर सकते हैं। जिस शब्द के अन्त में अकार हो, वहाँ अनुस्वार का प्रयोग कर सकते हैं, चंद्रबिन्दु का नहीं, जैसे स्वयं, सायं, अहं आदि सही हैं, स्वयँ, सायँ, अहँ आदि नहीं।

आटा, चाहिए, नाक, भूसा, हाथ आदि शब्दों में चंद्रबिन्दु का प्रयोग नहीं होता।
अनुस्वार नहीं लगाने की आदत भी लोगों में खूब देखी जाती है। खाने(खाना से बना) और खानें(खदानें), होगे और होंगे, मादा और माँदा आदि में फर्क बिना अनुस्वार लिखे नहीं किया जा सकता।

## अध्याय- 12

### अनुस्वार

एक बार हमारे दिमाग़ में आया कि हिन्दी में जो लिखते हैं, वही पढ़ते हैं, फिर ऐसा क्यों कि पंकज, वंदन, अंडा, कंपन सबमें अनुस्वार लिखते हैं और उच्चारण सबका अलग अलग है! पता चला कि अनुस्वार के अलग अलग उच्चारण के पीछे निश्चित नियम हैं और ये खासकर अहिन्दीभाषी लोगों के लिए एक बड़ी समस्या का समाधान भी रखते हैं। हमने हेमा मालिनी को ऊँचे को ऊन्चे कहते सुना है, असिन को पैंतीस को पैन्तीस कहते सुना है। ये दोनों मूल रूप से अहिन्दीभाषी हैं। हम यहाँ अनुस्वार के ऊपर चर्चा करेंगे।

शुरू में ही वर्णों के उच्चारण स्थान बताए जा चुके हैं। उस भाग को ठीक से याद रखना ज़रूरी है। यहाँ हमें उसकी ज़रूरत पड़ती है। स्पर्श व्यंजनों से आप परिचित हो चुके हैं। कवर्ग से पवर्ग तक सभी वर्गों का अंतिम वर्ण पंचमाक्षर कहा जाता है। किसी भी स्पर्श वर्ण के पहले अनुस्वार होने पर संगत वर्ग का अंतिम वर्ण उच्चरित होता है। कंगण, पंख, गंगा, कंघी, पंक और बैंक में कवर्ग के वर्ण के पहले अनुस्वार है, इसलिए इनके उच्चारण क्रमशः कङ्गण, पङ्ख, गङ्गा, कङ्घी, पङ्क और बैङ्क करेंगे। पुरानी किताबों में ङ् और ञ् का प्रयोग ज़्यादा किया जाता था। संस्कृत में नियम है कि पंचमाक्षर की जगह अनुस्वार लगा सकते हैं। शंका को शङ्का भी लिख सकते हैं। टंकण में अनुस्वार ज़्यादा सुविधाजनक था, इसलिए इसका प्रयोग ज़्यादा होने लगा। चवर्ग के लिए पंच, पंछी, पंजा, झंझट को देख सकते हैं। हालांकि इनका शुद्ध उच्चारण पञ्च, पञ्छी, पञ्जा, झञ्झट होना चाहिए लेकिन ञ् की जगह न् का उच्चारण ही अब प्रचलित हो गया है। संचय, संचार आदि को सन्चय, सन्चार ही उच्चरित किया जाता है। कंटक, कंठ, पाखंड, पंढेर जैसे शब्द टवर्ग के लिए देख सकते हैं। कण्टक, कण्ठ, पाखण्ड, पण्ढेर के रूप में इनका उच्चारण होना चाहिए। ण की जगह न् की परंपरा ज़्यादा हो चली है। सामान्यतः लोग कन्टक, कन्ठ आदि कहते हैं। इंडिया और एंड को इन्डिया और एन्ड न लिखकर इण्डिया और एण्ड लिखने के पीछे यही संगत वर्ग के पंचमाक्षर का नियम काम करता है। हालांकि अंग्रेज़ी के शब्दों में ण, ञ, ङ जैसे वर्ण ही नहीं हैं, फिर भी हम पेण्ट, कैण्ट, बैङ्क लिखते हैं, पेन्ट, कैन्ट, बैन्क नहीं। तवर्ग के साथ भी यही नियम है। पंत, पंथ, मंद और गंध को क्रमशः पन्त, पन्थ, मन्द और गन्ध कहते हैं। वीरेन्द्र, क्रन्दन आदि को वीरेंद्र, क्रंदन की तरह भी लिखने के पीछे यही नियम काम करता है। कांति को कान्ति लिख सकते हैं, शान्ति को शान्ति।अनुस्वार नहीं लिखने पर क्या लिखें, यह समस्या भी संगत वर्ग के पंचम वर्ण से हल होती है। पवर्ग का अंतिम अक्षर म है, इसलिए कंपन, संबल, कंबल, रंभा, खंभा और गुंफन को कम्पन, सम्बल, कम्बल, रम्भा, खम्भा और गुम्फन बोलना चाहिए। ङ और ञ का प्रयोग बहुत कम होता है, इसलिए इनकी जगह अनुस्वार का प्रयोग ठीक रहेगा। टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के साथ संगत पंचम वर्ण का प्रयोग करना चाहिए। हिन्दी पट्टी में कंबल, डंडा, पन्त और गंगा जैसे शब्दों के सही उच्चारण लोग बिना प्रयास के समाज स सीख लेते हैं।

अब कुछ जटिलताओं पर चर्चा करते हैं। यदि पंचम वर्ण का द्वित्व हो, तब क्या हम अनुस्वार का प्रयोग कर सकते हैं? सम्मति, सम्मिलन, चौकन्ना, अन्न, अक्षुण्ण, सम्मान आदि ऐसे ही शब्द हैं। ङ और ञ के द्वित्व से युक्त कोई शब्द संभवतः है ही नहीं। संमिलन, चौकंना, संमति, अंन, अक्षुंण, संमान नहीं लिखे जाते। पंचम वर्ण का द्वित्व होने पर अनुस्वार कहीं नहीं लगाया जाता। ऐसी स्थिति में हमेशा अनुस्वार की जगह पंचम वर्ण दोहरे रूप में लिखे जाते हैं। अगर दो पंचम वर्ण साथ हों, तब अनुस्वार का प्रयोग भ्रम पैदा कर सकता है। इसलिए वहाँ भी अनुस्वार से बचना चाहिए। जन्म को जंम, निम्न को निंन, उन्मेष को उंमेष, सन्मार्ग को संमार्ग, तन्मय को तंमय, षण्मुख को षंमुख, मृण्मय को मृंमय नहीं लिखा जाना चाहिए। संमति लिखने से सम्मति(राय) और सन्मति(सद्बुद्धि) में भेद करना भी मुश्किल हो सकता है।

य, र, ल और व; ये चार वर्ण अंतःस्थ कहे जाते हैं। श, ष, स और ह ऊष्म कहे जाते हैं। इनके पहले अनुस्वार हो तो उच्चारण कैसे करेंगे! इनके पहले न् और म् न लगाकर, अनुस्वार का प्रयोग करना ठीक रहता है, लेकिन उन्हें, अन्य, अन्वय, सैन्य , अन्वेषण, अन्याय ,सम्यक्, नम्र को उंहे, अंय ,अंवय ,सैंय, अंवेषण, अंयाय, संयक्, नंर नहीं लिखा जाता। इस तरह लिखने पर ये सही नहीं माने जाते। य और व के पहले अनुस्वार की परंपरा है। य और श तालव्य वर्ण हैं। तालु द्वारा उच्चरित होने वाले वर्णों में ञ अनुनासिक है। यह सामान्य सी बात है कि उच्चारण में जीभ एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों को साथ रखना चाहती है। इस आधार पर संयोग, संयम, संयत, संयंत्र, संयुक्त, संयोजन आदि का उच्चारण सञ्योग, सञ्यम, सञ्यत, सञ्यन्त्र, सञ्युक्त, सञ्योजन के रूप में होता है। य के पहले अनुस्वार की जगह ञ् लिखने की परंपरा नहीं है। य के पूर्व आने वाले अनुस्वार के लिए ञ् की जगह न् कहने की भी परंपरा है। श के पहले अनुस्वार ही लिखते हैं; न्, म् आदि नहीं। विदेशी शब्द अपवाद की स्थिति भी उत्पन्न करते हैं, जैसे ग्राम्शी को ग्रांशी नहीं लिखते, मुंशी को मुञ्शी नहीं लिखते। श तालव्य वर्ण है लेकिन श के पहले का अनुस्वार ञ् नहीं बोला जाता। श के पहले का अनुस्वार न् की तरह बोला जाता है, जैसे संशय, संशोधन, संश्लिष्ट आदि। र और ष मूर्धन्य वर्ण है और मूर्धन्य अनुनासिक ण है। र के पहले अनुस्वार ण् की तरह बोला जाना चाहिए, लेकिन न् ही बोला जाता है, जैसे संरक्षण। र के पहले भी पंचम वर्ण की जगह अनुस्वार लिखा जाता है। ष के पहले अनुस्वार वाला शायद एक भी शब्द नहीं है। ल और स, दन्त्य वर्ण हैं। न दन्त्य वर्णों का अनुनासिक वर्ण हैं। ल और स के पहले अनुस्वार ही लिखते हैं, न् नहीं, जैसे संसार, संस्कृत, संलिप्त, संलयन, संलग्न आदि। इनके सन्सार, सन्लग्न जैसे रूप प्रचलित नहीं हैं। व दन्तौष्ठ्य वर्ण है और अनुस्वार के पहले आने पर म् के रूप में उच्चरित होता है; जैसे संवत्, संवाद, संवरण, संविदा, संवहन, संवत्सर, संवेदना आदि। व के पहले अनुस्वार का प्रयोग ही उचित है, न् या म् का नहीं। सम्वेदना और समवेदना दो अलग शब्द हैं, भ्रम की स्थिति से बचना चाहिए। ह कंठ्य वर्ण है और ङ कंठ्य अनुनासिक वर्ण है। इस आधार पर संहार, संहति, संहिता आदि को सङ्हार, सङ्हति, सङ्हिता पढना या लिखना चाहिए, लेकिन ह के पहले भी अनुस्वार का प्रयोग हो सकता है, ङ् का नहीं। कुछ शब्दों को छोड़कर, ह के पहले अनुस्वार को भी प्रायः न् उच्चारित करने की ही परंपरा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुस्वार के लिए न् पढ़ने की परंपरा बहुत ज़्यादा ताक़त से बैठी है। अगर प्रचलन की बात करें, तो कवर्ग और पवर्ग के पहले अनुस्वार का उच्चारण क्रमशः ङ् और म् किया जाता है और बाकी किसी भी वर्ण के पहले अनुस्वार का उच्चारण न् किया जाता है। इस बात को वैज्ञानिक नियम न समझकर, व्यावहारिक सूत्र ही माना जाय, क्योंकि सिंह, सिंहल, संवाद, संविदा जैसे अपवाद भी मिल सकते हैं। अनुस्वार का प्रयोग वर्ग और वर्ण देखकर करना चाहिए। य, र, ल, व, श, स, ष और ह के पहले अनुस्वार लगाना ज़्यादा सुविधाजनक है। सौंग (song), लौंग(long) जैसे शब्द भी ङ् की ध्वनि के साथ उच्चरित होते हैं, भले ही अंग्रेज़ी में ङ् नहीं होता। संयुक्ताक्षर के ठीक पहले अनुस्वार होने पर संयुक्ताक्षर के पहले भाग यानी वर्ण के अनुसार चलना पड़ता है, जैसे स्वातंत्र्य में त्र्य है और इसका पहला भाग त् है, तब स्वातन्त्र्य में तवर्ग का पंचम अक्षर न् अनुस्वार की जगह आ सकता है। इंकार को संगत वर्ग के पंचमाक्षर वाले नियम से इङ्कार कहना ग़लत है। इसे इन्कार पढ़ते हैं। इम्पॉर्टेंट(important) को भी इम्पॉर्टेण्ट नहीं पढते। यहाँ ट होने पर भी ण् की जगह न् ही उच्चरित होगा। विदेशज शब्दों में संगत भाषा पर ध्यान देकर उच्चारण करना चाहिए। अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि में ङ, ञ् या ण् की जगह न् का उच्चारण ही अधिकांश शब्दों में होता है। जंग, गैंग, बैंक आदि इसके अपवाद हैं।

## अध्याय- 13

### नुक़्ते

नुक़्ते की बात करें, तो हिन्दी में अनेक वैयाकरण और भाषावैज्ञानिक इसके प्रयोग का समर्थन करते हैं। हिन्दी में नुक़्ते के प्रयोग के विरोध में भी अनेक वैयाकरण और भाषावैज्ञानिक हैं। हम यहाँ नुक़्ते के प्रयोग के चलन को स्वीकारते हुए उस पर चर्चा करेंगे।

नुक़्ते वाले पाँच अक्षर क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ हैं। इनमें ज़ और फ़ अंग्रेज़ी में भी उच्चारित होते हैं। कई बार ड़ और ढ़ को मिलाकर नुक़्ते वाले अक्षरों की संख्या सात मानी जाती है। हम ड़ और ढ़ पर विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। अंग्रेज़ी (रोमन में कहना ज़्यादा उचित है) में भी क़, ग़, ज़ और फ़ शब्दों पर असर डालते हैं। Gulzarbagh (गुलज़ारबाग़), Zakir (ज़ाकिर), Farhan (फ़रहान) और Quran (क़ुरान) जैसे शब्द इसके उदाहरण हैं। जहाँ क के लिए k, वहीं क़ के लिए q लिखा जाता है। इसी तरह ग के लिए g, ग़ के लिए gh, ज के लिए j, ज़ के लिए z, फ के लिए ph और फ़ के लिए f का प्रयोग होता है। नुक़्ते की जानकारी के बाद ही हम कुछ अक्षरों को रोमन में लिखते समय सही ढंग से व्यक्त कर सकेंगे। अकबर और इक़बाल में क के लिए 'के' लिखें या 'क्यू', यह बिना नुक़्ते के स्पष्ट नहीं हो सकता।

भोजपुरी फ़िल्मों में भी नुक़्ते का प्रयोग नाम में अक्सर दिखाई पड़ने लगा है, जो उचित नहीं लगता। भोजपुरी में नुक़्ते वाले वर्ण स्वीकृत नहीं हैं। भोजपुरी गीत में भी हमने गाते समय ज़ान शब्द सुना है। भोजपुरी के गायक को उच्चारण की कुछ खास जानकारी नहीं है, हमें पूरी उम्मीद है। जबरदस्ती नुक़्ते को मिलाने की बीमारी ठीक नहीं है। इसी तरह जीवन को ज़ीवन कहना, एलकेजी को एलकेज़ी कहना भी सही नही है। कहाँ नुक़्ता है और कहाँ नहीं है, यह जानना कुछ मेहनत के बाद संभव हो पाता है। यह भी एक तथ्य ही मानकर चलें कि नुक़्ते को लेकर आपस में उनलोगों में भी असहमति है, जो नुक़्ते के प्रयोग के समर्थक हैं।

अब हम नुक़्ते के कारण शब्द के अर्थ में परिवर्तन के कुछ उदाहरण देखेंगे।

कदम का अर्थ कदम्ब के पेड़ से जुड़ा है, जबकि क़दम का अर्थ पग है। हल्का या हलका (कम भार, पतला आदि) मात्रा या परिमाण से जुड़ा शब्द है, तो हल्क़ा या हलक़ा परिधि, घेरा, क्षेत्र के लिए मीडिया का काफी प्रचलित शब्द है।

खुदा (खुदा हुआ) और ख़ुदा (ईश्वर), खान (खदान) और ख़ान (फ़ारसी शब्द है, जिसका अर्थ सरदार, मालिक, स्वामी है और यह जातिसूचक भी है), गुल (फ़ारसी शब्द, अर्थ - पुष्प या फूल; खाने वाला नशीला पदार्थ भी है और बिजली जाने को भी गुल कहते हैं) और ग़ुल (फ़ारसी शब्द, अर्थ - शोर), नागा (जातीय समूह या नंगे रहने वाल साधु) और नाग़ा (अवकाश या ग़ैरहाज़िरी), जरा (वृद्धावस्था) और ज़रा (अरबी शब्द, अर्थ - थोड़ा, कम), जंग (फ़ारसी शब्द, अर्थ - युद्ध) और ज़ंग (फ़ारसी शब्द, जो लोहे में लगने वाले मोर्चे को बताता है), जाती (जाना क्रिया से जुड़ा या चमेली के लिए संस्कृत शब्द) और ज़ाती (अरबी शब्द, अर्थ -वस्तुगत, व्यक्तिगत, निजी), सजा (सजाया हुआ) और सज़ा (फ़ारसी शब्द, अर्थ - दंड), दर्ज (बही खाता लिखना, लिखा हुआ; अरबी शब्द है यह भी) और दर्ज़ (अरबी शब्द, अर्थ - दरार), राज (राज्य, शासन) और राज़ (फ़ारसी शब्द, रहस्य), फन (साँप की जीभ) और फ़न (कला), असफल (विफल) और असफ़ल (नीच, अधम) आदि कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं, जिनमें नुक़्ते के कारण अर्थ बदल जाता है।

## अध्याय- 14

### अरबी और फ़ारसी के शब्द

इस भाग में हम अरबी और फ़ारसी के उन शब्दों को देखेंगे, जो ज़्यादा प्रचलित हैं और जो नुक़्ते वाले या बिना नुक़्ते के क, ख, ग, ज और फ वाले हैं। कुछ शब्दों का प्रचलन भोजपुरी में इस तरह है कि कभी लगता ही नहीं कि वे विदेशी शब्द हैं। 'बख़रा' एक ऐसा ही शब्द है, जिसका अर्थ हिस्सा होता है। हम अपने विषय पर वापस आते हैं।

क़ वाले कुछ शब्द - आक़ा, अहमक़, अशफ़ाक़, क़रीना, बाक़ी, बुर्क़ा, इंतिक़ाल, इक़रार, शौक़, औक़ात, इक़बाल (तेज, प्रताप, स्वीकृत), हक़ीक़ी, तरक़्क़ी, तहक़ीक़, हक़, तक़दीर, तक़ाज़ा, हुक़ूक़, क़ुसूर, बेक़रार, बंदूक़, हिक़ारत, लक़वा, रक़म, रक़ीब, लियाक़त, सबक़, मुक़ाम, सादिक़, तरीक़ा, वाक़ई, वाक़या, मक़बरा, ताक़, सलीक़ा, वाक़िफ़, मक़बूल, क़ायदा, मुक़दमा, क़तई, क़ालीन, क़लम, क़ाश्त, माशूक़ा, माशूक़, क़ुव्वत, क़ायल, क़सम, नुक़्ता, मुताबिक़, नुक़्सान, मुलाक़ात, क़द, क़ैसर, मक़सद, नक़द, क़र्ज़, क़ुरबान, नक़ली, क़ुदरत, क़लगी, क़रीब, नक़्शा, क़बीला, क़ुबूल, तलाक़, क़ब्र, क़ब्ज़, क़ीमा, क़ब्ज़ा, नक़्क़ाल, नालायक़, क़ौम, क़ैदी, क़ायम, क़यामत, नक़ाब, क़ैदर, क़ुर्क़, तरीक़ा, सन्दूक़ आदि। इनमें क का प्रयोग न करके क़ होना चाहिए।

कुछ शब्द जिनमें क़ की जगह क है- चालाक, दुकान, किताब, कातिब, कारखाना, कारगर, कारीगर, मुल्क, किफ़ायत, कुफ़्र, कलाम, शरीक, शिकन, मुवक्किल, काफिर, कारतूस, मिल्कियत, शिरकत, नाकारा, कफ़न, सुकून, किशमिश, कारवाँ, नमकहराम, नेक, ऐनक, किरदार, करिश्मा, किसान, कशिश, कामयाबी, यकायक, करीम, कसरत, काफूर, शिकार, नामुमकिन, काहिल, अकबर, इनकार, बहकावा, बरकत, तैराकी, हुकुम, हुकूमत, तरकीब, बिल्कुल, पाक, तसकीन, इनकार, कमबख़्त, कमसिन, कमज़ोर, कंगाल, कोताही, कोतवाल, कोफ़्त, कोशिश, मालिक, कोहराम, कीमियागर, कैफियत, कमसिन, बेबाक आदि।

काश्त और कलम जैसे अनेक शब्द दोनों रूपों में मिलते हैं। शक का अर्थ संदेह है, शक़ का फटा हुआ या विदीर्ण।

ख़ वाले कुछ शब्द- ख़राश, ख़राब, ख़र्राटा, ख़ातिर, ख़र्च, ख़ुर्रम, ख़रगोश, ख़रीद, खूँख़ार, ख़ू (स्वभाव, आदत, प्रकृति), ख़ूनी, ख़ौफ़, ख़रीफ़, ख़ज़ाना, ख़ुश्क, ख़ाका, ख़ालिस, ख़ामोश, ख़ाना (भोजन वाला नहीं), ख़ानदान, ख़बर, ख़ातून, ख़ादिम, ख़ारिज, ख़ेमा, ख़ास, ख़ासियत, ख़बर, ख़त्म, ख़ैर, ख़ैरात, ख़िलाफ़, तख़्त, पुख़्ता, ख़फ़ा, ख़तरनाक, ख़तरा, अख़बार, ख़िताब, इख़्तियार, ख़ुशहाल, ख़्याल, इन्तिख़ाब (चुनाव, इलेक्शन), बुख़ार ख़त, ख़ून, ख़ुशी, ख़्वाब, तारीख़, ख़ुदा, तख़ल्लुस, आख़िर, आख़िरत, बख़ूबी, दाख़िला, दाख़िल, मुख़्तार, शख़्स, दरख़्त, नाख़ून, मुख़्तलिफ, सख़्त, सुर्ख़, शाख़, रुख़, रुख़सार, दोजख़ (नरक), ज़ख़्म, रुख़सत, दरख़्वास्त, ख़ाली, रुख़ आदि।

ख वाले कुछ शब्द- बरखुरदार, आँख, खाता, खाज, सूराख, खुरदरा, खजूर आदि।

आखिर और आख़िर जैसे अनेक शब्द दोनों रूपों में प्रचलित हैं।

ग़ वाले कुछ शब्द - ग़रीब, आग़ाज़, बाग़ (उद्यान, उपवन), आग़ोश, बाग़बान, चिराग़, पैग़ाम, बाग़ी, चुग़ली, तमग़ा, बग़ावत, बग़ैर, बलग़म, तेग़, दाग़, दग़ा, ग़ज़ब, गुल, दिमाग़, मशग़ूल, सुराग़, ग़म, शग़ल, नाग़ा, रौग़न, ग़ौर, सौग़ात, ग़ाफ़िल, ग़ालिब, ग़बन, ग़दर, ग़ज़ल, ग़ुबार, ग़ायब, ग़ुस्लखाना, मग़ज, ग़ुलाम, ग़लत, वरग़ालना, ग़ुरूर, बालिग़ आदि।

ग वाले कुछ शब्द- गर्दिश, गरम, गिरोह, गिरेबाँ, गुज़रना, गुफ़्तगू, गश्त, गुलदस्ता, गुलाब, गुमनाम, गुनाह, गुनहगार, गुंजाइश, गंदगी, गोश्त, गवाह, दरगाह, सादगी, दंग, दंगा, गारा, निगाह, गाह, शगूफा, गुर, गुज़ारिश, हंगामा, गिरामी, अँगूठा, अँगुली, तंग, गर्म, बन्दरगाह, बेगार, बेगाना, अंगूर, अंग्रेज़ी आदि। इनमें ग़ नहीं है।

ज़ वाले कुछ शब्द - अर्ज़ (क़ीमत, मूल्य), इज़ाफ़ा, इज़हार, इल्ज़ाम, अंदाज़, अफ़रोज़, हाज़िर, हज़रत, हुज़ूर, आरज़ू, आज़ाद, औज़ार, एवज़, बज़्म, नज़र, तमीज़, बाज़ू, बाज़ी, बाज़, बाज़ार, तंज़ीम, जायज़, जाँबाज़, बेनज़ीर, पाज़ेब, बुज़दिल, तहज़ीब, ताज़गी, जिल्दसाज़, मिज़ाज, पुर्ज़ा, तेज़, बुज़ुर्ग, बदहज़मी, बदज़ात, जनाज़ा, जहाज़, परहेज़, मंज़र, परवाज़, मंज़िल, ताज़ा, लाज़िम, लज़्ज़त, लज़ीज़, अज़ीज़, अज़ीम, आजिज़, हैज़ा, दर्ज़ी, ज़्यादा, मुंतज़िम, ज़मींदोज़, मंज़ूर, नाज़, मोज़ा, दरवाज़ा, मज़हब, ज़हरीला, नज़्म, ज़ेवर, मुहाफिज़, ज़र, ज़रा, ज़र्रा, मर्ज़, महज़, नज़दीक, ज़ैतून, ज़र्द, नाचीज़, चीज़, ज़ायका, वुज़ू, वज़ीर, वज़न, रज़्म, ज़रूरी, ज़िकर, ज़हर, ज़िला, ज़ब्त, रोज़ी, मुलाज़िम, ज़िल्लत, सुज़ाक, नज़राना, ज़हमत, मालगुज़ारी, रियाज़, मालगुज़ारी, मौज़ा, ज़िम्मा, साज़िश, मेज़बान, साज़, रेज़गारी, ज़हीन, मौज़ूँ, मज़दूर, मिज़ाज, मंज़र, ज़ंजीर, मज़मून, मज़ार, ज़िद्द, मज़बूत, ज़ंग (मोरचा, भोजपुरी में मुर्चा, लोहे का ऑक्साइड), ज़ाहिर, ज़ुल्म, मज़ा, ज़मीन, ज़ुकाम, ज़मीन, ज़मानत, नासाज़, ज़बानी, ज़िन्दगी, इजाज़त, ज़रूरयात, पाकीज़ा आदि।

ज वाले शब्द - अजगर, उजरत, अंजुमन, जादू, जादूगर, जुदा, अनजान, ईजाद, बजाए, जानी, बिजली, तरजीह, बाजा, तर्जुमा, जाम, तिजारत, जागीर, हाजी, हाजत, जायदाद, लाजवाब, जानवर, जाहिल, जुराब, जुर्म, जश्न, जिगर, जल्लाद, जमात, जुलूस, जमा, जमाना, जुंबिश, जुमला, जंजाल, जंग (लड़ाई), जंगल, जन्नत, जुनून, नुजूम, नजूमी, हुजूम, जोरू, जवाहर, जोर, जोश, जूही, जौहर, जिहाद, जहन्नुम, जुबान, हर्ज, दर्जा, शजर, मजबूर, अजूबा, मौजूद, रंज, सूजी, इलाज, मजीद, अजीब, हिज्र, बावजूद, मुजरिम, मस्जिद आदि।

जलील का अर्थ पूज्य है, तो ज़लील का अर्थ तुच्छ, नीच, अपमानित है। बाज का अर्थ बिना, घोड़ा आदि है; जबकि बाज़ एक शिकारी पक्षी है। तेज का अर्थ चमक, प्रताप, गर्मी आदि है और तेज़ का अर्थ तीखा, उग्र, प्रचंड आदि है। तेज़ फ़ारसी का शब्द है।

फ़ वाले कुछ शब्द - इत्तिफ़ाक़, आफ़त, इफ़रात, आफ़ताब, अफ़सर, अशरफ़ (भद्र, बहुत शरीफ़), इस्तीफ़ा, अफ़ग़ान (अफ़ग़ानिस्तान का रोमन रूप Afghanistan याद करें; नुक़्ते के बिना Aphganistan हो जाएगा), उलफ़त, अफ़वाह, असफ़ल (नीच, अधम), अफ़ीम, अशर्फ़ी, इंसाफ़, फ़न (कला), तौफ़ीक़, जफ़ा, हर्फ़, तक्लुफ़, तोहफ़ा, तारीफ़, तफ़सील, फ़रोश, हिफ़ाज़त, तरफ़, बर्फ़, हैफ़ (बहुप्रचलित अरबी शब्द, जिसे प्रायः हैफ या हैप भी कहते हैं; अर्थ - अफ़सोस, हाय), फ़ीता, फ़िरोज़, फ़ैसला, लफ़्फ़ाज़, फ़ैज़, लिफ़ाफ़ा, फ़ौरन, फ़ौलाद, फ़ीसद, फ़र्क़, फ़िरक़ा, फ़रमान, फ़ितरत, फ़ितूर, फ़िदा, फ़िरंगी, फ़रोख़्त, फ़िलहाल, फ़रेब, फ़साना, फ़िजा, फ़सल, फ़ुज़ूल, फ़क़त, फ़िक़रा, फ़लसफ़ा, फ़ना, फ़ज़ीहत, फ़क़ीर, फ़तवा, फ़राओ, फ़रमाइश, फ़तह, फ़रियाद, फ़ौज, फ़ासला, फ़ालतू, फ़ायदा, फ़ानूस, फ़रार, फ़रामोश, फ़िराक़, फ़र्ज़ी, फ़तेह, तूफ़ान, फ़र्श, साफ़, फ़रिश्ता, सफ़ाई, मुफ़लिस, सिर्फ़, सिफ़र, फ़ारस, शराफ़त, ज़फ़ा, वज़ीफ़ा, सिफ़ारिश, ज़फ़ा, सैफ़ (गर्मी), मुफ़ीद, वफ़ा, सफ़र, सफ़ेद, दफ़्तर, दफ़्ती, मसरूफ़, दफ़न, रदीफ़, मुफ़्त, रफ़ू, रफ़्तार, रफ़ी (उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम), लुत्फ़, रफ़ीक़ (मित्र, सहायक), नावाक़िफ़, सरफ़रोश, इरफ़ान आदि।

कुछ ऐसे शब्द, जिनमें फ़ की जगह फ होना चाहिए - फाँसी, फुर्ती, फिर आदि।

रफी का अर्थ कालिख है, रफ़ी का श्रेष्ठ।

इनमें कुछ ऐसे शब्द भी आ गए होंगे, जो अरबी या फ़ारसी के नहीं होंगे। हम शब्दकोश की तरह शब्दों को सजा नहीं पाए हैं, इसका अफ़सोस है। नुक़्ते का प्रयोग जिस मूल शब्द में किया गया है, उससे जुड़े शब्द में भी नुक़्ता होगा, जैसे ज़्यादा या ज़ियादा से जुड़े ज़ियादती, ज़िन्दा से जुड़े ज़िन्दादिल, ज़िन्दगी, ज़िन्दादिली आदि में। यह बात मूल शब्द के नुक़्ते वाले अक्षर के लिए सही है। ठीक इसी तरह

जिस मूल शब्द में नुक़्ता नहीं है, उससे बना शब्द भी नुक़्ता के बिना होगा, जैसे जुर्म से बने मुजरिम, मुजरिमाना आदि में ज में नुक़्ता नहीं है।

## अध्याय- 15

### अरबी और फ़ारसी के शब्द

इस बार फिर से हम अरबी और फ़ारसी के शब्दों पर चर्चा करेंगे। पहले नुक़्ते के प्रयोग को लेकर कुछ प्रत्ययों और उपसर्गों की तरफ़ चलते हैं। प्रत्यय वैसे शब्दांश हैं, जो शब्द के अंत में लगकर अर्थ परिवर्तन करते हैं, जैसे ता, त्व, कारी आदि। इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। इनपर विस्तृत चर्चा बाद में होगी। यहाँ हम उर्दू के उन प्रत्ययों को ही देखेंगे, जो नुक़्ते के प्रयोग से जुड़े हैं या फिर जिनमें बिना नुक़्ते के क या ग आते हैं।

1) नाक प्रत्यय वाले शब्दों में क़ नहीं है, जैसे दर्दनाक, ख़तरनाक, खौफ़नाक आदि।

2) कार प्रत्यय वाले शब्द जैसे जानकार, पेशकार, पच्चीकार आदि में भी कार में क़ नहीं है। यह हिन्दी संस्कृत के कार प्रत्यय से अलग है।

3) गर या गरी वाले शब्द, जैसे जादूगर, जादूगरी, बाज़ीगर, बाज़ीगरी, सौदागर आदि में ग़ का प्रयोग नहीं होता।

4) गी वाले शब्द, जैसे दिल्लगी, बंदगी, सादगी, आवारगी, मौजूदगी आदि में ग़ नहीं है।

ख़ाना, ख़ोर, ज़ाद, ज़नी, बाज़, बाज़ी, ख़ेज़, ज़दा, साज़ आदि प्रत्यय ख़ या ज़ वाले हैं। ख़ाना से बने शब्द कसाईख़ाना, जेलख़ाना, तोपख़ाना, दवाख़ाना, यतीमख़ाना आदि; ख़ोर वाले शब्द, जैसे आदमख़ोर, घूसख़ोर, चुगलख़ोर, मुफ़्तख़ोर, रिश्वतख़ोर, हरामख़ोर आदि; ज़ाद, ज़ादा, ज़ादी वाले शब्द जैसे आदमज़ाद, शहज़ादा, शहज़ादी; ज़नी वाले शब्द जैसे राहज़नी, आगज़नी; बाज़ और बाज़ी वाले शब्द जैसे दग़ाबाज़, दग़ाबाज़ी, धोखेबाज़, धोखेबाज़ी, चालबाज़, चालबाज़ी, चुहलबाज़ी; ख़ेज़ वाले शब्द जैसे सनसनीख़ेज़; ज़दा वाले शब्द जैसे हैरतज़दा, ग़मज़दा और साज़ वाले शब्द जैसे रंगसाज़, घड़ीसाज़ आदि में प्रत्यय वाले भाग में नुक़्ते का प्रयोग करना ठीक रहेगा।

उपसर्ग या पूर्वसर्ग शब्द के शुरू में लगकर नये अर्थ के शब्द बनाते हैं। नेक (फ़ारसी) से बनने वाले शब्द जैसे नेकदिल, नेकनीयत आदि और कम से बनने वाले शब्द जैसे कम (फ़ारसी) वाले शब्द जैसे कमअक़्ल, कमज़ोर, कमतर, कमनसीबी, कमसिन आदि के कम या नेक में क़ नहीं है। ग़ैर (अरबी) से बनने वाले शब्द जैसे ग़ैरक़ानूनी, ग़ैरज़रूरी, ग़ैरज़िम्मेदार, ग़ैरमौजूदगी, ग़ैरसरकारी, ग़ैरहाज़िर आदि के ग़ैर में ग नहीं, ग़ है। ख़ुश उपसर्ग वाले शब्दों में ख़ है, ख नहीं; उदाहरण के लिए हम ख़ुशख़बरी, ख़ुशगवार, ख़ुशनसीब, ख़ुशहाल, ख़ुशबू आदि को देख सकते हैं।

अरबी फ़ारसी के शब्दों में, जिन्हें उर्दू के शब्द कहा जाता है, घ, छ, झ, ट, ठ, ड, ढ, ड़, ढ़, थ, ध, भ आदि वाले शब्द न के बराबर हैं। घर, बेघर जैसे बहुत ही कम शब्द हैं। इसका कारण उर्दू की वर्णमाला है। मुश्किल तो स्वर वर्णों को लेकर होती है, क्योंकि अलिफ (उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर) से ही सारे स्वर वर्णों का काम लिया जाता है। भगतसिंह ने एक लेख में नचिकेता को अनुवादक द्वारा नीची कुतिया समझे जाने का उदाहरण दिया है। यह उर्दू या कहें अरबी की एक जटिल समस्या है। नुक़्ते के कारण उर्दू में अब्बा अजमेर गए को अब्बा आज मर गए भी समझा जा सकता है। स्वरों की कमी के कारण इस भाषा की लिपि ज़्यादा वैज्ञानिक रूप नहीं रखती। हमें इस लिपि या भाषा की कोई विशेष जानकारी नहीं लेकिन वैयाकरणों की बात रखी जा सकती है, यह मानकर हम चल रहे हैं।

उर्दू में कई बार उकार, इकार और एकार को अकार में बदलते भी देखा जा सकता है, जैसे एहसान को अहसान, इख़्तियार को अख़्तियार, मुक़ाम को मक़ाम, इक़बाल को एक़बाल, इफ़रात को अफ़रात, उल्फ़त को अल्फ़त पढा या लिखा जाता है। इसके पीछे भी अलिफ (अ, आ) से ही उ, इ, ए आदि के काम चलाने की परंपरा है। उर्दू में संयुक्ताक्षरों की भी परंपरा नहीं है। इसमें संयुक्ताक्षर होते ही नहीं, जैसे प्र, श्च, क्ष, त्र, ज्ञ आदि संयुक्ताक्षर हैं ही नहीं उर्दू में। डॉक्टर मोहसिन ख़ान जी ने बताया कि उर्दू में मात्राएँ

अनुमान के आधार पर पढी जाती हैं, जैसे झूला को झोला भी पढ़ा जा सकता है। आधे अक्षर यानी हल वाले अक्षर के लिए भी वहाँ कोई सुविधा नहीं होने के कारण उर्दू में अर्ज़ और अरज़, जुर्म और जुरम एक जैसा ही लिखते हैं। वहाँ अ और आ को छोड़कर दूसरी मात्राएँ भी नहीं हैं। इसका नुक़सान यह है कि कई बार शब्द स्पष्ट ही नहीं होता। यही हाल ध, थ, घ आदि वर्णों को लेकर है। ध के लिए दाल, थ के लिए ते और घ के लिए गाफ़ से काम चलाना पड़ता है। दाल, ते और गाफ़ उर्दू के वर्ण हैं। उर्दू में दो ग हैं, एक ग़ैन (ग़) और दूसरा गाफ़ (ग); घ के लिए ग़ैन का प्रयोग नहीं किया जाता।

अगले भाग में हम हिन्दी में आए अंग्रेज़ी के शब्दों में नुक़्ते के प्रयोग पर चर्चा करेंगे।

## अध्याय- 16

### अंग्रेज़ी के शब्दों में नुक़्ते के प्रयोग

नुक़्ते पर चल रही चर्चा का अंत हम अंग्रेज़ी के शब्दों में नुक़्ते के प्रयोग से करेंगे। अंग्रेज़ी के शब्दों में क़, ग़ और ख़ नहीं मिलते; लेकिन ज़ और फ़ सैकड़ों शब्दों में मिल सकते हैं। यहाँ हम अंग्रेज़ी के उन शब्दों की ही बात करेंगे, जो हिन्दी पट्टी में अब आम हुए जा रहे हैं और साधारण जनता भी जिनका प्रयोग करने लगी है।

कुछ ऐसे शब्द, जो ज वाले हैं - एजेंडा, बजट, ग्रेजुएट, अरजेंट, अलजेबरा या अलजबरा, ऑक्सीजन, सबजेक्ट, इंटेलिजेंस, इंजन, इंजीनियर, एडजस्ट, ऐवरेज, ओरिजिनल, इंजेक्शन, इंचार्ज, चार्जर, एज, कॉलेज, क्विज, चैलेंज, चेंज, जंक्शन, जूनियर, जग, जज, जनरल, जेनरेटर, जूस, जम्पर, जर्नल, जेट, जॉब, जर्मन, जीप, जस्टिस, जनवरी, जून, जुलाई, जैकेट, जेन्ट्स, जेल, जेलर, जैम, जोक, जोकर, ज्वाइन, ज्वाइंट, ट्रेजडी, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, जिम्नास्टिक, वेजीटेरियन, एजेंट, एजेंसी, मैनेजर, मेजर, रजिस्टर, रजिस्ट्रार, रजिस्ट्री, रजिस्टर्ड, रेंज, लगेज, सर्जन, सार्जेंट, स्टेज, बेंजीन, बुर्जुआ, मैरिज, जनवरी, लॉजी वाले शब्द (जैसे साइकॉलजी, तकनालॉजी, टेकनोलॉजी, बायोलॉजी) आदि।

ज़ वाले कुछ शब्द - सुपरवाइज़र, सीज़न, साइज़, विज़िट, लेज़र, रिज़र्व, रिज़ल्ट, ब्लाउज़, बिज़नेस, बिज़ी, बुलडोज़र, यूज़, रिलीज़, रिविज़न, रीज़न, रेज़र, लक्ज़री, लैंग्वेज़, टेलिविज़न, डायबिटीज़, टॉकिज़, डिविज़न, डिस्पोज़ल, डीज़ल, न्यूज़, पाज़िटिव, ज़ीरो, ज़िप, ज़ोन, क्रेज़, गज़ट, गज़टेड, प्लाज़्मा, प्रेज़ीडेंट, प्रोविज़न, एक्साइज़, एडवरटिज़मेंट, कंपोज़, एग्ज़ीक्यूटिव, डोज़, डिपॉज़िट, मजिस्ट्रेट, ईज़ी, ज़्म वाले शब्द (जैसे गाँधिज़्म, कम्युनिज़्म, फ़ासिज़्म, माओइज़्म) आदि। रूसी शब्द ज़ार और अंग्रेज़ी शब्द नाज़ी भी ज़ वाले हैं।

फ वाले कुछ शब्द - फुलस्केप, फांट, फुटनोट, हाइफन आदि।

फ़ वाले कुछ शब्द - फ़ोबिया, फ़ास्फ़ेट, सल्फ़ेट, प्रूफ़, वेलफ़ेअर, सेफ़, स्टाफ़, हाफ़, सेफ़्टी, फ़्लैट, स्कार्फ़, फ़ंक्शन, फ़र्नीचर, फ़रवरी, फ़र्म, फ़र्स्ट, फ़ाइन, फ़ाइनल, फ़ाइबर, फ़ाइल, फ़ायर, फ़ारवर्ड, फ़ार्मूला, फ़ार्म, फ़ार्मेसी, फ़िक्स, फ़िज़िक्स, फ़िट, फ़िज़िकल फ़िलासफ़ी, फ़िल्टर, फ़िटर, ब्रीफ़केस, ब्लफ़, फ़ेडरेशन, फ़िलामेंट, फ़ीचर, रफ़, राइफ़ल, रिफ़्यूजी, रिलीफ़, लेफ़्टिनेंट, लोफ़र, वाइफ़, फ़ैक्टर, फ़ैक्टरी, फ़ीमेल, फ़ीवर, फ़ीस फ़ैमिली, फ़ेल, फ़ैकल्टी, चीफ़, फ़ेयर, फ़ैन, फ़ैन्सी, फ़ैशन, फ़ोकस, फ़ैसिलिटी, फ़ील्ड, फ़ोटो, फ़ोल्डर, फ़्रॉक, फ़्रॉड, फ़्लाइट, मफ़लर, फ़्रैक्चर, फ़्रायड, फ़्री, फ़ेयरवेल, फ़्लू, ब्रेकफ़ास्ट, फ़्लर्ट, फ़्रेश, फ़्रेम, परफ़ॉरमेंस, कांफ़्रेंस, परफ़्यूम, पैम्फ़लेट, ग्राफ़, प्रॉफ़िट, कर्फ़्यू, गिफ़्ट, एम्प्लिफ़ायर, ग्रेफ़ाइट, टॉफ़ी, टफ़, टिफ़िन, फ़ी, ट्रांसफ़र, ट्रैफ़िक, ट्रॉफ़ी, डिफ़ेंस, ट्रांसफ़ॉर्मर, प्रोफ़ेशन, प्रोफ़ेसर, इनफ़ार्म, ऑफ़, ऑफ़र, ऑफ़िस, ऑफ़िसर, इनफ़्लुएंज़ा, फ़ोन, ड्रॉफ़्ट, चीफ़, जिराफ़, प्लैटफ़ार्म, फ़िल्म आदि।

ध्यान रहे कि इन शब्दों से जुड़े शब्दों में भी नुक़्ते का प्रयोग उसी प्रकार करेंगे, जैसे इनमें किया गया है, जैसे फ़िल्म में फ़ है, तो फ़िल्मांकन, फ़िल्माना, फ़िल्मी आदि में भी फ़ है और मैनेज में ज़ नहीं है, तो मैनेजर, मैनेजमेंट आदि में भी ज़ नहीं है।

अंग्रेज़ी के जे(j) से शुरू होने वाले शब्दों में नुक़्ते वाला ज यानी ज़ नहीं है, ऐसा लगता है। जूनियर, जज आदि इसके उदाहरण हैं। हो सकता है कुछ शब्द ऐसे हों, जो जे से शुरू होते हों और उनका उच्चारण ज़ से हो, लेकिन उनकी संख्या न के बराबर लगती है।

एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए, जब शब्द का रूपांतरण या लिप्यंतरण रोमन या अंग्रेज़ी से हिन्दी में कर रहे हों; gh, q, f आदि के लिए नुक़्ते वाले अक्षर नहीं लिखने चाहिए, जैसे ghost, queen, quick और zoom को ग़ोस्ट, क़्वीन, क़्विक और ज़ूम नहीं पढ़ा या लिखा जा सकता। नुक़्ते वाले वर्णों के

लिए जो अंग्रेज़ी अक्षर या अक्षर समूह बताए गए हैं, वे मुख्य रूप से नामों के अंग्रेज़ी रूपांतरण के लिए ही उचित हैं।

कई रूसी, पुर्तगाली, तुर्की, जर्मन आदि शब्द अंग्रेज़ी, अरबी या फ़ारसी से हमें मिले हैं, इसलिए हिन्दी में लिखते समय उनमें भी नुक़्ते की परंपरा है। नाज़ी, ज़ार जैसे शब्द इसके उदाहरण हैं।

हम यह कहते हुए नुक़्ते की बात समाप्त करेंगे कि किसी शब्द में नुक़्ता होगा या नहीं, यह पता नहीं हो, तो नुक़्ता नहीं लगाएँ और शब्दों का अध्ययन जारी रखें ताकि इसका पता चल सके कि नुक़्ते का प्रयोग कब और कहाँ कर सकते हैं।

# अध्याय- 17

## शिरोरेखा

इस भाग में शिरोरेखा के साथ-साथ कुछ और बातें इस चित्र के आधार पर होंगी। इस तरह के चित्र की ज़रूरत तब पड़ती है, जब छपे अक्षरों की जगह लिखे जाने वाले अक्षरों पर बात करनी होती है।

चित्र 33 में ड ड़ ङ और ड़ (दुबारा) को दिखाया गया है। फ़ेसबुक पर ड़ की जगह ङ लिखा कई बार देखने को मिलता है। मोबाइल या स्मार्टफ़ोन आदि उपकरणों में ड़ लिखने की सुविधा होते हुए भी ङ लिखना कहीं से उचित नहीं माना जा सकता। ख़ास तौर पर बच्चों और शिक्षकों को इसपर ध्यान देना चाहिए कि ड़ में बिन्दी नीचे है और ङ में दायीं ओर। हालाँकि इस पर हम चर्चा कर चुके हैं, लेकिन ड़ की जगह ङ लिखने पर विशेष रूप से ध्यान दिलाना चाहते हैं। मोबाइल में टवर्ग के आख़िर में ड़ होता है और कवर्ग के आख़िर में ङ। स्मार्टफ़ोन आदि में ड के बाद नुक़्ते के लिए दिए गए स्थान से ड़ बना सकते हैं।

34वें चित्र में च, थ और य को दिखाया गया है। बहुत सारे लोग च और य एक जैसे लिखते हैं। च में शुरू में एक छोटी सीधी रेखा (-) होती है, जबकि य में ऐसा नहीं होता। य शिरोरेखा को दो बार छूता है, जबकि च एक बार। थ य जैसा ही होता है, बस उसमें एक घुंडी या हुक लगाते हैं और यह शिरोरेखा को एक बार स्पर्श करता है। लिखने और छापने के अक्षरों में कुछ अंतर भी दिखते हैं, जैसे थ का हुक वाला भाग छापते समय शिरोरेखा को नहीं छूता लेकिन लिखते समय हम इसमें छूट ले लेते हैं और कभी शिरोरेखा का स्पर्श करने देते हैं, कभी नहीं भी करने देते।

35वें चित्र में क और फ दिखाए गए हैं। क को ऐसे नहीं लिखना चाहिए कि फ का भ्रम हो। फ में शिरोरेखा से स्पर्श दो बार होता है और क में एक बार। फ देखने में ऐसा लगता है जैसे कि अंग्रेज़ी वर्णमाला के छोटे यू (u) को लिखकर पाई (।) के साथ एन (n) को दायीं तरफ नीचे लगा दिया गया हो। क में बायीं ओर गोला है जबकि फ में बायीं ओर प दिखता है। यह भी कह सकते हैं कि क और फ क्रमशः व और प के समान ही हैं, जिनमें दायीं ओर एक सी ही मुड़ी हुई रेखा जोड़ते हैं।

36वाँ चित्र ण और प के आधे रूप को ठीक रूप में दिखाता है। ण के आधे रूप में शिरोरेखा दो बार स्पर्श करती है, जबकि प के आधे रूप में एक बार। लिखते समय प के आधे रूप में गड़बड़ी होने की संभावना ज़्यादा रहती है, इसलिए ध्यान देकर लिखना चाहिए ताकि दायीं ओर न तो वर्ण शिरोरेखा को स्पर्श करे, न ऊपर की ओर बढ़े।

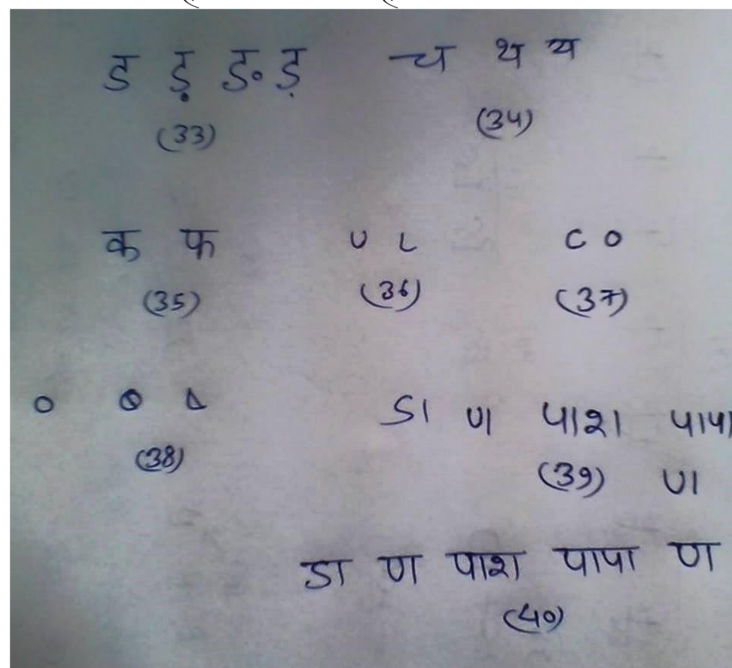
चित्र 37 में व के आधे रूप को दिखाया गया है, जिसमें पहला ठीक नहीं है। दूसरा रूप जो ० की तरह दिखता है, वही ठीक है। नरेंद्र कुमार पासी जी का कहना है कि चित्र में दिखाए पहले रूप को ही उन्होंने हमेशा देखा है। उनका कहना सही है, क्योंकि पाई वाले अक्षरों के आधे रूप में पाई को छोड़कर लिखा जाता है। पहले ही चित्र 21में सभी व्यंजनों के आधे रूप दिखाए जा चुके हैं। उस चित्र में भी ब और व के आधे रूप ० वाले ही दिखाए गए थे।

ब और व का बायाँ भाग दायीं तरफ से बंद नहीं है, पाई के कारण वह बंद दिखता है। जब पाई को हटाते हैं तो इस चित्र में (चित्र 37) दिखाए पहले रूप का ही व बचता है। यही बात ब के साथ भी है। 'व्याख्यान' और 'शब्द' में व और ब के आधे रूप को हम देख सकते हैं। छपाई के अक्षरों में ब और व के बायें भाग के ऊपरी हिस्से को देखें, तो पाई से उसका पूरा स्पर्श भी नहीं होता; थोड़ा सा खुला रह जाता है। यह भी ध्यान रखें कि छपाई में एक ही अक्षर के नाममात्र के बदलाव वाले भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं, मिल सकते हैं। इसका कारण प्रकाशन द्वारा प्रयुक्त अक्षर रूप या कहें फौंट (यह कम्प्यूटर क्षेत्र का तकनीकी शब्द है) है, लेकिन जब हम बात हाथ से लिखे, न कि टंकित (टाइप) किए गए अक्षरों की करते हैं, तो कई बार आधा व (जो c की तरह लिखा जाता है) हमें आधे प या आधे त की तरह लग सकता है।

ठीक इसी तरह आधे ब को आधा ष भी समझा जा सकता है। इस भ्रम से उबरने के लिए हम ० (अंग्रेज़ी के o की तरह) की तरह का आधा व और इसी तरह का आधा ब लिखना ठीक मान रहे हैं। 38वें चित्र में आधे ब के इसी रूप को दिखाया गया है, ताकि लिखित रूप में आधे ष का भ्रम जाता रहे। 38वें चित्र में ष के आधे रूप को देखें। ब और ष में तिरछी रेखा ऊपर से नीचे दायीं ओर जाती है। तिरछी रेखा बायीं ओर नहीं जानी चाहिए। ब और ष क्रमशः व और प की तरह ही हैं, अंतर इतना ही है कि ब और ष में अंदर तिरछी रेखा है, जो व और प में नहीं है।

चित्र 39 में बिना शिरोरेखा के डा, ण, पाश, पापा और ण दिखाए गए हैं। शिरोरेखा के बिना इन्हें हम S1 या 51, 01, 4121, 4141 और U1 या UI भी पढ़ सकते हैं। 4 को बिना शिरोरेखा वाले प की तरह, 1 या अंग्रेज़ी अक्षर एल या आई(l या I) को पाई की तरह, 5 या अंग्रेज़ी के S को बिना शिरोरेखा के ड की तरह, अंग्रेज़ी के यू (U) को आधे ण की तरह और 2 को आधे श की तरह लिखना या पढ़ना कोई असामान्य या असंभव बात नहीं है। शिरोरेखा ही इस प्रकार के भ्रम से मुक्त करती है। घ और ध, म और भ में शिरोरेखा की भूमिका पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। आशीष ने बताया कि कई बार शिरोरेखा की परंपरा को व्यर्थ, लिखने की गति में कमी लाने वाली तथा अनावश्यक समय और ऊर्जा खर्च करने वाली माना जाता है। कम्प्यूटर और तकनीकी दुनिया में शिरोरेखा लगाने में कोई अतिरिक्त श्रम करना ही नहीं है और रूलिंग कॉपी या पन्ने (जिसमें दो लाइनें हों) में अलग से शिरोरेखा लगाने की ख़ास ज़रूरत भी नहीं है, फिर परेशानी कहाँ है! बस सादे यानी बिना लाइन के पन्ने पर ही तो शिरोरेखा विशेष रूप से लगानी है। इसके प्रयोग से भ्रम की स्थिति समाप्त होती है, तो हमारी समझ में इसकी परंपरा जारी रखने से नुक़सान तो कुछ नहीं दिख रहा।

40वाँ चित्र 39वें चित्र को ही स्पष्ट करता है।



कोई कौन
(17)

म म भ भ
(29)

ढ ढ ह्न ह्म
(30) (31)

क्क क्क
(18)

न्न श्न
(19)

त्त त उत्तर उत्तर
(20)

द्म द्म
(32)

क [illegible]
[illegible]
(21)

क्त क्त
(22)

क्र क्र
(23)

[illegible]
(24)

ई (इ+ऱ)
(27)

ह्र (ह्+र)
Hra

ह्र (ह्+ऱ)
Hri
(25)

रूप रूकना
(26)

आरम्भिक
शक्ति
क्रान्ति
(28)

## अध्याय– 18

### रेफ

र के तीन रूप कर्म, ट्रक और क्रम में देखे जा सकते हैं। यहाँ हम विशेष रूप से हम रेफ की चर्चा करेंगे। रेफ आधा र के बदले आता है और शब्द में शिरोरेखा के ऊपर कुछ कुछ c जैसा लिखा जाता है। रेफ किसी भी वर्ण के पाई (।) चिन्ह के ऊपर ही लिखते हैं और यदि ट, ड, द, ह आदि वर्ण (मात्रायुक्त या मात्रारहित दोनों) हों, तो उनके ऊपरी उदग्र (खड़े) छोटे भाग पर, जैसे र्ट, र्ड़, र्ड, र्द, र्ह, र्दू, र्जु, र्ति, र्वे, र्वै। मूर्ति, गर्मी, अर्जुन, उर्दू, सर्वे, सर्वैः, शर्त, तर्क, कार्टून आदि शब्द इसके लिए देखे जा सकते हैं। आकार, ईकार, ओकार और औकार, ये चार मात्राएँ ऐसी हैं, जिनमें पाई चिन्ह होता है लेकिन उनसे युक्त वर्णों में रेफ लगाते समय मूल वर्ण पर रेफ नहीं लगाकर, मात्रा की पाई पर लगाते हैं, जैसे मोर्चा, गर्मी, कर्मों, सर्वौं, पर्दा, सर्दी, तर्कों आदि शब्दों में रेफ मूल वर्ण पर नहीं लगाया गया है। शेष मात्राओं से युक्त वर्णों में रेफ वर्ण पर ही लगाते हैं, जैसे मूर्ति (इकार), अर्जुन (उकार), उर्दू (ऊकार), सर्वे (एकार), सर्वै (ऐकार) में। पंजाबी भाषा में रेफ नहीं होने से कर्म, धर्म आदि को करम, धरम आदि लिखते पढ़ते हैं। एंद्र प्रत्यय वाले शब्द भी वहाँ द्र को दर बनाकर बोले जाते हैं, जैसे अमरेंद्र को अमरेंदर। रेफ की कमी हम भारत की कई लोकभाषाओं में भी देख सकते हैं, जैसे ब्रजभाषा, भोजपुरी, अवधी आदि में। रेफ का प्रयोग आसान है, लेकिन ध्यान न देने पर प्रायः ग़लती होने की संभावना बनी रहती है। रेफ को लिखते समय एक बात उल्टी होती है, र् का उच्चारण पहले होता है और इसे लिखते व्यंजन के बाद में (ऊपर) हैं। शर्म में श के बाद र् है, फिर म; लिखते समय हम श के बाद म लिखकर तब रेफ लगाते हैं। आशीर्वाद, अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्गत आदि शब्दों को रेफ पर ध्यान नहीं देने के कारण आर्शीवाद, अंर्तराष्ट्रीय, अंर्तगत आदि लिख जाना एक आम ग़लती है। अगर उच्चारण पर विचार करें, तो इसमें कोई विवाद या समस्या नहीं है। जहाँ पहले र् बोलते हैं, वहाँ अगले वर्ण पर रेफ लगाते हैं, जैसे वर्षा, वर्गों, आयुर्वेद आदि में वर्, वर्, आयुर् के बाद षा, गों, वेद आते हैं; इसलिए षा पर रेफ लगाकर र्षा, गो पर लगाकर र्गों और वे पर रेफ लगाकर र्वे लिखे गए हैं।

क्रम, श्रम, प्रतियोगिता, ट्रक, द्रुत आदि के र र् नहीं हैं, इसलिए रेफ इन शब्दों में नहीं है। इनमें पूरा र है। स्पष्टीकरण के लिए वर्ण विच्छेद देखते हैं –

क् + र = क्र,<br>
श् + र = श्र,<br>
ट् + र = ट्र,<br>
द् + र = द्र<br>
ह् + र = ह्र,<br>
स् + र = स्र,<br>
र् + र = र्र,<br>
त् + र = त्र।

अब रि और ऋ पर आते हैं। ऋ संस्कृत के ही शब्दों में आने वाला पुराना स्वर है। तत्सम (संस्कृत मूल के) शब्दों के अतिरिक्त ऋ कहीं नहीं होता। ऋग्वेद, ऋण, ऋषि, ऋतु, ऋचा, ऋणावेशित, ऋच्छ, ऋजु, ऋक्ष, ऋतंभरा, ऋषभ, ऋषभदेव, ऋषिकेश आदि बहुत कम शब्दों में ही ऋ है। इनमें रि का प्रयोग सही नहीं है।

हिन्दी फ़िल्मों में जूठे को झूठे और झूठे को जूठे कहने की ग़लती देखी जा सकती है। ज और झ के आपस में बदल देने की आदत सुधार लेनी चाहिए। ऐसी ही ग़लती ट और ठ को लेकर प्रायः की जाती है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द उदाहरण के लिए दिए जा रहे हैं, जिनमें ट की जगह ठ लिखना ग़लत है - अंत्येष्टि,

इष्ट, परिशिष्ट, मिष्टान्न, स्पष्ट, पुष्टि, अभीष्ट, चेष्टा, प्रविष्ट, यथेष्ट, विशिष्ट, छींटे, चोट आदि। इनमें ट के स्थान पर ठ नहीं लिखा जाना चाहिए। मिष्ठान्न शब्द भी अब प्रचलन में आ गया है। षष्ठी का अर्थ छठी, छठी तिथि आदि है, जबकि षष्टि का अर्थ साठ (60) है। यह पहले ही बताया जा चुका है कि ठ का द्वित्व नहीं होता, इसलिए इकठ्ठा, मुठ्ठी, चिठ्ठी आदि शब्द ग़लत हैं।

## अध्याय- 19

### गलत अक्षर का प्रयोग

क के स्थान पर ख और ख के स्थान पर क लिखना या बोलना भी एक मामूली ग़लती है। धोखा को धोका कहना इसी का एक उदाहरण है।

य को ज कहने की परंपरा भोजपुरी आदि लोकभाषाओं में देखने को मिलती है। यज्ञ, कार्यक्रम, कार्य को जग या जग्य, कार्जक्रम, कार्ज लोकभाषाओं में भले कह लें लेकिन हिन्दी में ऐसा नहीं किया जाना चाहिए।

व और ब का आपसी उलटफेर भी प्रायः देखने को मिलता है। नबाव, बातावरण, बिख्यात, ब्याकरण, ब्रत, बिद्वान, बिकट, बिधि आदि शब्दों के शुद्ध रूप नवाब, वातावरण, विख्यात, व्याकरण, व्रत, विद्वान, विकट, विधि आदि हैं। हम बिहार में प्रायः व को ब बोलते हुए सुन सकते हैं, जैसे विज्ञान को बिग्यान या बिज्ञान, विकास को बिकास कहा जाता है। बीबी और बीवी दोनों रूप चलन में हैं। ब के स्थान पर व भी ग़लत है, जैसे बल्ब को बल्व, बिहार (राज्य) को विहार, बिखरना को विखरना, दबाव को दवाब नहीं कहा जा सकता। वि उपसर्ग वाले शब्द में बि नहीं हो सकता, जैसे विगत, विजय, विलय, विनाश आदि को बिगत, बिजय, बिलय, बिनाश नहीं लिख या पढ़ सकते। संस्कृत में व वाले शब्द अधिक हैं और हिन्दी में ब वाले। व के उच्चारण में होठों का आकार गोल हो जाता है, लेकिन होंठ एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते। ब में होंठों का जुड़ाव होता है। वहन-बहन, वार-बार, वाद-बाद, वात-बात, वली-बली आदि शब्द व या ब के कारण अलग अर्थ देने लगते हैं।

इसी प्रकार क्ष और छ पर भी ध्यान रखना चाहिए। क्ष के लिए लोकभाषाओं में छ या च्छ भी देखने को मिलता है। क्षमा, क्षत्रिय, दक्ष, पक्ष, शिक्षा, दक्षिण को छमा, छत्री, दच्छ, पच्छ, शिच्छा, दच्छिन नहीं लिखना चाहिए।

ष और ण पर संस्कृत के षत्व विधान और णत्व विधान की सहायता लेकर कुछ समझते हैं, क्योंकि ण और ष संस्कृत यानी तत्सम शब्दों में ही हो सकते हैं। मुख्य रूप से दो नियम ण के लिए हैं, 1) ऋ, र् या ष् के बाद सीधे न हो, तो न का ण हो जाता है। र् और ष् किसी मात्रा से युक्त हों तब भी न ण में बदलता है। 2) पहले ऋ, र या ष हो, तो आगे आने वाला न ण में बदल जाता है, यदि न के पहले कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य, व या ह हो।

अब कुछ शब्दों पर विचार करते हैं:

1) ऋण, तृण आदि में ऋ के बाद न के स्थान पर ण हुआ।

2) कृष्ण, तृष्णा, उष्ण, तीक्ष्ण आदि में ष् के बाद न का ण हो गया।

3) भरण, चरण, कारण, आचरण, वरण, संवरण, रण, मरण, स्मरण, विस्मरण, प्रण, प्रणाम, प्रणेता, प्रणय, अग्रणी आदि में र के बाद न के स्थान पर ण हुआ। परिणय, परिणाम, परिणति, प्राण आदि में र मात्रायुक्त है और न ण में बदल गया है।

4) भूषण, भाषण, आभूषण, वृषण, दूषण, प्रदूषण, प्रेषण, परिवेषण, आकर्षण, वर्षण, प्रेक्षण, दक्षिण, दक्षिणा, परीक्षण, निरीक्षण, वीक्षण, विलक्षण, अधीक्षण, पर्यवेक्षण, सर्वेक्षण, शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रतिक्षण, भक्षण, रक्षण, अनुवीक्षण, क्षण आदि में ष के बाद ण हुआ।

5) रामायण में पहले खंड राम में र है और इसमें दूसरा खंड अयन (अ स्वर वर्ण) मिला, तो न ण में बदल गया और रामायण बन गया। प्रमाण, प्रयाण (प्र+याण), नारायण (नार+अयन), शूर्पणखा (शूर्प+नखा), अक्षौहिणी (अक्ष+ऊहिनी), निर्वाण (निर्+वान), परिमाण (परि+मान), अर्पण, समर्पण, गर्भिणी, तर्कणा, ग्रहण, सर्पिणी, कर्मणा, निर्वहण आदि शब्दों में आगे आने वाला न ण में बदलता है। यहाँ

हम देख सकते हैं कि र और न के बीच पवर्ग के प और म; कवर्ग का क; अ, ऊ आदि स्वर; य, व, ह आदि हैं और न ण में बदल गया है।

6) शत्रुघ्न और आचार्यानी जैसे कुछ अपवाद भी हैं।

कुछ शब्द, जिनमें ण होगा, न नहीं - गुण, कल्याण, गण, गणेश, पुण्य, वाणी, प्राण, अन्वेषण, अनुसरण, प्रसारण, विसरण, वितरण, आक्रमण, वर्णन, विश्लेषण, सम्प्रेषण, निराकरण, श्रवण, रुग्ण, टिप्पणी, षण्मुख आदि।

र् या ऋ के बाद यदि चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, ण या श हो और उसके बाद आगे न हो, तो ण नहीं होता, न होता है। परिव्रजन, वर्जना, सृजन, निर्वाचन, निर्वचन, रचना, अर्चना, वर्णन, परिवेष्टन, परिवर्तन, प्रार्थना, अभ्यर्थना, निर्धन, क्रंदन, निर्देशन, निदर्शन, दर्शन, प्रकाशन आदि इसके उदाहरण हैं। यह नियम प्रेक्षण और अनुभव पर आधारित है, संभव है अपवाद भी हों।

लगातार दो ण न होकर, पहले ण फिर न होता है, जैसे वर्णन, घूर्णन, प्रणयन, निर्णयन, प्रमाणन, प्रकीर्णन, विपणन आदि में।

अंग्रेज़ी के शब्दों हॉर्न, रन, टॉर्न आदि; अरबी और फ़ारसी के शब्दों वरन् (बल्कि), वरना (नहीं तो), रहनुमा, रज़्मनामा, रूमान आदि के लिए ऊपर के नियम नहीं हैं। ये नियम संस्कृत शब्दों के लिए हैं।

एक शब्द आर्यण पर विचार करते हैं। आर्यों को Aryan लिखा जाता है, इसी से आर्यण शब्द प्रचलन में आ गया है। अंग्रेज़ी के हिसाब से आर्यन और संस्कृत के हिसाब से आर्यण होगा। दोनों रूप चलन में हैं।

ण राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र में न के स्थान पर जमकर प्रयुक्त होता है। कौन को कोण, थाना को थाणा, निन्यानवे को निन्याणवे कहना इन इलाक़ों में आम बात है।

अब हम ष पर विचार करते हैं। यदि अकार और आकार को छोड़कर किसी स्वर के बाद स् हो, तो स् ष् में बदल जाता है। अभिषेक में अभि और सेक मिले हैं, सेक का स ष में बदलकर षेक हो जाता है। निषिद्ध (नि+सिद्ध), विषम (वि+सम), निषंग (नि+संग), सुषुप्ति(सु+सुप्ति), निष्णात (नि+स्नात), सुषेण (सु+सेन) आदि शब्द इसके लिए देखे जा सकते हैं। अगर पहले से ही किसी शब्द में ऋ या र हो और वह स से शुरू हो, तो उसका स ष में नहीं बदलता, जैसे विस्मरण, अनुसरण, विसरण, विस्मृति आदि।

निः उपसर्ग के बाद यदि क, प, फ आते हैं, तो निः का निष् हो जाता है, जैसे निष्कपट, निष्कर्ष, निष्कलंक, निष्कर्षण, निष्प्राण, निष्पक्ष, निष्पादन, निष्फल आदि में।

दुः के साथ भी यही बात होती है, जैसे दुष्कर, दुष्कर्म, दुष्ग्राह्य, दुष्प्रभाव आदि में।

टवर्ग के किसी भी अक्षर के पहले स या श नहीं होता, ष होता है। अनिष्ट, इष्ट, कष्ट, नष्ट राष्ट्रीय, निष्ठा, दुष्ट, कृष्ण, तुष्टि, पुष्टि, संतुष्टि, भ्रष्ट, भ्रष्टाचार, शिष्ट, षडानन, षोडश आदि इसके उदाहरण हैं। ड और ढ वाले शब्द संस्कृत में ऐसे हैं ही नहीं, जिनमें ष्ड या ष्ढ हो; हाँ, षड मिल सकता है।

भाषा, परिभाषा, मनुष्य, संतोष, विशेष, पुष्प, आशुतोष, पुरुष, मस्तिष्क, विषाद, विषाणु, घोषणा, मनीषा, पीयूष, कृषि आदि ष वाले कुछ शब्द हैं।

ऋ, र्, र आदि के बाद भी श या स नहीं आते, ष आता है, जैसे ऋषि, आर्ष, शीर्ष, शीर्षक, हर्ष, उत्कर्ष, वर्ष आदि।

ष और ण मूर्धन्य वर्ण हैं, इसी कारण मूर्धन्य वर्णों (ट, ठ, ड, ढ, ऋ, ॠ, र) के पहले आने वाले स या न को बदल डालते हैं।

एक शब्द कम्युनिष्ट है, जिसे कई बार सही समझकर लिख दिया जाता है। इसमें ष् के स्थान पर स् होगा, क्योंकि यह संस्कृत का शब्द नहीं है। अंग्रेज़ी के शब्दों में हमेशा स्ट होता है, श्ट या ष्ट नहीं।

अर्श, पर्स, कुर्सी, फास्ट, कास्ट, मॉर्निंग, बर्न, लर्न जैसे विदेशज शब्दों के लिए णत्व और षत्व के नियम लागू नहीं हैं।

अगर हम ध्यान दें तो शब्द को देखकर यह समझ सकते हैं कि वह किस भाषा का है। श्त अरबी फ़ारसी में ही है, जैसे गोश्त, काश्त, नाश्ता आदि, श्च संस्कृत में ही है, जैसे पश्चिम, पश्चात, पश्चाताप आदि। हम ध्यान देने पर ऐसी कई बातें समझ सकते हैं।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक ही उच्चारण स्थान के वर्ण साथ आने की प्रवृत्ति रखते हैं। संस्कृत शब्दों में श्ट, स्च, स्ट, श्त, ष्च, ष्त के नहीं होने का यही कारण है। मूर्धन्य वर्ण ष तालव्य या दन्त्य वर्णों के साथ नहीं है, दन्त्य वर्ण स तालव्य या मूर्धन्य वर्णों के साथ नहीं है और इसी प्रकार तालव्य वर्ण श दन्त्य और मूर्धन्य वर्णों के साथ नहीं है। यही बात काफ़ी हद तक न और ण के लिए भी है।

## अध्याय- 20

### सही अक्षर का प्रयोग

श, ष और स पर कुछ और बातें करते हैं। बार बार लोग पूछते हैं कि इनमें किनका प्रयोग कहाँ कर सकते हैं। यह स्पष्ट नहीं है और न ही कोई गणित का सूत्र भाषा में इस तरह का होता है कि मात्र रट्टा लगा जाने से सारा काम चल जाए। ष के लिए कुछ नियम हैं, जिन्हें हमने पिछले भाग में देखा है। स और श के लिए कुछ ऐसे नियम खोजे जा सकते हैं, जो अधिकांश स्थितियों में सही ठहरते हैं।

यदि स और श एक साथ आते हों, तो श पहले और स बाद में होता है, जैसे प्रशंसा, शासन, शस्य, नृशंस, अनुशंसा, अनुशासन, शस्त्र, शास्त्री आदि। सं, स और सु उपसर्ग से जुड़े शब्द होने पर यह नियम अपनी सीमा प्रदर्शित करने लगता है। उदाहरण के लिए संशय, सश्रम, सशक्त, सशरीर, सशंकित, सशस्त्र, सुशील, सुश्री, सुशांत, संशोधन, संश्रय, संश्लेषण आदि शब्द उपसर्गों के कारण पहले श, फिर स के स्थान पर पहले स, फिर श के नियम का पालन करते हैं।

अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में शन (tion या ssion) प्रत्यय रहता है, उनमें शन के स्थान पर सन नहीं लिखा जाना चाहिए। सेशन, कमीशन, एडमिशन, ट्रांसमिशन, मिशन, स्टेशन, एक्शन, फ़ैशन, जंक्शन आदि इसके उदाहरण हैं।

स्ट, स्ट्री, क्स, नेस, एंस, आंस आदि से समाप्त होने वाले अंग्रेज़ी शब्दों में स होता है, जैसे फास्ट, लास्ट, हिस्ट्री, केमिस्ट्री, फ़िक्स, साइबरनेटिक्स, पॉलिटिक्स, टैक्स, डांस, चांस, एडवांस, लेंस, इंट्रेंस, डिफ़ेंस आदि में।

च के पहले स का नहीं, श का प्रयोग होता है, जैसे निश्चय, पश्चिम आदि। स्च और ष्च कहीं नहीं मिलते।

फ़ारसी के आइश या आयश और इश से समाप्त होने वाले शब्दों में अंत में श होता है, स नहीं, जैसे गुंजाइश, पैदाइश, आज़माइश, ख्वाहिश, कोशिश, तपिश, लरज़िश, कशिश, जुंबिश, गुंजायश, पैदायश, पेचिश आदि। अंग्रेज़ी के भी स्टाइलिश, स्पेनिश, इंग्लिश आदि में स नहीं लिखकर श लिखा जाता है।

साज़, आस, सा आदि प्रत्ययों वाले शब्दों में प्रायः स होता है, श नहीं, जैसे घड़ीसाज़, रंगसाज़, मिठास, प्यास, खटास, उजास, जिज्ञासा, पिपासा, मीमांसा आदि।

शः प्रत्यय वाले शब्दों में सः नहीं लगा सकते। क्रमशः, अक्षरशः, शब्दशः, कोटिशः आदि इसके उदाहरण हैं।

ईश, ईश्वर और ईश्वरी शब्द जुड़ने पर बनने वाले दो प्रकार के शब्द बनते हैं; पहले एश, एश्वर और एश्वरी वाले; जैसे राजेश, मुकेश, गणेश, सुरेश, शुभेश, रमेश, दिनेश, राजेश्वर, रामेश्वर, माहेश्वरी, राजेश्वरी, परमेश्वर, परमेश्वरी, सुरेश्वरी, महेश, भूपेश, नागेश आदि और दूसरे ईश, ईश्वर और ईश्वरी वाले; जैसे मुनीश, श्रीश, हरीश, कपीश, रवीश, सतीश, कपीश्वर, मुनीश्वर, नारीश्वर आदि। इन सबमें श होता है, स नहीं। अनिमेष, निमेष, मेष आदि पर यह नियम लागू नहीं होता, क्योंकि इनमें ईश, ईश्वर आदि नहीं जुड़े हैं।

श और ष जब एक साथ आते हैं, तब श पहले और ष बाद में आता है, जैसे शोषण, शेष, विशेष, शुष्क, विशेष्य, शिष्य आदि।

स और ष के साथ रहने पर स पहले और ष बाद में आता है, जैसे सुषमा, सुषुप्त, सुषुम्ना आदि।

कोष-कोश, केशर-केसर, कौसल्या-कौशल्या, केसरी-केशरी, वशिष्ठ-वसिष्ठ आदि शब्द दोनों रूपों में सही माने जाते हैं। विकास और कैलास प्रायः ग़लत लिखे जाते हैं। विकाश और कैलाश लिखना ठीक नहीं माना जा सकता। वैसे विकाश शब्द अर्थहीन नहीं है, उसका अर्थ है रौशनी, प्रकाश।

तत्सम शब्दों का श प्रायः स में बदल जाता है, जैसे शाक से साग, शूकर से सूअर, श्वसुर से ससुर, श्यामल से साँवला आदि।

कष्टम, कश्टम, पोश्ट, पोष्ट, रजिष्टर, रजिश्टर आदि शब्द ग़लत हैं और नहीं लिखे जाने चाहिए। अंग्रेज़ी के शब्दों में टवर्ग के पहले ष का नियम काम नहीं करता। कस्टम, पोस्ट, रजिस्टर आदि शुद्ध हैं, इन्हें इस तरह ही लिखना चाहिए।

सोचनीय और अमावश्या के शुद्ध रूप शोचनीय, अमावस्या हैं।

अंग्रेज़ी के शब्द श् से शुरू नहीं होते, स् से हो सकते हैं। हाँ, श से शुरू हो सकते हैं, जैसे शर्ट, शूट आदि। सब-इंस्पक्टर जैसे सब उपसर्ग वाले शब्दों में स है, श नहीं।

केश का अर्थ बाल है, तो केस का मुकदमा, बक्स। इसी तरह साला का अर्थ पत्नी का भाई है, तो शाला का स्कूल या विशेष स्थान। हिन्दी में दोष, संतोष, परितोष, आशुतोष, कोष जैसे तत्सम शब्द हैं, जो ष वाले हैं, तो कोस, ठोस, बोस जैसे स वाले शब्द भी हैं और अरबी फ़ारसी के होश, आगोश, खामोश, जोश, सरफ़रोश जैसे श वाले शब्द भी हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि श, ष और स का प्रयोग भी सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

एक सज्जन ने तीन प्रकार के स के कारण अंग्रेज़ी को ही सरल मानने की बात कही है। S, ss, sc, si, ce, io, sh, cc, c आदि अनेक शब्दांश अंग्रेज़ी में स और श के लिए हैं; जैसे Sea, lesson, nation, accept, except, shirt, since, science, scene आदि में। अंग्रेज़ी में शर्ट और स्काई में एक ही स नहीं है।

# अध्याय– 21

**व्यंजन**

पूर्ण व्यंजन के स्थान पर अर्ध व्यंजन को नहीं लिखा जाना चाहिए, लेकिन कई बार उनतीस को उन्तीस, ग़लत को गल्त, कृपया को कृप्या, उनतालीस को उन्तालीस, चरमोत्कर्ष को चर्मोत्कर्ष लिखा मिल जाता है। इसमें सबसे ज़्यादा प्रचलित कृपया को कृप्या लिखा या बोला जाना है। शुद्ध रूप कृपया है। पूर्णता से पूर्णतया, सामान्यता से सामान्यतया आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार कृपा से कृपया बना है। इसके रूप को समझने के लिए संस्कृत व्याकरण में जाना पड़ेगा। यहाँ इतना कहना काफ़ी होगा कि स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द के इस रूप में अंत का आकार या में बदल जाता है। जैसे श्रद्धा शब्द के अंत में आ है और यह स्त्रीलिंग है, इसलिए श्रद्धा का आ या से विस्थापित होगा और श्रद्धया बन जाएगा। महोदय से महोदया इस आधार पर नहीं बनता, यह ध्यान रखें।

परकार (फ़ारसी का शब्द, ज्यामितिक उपकरण) और प्रकार दो भिन्न शब्द हैं; इसलिए प्रकार के स्थान पर परकार नहीं लिखा जा सकता। स्वास्थ्य को स्वास्थय या स्वस्थ्य, ज्योत्स्ना को ज्योत्सना, उज्ज्वल को उज्जवल, परमाणु को प्रमाणु लिखना और बोलना ग़लत है। इनके शुद्ध रूप का ध्यान रखना ज़रूरी है क्योंकि इन शब्दों में ग़लती सामान्य रूप से देखी जाती है।

शर्मा को शरमा नहीं लिखा जा सकता, क्योंकि शब्दों के अर्थ में ही थोड़ी असावधानी अंतर ला देती है।

अब हम शब्दों में य को लिखे जाने और न लिखे जाने पर विचार करेंगे। गृहस्थ, केन्द्रीकरण, सदृश, मूलतः, कृतकृत्य, अंतर्धान को क्रमशः गृहस्थ्य, केन्द्रीयकरण, सदृश्य, मूलतयः, अंतर्ध्यान, कृत्यकृत्य लिखना ग़लत है। अंतर्धान का अर्थ लुप्त हो जाना है और अंतर्ध्यानी का अर्थ आत्मा का ध्यान करने वाला है।

मानवीय, उद्देश्य, कवयित्री, अंत्याक्षरी, सामर्थ्य आदि को मानवी, उद्देश, कवित्री, अंताक्षरी, सामर्थ नहीं लिखा जा सकता। जहाँ य का प्रयोग होता है, वहाँ उसे छोड़ना और जहाँ नहीं होता, वहाँ शामिल करना दोनों अनुचित है। मान और लक्ष में य लगाने से मान्य और लक्ष्य बन जाते हैं, जो भिन्न अर्थ देते हैं। उपलक्ष्य या परिप्रेक्ष्य को उपलक्ष या परिप्रेक्ष लिखना या बोलना उचित नहीं है। वयस्क को प्रायः व्यस्क लिख दिया जाता है। वयस्क शुद्ध रूप है, यह ध्यान रखा जाना चाहिए।

य के स्थान पर इ को लेकर भी भ्रम की स्थिति बनी रहती है। साइंस, फाइनल, राइटर, साइकिल, लाइसेंस, आइंदा आदि को सायंस, फायनल, रायटर, सायकिल, लायसेंस, आयंदा नहीं लिखा जाना चाहिए। पटना के प्रसिद्ध साइंस कॉलेज के द्वार पर सायंस कॉलेज लिखा है। इन शब्दों में इ के स्थान पर य को अंग्रेज़ी या हिन्दी के किसी नियम के आधार पर सही नहीं कहा जा सकता।

हिन्दी में कई बार अक्षर एक दूसरे को विस्थापित कर देते हैं। चिह्न, ब्रह्म, आह्लाद, मध्याह्न, ब्राह्मण, जिह्वा आदि शब्दों में संयुक्ताक्षर के दोनों अक्षरों ने अपने स्थान की अदला बदली कर नया रूप ग्रहण कर लिया है, लेकिन इनका पुराना रूप भी प्रचलित है। इससे उच्चारण सरल बना है। चिह्न को चिन्ह लिखना या बोलना दोनों अपेक्षाकृत आसान है। इसी प्रकार ब्रह्म ब्रम्ह, आह्लाद आल्हाद, मध्याह्न मध्यान्ह, ब्राह्मण ब्राम्हण, जिह्वा जिव्हा में बदल गए हैं। आह्वान, पूर्वाह्न, अपराह्न आदि शब्द उच्चारण की दृष्टि से थोड़े जटिल वाले माने जा सकते हैं। आह्वान के लिए आवाहन शब्द भी मौजूद है।

# अध्याय- 22

## इकार और ईकार

हिन्दी को कठिन कहने वालों का सबसे ज़्यादा वार इकार, ईकार, उकार और ऊकार पर होता है। वैसे तो इनको समझ लेना चाहिए कि कोई भी भाषा हो, उसके शब्दों और उनकी प्रकृति को समझे बिना काम नहीं चल सकता। यह दलील अंग्रेज़ी के पक्षधर खूब देते हैं, लेकिन उन्हें यह नज़र नहीं आता कि एक एक उच्चारण के लिए आठ दस तरीके सीखे बिना अंग्रेज़ी नहीं जान सकते। इसके प्रमाण के लिए उदाहरण पहले ही दिए जा चुके हैं।

हम इकार और ईकार पर कुछ सामान्य नियमों को ध्यान में रख कर काफ़ी हद तक शुद्ध लिख सकते हैं।

अति, अधि, अभि, नि, निर्, निस्, चिर, प्रति, परि, वि आदि उपसर्गों से शुरू होने वाले शब्दों में उपसर्ग वाले हिस्से में इकार लगाते हैं, जैसे अतिकाय, अतिक्रमण, अतिरेक, अतिवाद, अतिवृष्टि, अतिशय, अतिरिक्त, अधिकार, अधिग्रहण, अधिनायक, अधिवक्ता, अभिकर्ता, अभिभावक, अभियांत्रिकी, अभिज्ञान, अभिनंदन, अभिनय, अभिनव, अभिनेता, अभिलेख, अभिव्यक्ति, अभिमत, अभिमान, अभिशाप, चिरकाल, चिरपरिचित, चिरनिद्रा, चिरयुवा, चिरप्रतीक्षित, निरंकुश, निरंजन, निरंतर, निर्माता, निरक्षर, निरर्थक, निरस्त, निराशा, निर्दय, निर्दोष, निर्धन, निश्चित, निश्चय, निष्कर्ष निष्क्रिय, निष्कासित, निस्संदेह, निस्संतान, निकाय, निढाल, निबंध, निदेश, नियंत्रण, निवासी, निवारण, नियम, परिकलन, परिवार, परिचय, परिधान, परिपथ, परिभाषा, परिक्रमा, परिमाण, परिणाम, परिमाप, परिवर्तन, परिवहन, परिवेश, परिसर, प्रतिकूल, प्रतियोगिता, प्रतिक्रिया, प्रतिदिन, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिलिपि, प्रतिरोध, प्रतिरक्षा, प्रतिमान, प्रतिबंध, प्रतिबिंब, विकर्ण, विकार, विकृत, विक्रय, विघटन, विचलन, विपरीत, विफल, वियोग, विलग, विसंगति, विवश, विनाश, विवाद, विज्ञान विवेक आदि।

जिस शब्द के अत में ई की मात्रा हो, उसके बहुवचन में इकार हो जाता है, जैसे मिठाई से मिठाइयाँ, मिठाइयों; स्त्री से स्त्रियाँ; प्राणी से प्राणियों; दवाई से दवाइयाँ आदि।

आइन, इक, इका, इत, इन, इम, इमा, इया, इयल, इल, इष्ठ, इयत आदि से समाप्त होने वाले शब्दों में इकार होता है, ईकार नहीं, जैसे चौधराइन, पंडिताइन; ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक, यौगिक, मानसिक; अध्यापिका, गायिका, याचिका, लेखिका, बालिका; अंकित, आनंदित, पुष्पित, फलित, कथित; धोबिन, पुजारिन, लुहारिन; अंतिम, अंतरिम, स्वर्णिम; कालिमा, लालिमा, गरिमा, महिमा, नीलिमा; धुनिया, रसोइया, बुढ़िया, खटिया, कुतिया, बिटिया, चुहिया, चिड़िया, बंदरिया, डलिया, लुटिया, बढ़िया, घटिया, पहिया, बनिया; जटिल, धूमिल, फेनिल, पंकिल, सर्पिल, स्वप्निल, अनिल, मुश्किल, क़ाबिल, शामिल; मरियल, दढ़ियल, सड़ियल, अड़ियल; वरिष्ठ, कनिष्ठ, बलिष्ठ, गरिष्ठ; मिल्कियत, इंसानियत, क़ाबिलियत आदि। वसीयत आदि में ऐसा नहीं होता।

सुझाव या प्रार्थना वाले शब्दों लीजिए, कीजिए, पढ़िए, जाइए, खाइए, आइए, बताइए, बनाइए, चाहिए, जाइए, पिलाइएगा, खिलाइएगा, समझाइए, कहलवाइए, बतलाइए आदि के अंत में ईए नहीं होता; बताईए, जाईए, आईएगा आदि ग़लत हैं।

अंग्रेज़ी के शब्दों जैसे लाइट, लाइक, माइंड, लाइब्रेरी, लाइन, साइन, फ़ाइन, फ़ाइल, ऑनलाइन, साइट, वेबसाइट, जॉइन, क्लाइंट, टाइट, राइट, राइटर, प्राइम, वाइन, साइज़, साइड, पाइप, वाइफ़, माइक, आइटम आदि में ईकार नहीं होता; लाईन, टाईम, हाईट, साईज़, काईट, लाईब्रेरी आदि उचित नहीं हैं।

अंग्रेज़ी के शब्दों में इंग है, ईंग नहीं, जैसे किंग, रिंग, सिंगर, किलिंग, रनिंग, फ्लाइंग, बुकिंग, शिपिंग, राइटिंग, सेटिंग, वेल्डिंग, वाशिंग आदि; शायद ही कुछ शब्द हों, जिनमें ईंग मिले।

ई से ईयर, ईन, ईनर, ईलेक्शन आदि नहीं होते; इयर, इनर, इलेक्शन आदि सही रूप हैं। अंग्रेज़ी के अधिकतर शब्द ई से नहीं, इ से शुरू होते हैं। ई से शुरू होने वाले ईज़ी, ईस्ट, ईजिप्ट, ई (इलेक्ट्रॉनिक) आदि हैं।

भईया शब्द ठीक नहीं है, सही रूप भइया है।

हिन्दी में ऐसे शब्द कम ही हैं, जिनके अंत में इकार हो, जैसे यति, रति, पति, मति, शक्ति, भक्ति, विरक्ति, आसक्ति, नियुक्ति, मुक्ति, मुनि, मणि, गोकि, क्रांति, शांति, भ्रांति, चूँकि, हवि, कवि, शुचि, कटि, यदि, गति, संगति, प्रगति, व्याधि, ऊर्मि, कलि, बलि, शशि, हरि, गिरि, रवि, छवि, तृप्ति, संतुष्टि, पुष्टि, वृष्टि, कृति, द्युति, क्षति, राशि, आदि। हम देख सकते हैं कि ति से समाप्त होने वाले शब्द ज़्यादा हैं।

भोजपुरी में खाईल, जाईल, गईल, कईलख, नईखे आदि के स्थान पर खाइल, जाइल, गइल, कइलख, नइखे, कइसे, हइसे, नइखन, कइली, गइली, खइनी, हँसइनी आदि होना चाहिए। भोजपुरी में जहिया, कहिया आदि में ईकार नहीं होगा।

## अध्याय-23

### इकार

इकार पर बात आगे बढ़ाते हैं।

अरबी फ़ारसी के शब्द इ से शुरू होते हैं, ई से नहीं; गिनती के ही कुछ अपवाद हैं- ईजाद, ईरान, ईसाई, ईस्वी, ईमान आदि। इशारा, इबादत, इश्क़, इक़बाल, इलजाम, इनाम, इंतख़ाब, इनायत, इक़रार, इतवार, इमाम, इलाका, इजाफा, इजाजत, इमारत, इंतज़ार, इंतजाम, इल्म, इज़ारा, इजहार आदि इसके उदाहरण हैं।

महादेशों, देशों, शहरों, ज़िलों, गाँवों आदि के नाम में अंत में या के पहले इकार होता है, ईकार नहीं। एशिया, अल्जीरिया, अल्बानिया, ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, इण्डोनेशिया, इथियोपिया, कम्बोडिया, कोरिया, कोलम्बिया, गैम्बिया, जाम्बिया, ट्यूनीशिया, तंजानिया, नाइजीरिया, नामीबिया, बुल्गारिया, बोलिविया, मंगोलिया, मलयेशिया, रोमानिया, लीबिया, लाइबेरिया, सीरिया, एस्तोनिया, लात्विया, लिथुवानिया, आर्मेनिया, जॉर्जिया, क्रोएशिया, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, सर्बिया, सोमालिया; बेतिया, तिनसुकिया, खगड़िया, पूर्णिया, अररिया, उमरिया, बलिया, देवरिया; सिमरिया, करबिगहिया आदि इसके उदाहरण हैं।

रामपुरिया, जयपुरिया आदि नामों में भी इया होगा।

अन्वित, निष्ठ, पति, प्रिय, रहित, रचित, वृत्ति आदि प्रत्ययों वाले शब्दों में ईकार नहीं है, जैसे कार्यान्वित, समन्वित, राष्ट्रपति, पूँजीपति, सर्वप्रिय, लोकप्रिय, मनोवृत्ति, प्रवृत्ति आदि।

इत्र, इंदा, इश, आइल, आइश आदि प्रत्ययों वाले शब्दों में ईकार नहीं होता, जैसे पवित्र, धारित्र, खनित्र, साधित्र; कारिंदा, बाशिंदा, दरिंदा, शर्मिंदा; कोशिश, तपिश, कशिश, गुज़ारिश, नालिश, परवरिश, मालिश, पॉलिश, फरमाइश; मोबाइल, फिनाइल, मिसाइल, स्टाइल, टाइल; पैदाइश, गुंजाइश आदि। चित्र, विचित्र, मित्र आदि में इकार है।

स्तान से समाप्त होने वाले शब्दों में भी स्तान के पहले ईकार नहीं होता, इकार होता है, जैसे पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, उज्बेकिस्तान तुर्कमेनिस्तान, किर्ग़िस्तान, कज़ाकिस्तान, तज़ाकिस्तान, कब्रिस्तान आदि।

स्तिक वाले शब्दों में भी ति है, ती नहीं, जैसे नास्तिक, आस्तिक, स्वस्तिक आदि में।

ति (तीन के अर्थ में), बिल, बिला, फ़िल, तिर, बहि, आवि, डिप्टी आदि में ईकार नहीं होता, जैसे तिरंगा, तिकोना, तिपहिया, तिहरा, बिलकुल, बिलाशक, बिलादिमाग़, फ़िलहाल, फ़िलवक़्त, फ़िलहक़ीक़त, डिप्टी कमिश्नर, आविर्भाव, आविष्कार, तिरस्कार, तिरोहित, तिरोभाव, बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्जगत् आदि।

न्यूनवाचक शब्द किसी शब्द से बनते हैं और वे छोटे, तुच्छ और अनादर के तथा अतिशय प्रेम के अर्थ से सम्बद्ध होते हैं, जैसे बूढ़ी से बुढ़िया, गुड्डा से गुड़िया, आँख से अँखिया, बाजार से बजरिया, साँवला से साँवरिया, सजनी से सजनिया, बात से बतिया, रात से रतिया आदि। इनमें इया जुड़ जाता है। घटिया, कालिया, बनिया, बढ़िया, कनिया, सोनिया, आढ़तिया आदि इया वाले कुछ और शब्द हैं।

इस्टर, इस्ट, इज़्म, आइट, इक, इकल से समाप्त होने वाले शब्दों में भी ईस्टर, ईस्ट, ईज़्म, आईट, ईक या ईकल नहीं लिखना बोलना चाहिए, जैसे केमीकल, मेडीकल, सोशलीस्ट, कम्युनीज़्म, रजीस्टर, क्लीनीक सही नहीं हैं; केमिकल, मेडिकल, सोशलिस्ट, रजिस्टर, क्लीनिक, सिस्टर, मिस्टर, कम्युनिज़्म, नक्सलाइट, आदि सही हैं।

करना, जीना, पीना, लेना, देना आदि से बने किया, किए, जिया, जिए, पिया, लिया, लिए, दिया, दिए आदि में भी ईकार नहीं होता, इकार ही होता है।

जिया, जियरा (जी) , हिया (हय), पिया (प्रीतम), मियाँ, सिया आदि में भी इकार होता है। जि से बना शब्द जित है और जितेंद्र, अजित आदि शब्द इसी से निकले हैं, लेकिन जीतेंद्र और अजीत रूप भी चल पड़े हैं। यही हाल मित का है, अमित, सुमित जैसे शब्द अमीत और सुमीत लिखे जा रहे हैं।

## अध्याय- 24

### अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग

अंग्रेज़ी के हज़ारों शब्द अब हिन्दी की सम्पत्ति बन चुके हैं। यह ज़रूर है कि उनमें बहुतों के हिन्दी में सरल, प्रचलित और समर्थ पर्याय हैं, लेकिन उनका प्रयोग कई लोग नहीं करते या कम करते हैं। दल, सहायक, पत्रिका आदि कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं, जो बिलकुल सामान्य हैं, फिर भी पार्टि, असिस्टेंट, मैगजीन आदि का प्रयोग प्रायः देखा जाता है। हम अब इकार पर अंग्रेज़ी के शब्दों को लेकर बात करते हैं। एक बात कहना चाहेंगे कि इस चर्चा से कठिनाई का सम्बन्ध अंग्रेज़ी मोह से ग्रस्त लोग जोड़ें, इससे पहले यह ध्यान रखें कि अंग्रेज़ी के शब्दों के शुद्ध उच्चारण और रूप पर यदि चर्चा करें, तो वह भी विस्तृत रूप ले लेगी; इसलिए इकार वाले भाग को कठिन और ज़्यादा बड़ा न मानें।

इया से समाप्त होने वाले शब्दों पर चर्चा हो चुकी है। डायरिया, पायरिया, हिस्टीरिया, हर्निया, मलेरिया, यूटोपिया, अमोनिया, ऐनिस्थीसिया, मायोपिया, फोबिया आदि विज्ञान क्षेत्र के नाम में भी यह आता है।

डि (de, di), बि (be), इग (ig), इम (em, im), इन (in, en), इर (ir, er, err), इंटर (inter, enter), इंट्रा (intra), इंट्रो (intro), डिस (dis, diss), मिस (mis, miss), निग (neg), पॉलि (poly, poli), प्यूरि(puri), सिस (sis, sys), सिम (sim, sym), सिन (syn, sin), रि (re), मिनि (mini), मैक्सि (maxi), एलि (ele), पब्लि (publi), लिब (lib), लेक्सि (lexi), मिलि (milli) आदि से शुरू होने वाले शब्दों में अधिकतर इनमें इकार होता है। कुछ उदाहरण हैं - डिटेल, डिपॉजिट, डिपार्टमेंट, डिमांड, डिनर, डिश, बिलो, इगनोर, इम्पार्टेंट, इनविटेशन, इनकम, इंटरमीडिएट, डिसमिस, डिस्टर्ब, मिस्टर, मिस्टेक, निगेटिव, पॉलिटेक्निक, पॉलिटिक्स, सिस्टर, सिस्टम, सिम्पल, रिपोर्ट, रिटायर, रिफ़्यूज़, रिटर्न, रिले, रिलेशन, रिहर्सल, रिसर्च, रिक्वेस्ट, मिनिस्टर, मिनिमम, मैक्सिमम, एलिवेटर, पब्लिक, लिबरल, लेक्सिकन, मिलियन आदि।

इयल, आइज, इयन, रि, टि, नि, सिस, डि, सिव, टिव, इनेंट, इकन, ग्राफि, जि, इयर ( सही रूप इअर है), इयस, इजन, डिया, डियो, इयम, इटि, लाइ, सिएशन, इयेटर, आइजेशन, इनेशन, लि, शिप, ट्रि, क्युलर आदि से समाप्त होने वाले शब्दों में भी ई शुद्ध नहीं है, जैसे रियलाइज और जेनरलाइज आदि को रियलाईज और जेनरलाईज नहीं लिखा जाना चाहिए। यहाँ बताए गए प्रत्ययों वाले कुछ शब्द मेमोरियल, रियल, इंडियन, कोरियन, ओपिनियन, यूनियन, बटालियन, चैम्पियन; अफ़्रिकन, अमेरिकन; हारमोनियम, रेडियम, थोरियम, यूरेनियम, जर्मेनियम, म्यूजियम; गैलरि, कम्पल्सरि; अथॉरिटि, पार्टि; पैरलिसिस, थीसिस; सब्सिडि, ट्रेजडि; पॉजिटिव, सेंसिटिव; लेफ़्टिनेंट; फ़ोटोग्राफि; साइकोलॅजि, सोशियोलॉजि; सीनिअर, जूनिअर, कैशिअर; सीरिअस; डिविजन, प्रेविजन, रिविजन; मीडिया, इनसाइक्लोपीडिया; विडियो, ऑडियो, रेडियो; क्वालिटि, यूनिवर्सिटि; अप्लाइ, सप्लाइ; एसोसिएशन; थियेटर; इंटर्नशिप, फ्रेंडशिप रिलेशनशिप आदि।

अंग्रेज़ी के कुछ इकार वाले शब्द - सिल्क, सर्किट, ड्राइंग, डाइरेक्ट, हास्पिटल, ह्वाइट, गाइड, सुइसाइड, नाइलोन, लिस्ट, वायलिन, इंच, इंजन, इंस्टिट्यूट, लिटरेचर, केबिन, कैबिनेट, कॉमिक, ओलंपिक, ओरिजिनल, असिस्टेंट, काउंसिल, पार्लियामेंट, यूनिफ़ॉर्म, आइडिया, आइस, विजिट, वैलिड, क्वालिफ़िकेशन, विग, ऑफ़िस, इंटरव्यू, इंस्पेक्टर, स्लिप, स्लिम, सिग्नल, स्ट्राइक, राइट, ओवरसिअर, अप्रेंटिस, साइलेंट, डाइग्राम, सिविल, विटामिन, फिट, पॉलिसी, ऑडिटर, मजिस्ट्रेट, आर्डिनेंस, स्विच, नोटिस, टिफ़िन, शिफ़्ट, सिगार, सिरिंज, मार्जिन, मिथ, मिक्चर मेरिट, टिन, टिकट, ट्रिप, ट्रिक, बुलेटिन, क्विंटल, क्विज, क्विक, बिजनेस, ट्रैफ़िक, बिल्डिंग, बेसिन, मैट्रिक, मैरिज, पिकनिक, पोर्टफोलियो, गिटार, गोरिला, ग्लिसरीन, जस्टिस, टॉनिक, टेपरिकार्डर, पेंसिल, पुलिस, पिच, पियानो, टेनिस,प्लास्टिक,

एडिट, क्रेडिट, क्रिमनल, क्रिसमस, प्रैक्टिस, क्लाइंट, प्वाइंट, क्लिप, प्रॉफ़िट, प्रिंसिपल, मार्जिन, प्राइज, फैमिली, फेस्टिवल, निब, टाइफाइड, टाइटिल, जिराफ़, पिक्चर, फ़िक्स, फ़िनिश, मीडियम, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, फ़्रिज़, कमिश्नर, बिलियन, ट्रिलियन आदि।

बहुत से अंग्रेज़ी शब्द ऐसे हैं, जिन्हें हिन्दी में हम सामान्यतः ईकार से समाप्त करते हैं, लेकिन उनका सही उच्चारण (जितना हमें समझ आया है) और रूप ऐसा नहीं है। इनक्वायरी शब्द का सही उच्चारण इनक्वायरि है और ध्यान देने की बात है कि लगभग सभी लोग उच्चारण तो सही करते हैं, लेकिन लिखित रूप बदल जाता है। आम तौर पर हिन्दी में भी हाथ, साथ, साथी और हाथी आदि को बोला हाँथ, साँथ, साँथी और हाँथी जाता है; यह ध्यान देकर ठीक किया जा सकता है। डिक्शनरि, फैकल्टि, नोटरि, आर्मि, ट्रेजरि, ट्रेजडि, पार्टि, रोटरि, मर्करि, इमर्जेंसि, सेकेंडरि, पैथि से समाप्त होने वाले शब्द आदि को हिन्दी में ईकार लगाकर लिखते हैं, लेकिन हम इस रूप में लिखने की अनुशंसा करेंगे। इसी तरह सिटि, कम्युनिटि, कमिटि, क्वालिटि, क्वांटिटि आदि में हिन्दी में इटि की जगह इटी लिखा जाता है, जबकि सही उच्चारण इटि है। इसी तरह कंपिटिशन, एक्सपेरिएंस, यूनिवर्सिटि, इंस्टिट्यूट, कमिशन, पेटिकोट, कैंडिडेट, टेम्प्रेरि आदि को कंपीटीशन, एक्सपीरियंस, यूनिवर्सिटी, इंस्टीट्यूट, कमीशन, पेटीकोट, कैंडीडेट, टेम्प्रेरी आदि लिखा जाता है।

अगर एक वाक्य में कहें, तो अंग्रेज़ी के शब्द ई से बहुत ही कम समाप्त होते हैं और हिन्दी में इ से। आगे ईकार पर चर्चा करते समय हम उदाहरण भी देखेंगे

## अध्याय- 25

### इकार और ईकार

इकार और ईकार की चर्चा को आगे बढ़ाते हैं।

ईकार का सबसे आसान नियम यह माना जा सकता है कि शब्दों के अन्त में ईकार ही होगा, इकार नहीं। इसकी संभावना बहुत अधिक है, वह भी इतनी कि इकार या इ से समाप्त होने वाले शब्द गिनती के ही हैं। नाम चाहे व्यक्ति के हों, नदियों के हों, देशों के हों, शहरों के हो, स्टेशनों के हों अन्त में ईकार की मौजूदगी बहुत अधिक है। गोदावरी, ताप्ती, कावेरी, कोसी, इटारसी, तिवारी, त्रिवेदी, दिल्ली, मुम्बई, इटली आदि इसके उदाहरण हैं।

भाषाओं और जातियों के नाम भी ई या ईकार से समाप्त होते हैं, जैसे रूसी, फ़्रांसीसी, इतालवी, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, जापानी, हिन्दी, भोजपुरी, मगही, राजस्थानी, बुंदेलखंडी, अरबी, बुल्गारियाई, कोरियाई आदि।

ती, ड़ी, बाज़ी, दानी, गिरी, गी, ज़नी, नी, ईला, ईली, औती, कारी, ईन, दानी, हारी, वी आदि प्रत्ययों वाले शब्दों में इन भागों में ईकार होगा, इकार नहीं; जैसे फुरती, गिनती, बढ़ती, घटती; चमड़ी, खिलाड़ी, दिहाड़ी, पहाड़ी, अँतड़ी, टँगड़ी, हथौड़ी, पगड़ी, पंखुड़ी; चालबाज़ी, धोखेबाज़ी, ड्रामेबाज़ी; चमचागिरी, दादागिरी, गुंडागिरी, नेतागिरी; दिल्लगी, बंदगी, सादगी, मौजूदगी, दरिंदगी; रहज़नी, आगज़नी; करनी, कथनी, भरनी, छँटनी, ऊँटनी, शेरनी, मोरनी, आमदनी, मास्टरनी, डाक्टरनी; खर्चीला, छबीला, जहरीला, रंगीला, रसीला सजीला, सुरीला; सुरीली, जहरीली; मनौती, बपौती, बुढ़ौती; परोपकारी, क्रांतिकारी, कल्याणकारी, लाभकारी, परिवर्तनकारी, हितकारी; प्राचीन, नवीन, कुलीन, ग्रामीण, नमकीन; मच्छरदानी, चूहेदानी; शाकाहारी, मनोहारी, सर्वाहारी; तपस्वी, यशस्वी, मेधावी, मायावी, तेजस्वी आदि।

ई प्रत्यय भिन्न भिन्न शब्दों में लगकर उनके रूप और अर्थ बदलता है। काकी, दादी, नानी, मामी, चाची, मौसी; हिरनी, लड़की, किशोरी नारी, ब्राह्मणी, पुत्री, युवती, कवयित्री, स्वामिनी, अनुगामिनी, दामिनी; गगरी, गठरी, टोकरी, गोली, डोरी, नाली, प्याली, घंटी, घाटी; घुड़की, चुटकी, धमकी, थपकी, झपकी, सिसकी, बोली, हँसी; खेती, डाक्टरी, महाजनी, चोरी, डकैती फौजी, माली, मास्टरी, किसानी; गुंडई, अफसरी, दोस्ती, नेकी, बदी, बेहतरी; आसमानी, कागजी, किताबी, खूनी, गुलाबी, पंजाबी, रेशमी, हवाई; खुशी, गरमी, नामी, ख़राबी आदि उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं।

ही, भी, छी, जी आदि में ईकार होगा।

क्रिया के रूपों और उनसे बने शब्दों के अन्त में, जैसे की, ली, पी, थी, जाती, खाती, देती, लेती, रहती, कहेगी, रहेंगी, रही, कही, सुनी, सुनाई, हँसी आदि में सदा ईकार होगा। कि और की पर आगे विस्तार से चर्चा बात करेंगे।

उन्हीं, किन्हीं, तुम्हीं, हमीं आदि में ईकार होता है।

नहीं को नही नहीं कहा लिखा जा सकता। स्थानवाचक यहीं, कहीं, वहीं आदि में भी ईकार होता है।

संख्याओं इक्कीस, बाईस, एकतीस, बत्तीस, बयालीस, पैंतालीस, चौरासी, पचासी, नवासी आदि में ईकार होगा। उन्नीस से अड़तालीस तक और अस्सी से नवासी तक में ईकार है, इकार नहीं। 40, 43, 44, 46 और 47 के लिए क्रमशः चालिस, तैंतालिस, चौवालिस, छियालिस और सैंतालिस यानी ईस' के स्थान पर 'इस' भी देखने मिलता है।

गणितीय, भारतीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, शास्त्रीय, स्वर्गीय आदि ईय प्रत्यय वाले शब्दों में अन्त में इय सही नहीं होगा। दिलचस्प बात यह है कि हिन्दी पट्टी में ईय का उच्चारण ईए या इए ही ज़्यादा चलता है, जैसे भारतीय का भारतिए या भारतीए। संस्कृत में राष्ट्रिय शब्द है, हिन्दी में राष्ट्रीय।

भाषायी, स्थायी, धराशायी आदि में ईकार है। अनीय प्रत्यय वाले शब्दों में, जैसे स्थानीय, पूजनीय, दर्शनीय, गोपनीय, गणनीय आदि में ईकार है। ध्यान रहे कि पूज्यनीय शब्द ग़लत है।

## अध्याय– 26

### ईकार

पेशों, जाति आदि के नाम में भी अन्त में ईकार ही होता है। धोबी, मिस्त्री, कुर्मी, तेली, नाई, किरानी आदि इसके उदाहरण हैं।

ची, गीन, नशीन, नवीस, ईना, आरी, औनी के साथ समाप्त होने वाले शब्दों में ईकार है, जैसे कानूनची, खजांची, ग़मगीन, परदानशीन, नकलनवीस, अखबारनवीस, कमीना, जुआरी, पुजारी, भिखारी आदि।

अतीत, अधीन, अधीनता, अर्थी, आकांक्षी, अपेक्षी, आकीर्ण, कालीन, युगीन, जीव, जीवी, दायी, वीर, शाली, शील, हीन, दर्शी, गीर, बीन, शाही आदि में भी ईकार होगा, इकार नहीं, जैसे कालातीत, त्रिगुणातीत; विचाराधीन, पराधीन; स्वाधीनता, पराधीनता; विद्यार्थी, अभ्यर्थी, प्रार्थी; महत्वाकांक्षी, कृपाकांक्षी; उत्तरापेक्षी, फलापेक्षी; कंटकाकीर्ण; बौद्धकालीन, समकालीन, दीर्घकालीन, अल्पकालीन; बुद्धिजीवी, मसिजीवी, परजीवी; सुखदायी, फलदायी; कर्मवीर, दानवीर, महावीर, प्रवीर; भाग्यशाली, बलशाली; सुशील, क्षमाशील; गुणहीन, स्वादहीन; समदर्शी, दूरदर्शी; उठाईगीर, राहगीर, राजगीर; खुर्दबीन, दूरबीन; तानाशाही, नौकरशाही, लालफीताशाही आदि।

लखनवी, बरेलवी, हिन्दवी, गजनवी जैसे स्थान पर आधारित शब्द भी ईकार से समाप्त होते हैं। मंत्री और प्राणी जैसे शब्द अकेले होने पर ईकार से समाप्त होते हैं, लेकिन जब इनके साथ बाद में आने वाला कोई शब्द मिलता है, तो ईकार के स्थान पर इकार होता है, जैसे प्राणिविज्ञ, प्राणिवज्ञान, प्राणिशास्त्र, मंत्रिमंडल, मंत्रिपरिषद् आदि।

ईश वाले शब्दों में नीतीश शब्द का अशुद्ध रूप प्रायः देखने को मिलता है। कोई नितिश लिखता है, तो कोई नीतिश। यही हाल रवीश का है। रविश लिखना भी पूरी तरह ग़लत है। सतीश, वागीश, नीतीश, महीश, रवीश, कवीश, अमरीश, हरीश, अवनीश, रजनीश आदि शुद्ध रूप हैं। ईश, ईश्वर, ईश्वरी से समाप्त होने वाले शब्दों पर और इकार के बाद इन्द्र मिले शब्दों पर ध्यान रखना चाहिए। इनमें ईकार होता है, इकार नहीं। रविन्द्र भी प्रायः ग़लत रूप में लिखा जाने वाला शब्द है। रवीन्द्र, कवीन्द्र, यतीन्द्र, मुनीन्द्र, मुनीश्वर, कवीश्वर, परमेश्वरी, राजेश्वरी आदि शुद्ध रूप में लिखे गए हैं, इन्हें देखकर ईकार का एक प्रयोग समझा जा सकता है।

निः के बाद र मिलकर नीर बनता है। संस्कृत में विसर्ग संधि का एक नियम इस बारे में बात स्पष्ट करता है। नीरज, नीरस, नीरोग, नीरव आदि के स्थान पर निरज, निरस, निरोग, निरव का प्रयोग उचित नहीं होगा। निरंजन, निरंकार, निराकार, निराशा, निरपेक्ष, निरसन, निरस्त्रीकरण आदि शब्दों में ऐसा नहीं होता, क्योंकि इनमें निः नहीं, नि उपसर्ग होता है।

फी और डिप्टी से शुरू होने वाले शब्दों में भी फि और डिप्टि नहीं लिखा जाता। ध्यान रहे कि अंग्रेज़ी के शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से डिप्टि ही सही है। फ़ीरोज़ शब्द सही है, लेकिन फ़िरोज़ ही अधिक प्रचलित रूप है।

हम आगे देखेंगे कि पीटना और पिटना, सीखना और सिखाना आदि में इकार और ईकार का चक्कर कैसा है। पूजा, भीख, मीठा से बने पुजारी, भिखारी, मिठास पर भी आगे बात करेंगे।

## अध्याय- 27

### ईकरण

ईकार की बात इस भाग तक सीमित रहेगी। आगे हम उकार और ऊकार पर चर्चा करेंगे।

करण वाले शब्दों में सबसे ज़्यादा प्रचलित लेकिन अशुद्ध शब्द है 'सशक्तिकरण'। शुद्ध रूप सशक्तीकरण है, न कि सशक्तिकरण। जिस शब्द में करण (या कहें ईकरण) जुड़ता है, उसमें इकरण कहीं नहीं होता। तीन प्रकार के शब्दों में ईकरण लगता है; उदार, भूमंडल, विश्व, जगत्, समाज, घन, सम, कम्प्यूटर, समूह आदि अकार से समाप्त होने वाले शब्दों में ; निजी, पंजी जैसे ईकार से समाप्त होने वाले शब्दों में और शक्ति, विकृति, संस्कृति, राजनीति आदि इकार से समाप्त होने वाले शब्दों में। तीनों ही स्थितियों में करण के पहले ईकार आता है, न कि इकार और इस तरह उदारीकरण भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, जगतीकरण (जगदीकरण), समीकरण, कम्प्यूटरीकरण, घनीकरण, समाजीकरण, समूहीकरण, निजीकरण, पंजीकरण, सशक्तीकरण, संस्कृतीकरण, विकृतीकरण, राजनीतीकरण, क्रिस्टलीकरण जैसे शब्द बनते हैं। शक्तीकृत, एकीकृत, कम्प्यूटरीकृत आदि शब्दों पर भी यही बात लागू होगी। नामकरण, रवाकरण आदि में करण के पहले ईकार या इकार होता ही नहीं है।

अंग्रेज़ी शब्दों में ईकार के लफड़े से हम परिचित हो चुके हैं। डीज़ल, डील, फ़ीस, मैगज़ीन, कीबोर्ड, पीस, वीज़ा, स्पीड, स्पीच, स्पीकर, टीम, टीचर टीवी, हीटर, सीजन, सुप्रीम, स्टीमर, स्लीपर, मशीन, कैंटीन, लीग, लीज़, गीज़र, गेटकीपर, शीट, जीप, क्लीनर, फ़ील, फ़ीवर, क्रीम, क्रीज़ (सिलवट), थीम, ट्रीटमेंट, रेफ़री, मीटर, लीप, रीडर, रूटीन, ब्रीफ़केस, पीपुल, ब्लीडिंग, टीवी, रीयल, स्टील, ट्रस्टी जैसे शब्दों में हिन्दी में भी ईकार की परंपरा है और अंग्रेज़ी के सही उच्चारण में भी ईकार ही मिलता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि अंग्रेज़ी में उच्चारण की प्रणाली में थोड़ी भिन्नता है। ऑक्सीजन, कॉलोनी, वैराइटी, हनीमून, रैली, हीरो, सप्लाई, कॉपी, कॉफी, हाई, हॉकी, हॉबी, ब्रांडी, थ्योरी, कैंडीडेट, जूरी, ज़ीरो, ड्यूटी, टॉफी, फैन्सी, सीडी, मनी, डैडी, ममी, डायरी, डाउरी, बोगी, टैक्सी, मूवी, मनीबैग, पार्टी, रेडी, डेमोक्रेसी, बैट्री आदि ऐसे कुछ शब्द हैं, जिन्हें हिन्दी में इसी रूप में लिखने की परंपरा है, लेकिन अंग्रेज़ी में इन शब्दों के शुद्ध उच्चारण में ईकार की जगह इकार है।

जब एक शब्द में एक बार से अधिक इकार या ईकार आता है, तब उपसर्गों का ध्यान रखते हुए लिखना चाहिए। प्रतिनिधि, गतिशील आदि में गति और प्रति में इकार के साथ शब्द का अगला भाग आता है। वीथिका, गीतिका, प्रीति, नीति आदि कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनमें पहले ईकार और बाद में इकार रहता है। विनीत, निशीथ आदि में पहले इकार वाला उपसर्ग है, बाद में अगला खंड।

कामिनी, हारिणी, शालिनी, स्वामिनी, सर्पिणी, दामिनी, कारिणी, दायिनी, अर्धांगिनी, गायिनी आदि में अन्त में ईकार और उसके ठीक पहले इकार है।

हिन्दी में 'कि' और 'की' की ग़लती आम है। एक बार जान लेने पर यह ग़लती हमेशा के लिए ठीक हो सकती है।

'की' का प्रयोग मात्र दो ही स्थानों पर होता है; पहला सम्बन्ध बताने के लिए और दूसरा क्रिया के रूप में। पहले प्रकार के प्रयोग को समझने के लिए 'सीता की कलम' , 'मनोहर की किताब' , 'आपकी घड़ी' , 'उनलोगों की परीक्षा' , 'सबकी ज़मीन' जैसे उदाहरण देखे जा सकते हैं, जिनमें किसी वस्तु या बात का सम्बन्ध किसी व्यक्ति, वस्तु, बात आदि से दिखाया गया है। सम्बन्ध वाले शब्दों के अन्त में हमेशा ईकार होता है, जैसे तेरी, मेरी, अपनी, हमारी आदि में। दूसरे प्रकार के प्रयोग को समझने के लिए 'राम ने श्याम की पिटाई की' , 'उद्धव ने हमारी बुराई की' , 'जाँच की गई' जैसे वाक्य देखे जा सकते हैं। इनमें 'की' क्रिया के भाग के रूप में है।

'कि' का प्रयोग तभी होता है, जब वाक्य या बात अपूर्ण हो और आगे कुछ कहने को बचा हो। अपूर्ण वाक्य के बाद 'कि' कई रूपों में (गोयाकि, चूँकि, क्योंकि, जोकि, जैसा कि, जबकि, ताकि, हालाँकि, बल्कि आदि) आता है। 'उसने बताया कि आप कई दिनों से बीमार थे', 'माना कि राम के पास x किताबें हैं', 'जैसा कि आप जानते हैं', 'मैं समझ रहा था कि वह रोहित का भाई है', 'वे लोग बता रहे थे कि यह घर उनका है', 'जहाँ की बात है, वहाँ चलते हैं और देखते हैं कि क्या चक्कर है?' आदि को देखकर 'कि' का प्रयोग समझा जा सकता है। वाक्य में कुछ बचा रहे तब शेष भाग को जोड़ने वाले शब्द भी इकार से समाप्त होते हैं, जैसे तथापि, यद्यपि आदि।

'की' के लिए अंग्रेज़ी में ऑफ (of) का प्रयोग होता है, जबकि 'कि' के लिए दैट (that) का।

बीमार, बेईमान, तारीख, दीवार, श्रीमती, मंदिर, रात्रि, विधि, इच्छा, कठिनाइयों, अतिथि आदि शुद्ध हैं और श्रीमति, मन्दीर (नरेंद्र मोदी यही बोलते हैं), प्रीती, रात्री, विधी, कठिनाईयों, ईच्छा आदि अशुद्ध हैं। आदि और आदी, जाती और जाति भिन्न भिन्न अर्थों वाले शब्द हैं।

'महीने' को प्रायः 'महिने' लिखा जाता है, सही रूप 'महीने' है। 'शिक्षा' शब्द मूल रूप में 'शीक्षा' था, लेकिन लंबे समय से वह 'शिक्षा' के रूप में ही स्वीकृत है।

यानी की जगह यानि भी लिखा जाता है, लेकिन यानी ही लिखा जाना चाहिए।

हाई शब्द का उच्चारण हाइ है, इसमें ईकार के स्थान पर इकार लिखना ठीक रहेगा। ईसाई, इकाई, भइया, मइया, परिणति आदि को इसाई, ईकाई, भईया, मईया, परिणिति आदि नहीं लिखना चाहिए।

संस्कृत में क्रियाओं में ह्रस्व इ यानी इकार अंत में है, न कि ईकार, जैसे रक्षति, नमन्ति, चलसि, नमामि आदि। भोजपुरी और हिन्दी में क्रियाओं का अंत ईकार से होता है, जैसे खाती, थी, रहनी, कहनी, कहेनी, कही, जाई आदि।

## अध्याय - 28

### उकार

इस भाग में उकार और ऊकार पर बात करते हैं। इकार की ही तरह शब्दों के अन्त में उकार भी बहुत कम आता है, जैसे अणु, साधु, मधु, तनु, परमाणु, शांतनु, हेतु, केतु, कटु, तरु, मरु, प्रभु, गुरु, जंतु, बिन्दु, सिन्धु, पशु, शत्रु, वस्तु आदि। अधिकांश शब्दों में अंत में ऊकार आता है; जैसे भालू, बालू, शुरू, दारू आदि। 'उ' भी शायद ही किसी शब्द के अन्त में आता है।

शब्दों की शुरूआत भी उकार से ही ज़्यादा होती है, ऊकार से नहीं। उजरत, उजागर, उथला, उतावला, उतार, उचाट, उछाल, उद्योग, उदार, उदास, उस्तरा, उफ़, उलफ़त, उमर, उम्मीद, उजबक, उन्नीस, उनतीस, उमंग, उल्टा, उल्लू, उलझन, उकताना, उठाना, उलाहना, उत्तर, उत्पादन, उत्पत्ति, उन्नति, उपकार, उष्म, उष्ण, उद्विग्न आदि शब्द उ से शुरू होते हैं।

संख्या वाचक शब्द उ से हैं, न कि ऊ से; जैसे उनचास, उनहत्तर आदि।

अनु, कु, पुरो, पुरा, पुनः, सु, फुल, उत्, उप, कुल, दुर्, दुस् आदि उपसर्गों में उकार है। अनुमान, अनुसंधान, कुपोषण, कुमार्ग, पुरातात्विक, पुरापाषाण, पुरोहित, सुशील, सुसंगत, उत्कर्ष, उत्क्रमित, उपचार, उपकार, उपलब्धि, दुर्गम, दुर्घटना, दुष्प्रभाव, दुष्कर आदि इसके उदाहरण हैं।

सुनना, चुनना, बुलाना, खुलना, घुलना, गुलाब, गुब्बारा, चुप्पी, बुखार, बुद्धि, बुधवार, कुमार, दुल्हन आदि उकार वाले कुछ शब्द हैं।

बहुवचन में ओं से पहले के ऊकार का उकार हो जाता है, भालू का भालुओं, आँसू का आँसुओं। ध्यान रहे कि बिन्दु का बहुवचन बिन्दुएँ नहीं होता।

आलु, पुर, आकुल आदि प्रत्ययों से समाप्त होने वाले शब्दों में उकार है, ऊकार नहीं। दयालु, कृपालु, श्रद्धालु, नागपुर, सिंगापुर, कानपुर, व्याकुल, शोकाकुल आदि इसके उदाहरण हैं।

इसका, इसकी, इनका, इनकी, इन्हें, इन्होंने, इन्हीं, इस, इसी, इससे, इनमें, इसलिए, इधर, इनसे आदि में शुरु में ह्रस्व इ है और इसी तरह उस, उनका, उनमें, उन्हें, उन्हीं, उनके, उनकी, उससे, उधर आदि में भी शुरू में ह्रस्व उ है।

मृदुल, राहुल, वर्तुल, नकुल आदि संस्कृत शब्दों में उल है, ऊल नहीं।

बुलडोजर, बुलेटिन, कुनैन, जुलाई, टेबुल, पेंडुलम, फुट, फुटबॉल, बुक, ग्रेजुएट, अनाउंसर, अल्युमिनियम, आउट, आउटपुट, इनफ़्लुएंज़ा, एम्बुलैंस, एजुकेशन, लुक, कम्पाउंड, कम्पाउंडर, बाउंड्री, ग्राउंड, राउंड, साउंड, इंस्ट्रुमेंट, बुशर्ट, रेगुलर, रेगुलेटर, सुपर, सुप्रीम, हुक आदि में उकार है।

ऊ से शुरू होने वाले कुछ शब्द ऊपर, ऊँचा, ऊँट, ऊन, ऊब, ऊँघना, ऊष्मा, ऊलजलूल, ऊसर, ऊहापोह, ऊबड़ खाबड़, ऊमस, ऊर्जा, ऊटपटांग, ऊर्ध्व, ऊर्ध्वारोहण, ऊर्मिला, ऊर्मि आदि।

उबाऊ, पंडिताऊ, भड़काऊ, उपजाऊ, बिकाऊ, टिकाऊ आदि में अंत में ऊ है। बाजारू, लड़ाकू, झगड़ालू आदि में भी अन्त में ऊ है।

माकूल, वसूल, उसूल, रसूल आदि में अन्त में ऊल है।

भूत, पूर्व, पूर्वक, आकू, मूल, दूत, पूर्ण से समाप्त होने वाले शब्दों में ऊकार है, जैसे भभूत, प्रभूत, अभिभूत, लड़ाकू, वर्गमूल, घनमूल, राजदूत, यमदूत, अपूर्ण, महत्त्वपूर्ण आदि।

बोलूँ, करूँ, जाऊँ, कहूँ, रहूँ, पुकारूँ, बताऊँ, सजाऊँ, हूँ, खूँ, जूँ, दूँ, लूँ आदि में भी ऊकार होता है। बोलूँगा, कहूँगा, जाऊँगा, मरूँगा, कहूँगा, छोड़ूँगा, चाहूँगा, नाचूँगी, भूलूँगी सभी क्रिया सूचक शब्दों में भी ऊकार होता है। चुका, चुकी, चुके आदि में ऊकार न होकर, उकार है।

सूप, सोल्यूशन, स्कूल, स्कूटर, स्क्रू, स्टूल हूट, बूट, स्टूडेंट, म्यूजिक, यूनियन, यूनिट, शूट, शेड्यूल, शैम्पू, सूट, सूटकेस, लूडो, लूप, बैलून, यूज़, रंगरूट, रूट, रूटीन, रिव्यू, रिफ़्यूज, व्यू, यूनिफार्म, शू, थ्रू,

पैराशूट, प्रूफ़, फ़्यूज़, फ़्लू, नून, न्यूज़, न्यूट्रल, न्यूट्रॉन, इंटरव्यू, इशू, रूल, कंप्यूटर, ट्यूब, ट्यूमर, पतलून, कार्टून, कूलर, कैप्सूल, क्यू, ग्लूकोस, जून, जूनियर, जूस, टूर, टूल, एग्जिक्यूटिव, वैल्यू आदि में ऊकार है।

ट्युशन, कम्यूनिटि, टुर्नामेंट, कर्फ़्यु, कम्यूनिज़्म, हनिमून, वैल्युएशन, स्क्रूटिनि, शुगर, म्युजियम, वेनु, मूवि, युरेनियम, ग्रूप, कम्यूनिकेशन आदि कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके रूप हिन्दी में थोड़े अलग प्रचलित हैं; जैसे मूवी, शूगर आदि। हम पहले वाले (ऊपर बताए गए) की ही अनुशंसा करेंगे। कम्युनिस्ट शब्द ही ज़्यादा प्रचलित है, कम्यूनिस्ट नहीं।

शुरूआत को शुरुआत लिखना या बोलना उचित नहीं है। दूकान-दुकान, गुरु-गुरू, उषा-ऊषा आदि में दोनों ही रूप सही माने जाते हैं। रू और रु में अंतर होना चाहिए। दूरी, हिन्दू, शुरू, रुपया, ऊपर, पूरा, ज़रूरी, स्कूल, रूप, छुआछूत, दूध आदि को क्रमशः दुरी, हिन्दु, शुरु, रूपया, उपर, पुरा, ज़रुरी, स्कुल, रुप, छूआछूत, दुध आदि नहीं लिखा जाना चाहिए।

लूटना, लुटना, जूझना, जुझारू, सूखा, सुखा, बुड्ढा, बूढ़ा, भून, भूल, भुलाना आदि में ध्यान देना चाहिए। 'लूट रहा है' और 'लुट रहा है' में स्पष्ट अंतर है, इसलिए यहाँ सावधानी की विशेष आवश्यकता है।

मैं, तुम, वह, वे आदि के रूपों मुझसे, मुझको, तुमने, तुमसे, उससे, उसका, उन्होंने, उनका आदि में उकार होता है। तू और तूने में ऊकार, लेकिन तुझमें, तुझे आदि में उकार होता है।

चीनी, जापानी आदि के शब्दों में अंत में ऊकार होता है। संस्कृत के अस्तु, एवमस्तु, तथास्तु, भवन्तु आदि (क्रिया वाले भाग) में उकार होता है। अनुकूल, अनुकूलन, अनुभूति, अनुसूचित आदि में अनु उपसर्ग के बाद ऊकारयुक्त व्यंजन है। तमिल या अन्य दक्षिणी भाषाओं में अंत में उकार होता है, जैसे तमिलनाडु, श्रीरामुलु आदि। ऐसे ही रमन, रामेश्वरन, ईश्वरन आदि में ण के स्थान पर न है, क्योंकि यह संस्कृत या हिन्दी के व्याकरण के अनुसार नहीं होकर दक्षिण की परंपरा के अनुसार है।

## अध्याय– 29

### घरेलू पुकार नाम

बात जब नामों (शब्दों) की, खासकर घरेलू पुकार नामों (निक नेम) की हो, तो हम एक लगभग सार्वभौम (सब जगह लागू होने वाला) नियम खोज सकते हैं। रिंकू, टिंकू, पिंकी, बिट्टू, पप्पू, अब्बा, सुब्बू, अम्मी जैसे शब्द हमें इस तरफ इशारा करते हैं। पहले यह स्पष्ट कर लें कि आ, ई, ऊ, ऐ और औ क्रमशः अ, इ, उ, ए और ओ के दीर्घ रूप हैं। हम आ को अ का दीर्घ रूप कह सकते हैं। यही बात बाकी वर्णों पर भी लागू होगी। इस हिसाब से हम अ, इ और उ को ह्रस्व कहेंगे और आ, ई और ऊ को दीर्घ। ऐ और औ पर फिलहाल हम बात नहीं करेंगे।

हम कह सकते हैं कि अधिकांश शब्दों में (खासकर दो वर्णों वाले शब्दों में, भले ही अंतिम वर्ण संयुक्त हो) अंतिम वर्ण दीर्घ होता है और उसके पहले वाला वर्ण ह्रस्व। मंटू, निक्की, चिंटू आदि में हम यह देख सकते हैं। म के बाद का अनुस्वार म का नहीं टू का हिस्सा है, यह ध्यान रखें। पुकार के नामों के अतिरिक्त यह नियम दूसरे प्रकार के शब्दों पर भी लागू होता है। हालांकि पहले भी हमने देखा है कि अधिकांश शब्दों में अंत में स्वरों के दीर्घ रूप (ई, आ या ऊ) दिखाई पड़ते हैं; ए और ओ को फिलहाल इससे बाहर ही रखकर बात करेंगे। रिंकी, सिंकी, पिंकी, टिंकी, चिंटू, पिंटू, पप्पू, कल्लू, लल्लू, बुद्धू, सिद्धू, सप्रू, नेहरू, सविता, कविता, अनिता, मिक्की, निभी, अप्पू, सोनिया, जिया, मियाँ, गप्पू, चप्पा, कच्चा, बच्चा, मुन्ना, अन्ना, अन्नू, मन्नू, चिंता, टिंकू, मंटू, संटू, बिल्लू, टिल्लू, टिक्की, अब्बा, अम्मा, मज्जा, पता, पत्ता, गत्ता, बित्ता, करिश्मा, आरजू, मंजू, संजू, अंजू, रंजू, नंदू, चंदू, मुरली, निभा, निरमा, माधुरी, अनामिका, सिन्हा, मुन्नू, चुन्नू, सत्तू, रट्टू, जग्गा, पहिया, चुहिया, बनिया, बँधुआ, चिमटा, झगड़ा, नत्थू, गुंजा, तनुजा, सपना, कामिनी, विहारिणी, दामिनी, हत्था आदि इसके उदाहरण के तौर पर लिए जा सकते हैं। देशों, शहरों आदि के नाम हों या बीमारियों के, यह नियम बहुत हद तक लागू होता है। कोरिया, अमेरिका, अल्बानिया, पटना, निमोनिया, दमा आदि देखे जा सकते हैं। क्रियाएँ भी बहुत हद तक इसका पालन करती हैं, जैसे करना, मरना, पूछना, मारना, बोलना आदि। निरर्थक किस्म के नामों पर तो यह नियम लगभग ठीक बैठता है।

पप्पू को पप्पु लिखना उचित नहीं है। यह अक्सर ग़लत रूप में दिखाई पड़ने वाला शब्द है।

शब्दों के अन्त में ऐ और औ न के बराबर आते हैं। क़ै, जौ, नौ, रौ, गौ, जै, तै, मै, सौ, है आदि हिन्दी के कुछ ऐसे ही शब्द हैं। करै, चरै, टरै, मिटै, बसौ, हरौ आदि शब्द ब्रजभाषा, अवधी आदि में प्रयोग होने वाले शब्द हैं। इन भाषाओं में अंत में इ की भी परंपरा है, जैसे सोइ, कोउ आदि; लेकिन वर्तमान हिन्दी में ऐसा नहीं होता।

हम अगले भाग में इकार, ईकार, उकार और ऊकार वाले वर्णों से शुरू होने वाले शब्दों का एक संक्षिप्त संग्रह प्रस्तुत करेंगे, जिनका उपयोग साधारण संदर्भ के लिए किया जा सकेगा।

## अध्याय - 30

### शब्दों का संग्रह

इस भाग में हम उन शब्दों का संग्रह प्रस्तुत करेंगे, जो व्यंजनों में इकार, ईकार, उकार और ऊकार के लगने से ही शुरू होते हैं। इसमें ऐसे बहुत सारे शब्द हैं, जो दैनिक लेखन, वाचन आदि में आते हैं।

**क वाले शब्द-** किंकर, किंचन, किंचित्, किंतु, किंवदंती, किटकिटाना, किण्वन, कितना, किताब, किधर, किन, किनका, किनारा, किन्नर, किन्हें, किफायत, किरकिरा, किरकिरी, किरण, किरात, किराना, किरानी, किराया, किरीट (मुकुट), किलकना, किलकारी, किला, किलो, किल्विष, किवाड़, किशमिश, किशोर, किश्त, किस, किसलय, किसान, किसी, किस्म, किस्मत, क़िस्सा, कीकर, कीचड़, कीट, कीड़ा, कीप, क़ीमत, कीमा, कीर्तन, कील, कुआँ, कुँआरा, कुंज, कुंजी, कुंठा, कुंड, कुंडल, कुंडलिनी, कुंडली, कुंडी, कुंतल, कुंती, कुंद, कुंदन, कुंभ, कुकड़ू कूँ, कुक्कुट, कुच, कुचलना, कुछ, कुटवाना, कुटाई, कुटिया, कुटिल, कुटी, कुटीर, कुटुंब, कुठार, कुढ़ना, कुणाल, कुतरना, कुतिया, कुतूहल, कुत्ता, कुत्सा, क़ुदरत, कुदाल, कुनबा, कुनैन, कुपित, कुप्पी, कुफ़्र, कुबड़ा, कुबेर, कुमकुम, कुमुद, कुम्हलाना, कुम्हार, कुरता, कुरबान, क़ुरआन, कुरेदना, कुर्मी, कुर्सी, कुल (समूचा, सब; वंश, खानदान), कुलक, कुलटा, कुलफ़ी, कुलबुलाना, कुलाँच, कुली, कुल्ला, कुल्हड़, कुल्हाड़ी, कुश, कुशल, कुशाग्र, कुश्ती, कुष्ठ, कुसुम, कुसूर, कुहकना, कुहरा, कूँची, कूक, कूकना, कूच, कूचा, कूजन, कूट, कूटना, कूदना, कूप, कूपन, कूबड़, कूर्म, कूल (किनारा, अंग्रेज़ी का ठंढा), कूल्हा, क़ूवत आदि।

**ख वाले शब्द-** खिंचना, खिंचवाना, खिंचाव, खिचड़ी, खिझाना, खिड़की, ख़िताब, ख़िदमत, खिन्न, खिलना, खिलवाड़, खिलवाना, खिलाड़ी, खिलाना, खिलाफ़, खिलौना, खिल्ली, खिसकना, खिसकाना, खींचना, खीझना, खीर, खील, खुजलाना, खुजली, खुद, खुदरा, खुदवाना, खुदा, खुदाई, खुदी, खुद्दी, खुनस, खुफ़िया, खुमार, खुर, खुरखुरा, खुरचन, खुरचना, खुरदरा, खुरपी, खुरमा, खुराक, खुराफ़ात, खुर्द, खुर्रम, खुर्शीद, खुलना, खुलासा, खुश, खुश्क, खूँख़ार, खूँटी, खून, खूब, खूबानी, खूबी, खूसट आदि।

**ग वाले शब्द -** गिड़गिड़ाना, गिद्ध, गिनती, गिनना, गिरगिट, गिरजा, गिरना, गिरफ़्त, गिरवी, गिरह, गिराना, गिरि, गिरिजा, गिरीश, गिरोह, गिर्द, गिलटी, गिलहरी, गिलाफ़, गिलौरी, गिल्ली, गींजना, गीत, गीता, गीदड़, गीला, गुंजन, गुंजा, गुंजाइश, गुंजायमान, गुंडई, गुंडा, गुँथना (गूँथा जाना), गुंफन, गुंबज़, गुंबद, गुच्छा, गुज़रना, गुजरात, गुज़ारा, गुज़ारिश, गुझिया, गुट, गुटका, गुटर गूँ, गुठली, गुड़, गुड़िया, गुण, गुणा, गुत्थी, गुदगुदाना, गुदगुदी, गुदा (मलद्वार), गुनगुना, गुनगुनाना, गुना, गुनाह, गुप्त, गुफा, गुफ़्तगू, गुबार, गुब्बारा, गुम, गुमटी, गुमनाम, गुमान, गुमाश्ता, गुर, ग़ुरबत, गुरिल्ला, गुरु, गुरुत्व, गुरुत्वाकर्षण, गुर्ग, गुर्जर, गुर्दा, गुर्राना, ग़ुल, गुल, गुलछर्रा, गुलफाम, गुलशन, गुलाब, ग़ुलाम, गुलाल, गुलिस्ताँ, गुलेल, गुल्लक, गुसल, गुसलख़ाना, गुस्ताख़, गुस्सा, गुहा, गुहार, गुह्य, गूँगा, गूँज, गूँथना, गूगल, गूढ़, गूदा आदि।

**घ वाले शब्द -**घिग्घी, घिघियाना, घिचपिच, घिन, घिनौना, घिरना, घिरनी, घिसना, घिसाई, घी, घुँघरू, घुंघराला, घुटन, घुटना, घुट्टी, घुड़की, घुड़दौड़, घुड़सवार, घुणाक्षर, घुन, घुप, घुमंतू, घुमक्कड़, घुमरना, घुमाना, घुमाव, घुलनशील, घुलना, घुलाना, घुसना, घुसपैठ, घूँघट, घूँट, घूँसा, घूमना, घूरना, घूर्णन, घूस आदि।

**च वाले शब्द -** चिंगारी, चिंघाड़ना, चिंता, चिंदी, चिउड़ा, चिकना, चिकित्सक, चिकोटी, चिचियाना, चिट, चिट्ठा, चिट्ठी, चिड़चिड़ाना, चिड़िया, चिड़ीमार, चिढ़, चिढ़ना, चिढ़ाना, चितकबरा, चितवन, चिता, चितेरा, चित्त, चित्र, चिथड़ा, चिपकना, चिपचिपाना, चिपड़ी, चिमटा, चिमनी, चिरंजीव, चिरंतन, चिरकुट, चिराग़, चिरौरी चिलचिलाना, चिलम, चिलमन, चिल्लाना, चिहुँकना, चिह्न, चीं, चींटा, चींटी, चीकू, चीखना, चीज़, चीता, चीत्कार,चीनी, चीर, चीरना चील, चुंगी, चुंबक,

चुंबन, चुक़ंदर, चुकता, चुकना, चुकाना, चुक्कड़, चुगना, चुग़ल, चुटकुला, चुटकी, चुटिया, चुड़ैल, चुनना, चुनरी, चुनाव, चुनिंदा, चुनौती, चुन्नट (चुनट), चुप, चुपड़ना, चुप्पा, चुप्पी, चुम्मा, चुभन, चुभना, चुभाना, चुराना, चुरुट, चुलबुलाना, चुल्लू, चुस्त, चुस्ती, चुहल, चुहड़ा, चुहिया, चूँ, चूँकि, चूकना चूज़ा, चूड़ा, चूड़ी, चूना, चूर, चूर्ण, चूल्हा, चूषक, चूहा आदि।

**छ वाले शब्द -** छिछोरपन, छिटकना, छिड़कना, छिड़काव, छितराना, छिड़ना, छिद्र, छिपकली, छिपना, छिपाना, छियानबे, छिलका, छिलना, छिहत्तर, छींक, छींकना, छींटना, छींटा, छीनना, छीलना, छुअन, छुआछूत, छुईमुई, छुटकारा, छुटपन, छुटभैया, छुट्टा, छुट्टी, छुड़ाना, छुपना, छुपाना, छुरा, छुरी, छुहारा, छू, छूट, छूत, छूना आदि।

**ज वाले शब्द -** जिंक, जिंदगी, ज़िक्र, जिगर, जिजीविषा, जिज्ञासा, जितना, जितवाना, जिताना, जितेंद्रिय, ज़िद (ज़िद्द), जिधर, जिन, जिन्हें, जिप्सम, ज़िम्मा, ज़िम्मेदार, जिराफ़, ज़िला, जिलाधिकारी, जिलाना, जिल्द, ज़िल्लत, जिस, जिस्म, जिस्मानी, जिह्वा, जी, जीजा, जीत, जीतना, जीना, जीभ, जीरा, जीर्ण, जीवंत जीव, जीवक, जीवन, जीवा, जीवाणु, जीविका, जुंबिश, जुआ, जुआरी, जुकाम, जुगत, जुगनू, जुगाली, जुगुप्सा, जुटना, जुटाना, जुड़ना, जुड़वाँ, जुड़ाना, जुतना, जुदा, जुनून, ज़ुबान, जुमला, जुम्मन, जुराब, जुर्म, जुर्माना, जुर्रत, जुल्म, जुलाई, जुलूस, जुल्फ़, जुस्तजू, जूँ, जूझना, जूट, जूठन, जूठा, जूड़ा, जूता, जून, जूल, जूस, जूही आदि।

**झ वाले शब्द -** झिझक, झिझकना, झिड़की, झिड़कना, झिलमिल, झिल्ली, झींगा, झीना, झील, झुंझलाना, झुंड, झुकना, झुकाना, झुकाव, झुग्गी, झुठलाना, झुनझुना, झुमका, झुमाना, झुर्री, झुलसना, झुलसाना, झुलाना, झूठ, झूम, झूमना, झूमर, झूलना, झूला आदि।

**ट वाले शब्द -** टिंचर, टिकट, टिकटिक, टिकाऊ, टिकिया, टिकुली, टिकोरा, टिड्डा, टिन, टिप, टिप्पणी, टिफ़िन, टिमटिमाना, टीक, टीका, टीप, टीपन, टीला, टीस, टुक, टुकड़खोर, टुकड़ा, टुकुर टुकुर, टुच्चा, टुटपुँजिया, टुनटुन, टूँगना, टूटन, टूटना, टूल आदि।

**ठ वाले शब्द -** ठिकाना, ठिगना, ठिठकना, ठीक, ठीकड़ा (ठीकरा), ठीका, ठीकेदार, ठुकराना, ठुकाई, ठुड्डी, ठुमकना, ठुमकी, ठूँठ, ठूँसना, ठूसना आदि।

**ड वाले शब्द -**डिंब, डिगना, डिगाना, डिनर, डिब्बा, डिबिया, डींग, डील, डीह, डुगडुगी, डुबकी, डुबाना, डुबोना, डुलाना, डूबना आदि।

ढ वाले शब्द - ढिंढोरची, ढिंढोरा, ढिठाई, ढिबरी, ढिलाई, ढीठ, ढील, ढीलना, ढीला, ढुलमुल, ढुलाई, ढूँढ़ना आदि।

**त वाले शब्द -** तिकड़म, तिकड़ी, तिक्त, तिगुना, तिजोरी, तितली, तिथि, तिनका, तिपहिया, तिबारा, तिमिर, तिरंगा, तिरछा, तिरपन, तिरस्कार, तिरोभाव, तिर्यक, तिल, तिलक, तिलांजलि, तिलिस्म, तीक्ष्ण, तीखा, तीतर, तीता, तीमारदार, तीरंदाज़, तीर, तीर्थ, तीली, तीव्र, तीसरा, तीसी, तुंग, तुक, तुच्छ, तुझे, तुड़वाना, तुतलाना, तुनक, तुम, तुरंग, तुरंत, तुकाराम, तुरत, तुरही, तुर्की, तुर्रा, तुलना, तुलसी, तुला, तुल्य, तुषार, तुष्ट, तू, तूतिया, तूफ़ान, तूर्य, तूलिका आदि।

**थ वाले शब्द -** थियेटर, थिरकन, थिरकना, थुकवाना, थुक्का फ़जीहत, थू, थूक, थूकना, थूथन, थूरना आदि।

**द वाले शब्द -** दिक्, दिक्कत, दिखना, दिखलाना, दिगंत, दिगंबर, दिगर, दिन, दिमाग़, दिल, दिलवाना, दिलाना, दिलावर दिलासा, दिवंगत, दिवस, दिवा, दिवाला, दिवालिया, दिवास्वप्न, दिव्या, दिशा, दिसंबर, दिहाड़ी, दीक्षांत, दीक्षा, दीक्षित, दीदार, दीन, दीनार, दीप, दीपक, दीप्ति, दीमक, दीया, दीर्घ, दीर्घा, दीवान, दीवार, दुःख, दुआ, दुकान, दुक्का, दुखड़ा, दुखाना, दुखी, दुगनी, दुग्ध, दुतकारना, दुधारू, दुनिया, दुपट्टा, दुपहर, दुबई, दुबकना, दुबला, दुबारा, दुभाषिया, दुमंजिला, दुम, दुरूह, दुर्गंध,

दुर्गा, दुलहन, दुलार, दुविधा, दुशवार, दुश्चिंता, दुहना, दुहाई, दूजा, दूत, दूतावास, दूध, दूधिया, दून, दूब, दूबे, दूभर, दूरंदेश, दूर, दूरी, दूर्वा, दूल्हा, दूषण, दूहना आदि।

**ध वाले शब्द -** धिंगा, धिक्कार, धीमा, धीर, धीरज, धीरे, धीवर, धुआँ, धुंध, धुँधला, धुआँधार, धुआँसा, धुकधुकी, धुत्त, धुन, धुनना, धुनिया, धुरंधर, धुर, धुरा, धुरी, धुलना, धुलवाना, धुलाई, धू धू, धूनी, धूप, धूम, धूमल, धूमिल, धूम, धूर्त, धूल, धूलि, धूसर आदि।

**न वाले शब्द-** निंदक, निंदा, निकट, निकम्मा, निकलना, निकाय, निकालना, निकास, निकाह, निकुंज, निकेल, निक्षेप, निखार, निखारना, निगम, निगरानी, निगलना, निगाह, निचला, निचोड़ना, निछावर, निज़ाम, निजी, निठल्ला, निडर, निढाल, नितंब, नितांत, नित्य, निदर्शन, निदान, निद्रा, निधन, निधि, निनाद, निपटना, निपटारा, निपुण, निबंध, निबंधन, निब, निबटाना, निबाह, निभना, निभाना, निमंत्रण, निमग्न, निमित्त, निम्न, नियंता, नियत (निश्चित), नियति, नियम, नियुक्त, नियोजन, निरंकुश, निरंतर, निरक्षर, निरपराध, निरोध, निर्जन, निर्झर, निर्णय, निर्दय, निर्देश, निर्धारण, निर्भर, निर्मल, निर्माण, निर्यात, निर्वचन, निर्वाचन, निर्वाह, निर्विवाद, निलंबन, निवारण, निवाला, निवास, निविदा, निवेदन, निशांत, निशा, निशान, निश्चय, निषिद्ध, निषेध, निष्कपट, निष्कर्ष, निष्कासन, निष्क्रिय, निष्ठा, निष्फल, निसार, निहत्था, निहाल, निहित, नींद, नींबू, नींव, नीच, नीचा, नीति, नीम, नीर, नीरज, नीरव, नीरोग, नील, नीलाम, नीलिमा, नीहारिका, नुक्कड़, नुक़ता, नुक़सान, नुकीला, नुक्कड़, नुचवाना, नुमाइंदा, नुमाइश, नुमायाँ, नूतन, नूर, नूह आदि।

**प वाले शब्द -** पिंजर, पिंड, पिघलना, पिघलाना, पिचकना, पिचकाना, पिछड़ना, पिछड़ा, पिछलग्गू, पिछला, पिटना (पीटा जाना), पिटाई, पिटारा, पिट्ठू, पिता, पित्त, पिसाना, पीटना, पीलवान, पीसना, पुंकेसर, पुंज, पुंजीभूत, पुलिंग, पुआल, पुकार, पुखराज, पुख़्ता, पुचकारना, पुच्छल, पुछल्ला, पुजवाना, पुजाना, पुट, पुडुचेरी, पुड़िया, पुण्य, पुतला, पुतली, पुताई, पुत्र, पुदीना, पुनः, पुनीत, पुरवा, पुरवाई, पुरस्कार, पुराण, पुरातन, पुराना, पुरुष, पुर्ज़ा, पुल, पुलाव, पुलिंदा, पुलिस, पुश्त, पुश्तैनी, पुष्ट, पुष्टि, पुष्प, पुस्तक, पूँछ, पूँजी, पूगना, पूछना, पूजना, पूजा, पूर्ति, पूरक, पूरब, पूरा, पूर्ण, पूस आदि।

**फ वाले शब्द -** फ़िकरा, फ़िक्र, फिट, फिटकिरी, फ़ितरत, फ़ितूर, फिदा, फिनायल, फ़िरंग, फिर, फ़िरका, फिरना, फिराना, फ़िल्म, फिसलना, फिसलाना, फींचना, फीस, फुँसी, फुट, फुटकर, फुटबॉल, फुटौव्वल, फुदकना, फुफकारना, फुफेरा, फुर्ती, फुलझड़ी, फुलवारी, फुलाना, फुलेल, फुसफुसाना, फुस्स, फुहार, फूँक, फूट, फूफी, फूल, फूलना, फूस आदि।

**ब वाले शब्द -** बिंदिया, बिंदी, बिंदु, बिंब, बिकना, बिकाऊ, बिक्री, बिखरना, बिखेरना, बिगड़ना, बिगाड़ना, बिगुल, बिचौलिया, बिच्छू, बिछड़ना, बिछाना, बिछावन, बिछोह, बिज़नेस, बिटिया, बिताना, बित्ता, बिदकना, बिदा, बिना, बियाबान, बिल, बिलकुल, बिल्ला, बिशप, बिसरना, बिसात, बिसारना बिस्तर, बीघा, बीच, बीज, बीट, बीड़ा, बीतना, बीन, बीमा, बीमार, बीस, बीहड़, बुँदिया, बुआ, बुक, बुख़ार, बुजुर्ग, बुझना, बुझाना, बुड्ढा, बुत, बुदबुदाना, बुद्ध, बुद्धि, बुद्धू, बुध, बुनकर, बुनना, बुनियाद, बुभुक्षा, बुरा, बुराई, बुलंद, बुलबुल, बुलावा, बुवाई, बुहारना, बूँद, बू, बूचड़, बूझना, बूट, बूटी, बूढ़ा, बूथ आदि।

**भ वाले शब्द -** भिंगाना, भिंचना, भिंडी, भिक्षा, भिक्षाटन, भीगाना, भिगोना, भिडंत, भिड़ना, भित्ति, भिनकना, भिनभिनाना, भिन्न, भिश्ती, भींगना, भींचना, भीख, भीगना, भीड़, भीत, बीतर, भीना, भीम, भीरु, भील, भीषण, भीष्म, भुक्खड़, भुक्त, भुखमरी, भुगतना, भुजंग, भुजा, भुजिया, भुट्टा, भुनाना, भुरभुरा, भुलक्कड़, भुलाना, भुलावा, भुलैया,भुवन, भुशुंडि, भूँकना, भूँजना, भू, भूख, भूत, भूनना, भूप, भूमि, भूमिका, भूमिहार, भूरा, भूरि, भूल, भूलना, भूषण, भूषा, भूसा आदि।

**म वाले शब्द -** मिचकाना, मिचलाना, मिजाज, मिटना, मिटाना, मिट्टी, मिठाई, मिडिल, मित, मितली, मिति, मित्र, मिथक, मिथुन, मिथ्या, मिनट, मिन्नत, मिमियाना, मियाँ, मियाद, मिरगी, मिरचा, मिरज़ई, मिरज़ा, मिर्च, मिल, मिल्कियत, मिलन, मिलान, मिली (हज़ारवाँ भाग), मिशन, मिश्र, मिष्ठान्न, मिसरी, मिसाल, मिस्र, मिस्त्री, मिहिर, मींजना, मीआद, मीटर, मीठा, मीत, मीन, मीनार, मीमांसा, मीर, मील (1760 गज), मीसना, मुंड, मुँडेर, मुंशी, मुंसिफ़, मुँह, मुंबई, मुआयना, मुक़दमा, मुक़द्दर, मुकर्रर, मुक़ाबला, मुक़ाम, मुकुंद, मुकुट, मुकुल, मुक्का, मुक्त, मुख, मुखड़ा, मुख़तार, मुखिया, मुखौटा, मुख्य, मुगदर, मुग़ल, मुग्ध, मुचलका, मुजरा, मुजरिम, मुटापा, मुट्ठी, मुठभेड़, मुड़ना, मुताबिक, मुदित, मुद्दा, मुद्रण, मुद्रा, मुनादी, मुनाफ़ा, मुनासिब, मुनि, मुनीब, मुनीम, मुन्ना, मुफ़लिस, मुफ़ीद, मुफ़्त, मुबारक, मुबाहिसा, मुमकिन, मुमुक्षा, मुमुक्षु, मुरझाना, मुरदा, मुरब्बा, मुरली, मुराद, मुरीद, मुर्गा, मुर्दा, मुलम्मा, मुलाक़ात, मुलायम, मुल्क, मुल्तवी, मुल्ला, मुवक्किल, मुशायरा, मुश्किल, मुष्टि, मुसकराना, मुसलमान, मुसाफ़िर, मुसीबत, मुस्टंडा, मुस्तैद, मुस्लिम, मुहब्बत, मुहरा, मुहर्रम, मुहाफ़िज़, मुहावरा, मुहिम, मुहूर्त, मूँग, मूँछ, मूँड़, मूँदना, मूक, मूठ, मूड, मूढ़, मूत्र, मूर्ख, मूर्च्छा, मूर्त, मूर्ति, मूर्द्धन्य, मूल, मूली, मूल्य, मूषक, मूसला आदि।

**य वाले शब्द -** यीशु, युक्त, युक्ति, युग, युगल, युग्म, युत, युति, युद्ध, युधिष्ठिर, युयुत्सु, युवक, युवती, युवराज, युवा, यूथ, यूनान, यूनिट, यूनियन, यूरिया, यूरो, यूरोप (युरोप) आदि।

**र वाले शब्द-** रिंग, रिंच, रिआयत, रिएक्टर, रिक्शा, रिकार्ड, रिकार्डिंग, रिक्त, रिज़र्व, रिज़र्वेशन, रिज़ल्ट, रिझाना, रिटर्न, रिटायर, रिपु, रिपेयर, रिपोर्ट, रिबन, रिया, रियाज़, रिरियाना, रिले, रिवाज़, रिवाल्वर, रिव्यू, रिश्ता, रिश्वत, रिसना, रिसर्च, रिहर्सल, रिहा, रिहाई, रीछ, रीझना, रीढ़, रीत, रीता, रीति, रुआँसा, रुआब, रुई (रूई), रुकना, रुक्मिणी, रुक्ष, रुख़, रुख़सत, रुख़सार, रुखाई, रुखानी, रुग्ण, रुचना, रुचि, रुझान, रुठाना, रुत, रुतबा, रुदन, रुद्ध, रुद्र, रुद्राक्ष, रुद्राणी, रुधिर, रुपया, रुबाई, रुमाल (रूमाल), रुलाई, रुलाना, रुष्ट, रुसवाई, रुस्तम, रूँधना, रूखा, रूटीन, रूठना, रूढ़, रूढ़ि, रूदाद, रूप, रूपसी, रूपा, रूबरू, रूबल, रूल, रूस, रूसी, रूसना, रूह, रूहानी आदि।

**ल वाले शब्द -** लिंक, लिंग, लिए, लिक्खाड़, लिखना, लिखवाना, लिखाई, लिखाना, लिटमस, लिट्टी, लिनेम, लिपटना, लिपस्टिक, लिपाई, लिपा पुता, लिपि, लिप्त, लिप्सा, लिफ़ाफ़ा, लिफ़्ट, लिबास, लियाक़त, लिस्ट, लिहाज़, लीक, लीग, लीचड़, लीची, लीडर, लीद, लीपा पोती, लीलना, लुंगी, लुंठन, लुक, लकमान, लुकाछिपी, लुगदी, लुगाई, लुच्चा, लुटाना, लुटिया, लुटेरा, लुढ़कना, लुढ़काना, लुत्फ़, लुधियाना, लुप्त, लुभाना, लुभावना, लुहार, लू, लूट, लूटना, लूम आदि।

**व वाले शब्द -** विंशति, विकट, विकराल, विकर्ण, विकर्षण, विकल, विकसित, विकार, विकास विकिरण, विकृत, विकेंद्रण, विकेट, विक्रम, विक्षत, विक्षिप्त, विक्षोभ, विखंडन, विख्यात, विगत, विगलन विग्रह, विघटन, विघ्न, विचरण, विचलन, विचार, विचित्र, विच्छिन्न, विच्छेद, विजय, विज्ञ, विज्ञप्ति, विज्ञान, विज्ञापन, विटामिन, विडंबना, वितरण, वितर्क, वितृष्णा, वित्त, विदा, विदीर्ण, विदुषी, विदूषक, विदेश, विदेह, विद्यमान, विद्या, विद्युत, विद्रोह, विद्वान, विद्वेष, विधवा, विधा, विधाता, विधि, विधुर, विनती, विनम्र, विनय, विनाश, विनीत, विनोद, विपक्ष, विपत्ति, विपत्र, विपदा, विपन्न, विपरीत, विपुल, विप्र, विप्लव, विभक्त, विभा, विभाग, विभिन्न, विभेद, विभ्रम, विमर्श, विमल, विमान, वियोग, विरंजन, विरल, विरला, विराम, विरासत, विरुद, विरुदावली, विरूप, विरोध, विलंब, विलय, विलास, विलोम, विवरण, विवाद, विवाह, विविध, विवेक, विशद, विशाल, विशिष्ट, विशुद्ध, विशेष, विश्राम, विश्लेषण, विश्व, विश्वास, विष, विषम, विषय, विषाणु, विषुवत्, विस्तार, विस्फोट विस्मय, विहार, विहीन, वीक्षण, वीणा, वीर, वुजूद, वुड आदि।

**श वाले शब्द** -शिकंजा, शिकवा, शिकस्त, शिकायत, शिकार, शिक्षक, शिक्षा, शिखर, शिखा, शिगूफ़ा, शिथिल, शिद्दत, शिनाख़्त, शिया, शिर, शिरकत, शिरा, शिरोमणि, शिला, शिल्प, शिल्पी, शिव, शिविर, शिशु, शिश्न, शिष्ट, शिष्य, शीघ्र, शीत, शीतल, शीर्ष, शील, शीश, शीशम, शीशी, शुक, शुक्र, शुक्राणु, शुक्रिया, शुक्ल, शुगर, शुचि, शुजा, शुतुरमुर्ग, शुद्ध, शुभ, शुमार, शुरू, शुरूआत, शुल्क, शुश्रूषा, शुष्क, शूकर, शूट, शूद्र, शून्य, शूरवीर, शूल आदि।

**स वाले शब्द** - सिंगल, सिंघल, सिंघारा, सिंचना, सिंदूर, सिंथेटिक, सिंधी, सिंधु, सिंहल, सिकुड़ना, सिक्का, सिख, सिखलाना, सिखाना, सिग्नल, सिगरेट, सिटकनी, सितंबर, सितम, सितार, सितारा, सिद्ध, सिधारना, सिनेमा, सिपहसालार, सिपाही, सिफ़ारिश, सिमटना, सियार, सियासत, सियाह, सिर, सिर्फ, सिलवट, सिलसिला, सिलाई, सिलाना, सिलिंडर, सिल्क, सिवा, सिवान, सिविल, सिसकना, सिसकी, सींक, सींकिया, सींग, सींचना, सीख, सीखना, सीट, सीढ़ी, सीता, सीधा, सीना, सीप, सीमा, सील, सुंदर, सुई (सूई), सुकून, सुख, सुखाना, सुखिया, सुगंध, सुघड़, सुचारु, सुझाना, सुझाव, सुडौल, सुता, सुथरा, सुदामा, सुधरना, सुधारना, सुधी, सुनना, सुनवाई, सुनाना, सुन्नी, सुपर, सुपारी, सुप्रीम, सुफल, सुबह, सुबकना, सुभाष, सुमन, सुमित, सुयश, सुर, सुरक्षा, सुरा, सुलगना, सुलगाना, सुलझना, सुलझाना, सुलभ, सुलतान, सुविधा, सुशील, सुषमा, सुस्ताना, सुहाग, सुहाना, सुहृद, सूँघना, सूखना, सूचना, सूजन, सूझना आदि।

**ह वाले शब्द** - हिंडोला, हिंद, हिंदी, हिंदुत्व, हिंदुस्तान, हिंदू, हिंसका, हिंसा, हिंस्र, हिकमत, हिचकिचाना, हिचकोला, हिजड़ा, हित, हिदायत, हिनहिनाना, हिफ़ाज़त, हिम, हिमांशु, हिय, हिरण्य, हिरन, हिरासत, हिलना, हिलाना, हिसाब, हिस्सा, हींग, हीन, हीरक, हीरा, हीलियम, हुंकार, हुंड, हुआ, हुआँ, हुक, हुकम, हुकूमत, हुक़्क़ा, हुजूम, हुजूर, हुड़दंग, हुनर, हुलास, हुलिया, हुल्लड़, हुसैन, हुस्न, हूँ, हूक, हूट, हूण, हूबहू, हूर आदि।

इनके अतिरिक्त क्रिया, क्लिष्ट, क्षितिज, क्षिप्रा, क्षीण, क्षीर, ग्रिड, ग्रीस, त्रिपुरा, त्रिशूल, प्रिय, प्रियंका, ब्रिटेन, श्री, श्रीलंका आदि भी हैं, जो संयुक्ताक्षरों में इकार, ईकार आदि के लगने से बने हैं। सूखना, सुखाना, पीटना, पिटना, भूनना, भुनाना, सिखाना, सीखना जैसे शब्दों के सही रूप के लिए यह संग्रह संदर्भ की तरह काम दे सकता है। यहाँ सभी शब्द नहीं दिए गए हैं, क्योंकि यह न तो संभव था और न ही आवश्यक। आप एक शब्द के आधार पर अनेक शब्दों के सही रूप का पता लगा सकते हैं, जैसे सिद्ध शब्द से सिद्धांत, सिद्धार्थ, सिद्धि, सिद्धिदात्री आदि का सही रूप समझा जा सकता है।

## अध्याय - 31

### शब्द और प्रयोग

इतिहासिक, पुराणिक, समाजिक, रसायनिक, व्यवहारिक, प्रमाणिक, अध्यात्मिक, विज्ञानिक जैसे शब्द प्रायः देखने को मिलते हैं। ये सारे प्रयोग ग़लत हैं। हिन्दी पर कठिन होने का आरोप लगाने से बेहतर छोटी छोटी बातों को समझने का प्रयास करना है। व्याकरण के अनुसार संज्ञा से विशेषण बनाने का एक तरीका शब्द के अंत में 'इक' लगाना भी है, लेकिन हमने व्याकरण के पदों की चर्चा करने की जगह व्यावहारिक हिन्दी को प्राथमिकता देने के इरादे से यह शृंखला शुरू की है; इसलिए हम शब्दों की दुनिया में बिना संज्ञा और विशेषण के चक्कर में पड़े आगे चलते हैं।

इक लगाते समय हमें शब्द के पहले वर्ण पर ध्यान देना होता है। जिन शब्दों में इक लगाना हो, उनके पहले वर्ण में लगी मात्रा को देखना और समझना ज़रूरी है। अगर शब्द का पहला वर्ण में अ या आ से युक्त हो, तो उसमें आकार होगा और अंत में इक लगेगा, जैसे प्रमाण में प्र पहला वर्ण है और इसमें अकार है; इसलिए यह प्रा में बदल जाएगा। इस तरह प्रामाणिक शब्द बनेगा। भाषा में भा पहला वर्ण है और इसमें आकार है, इसलिए इससे भाषिक शब्द बनेगा। अध्यात्म, अधिकार, समाज, रसायन, संस्कृति, अनुभव, अनुपात, समास, समूह, मंगल, अर्थ, धर्म, व्यवसाय, व्यवहार आदि में पहला वर्ण अकार वाला है; इसलिए आध्यात्मिक, आधिकारिक, सामाजिक, रासायनिक, सांस्कृतिक, आनुभविक, आनुपातिक, सामासिक, सामूहिक, मांगलिक, आर्थिक, धार्मिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक आदि शब्द बनेंगे। सांप्रदायिक, कार्मिक, मार्मिक, तार्किक, क्रांतिक, आधुनिक, आनुषंगिक, आनुष्ठानिक, आपराधिक, प्राथमिक, शारीरिक, मानसिक, आंशिक, मात्रिक, सार्वजनिक (सर्वजन से बना), पाक्षिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक, लाक्षणिक, सार्विक, आणविक, आलंकारिक, आरंभिक, कालिक, काल्पनिक, कारुणिक, आंचलिक, चारित्रिक, तात्त्विक, तांत्रिक, नागरिक, पारस्परिक, पारिवारिक, पारिश्रमिक, प्राकृतिक, याज्ञिक, वास्तविक, साहित्यिक, सामयिक, सांकेतिक, सांसारिक, स्वाभाविक, स्थानिक, सामरिक, चामत्कारिक, आंकिक, सांख्यिक, आत्मिक, आंतरिक, दार्शनिक, प्रादेशिक, पारिभाषिक, सामुद्रिक, आनुवंशिक, प्रासंगिक आदि कुछ ऐसे ही शब्द हैं।

इ, ई, ए और ऐ वाले वर्ण ऐकार से युक्त होते हैं, जब इक लगता है। सिद्धांत, शिक्षा, निदान, विज्ञान, विचार, नीति, इच्छा, इतिहास, सेना, वेद आदि के पहले वर्ण ऐकार से युक्त हो जाते हैं। ऐच्छिक, ऐतिहासिक, सैनिक, वैज्ञानिक, वैदिक, नैतिक, दैविक, नैदानिक, वैचारिक, पैशाचिक, नैमित्तिक, नैसर्गिक, वैमानिक, वैवाहिक, ऐकिक, ऐकांतिक, वैधानिक, भैषजिक, वैतनिक, पैतृक, दैहिक आदि शब्द इसी तरह बनते हैं।

उ, ऊ, ओ और औ अगर शब्द के पहले वर्ण में हों, तो औकार होता है। पुराण, मुद्रा, उपनिवेश, उद्योग, उपन्यास, भूमि, भूत, भूगोल, लोक आदि से पौराणिक, मौद्रिक, औपनिवेशिक, औद्योगिक, औपन्यासिक, भौमिक, भौतिक, भौगोलिक, लौकिक आदि बनते हैं। हमें स्वयं औद्योगिक शब्द के सही रूप का ज्ञान न था। इस नियम ने स्पष्ट कर दिया कि सही रूप क्या और क्यों है। उपचार, मूल आदि से औपचारिक, मौलिक, यौगिक, पौष्टिक, मौखिक, कौटुंबिक, बौद्धिक आदि शब्द भी इसी तरह बने हैं।

इकता, इकी आदि वाले प्रामाणिकता, वैज्ञानिकता, औपचारिकता, वैचारिकी, यांत्रिकी आदि शब्दों में भी यही नियम लागू हुआ है। संस्कृत और हिन्दी के समझने के लिए यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि अ या आ का संबंध आ से, इ या ई का संबंध ए से, उ या ऊ का संबंध ओ से और ऋ का संबंध अर् से होता है।

लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक, अधार्मिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, अलौकिक, संवैधानिक, पुरातात्विक, अभियांत्रिकी जैसे शब्दों में पहले भाग लोक, गण, अ, राज, मनो (मनः), सं, पुरा, अभि

आदि उपसर्ग की तरह हैं और इनमें ऊपर बताए नियम लागू नहीं हुए हैं। इनमें मूल शब्द, जो शब्द के दूसरे भाग के रूप में हैं, उनपर इक वाले नियम लागू हुए हैं।

राजनैतिक के लिए राजनीतिक शब्द भी प्रचलित है। एक शब्द पारलौकिक है, जो परलोक से बना है; इसमें पर और लोक दोनों शब्द बदलकर पार और लौकिक बने हैं। स्वर्ग से स्वर्गिक बनता है, स्वार्गिक नहीं। न्याय से न्यायिक और नैयायिक दोनों बनते हैं। अणु से आणविक, स्नायु से स्नायविक बनते हैं। अंत में उकार होने पर अव जुड़ता है, तब जाकर इक जुड़ता है। पशु से पाशव बना, फिर पाशविक बना है। क्षणिक, रणनीतिक, कूटनीतिक, वर्णिक आदि शब्दों के लिए क्षाणिक, रणनैतिक, कूटनैतिक, वार्णिक आदि शब्द नहीं मिलते हैं।

ज़्यादातर अशुद्धियाँ शब्द में आकार की जगह अकार लिखने, बोलने से होती हैं। इसलिए रसायनिक को रासायनिक, व्यवहार को व्यावहारिक, व्यवसायिक को व्यावसायिक, अध्यात्मिक को आध्यात्मिक, समाजिक को सामाजिक लिखने और बोलने का अभ्यास बढ़ाना चाहिए।

## अध्याय - 32

### शब्द और प्रयोग

सूखाना, डूबाना, लूटाना, लूटेरे, सीखाना, भूलाना जैसे शब्द ग़लत हैं। कौन सा रूप सही है; सूखाना या सुखाना; इसके पीछे स्पष्ट नियम हैं। शुद्ध रूपों को समझना ज़्यादा मुश्किल भी नहीं है। यदि हम किसी को पीटते हैं; खुद डूबते हैं, सीखते हैं, घूमते हैं, फूँकते हैं, भीगते हैं यानी स्वयं किसी कार्य को करते हैं, तो प्रायः दीर्घ इकार या उकार के साथ क्रिया शब्द शुरू होता है। उदाहरण के लिए 'राम मोहन को पीट रहा है', 'वह घूम रहा है', 'तुम छूट गए', 'वह मुझे भूल गया', 'पेड़ सूख रहे हैं', 'माली पौधों को सींचता है', 'वहाँ वे जायदाद लूट रहे थे' आदि वाक्यों में आने वाली क्रियाएँ ऊकार या ईकार युक्त व्यंजन से शुरू होती हैं। क्रिया दो प्रकार की हो सकती है, मूल और प्रेरणार्थक। मूल क्रिया में आना, लाना, वाना आदि जोड़कर प्रेरणार्थक बनाते हैं। पढ़ाना और पढ़वाना पढ़ना में आना (आ) और वाना को मिलाने पर बने हैं। तीन वर्णों वाली क्रियाओं; जैसे पढ़ना, चलना, चढ़ना, उड़ना आदि में ना के पहले आ और वा जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं। चलना से चलाना और चलवाना, चढ़ना से चढ़ाना और चढ़वाना इसके उदाहरण हैं। प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं क्रिया नहीं करता, दूसरों से कराता है। तीन वर्णों वाली ऐसी क्रियाओं से, जिनमें पहला वर्ण ईकार या ऊकार से युक्त हो, प्रेरणार्थक क्रिया बनाते समय ईकार को इकार में और ऊकार को उकार में बदल दिया जाता है; जैसे घूमना से घुमाना और घुमवाना, सूखना से सुखाना, जीतना से जिताना और जितवाना, भीगना से भिगाना और भिगवाना आदि। लेटना, बोलना, छोड़ना, देखना आदि एकार और ओकार से युक्त प्रथम वर्ण वाली क्रियाओं से प्रेरणार्थक क्रियाएँ एकार को इकार और ओकार को उकार में बदलने से बनती हैं। लेटना से लिटाना और लिटवाना, बोलना से बुलाना और बुलवाना, देखना से दिखाना, छोड़ना से छुड़ाना आदि इस नियम के अनुसार बनती हैं। चार वर्णों वाली क्रियाएँ, जैसे लटकना, पकड़ना, उलझना, भटकना, समझना आदि में आना और वाना जोड़कर प्रेरणार्थक रूप बनाते हैं। लटकाना, उलझाना, पकड़ाना, पकड़वाना, लटकवाना आदि इसके उदाहरण हैं।

दो वर्णों वाली क्रियाओं में पहला वर्ण ईकार हो, तो इकार में बदलकर और ऊकार हो, तो उकार में बदलकर और ना के पहले ला या लवा जोड़कर प्रेरणार्थक रूप बनाते हैं, जैसे जीना से जिलाना, पीना से पिलाना, सीना से सिलाना और सिलवाना, चूना से चुलाना, छूना से छुआना (छुलाना) आदि।

खाना से खिलाना बनता है, लेकिन आना, जाना, पाना आदि के प्रेरणार्थक रूप प्रचलित नहीं हैं। खेना, देना, लेना, सेना आदि एकारयुक्त प्रथम वर्ण वाली क्रियाएँ हैं। खेना, लेना आदि से खिवाना, लिवाना आदि रूप बनते हैं यानी कि लाना की जगह वाना और एकार की जगह इकार करके प्रेरणार्थक रूप बने हैं। देना से दिलाना और दिलवाना बनते हैं; यहाँ खेना, लेना आदि का नियम लागू नहीं होता।

खोना, होना, धोना, बोना, ढोना, रोना और सोना; ये सात ओकार युक्त प्रथम वर्ण वाली क्रियाएँ हैं। खोना और होना के प्रेरणार्थक रूप प्रचलित नहीं हैं। बोना से बुवाना (आना न जोड़कर, वाना जोड़ा गया है) बनता है। ओकार से शुरू होने वाली क्रियाएँ वाना जोड़कर प्रेरणार्थक बनती हैं। रोना, सोना, धोना आदि से रुलाना, सुलाना, धुलाना आदि रूप बनते हैं। इनमें भी ओकार को उकार में बदला गया है।

कुम्हलाना, गरजना, घिघियाना, टकराना, तुतलाना, पछताना, सकना, लँगड़ाना आदि से प्रेरणार्थक क्रियाएँ नहीं बनतीं यानी टकरवाना, गरजवाना जैसे शब्द नहीं होते। पड़ना से कई वैयाकरण पड़ाना या पड़वाना बनाना ठीक नहीं मानते, लेकिन पड़ाना शब्द शब्दकोशों में मिल सकता है। हम यह अनुशंसा करेंगे कि पड़ना के ेप्रेरणार्थक रूप नहीं बनाए जाएँ।

हाथ, बात, लात, गाली आदि से हथियाना, लतियाना, गरियाना, बतियाना; दाग, खरीद आदि से दागना, खरीदना; खटखट, थरथर, भनभन, गुनगुन, सनसन आदि से खटखटाना, थरथराना, भनभनाना,

गुनगुनाना, सनसनाना, डबडबाना और स्वीकार, अपना आदि से स्वीकारना, अपनाना आदि क्रियाएँ भी बनती हैं।

छाँटना, पूजा, मीठा, भूखा, पीटना, डूबना, लूटना आदि से बने ई या ईकार से खत्म होने वाले शब्दों में पहले वर्ण में ह्रस्व मात्रा होती है; जैसे पुजाई, पुजारी, मिठाई, भुखमरी, पिटाई, डुबकी, छँटाई, सिंचाई, कुटाई आदि। भुक्खड़, मिठास, फुलझड़ी, फुलवारी आदि भी मूल शब्द के पहले वर्ण के ईकार या ऊकार को इकार या उकार में बदलकर बने हैं।

क्रियाओं के दो रूप और हैं। 'किसको' पूछने पर जिस क्रिया का कुछ जवाब मिले, वह सकर्मक क्रिया होती है। सोना, टलना, मरना, सिंचना, डूबना, भीगना, टहलना, टूटना, जुटना, कटना, उड़ना आदि किसको का जवाब नहीं देतीं। समझने के लिए एक वाक्य लेते हैं, 'रहीम हँसता है'; इसमें किसको हँसता है पूछने पर कोई जवाब नहीं मिलता। 'किसलिए' नहीं, 'किसको' पूछकर यह स्पष्ट होगा कि क्रिया सकर्मक है या नहीं! जवाब नहीं मिलने पर क्रिया अकर्मक होगी। कुछ क्रियाएँ, जैसे घबराना, भरना, ललचाना, खुजलाना, लजाना आदि दोनों रूपों में आती हैं। अकर्मक से सकर्मक बनाने के कुछ तरीके हैं, अब उन्हें देखते हैं।

1) दो वर्णों वाली क्रियाओं जीना, पीना, सोना आदि से सकर्मक रूप बनाने के लिए दीर्घ मात्राओं को ह्रस्व में बदलकर अंत में 'ना' को 'लाना' बनाते हैं और यदि क्रिया का पहला वर्ण ओकार वाला हो, तो उसे उकार में तथा एकार हो, तो इकार में बदल देते हैं।

जीना, पीना से जिलाना, पिलाना बने हैं। जी को जि बनाकर लाना जोड़ने पर जिलाना बना है। रोना से रुलाना भी ऐसे ही बना है।

2) तीन या चार वर्णों वाली अकर्मक क्रियाओं में दूसरे वर्ण का दीर्घ करके भी सकर्मक क्रियाएँ बनती हैं। बैठना से बैठाना, उड़ना से उड़ाना, उठना से उठाना, निकलना से निकालना, बिगड़ना से बिगाड़ना, उतरना से उतारना आदि इसके उदाहरण दाहरण हैं। यहाँ ठ को ठा, क को का आदि में बदला गया है।

3) तीन वर्ण वाली अकर्मक क्रियाओं में पहले वर्ण को दीर्घ करके भी सकर्मक बनाते हैं। टलना, कटना, मरना, छिलना, पिसना, लुटना, सिंचना आदि से टालना, काटना, मारना, छीलना, पीसना, सींचना, लूटना, पीटना आदि का बनना इसके उदाहरण हैं।

4) जागना, भीगना, डूबना आदि के पहले वर्ण को ह्रस्व बनाकर और आना जोड़कर भी सकर्मक क्रियाएँ बनती हैं, जैसे जगाना, भिगाना, डुबाना, घुमाना, हिलाना आदि।

5) भड़कना, चिढ़ना, टहलना आदि में ना के पहले आ जोड़कर सकर्मक क्रिया बनाते हैं, जैसे भड़काना, चिढ़ाना, टहलाना आदि।

6) घिरना, छिड़ना, खुलना, तुलना, सिकुड़ना, घुलना आदि में पहले वर्ण के इकार को एकार में या उकार को ओकार में बदलकर सकर्मक बनाते हैं, जैसे घेरना, छेड़ना, खोलना, तोलना, सिकोड़ना, घोलना आदि।

7) कुछ क्रियाएँ जैसे, टूटना, जुतना, छुटना आदि से तोड़ना, जोड़ना आदि सकर्मक क्रियाएँ बनती हैं, जो अलग से वर्ण लेकर आती हैं।

अब हम पीटना और पिटना, लूटना और लुटना, पीसना और पिसना, सींचना और सिंचना आदि में अंतर समझते हैं। इनमें पहला रूप अंग्रेज़ी की क्रिया के पहले रूप की तरह है, जबकि दूसरा अंग्रेज़ी की क्रिया के तीसरे रूप की तरह। Beat और beaten (पीटा गया, जिसकी पिटाई हुई हो), irrigate और irrigated (सिंचित या सिंचा हुआ, जिसे सींचा जा चुका है ) को देखा जा सकता है। 'मैं पिटता हूँ' में पीटे जाने की घटना है यानी मुझे पीटा गया है, जबकि 'मैं पीट रहा था' में कर्ता स्वयं पीटने का काम कर रहा

था। 'वे लुट गए' में लूटने का काम कर्ता ने नहीं किया, जबकि 'हम लूट रहे हैं' में कर्ता 'हम' द्वारा लूटने की क्रिया हो रही है। लुटेरा शब्द सही है, लूटेरा नहीं। लूटपाट, खींचतान, लीपापोती आदि को लुटपाट, खिंचतान, लिपापोती नहीं लिखा या बोला जाना चाहिए। कर्ता स्वयं कार्य करे, तो अधिकांश क्रिया शब्दों को दीर्घ मात्रा से शुरू करते हैं, जैसे काटना, मारना, सींचना, पीसना, भूलना, डूबना, सूखना, घूमना आदि का प्रयोग करते हैं। 'मैं भूल गया' और 'मैं भुला दिया गया' में अंतर स्पष्ट है। पीटे जाने के लिए पिटना, सींचे जाने के लिए सिंचना, खींचा गया के लिए खिंचा आदि को ध्यान में रखकर सही लिखा जा सकता है। 'डूबा' का मतलब 'डूब गया' है, जबकि 'डुबा' का मतलब 'डुबाया गया' है।

जिस क्रिया में 'आना' अंत में आए, उसके पहले वर्ण में ह्रस्व मात्रा (इकार, उकार या अकार) होगी; जैसे सुलाना, भुलाना, डुबाना (डुबोना), घुमाना, झुलाना, सुखाना, सिखाना, कटाना आदि।

जागना, काटना, मारना, सीखना, भूलना, सींचना, जीतना, भागना, घूमना, भीगना, चीखना, खींचना, चीरना, छीलना, छींकना, छीनना, पीटना, पीसना, बीनना, लीपना, लीलना, कूकना, कूटना, कूदना, गूँथना, चाटना, चूमना, छूटना, छूना, जीना, पीना, जूझना, झूमना, झूलना, टूँगना, टूटना, डूबना, ढूँढना, थूकना, दूहना, पूछना, पूजना, फूँकना, फूटना, फूलना, बूझना, भूँकना, भूनना, भूलना, मूँदना, रूठना, लूटना आदि क्रियाएँ सीधे कर्ता द्वारा की जाती हैं और इन सबमें पहला वर्ण दीर्घ मात्रा से युक्त है। 'पेड़ सूख गए' में पेड़ कर्ता है और इसमें किसी दूसरे के द्वारा सुखाने की क्रिया नहीं हो रही है, पेड़ स्वयं ही सूख रहे हैं; 'समय बीत गया', 'मैं भूल गया', 'राम सीता को ढूँढ रहे थे', 'किशोर जाग रहा था', 'वह सवाल पूछेगा', 'हम कुछ सीखेंगे', 'रमा ने गणेश को गोलियों से भून दिया', 'मैं जेल से छूटकर आ चुका था', 'तुम खुद तो डूबोगे ही', 'वह युद्ध जीतेगा', 'मैं भीग गया' आदि में कर्ता खुद के लिए क्रियाएँ कर रहे हैं या खुद कर रहे हैं। 'वह कपड़े सुखाता है' में वह सुखा रहा है, जबकि 'मेरे कपड़े सूख गए' में कपड़े सूख रहे हैं, न कि 'मैं'। 'चोर ने रुपए छीन लिए' में चोर छीन रहा है, जबकि 'उस औरत के गहने छिन गए' में गहने छीन लिए गए हैं, औरत ने छीने नहीं हैं।

## अध्याय - 33

### अनुस्वार और चंद्रबिन्दु

अनुस्वार और चंद्रबिन्दु पर इस शृंखला की ग्यारहवीं और बारहवीं कड़ी में विस्तार से चर्चा की गई है। आज हम चंद्रबिन्दु पर फिर से बात करेंगे। यहाँ यह ध्यान दिलाना चाहेंगे कि अनुस्वार की जगह कवर्ग, टवर्ग और पवर्ग के वर्णों के पहले उनके पंचमाक्षर का प्रयोग करना ज़्यादा ज़रूरी माना जा सकता है; क्योंकि हिन्दी पट्टी के लोग तो समाज से सीख लेते हैं कि कंगण, पंख, गंगा, संघ, चंपक, कंद आदि में लिखे अनुस्वार को क्या पढ़ा जाए (ङ्, न्, म् आदि); लेकिन जो हिन्दी से बिलकुल अपरिचित हैं, जैसे जर्मन, रूसी, तमिल आदि; वे कैसे समझ पाएँगे कि कंबल को कन्बल कहें, कङ्बल कहें, कण्बल कहें या कम्बल! (हालांकि हम इसका समाधान प्रस्तुत कर चुके हैं)

करे और करें में किसका प्रयोग कहाँ हो, यह समझने के लिए कुछ बातों से गुज़रते हैं। जब संभावना, प्रार्थना, कामना, आज्ञा, सुझाव आदि के वाक्य हों, आदरसूचक शब्द न हों और बहुवचन न हो, तब क्रिया में अन्त में बिन्दी (हम चंद्रबिन्दु के लिए इसी शब्द का प्रयोग कर रहे हैं) नहीं होगी। इसको समझने के लिए कुछ उदाहरण लेते हैं। 'चाहे कोई कहे', 'कोई भी हो', 'अगर तुम ऐसा करो', 'आपकी इच्छा पूरी हो', 'वह जाए या नहीं?', 'मानो या न मानो', 'तुम निकलो, मैं आता हूँ', 'बाहर जाओ', 'कोई मुझे समझाए', 'ग़रीब आदमी चाहे जितना रोए, कोई नहीं सुनता', 'संभव है वर्षा हो', 'चाहे कोई मुझे जंगली कहे', 'जा सको, तो ज़रूर जाना चाहिए', 'जब तक कोई असंतुलित बल न लगे', 'ग़लती चाहे कोई करे, सज़ा उस बदमाश को ही मिलेगी', 'तू कुछ भी कर ले, बच नहीं सकता' आदि में हम स्पष्ट देख सकते हैं कि इनमें बिंदी के न होने का नियम लागू हुआ है।

'आप कहें, तो हम वहाँ नहीं जाएंगे', 'वे लोग चाहे जो करें, हम लिखते रहेंगे' (ध्यान रखें यहाँ 'चाहे' क्रिया सूचक नहीं है), 'अपनी भावनाओं पर काबू रखें', 'आपलोग निकलें', 'आप हज़ारों साल जिएँ', 'हम सब क्या करें?', 'गाँधी अमर रहें', 'जब लोग पत्थर बन गए हों, संवेदना अपना अर्थ खो देती है' आदि में क्रिया में बिन्दी है। बहुवचन कर्ता की स्थिति में संभावना, प्रार्थना, शाप, वरदान, आदेश आदि के वाक्य या वाक्यखंड में क्रिया बिन्दी से समाप्त होती है, जैसा कि यहाँ दिखाया गया है।

'मैं' के साथ जब इस तरह के वाक्य आते हैं, तो क्रिया के अन्त में बिन्दी आती है, जैसे बोलूँ, करूँ, जाऊँ, हूँ आदि।

वर्तमान काल के 'है' और 'हैं' के मामले में स्पष्ट नियम है कि 'है' एकवचन ('तुम' और 'मैं' को छोड़कर) या अनादर या गहरे लगाव के सूचक 'तू' के साथ लगता है, जबकि 'हैं' बहुवचन कर्ताओं और आदरसूचक एकवचन 'आप' और 'वे' के साथ लगता है। यहाँ यह कहना ज़रूरी है कि बिहार में 'तुम', 'तुमसब' और 'तुमलोग' के साथ 'है' या 'था' का प्रयोग जमकर बोलते समय किया जाता है, जैसे 'तुम पढ़ता है?', 'तुमसब वहाँ गया था न?' आदि। 'है' का प्रयोग 'तू' के साथ होता है, 'तुम' के साथ नहीं। 'तुम' के साथ 'हो' का प्रयोग करते हैं।

भूतकाल के 'थे' में बिन्दी किसी भी हालत में नहीं लगाई जाती। प्रायः छात्रों द्वारा 'थें' लिखते देखने को मिला है, जो तनिक भी सही नहीं है। 'तू' के साथ 'था' का प्रयोग होता है। 'थी' का प्रयोग स्त्रीलिंग कर्ता या कर्म के एकवचन रूप के साथ और 'तू' के साथ किया जाता है।

जिन्हें, उन्हें, जिन्होंने, किन्हीं, उन्होंने, उसमें, किसमें, उनमें, इन्हीं, जिसमें आदि में भी बिन्दी है।

माँ, नहीं, मैं आदि में भी बिन्दी है। हाथी, अभी जैसे कुछ शब्दों को उच्चारित करते समय हम चंद्रबिन्दु की मदद ले लेते हैं, जो ठीक नहीं है। हाँथी, हाँथ, अभीं आदि के स्थान पर सही उच्चारण का प्रयास करना चाहिए।

रहेंगे, कहूँगा, जाऊँगी आदि में गे, गी या गा पर बिन्दी नहीं लगानी चाहिए। गे, गी या गा के ठीक पहले बिन्दी का प्रयोग होना चाहिए। रहेगें, रहूगां, कहूगीं जैसे शब्द ग़लत हैं।

दी, दीं, ली, लीं, की आदि पर हम विस्तार से अगले भाग में देखेंगे। क्रियाओं के भिन्न-भिन्न रूपों पर भी चर्चा होगी।

## अध्याय– 34

### अनुस्वार और चंद्रबिन्दु

हम भूतकाल के वाक्यों में आने वाले क्रिया खंड (इसमें एक, दो या अधिक शब्द हो सकते हैं) पर नज़र डालते हैं।

स्त्रीलिंग कर्ता के आदरसूचक या बहुवचन होने पर क्रिया के अंतिम भाग के अंत में बिंदी होगी। 'लड़कियाँ जा रही थीं', 'आपसब नहीं गा सकीं', 'कविताएँ पढ़ी गईं', 'माएँ खुश थीं', 'बेगम अख़्तर बेहद अच्छी ग़ज़ल गायिका थीं', 'वे गईं', 'हम दोनों गईं', 'लड़कियाँ पढ़ती थीं', 'वे बढ़ती गईं' आदि इसके उदाहरण हैं।

अगर शर्त, सुझाव, प्रश्न, आशा आदि के वाक्य या वाक्यखण्ड हों तब भी बिन्दी क्रिया भाग के अन्त में आती है। यह बात स्त्रीलिंग कर्ता (बहुवचन या एकवचन आदरसूचक) की स्थिति में ही लागू होती है। 'अगर वे आ पातीं', 'हम सब जातीं तब तो', 'काश, नदियाँ बोल सकतीं', 'शिक्षिकाएँ चैन से रहतीं, अगर समाज मदद करता', 'आप क्या करतीं, अगर रमा की जगह आपको बुलाया जाता!' आदि इसको स्पष्ट करते हैं।

अब कुछ अलग प्रकार के वाक्य देखते हैं, जिनमें क्रिया के अन्तिम भाग में बिन्दी होती है। 'वे जा रही हैं', 'लड़कियाँ जा चुकी हैं', 'किताबें तो बस दो चार ही रह गई हैं' आदि में अन्त में बिन्दी है। अगर पुलिंग कर्ता की बात करें, तो 'वे जाते हैं', 'हम पढ़ रहे हैं', 'सब मर चुके हैं', 'लड़के अवसाद से भर गए हैं' आदि उदाहरणों से बिन्दी के प्रयोग को समझा जा सकता है।

'कही गई कहानियाँ', 'सुनी हुई बातें', 'मरती औरतें', 'खत्म होती नदियाँ', 'मर रही नदियाँ' आदि में 'गई', 'हुई', 'मरती', 'होती', 'रही' में बिन्दी नहीं है। सन्त समीर जी का धन्यवाद, उन्होंने इस तरह के शब्दों में बिन्दी पर हमें स्पष्ट होने में मदद की।

तुम, तुम दोनों, तुम सब या तुमलोग के साथ वर्तमान काल में क्रिया में हमेशा अन्त में ओकार आता है और भविष्य काल या भूतकाल में क्रिया के अन्त में एकार आता है। इन दोनों स्थितियों में क्रिया भाग के अन्त में बिन्दी नहीं होती। 'तुम जाते हो', 'तुम दोनों जा रहे हो', 'तुमलोग कहाँ जाती हो', 'तुम सब जीवित हो', 'तुम वहाँ जा चुके हो', 'तुम सब तो खा चुकी हो न' आदि में क्रिया खण्ड के अन्त में ओकार है। 'तुम गए', 'तुम सब खा चुके थे', 'तुम बहादुर होगे' आदि में क्रियाखण्ड के अन्त में एकार है। स्त्रीलिंग कर्ता होने पर इस तरह के वाक्यों में क्रियाखण्ड के अन्त में ईकार मिलता है; जैसे 'तुम सब जाओगी', 'तुम क्या करोगी' आदि।

हिन्दी में क्रियाएँ कर्ता के अनुसार ही नहीं, कर्म (ऑब्जेक्ट) के अनुसार भी होती हैं। अगर कर्म एकवचन हो, तो क्रिया एकवचन होती है और जब बहुवचन हो, तब बहुवचन। इस स्थिति में क्रिया का लिंग वही होता है, जो कर्म का होता है। की, कीं, दी, दीं, ली, लीं आदि इसी तरह के वाक्य में दिखते हैं। 'मैंने रोटी खाई', 'मैंने बातें कीं', 'सबने किताबें पढ़ीं', 'हमने कई उपन्यास पढ़े', 'मैंने कई पत्र लिखे', 'मैंने यह उपन्यास नहीं लिखा', 'तुमने कुछ नहीं किया', 'आपने भात खाया', 'उन्होंने कई नाटक लिखे', 'मैंने शिकायत की', 'उसने कलम दी', उसने किताबें दीं', 'उसने पानी पी लिया', 'यह तुमने क्या किया', 'मैंने दवाइयाँ बेचीं', 'हमने नहर बनवाई', 'यशपाल ने कई कार्यक्रम किए', 'धूमिल ने कविताएँ लिखीं', 'हमने किताब पढ़ी है', 'तुमने किताबें पढ़ी हैं', 'आपने पढा होगा उनका वह उपन्यास', 'कई उपन्यास पढ़े होंगे आपने', 'मैंने नाटक लिखे हैं', 'उसने कविता लिखी है' आदि उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि कर्म के वचन और लिंग के अनुसार ही क्रिया का रूप तय हुआ है।

थोड़ा सा विषयांतर करते हैं यहाँ। हिन्दी में क्रियाओं से कई बार पता लगाया जा सकता है कि कर्ता स्त्रीलिंग है या पुलिंग! मान लें कि आप किसी के घर के बाहर आवाज़ लगाते हैं। अन्दर से अंग्रेज़ी में

आवाज़ आती है 'वेट, आइ एम कमिंग'। आप यह नहीं समझ सकते कि बोलने वाला मर्द है या औरत, यहाँ यह न कहें कि हम आवाज़ सुनकर पहचान लेंगे! हम वाक्य और भाषा पर बात कर रहे हैं। अगर संस्कृत में 'आगच्छामि' या भोजपुरी में 'आ गइनी' सुनने को मिले, तब भी यह पता नहीं चलता कि बोलने वाला मर्द है या औरत! हिन्दी में 'आता हूँ' या 'आती हूँ' से यह स्पष्ट हो जाता है। हमारे यहाँ सरोज, सुमन, रिंकू जैसे नाम लड़के और लड़कियों दोनों के रखे जाते हैं। अंग्रेज़ी या संस्कृत में क्रियाओं से यह स्पष्ट नहीं होगा कि सरोज लड़का है या लड़की! हिन्दी या भोजपुरी में अधिकाश स्थितियों में यह स्पष्ट होता है कि कर्ता पुलिंग है या स्त्रीलिंग!

## अध्याय– 35

### क्रियारूप

हम कुछ और क्रियारूपों पर चर्चा करेंगे। 'मैं पढ़ता हूँगा (होऊँगा)', 'मैं पढ़ती हूँगी (होऊँगी), 'तुम पढ़ते होगे', 'मैं पढ़ रहा हूँगा (होऊँगा)', 'मैं पढ़ रही हूँगी (होऊँगी)' आदि में क्रियारूपों में बिन्दी पर ध्यान देकर यह समझा जा सकता है कि कहाँ बिन्दी है और कहाँ नहीं। 'तुम' के साथ 'पढ़ेगी' के स्थान पर 'पढ़ोगी' लिखना और बोलना चाहिए। 'तू' के साथ 'पढ़ेगी' होना चाहिए, 'पढोगी' नहीं। बिहार में 'तुम जाएगी' जैसे अशुद्ध प्रयोग भी धड़ल्ले से चल रहे हैं।

एक खास बात यह है कि सम्बोधन के समय बिन्दी नहीं लगती! लिखते और बोलते समय यह ग़लती 100 में 99 बार की जाती है! 'भाइयो और बहनो', 'देवियो और सज्जनो', 'मित्रो!', 'साथियो', 'मेरे दोस्तो', 'प्यारे बच्चो', 'देशवासियो', 'देशप्रेमियो' आदि के स्थान पर 'मेरे प्यारे दोस्तों', 'भाइयों 'और बहनों', 'मित्रों! आज हम सब रहीम को याद कर रहे हैं!' आदि का प्रयोग उचित नहीं है। ध्यान रहे कि सम्बोधन या उद्बोधन में ही बिन्दी नहीं होती, शेष सभी स्थानों पर वचन के अनुसार हो सकती है। आप अगर मोहम्मद रफी का गाया 'कर चले हम फिदा जानोतन साथियो' सुनें, तो वहाँ 'साथियो' स्पष्ट सुनाई देगा', साथियों' नहीं।

चंद्रबिन्दु का बहुवचन से भी सीधा सम्बन्ध है। ने, को आदि के प्रयोग पर चर्चा करने के पहले वचन पर नज़र डालते हैं। संस्कृत में तीन वचन हैं, एकवचन, द्विवचन और बहुवचन! अंग्रेज़ी में टू राम्स या राम्स जैसे प्रयोग पर कोई सोचेगा भी नहीं, लेकिन संस्कृत में (रामौ या रामाः के रूप में) यह सामान्य बात है। संस्कृत में थोड़ी जटिलता संख्या तक के तीन वचनों में मिलने के कारण भी है! हिन्दी संस्कृत की तुलना में सरल ही कही जाएगी! 10 लकारों में एक ही क्रिया के 90 रूप होने पर भी हिन्दी के सभी प्रकार के वाक्य आसानी से संस्कृत में सीधे अनूदित नहीं हो सकते। क्रियारूपों पर भी संस्कृत से हिन्दी सरल है। हिन्दी भोजपुरी या अंग्रेज़ी की ही तरह दो वचनों वाली भाषा है। एकवचन और बहुवचन, वचन के दो प्रकार हैं।

कुछ लोग समझते हैं कि शेर, हंस, बाघ, बिन्दु आदि के बहुवचन शेरें, हंसें, बाघें, बिन्दुएँ आदि होते हैं। छोटी कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों को ऐसा लिखते हमने देखा है। यह बिलकुल ग़लत है। भोजपुरी में यह बिलकुल स्पष्ट है, जैसे 'एगो आदमी जाता', 'दस गो हाथी बारन सन', 'ढेरे बानर रहेलन सन' आदि में 'आदमी', 'हाथी', 'बानर' शब्द एकवचन की तरह ही हैं, इनके मूल रूप में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'में' आदि विभक्ति चिन्ह हैं। इनके लिए अंग्रेज़ी में प्रिपोज़िशन का इस्तेमाल होता है।

बहुवचन दो प्रकार से बनते हैं, पहला विभक्ति चिन्ह रहित और दूसरा विभक्ति चिन्ह सहित। घर, डाकू, गुरु आदि के विभक्ति चिन्ह रहित बहुवचन और एकवचन रूप एक ही हैं। घर बहुवचन और एकवचन दोनों है। विभक्ति चिन्ह होने पर गुरुओं, घरों, शेरों, हंसों, डाकुओं जैसे रूप बनते हैं। 'चार डाकू जा रहे हैं' और 'चार डाकुओं ने मुझे घेर लिया', इन दो वाक्यों में पहली स्थिति में डाकू के बाद कोई विभक्ति चिन्ह नहीं है, जबकि दूसरी स्थिति में 'ने' विभक्ति चिन्ह होने के कारण डाकुओं हुआ।

बालक, नर जैसे अकारांत पुलिंग; ऋषि, मुनि, कवि जैसे इकारांत पुलिंग; भाई, स्वामी, सिपाही जैसे ईकारांत पुलिंग; साधु, बिन्दु, कृपालु जैसे उकारांत पुलिंग; भालू, उल्लू जैसे ऊकारांत पुलिंग के एकवचन और बहुवचन रूप विभक्ति चिन्ह रहित होने पर समान होते हैं।

कर्ता, दाता, राजा, योद्धा, युवा, देवता, आदि आकारांत (आ की मात्रा से समाप्त होने वाले) शब्द भी विभक्ति चिन्ह रहित होने पर दोनों वचनों में समान होते हैं। विभक्ति चिन्ह रहित सम्बन्ध वाचक शब्द जैसे मामा, काका, दादा, चाचा, भैया, नाना आदि के रूप भी दोनों वचनों में समान होते हैं। 'हरि

तुम्हारे मामा हैं' में मामा एकवचन है, जबकि 'नारायण और सुशील हमारे मामा हैं' में मामा बहुवचन है। 'किशोर एक वीर योद्धा है' में योद्धा एकवचन है, जबकि 'बड़े-बड़े योद्धा मारे गए हैं' में योद्धा बहुवचन है।

विभक्ति चिन्ह रहित अन्य आकारांत पुलिंग शब्दों के आकार के स्थान पर एकार रखकर बहुवचन बनाते हैं; जैसे दिया से दिए; पैसा से पैसे; बच्चा से बच्चे; गधा से गधे आदि।

फिलहाल हम विभक्ति चिन्ह रहित शब्दों पर ही बात करते हैं। अकारान्त स्त्रीलिंग के अन्त में एँ जोड़कर बहुवचन बनाते हैं, जैसे बात से बातें, किताब से किताबें, रात से रातें, सड़क से सड़कें, बहन से बहनें, आदत से आदतें आदि। इकारान्त स्त्रीलिंग होने पर याँ जोड़कर बहुवचन बनाते हैं, जैसे तिथि से तिथियाँ, विधि से विधियाँ आदि। ईकारान्त स्त्रीलिंग होने पर अन्तिम ईकार को इकार में बदलकर याँ जोड़ते हैं यानी इयाँ जोड़ते हैं, जैसे नदी से नदियाँ, गाली से गालियाँ, लड़की से लड़कियाँ, नारी से नारियाँ, कहानी से कहानियाँ आदि। आकारान्त, उकारान्त या ऊकारान्त स्त्रीलिंग होने पर एँ जोड़कर बहुवचन बनाते हैं जैसे शाखा से शाखाएँ, कविता से कविताएँ, ऋतु से ऋतुएँ, वस्तु से वस्तुएँ, वधू से वधुएँ, बहू से बहुएँ आदि। ध्यान रहे कि बहुवचन में एँ के पहले ऊकार का उकार हो जाएगा।

जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में पहले से 'इया' लगा है, जैसे डिबिया, चिड़िया, गुड़िया आदि; उनमें अन्त में 'या' पर चंद्रबिन्दु लगाकर बहुवचन बनाते हैं। चिड़ियाँ, डिबियाँ, गुड़ियाँ आदि इस तरह बने बहुवचन शब्द हैं।

कई बार शब्द के अन्त में 'गण', 'जन', 'वर्ग', 'लोग', 'वृन्द' आदि जोड़कर बहुवचन बनाते हैं; जैसे पाठकगण, छात्रगण, वृद्धजन, शिक्षकवृन्द, नारिवृन्द, आपलोग, तुमलोग, अधिकारीवर्ग आदि।

## अध्याय– 36

### वचन

बहुत सारे शब्द हमेशा बहुवचन में रहते हैं; जैसे प्राण, दर्शन, आँसू, लोग, अक्षत, होंठ (ओठ), हस्ताक्षर, दस्तख़त, दाम, भाग्य, कयास (संभवतः), हिज्जे, होश, समाचार आदि। 'मेरा प्राण ले लो', 'आपका दर्शन पाकर हम धन्य हो गए', 'तुम्हारा होंठ फट गया', 'आँसू बहता है', 'लोग कहता है' (बिहार में खूब चलता है यह!), 'छात्र का हस्ताक्षर ', 'आपका दस्तख़त नहीं है', 'मेरा होश उड़ गया' जैसे प्रयोग ग़लत हैं। इनमें बहुवचन की जगह एकवचन मान लिया गया है उपरोक्त शब्दों को। 'मेरे प्राण ले लो', 'आपके दर्शन पाकर हम धन्य हो गए', 'आँसू बहते हैं', 'छात्र के हस्ताक्षर, 'आपके दस्तख़त नहीं हैं', 'लोग कहते हैं ', 'होंठ फट गए', 'मेरे भाग्य बड़े अच्छे हैं', 'फलों के दाम बढ़ गए हैं', 'मेरे होश उड़ गए' आदि उदाहरण सही प्रयोग को स्पष्ट करते हैं। बिहार में 'लोग कहेगा' जैसे वाक्य भी चलते हैं, जो एकदम ग़लत हैं।

कुछ शब्द हमेशा एकवचन में रहते हैं; जैसे पानी, प्रत्येक, हर एक, दूध, सामान, समर्थन, जनता आदि। जिसने, उसने, इसने, कोई, जिस, उस, उसमें, वह, उसको, उसे, उससे, उसका, उसकी, इसका, इसकी, इसको, इससे, यह, इसमें, उसके, इसपर, उसपर, जिसपर, जिसका, जिसके, जिसकी, जिसमें, जिससे, किसी, किसका, किसकी, किसके, किससे, किसको, किसमें, किसपर, किसने आदि भी एकवचन के शब्द हैं। 'हो' और 'हों' को क्रियारूपों पर बात करते समय स्पष्ट किया जा चुका है। 'हो' एकवचन में और 'हों' बहुवचन में लगता है। द्रव्यवाचक शब्द (मैटेरियल नाउन) एकवचन में होते हैं। सोना, धन, चाँदी, तेल आदि इसके उदाहरण हैं। यदि द्रव्य के भिन्न-भिन्न प्रकारों का बोध हो, तो कई बार एकवचन की जगह बहुवचन भी होता है; जैसे 'कई प्रकार के लोहे जमशेदपुर में मिलते हैं', 'चमेली, गुलाब, तिल आदि के तेल अच्छे होते हैं' आदि।

खूबी, कमी, सुन्दरता, मित्रता, शत्रुता, जवानी, बचपन, बुढ़ापा, ऊँचाई, पढ़ाई, दौड़, सुस्ती, मिठास, करुणा, दया, लिखावट, बीमारी जैसे भाववाचक शब्द (एब्सट्रैक्ट नाउन) एकवचन में रहते हैं। जहाँ संख्या या प्रकार का बोध होता है, वहाँ ऐसे शब्दों के बहुवचन रूप भी मिलते हैं, जैसे 'कमियाँ', 'विशेषताएँ', 'खूबियाँ' आदि। ध्यान रखें कि 'ऐं' या 'ऐँ' किसी शब्द के अन्त में नहीं हो सकते और 'ऐँ' हिन्दी में होता ही नहीं। 'मोहब्बतें', 'चाहतें', 'पूजाएँ' जैसे शब्द कहीं से सही नहीं हैं, लेकिन फ़िल्मों में 'मोहब्बतें', 'मेहरबानियाँ' और 'चाहतें' जैसे शब्द चल रहे हैं। इनका प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए। 'फुट' के लिए अंग्रेज़ी में बहुवचन 'फीट' है, लेकिन हिन्दी में हम 'फुट' का ही प्रयोग करते हैं। किसी भाषा में शब्द भले विदेशी हों, व्याकरण तो उस भाषा का ही होना चाहिए, जिसमें बात हो रही है। 'मकान', 'कागज', 'सवाल' जैसे शब्दों के बहुवचन फ़ारसी या अरबी में 'मकानात', 'कागजात', 'सवालात' हैं, लेकिन हिन्दी में हम 'मकान' 'कागज' 'सवाल' ही प्रयोग करते हैं। वैसे कागजात जैसे शब्दों का प्रयोग भी हिन्दी में किया जाता रहा है।

ऐसा ही एक अशोभनीय चलन बन गया है हिन्दी में आए अंग्रेज़ी शब्दों में अंग्रेज़ी प्रत्ययों का अंधाधुंध प्रयोग। 'स्कूल्स', 'कॉलेजेज़', 'टीचर्स', 'स्टुडेंट्स' जैसे शब्दों का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए हिन्दी में। क्या अंग्रेज़ी में ऐसा कोई कह सकता है- 'समोसे आर बीइंग इटेन', 'साड़ियाँ आर सोल्ड', 'द टीचर्स मेट ऑल द गुरुओं' आदि! नहीं, तो हिन्दी में अंग्रेज़ी शब्दों के बहुवचन अपने मूल रूप में कैसे रह सकते हैं! हमें 'कम्प्यूटर्स', 'स्कूल्स', 'कॉलेजेज़', 'प्रोफेसर्स' जैसे शब्दों का हिन्दी में प्रयोग नहीं करना चाहिए। हिन्दी में 'स्कूलों', 'प्रोफेसरों', 'कम्प्यूटरों' जैसे शब्द ही लिखे और बोले जाने चाहिए।

पिछले भाग में विभक्ति चिन्हों के बारे में बताया गया था। विभक्ति चिन्ह सहित बहुवचन बनाते समय इकारांत या ईकारान्त शब्दों में अन्त में 'यों' जोड़ते हैं; जैसे मुनि से मुनियों, गली से गलियों, नदी

से नदियों, कवि से कवियों, कहानी से कहानियों आदि। यों के पहले ईकार को इकार में बदलने की बात यहाँ भी लागू होती है। उकारान्त, ऊकारान्त और औकारान्त शब्दों में अन्त में 'ओं' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं, जैसे साधु से साधुओं, भालू से भालुओं, डाकू से डाकुओं, वस्तु से वस्तुओं, बिन्दु से बिन्दुओं, गौ से गौओं आदि। यहाँ भी अन्त में ऊकार हटाकर उकार बनाने के बाद ओं जोड़ा गया है।

अकारान्त शब्दों में ओं लगाकर बहुवचन बनाते हैं, जैसे छात्र से छात्रों, घर से घरों, बालक से बालकों, किरण से किरणों आदि।

आकारान्त शब्द अगर तत्सम हों, तो ओं लगाकर बहुवचन बनाते हैं, जैसे माता से माताओं, लता से लताओं, पिता से पिताओं आदि। जब आकारान्त शब्द संस्कृत के न हों यानी तत्सम न होकर तद्भव या अन्य प्रकार के हों, तब अन्त में ओ की मात्रा और बिन्दी लगाकर बहुवचन बनाते हैं जैसे लड़का से लड़कों, घोड़ा से घोड़ों, छाता से छातों आदि।

एकारान्त शब्द दूबे से दूबों बनता है। अन्त में आने वाला आ, अ या ए ओं से विस्थापित हो जाता है। बात से बातों, दादा से दादों आदि इसके उदाहरण हैं।

विभक्ति चिन्ह सहित बहुवचनों के कुछ उदाहरण :

माताओं ने, पिताओं को, कारणों की, साँपों में, वेदों पर, डाकुओं से, भाषाओं में, ऋषियों की, छात्रों के लिए, लड़कियों से, तालों में, बातों से, दवाइयों का, कठिनाइयों पर, कविताओं में, किताबों से, मुनियों की, मुखियों पर, नालियों में, क्रांतिकारियों का, बाबुओं से, बाबाओं ने, दुआओं (दुआ से दुए या दुओं नहीं बनता) का आदि।

ध्यान रहे कि बच्चे को बच्चें नहीं लिखा जा सकता। बिन्दी का प्रयोग वहीं किया जा सकता है, जहाँ यह आवश्यक हो।

चाहिए में बिन्दी लगाकर चाहिएँ नहीं बनाया जाता। इसी प्रकार खाइए, जाइए, लीजिए, दीजिए आदि में भी अन्त में बिन्दी नहीं लगाई जाती। चाहिएँ जैसे प्रयोग प्रायः देखने को मिलते हैं। इनपर ध्यान देकर सुधार किया जा सकता है।

## अध्याय– 37

### विभक्ति चिन्ह

इस भाग में हम विभक्ति चिन्ह 'ने' पर बात करेंगे। हिन्दी में कर्ता के साथ ने चिन्ह का प्रयोग होता है और नहीं भी होता है। 'मैंने किताब पढ़ी', 'तुमने उसे देखा है!', 'राम ने रोटी खाई होगी', 'तुमने पुस्तक पढ़ी होती, तो ऐसी बातें न करते' और 'सोहन ने कलम खरीदी थी', इन पाँच प्रकार के वाक्यों में कर्ता के साथ ने चिन्ह का प्रयोग होता है; अन्य में नहीं, चाहे वाक्य किसी भी काल का हो! इन्हीं पाँच तरह के वाक्यों में क्रिया कर्म के अनुसार लिंग और वचन धारण करती है, जैसे 'राम ने किताब पढ़ी', 'राम ने किताब पढ़ी है', 'राम ने किताब पढ़ी थी', 'राम ने किताब पढ़ी होगी', 'राम ने उपन्यास पढ़ा होता, तो वह समझ जाता'। पीछे ऐसे बहुत सारे उदाहरण दिए जा चुके हैं। व्याकरण में इन पाँच प्रकार के वाक्यों के लिए काल के अलग अलग नाम (प्रकार) मिलते हैं। यहाँ हम उनसे बचना चाहते हैं। 'राम ने जाता है', 'उसने जाएगा', 'गौतम ने पढ़ रहा है', 'रौशनी ने खा रही थी', 'किशोर ने जाएगा', 'उसने गया हो', 'राम ने खाता होगा', 'सतीश ने जा चुका है', 'कामिनी ने किताब लिख चुकी है', 'तुमने जा चुके थे', 'उसने आए, तो मैं जाऊँ!' आदि में 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जब सकर्मक क्रिया हो, तभी ऊपर वाले वाक्यों में 'ने' लगेगा। 'मैंने रोया', 'हम किताब पढ़ी', 'मैंंने गया था', 'वह पुस्तक पढ़ा होगा', 'वह पुस्तक पढ़ा था', 'सीता रोटी बनाई', 'तुम किताब पढ़ी', 'मैं कलम खरीदा' जैसे वाक्य अशुद्ध हैं। ऐसे वाक्यों का 'ने' का उचित प्रयोग नहीं हुआ है।

नहाना, छींकना, थूकना, खाँसना जैसी अकर्मक क्रियाओं के साथ भी 'ने' का प्रयोग होता है; जैसे 'आपने नहाया', 'मैंने छींका', 'तुमने खाँसा', 'किशोर ने थूका' आदि में ने का प्रयोग हुआ है।

कई बार अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है, तब ऊपर बताई पाँच स्थितियों में ने का प्रयोग होता है, जैसे 'उसने लड़ाई लड़ी', 'तुमने टेढ़ी चाल चली' आदि।

खा जाना, दे देना, खा लेना आदि संयुक्त क्रिया के उदाहरण हैं। इनमें दो क्रियाएँ मिलकर क्रिया बनाती हैं। जब वाक्य ऊपर के पाँच प्रकार के वाक्यों में से हो और उसमें संयुक्त क्रिया हो, तो ने का प्रयोग होता है। 'मैंने खा लिया', 'उसने खा लिया है', 'सुधीर ने नहा लिया होगा', 'कुमार ने बाघ को मार दिया था' आदि इसके उदाहरण हैं। चुकना वाले वाक्यों पर यह बात लागू नहीं होती। 'मैंने खा चुका हूँ', 'उसने जा चुका था', 'तुमने खा चुके होगे' जैसे वाक्य अशुद्ध हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ भी ऊपर वाले पाँच तरह के वाक्यों में ने का प्रयोग होता है, जैसे 'मैंने पढ़ाया', 'तुमने सड़क बनवाई है?', 'राम ने पतंग उड़ाई थी' आदि।

बोलना, भूँकना, बकना, भूलना, लाना आदि क्रियाओं के साथ ने चिन्ह का प्रयोग नहीं होता। 'उसने बोला', 'मैंने भूला', 'राम ने बहुत बका' आदि में ने का प्रयोग किया गया है, जो ठीक नहीं है। 'मैं भूला', 'राम बहुत बका', 'मैं बोला' जैसे प्रयोग सही हैं। 'बोलना' क्रिया के साथ यदि 'बोली' कर्म के रूप में आए, तो 'ने का प्रयोग होता है, जैसे 'उसने बोलियाँ बोलीं' में ने का प्रयोग हुआ है।

संयुक्त क्रिया का अन्तिम खण्ड अकर्मक होने पर ने का प्रयोग नहीं होता। 'मैं खा चुकूँगा', 'वह पुस्तक ले आया', 'उसे रेडियो ले जाना है' जैसे वाक्य इसके लिए देखे जा सकते हैं।

लगना, जाना, सकना, चुकना आदि सहायक क्रियाओं के साथ ने का प्रयोग नहीं होता है। 'वह खा चुका', 'मैं पानी पीने लगा', 'वह नहीं खा सका' आदि इसके उदाहरण हैं। 'तुमने उधार चुका दिया' में 'चुकना' मुख्य क्रिया है, सहायक नहीं, इसलिए ने का प्रयोग हुआ है। सहायक क्रिया मुख्य क्रिया की सहायता करती है, जैसे 'उसे बाघ ने मार डाला' में 'मारना' मुख्य क्रिया है और 'डालना' सहायक क्रिया, लेकिन 'जेब में पैसे डालो' में 'डालना' मुख्य क्रिया है।

गुजराती और पंजाबी के प्रभाव में 'मैंने खाना है', 'राम ने बम्बई जाना है', 'किसने पढ़ना है' जैसे वाक्य बोलना हिन्दी में सही नहीं माना जा सकता। 'मुझे खाना है', 'राम को बम्बई जाना है' जैसे वाक्य सही हैं।

भविष्यकाल के वाक्यों में कहीं भी ने का प्रयोग नहीं किया जाता।

'उसे गाने का रियाज किया', 'क्या आप भोजन कर लिया?', 'मैं समझा कि वह अच्छा आदमी है', 'हमने चले जाना चाहिए', 'मैं उसे पहचाना नहीं', 'मैं कुछ का कुछ लिख दिया हूँ', 'सरकार यह काम करवाना चाही', 'हम आपसे कहते थे', 'वह दवा माँगी', 'आप अवश्य सुने होंगे', 'वे अभी अभी खाना खाए हैं', 'मुझे वे एक पत्र नहीं लिखे', 'मैं नहीं पहचाना हूँ', 'वह नदी में डूब कर जान दे दिया', 'मैं पुस्तक ली', 'आपने मुस्करा दिया', 'कृष्ण ने नाचा', 'अंग्रेज़ी के समर्थकों ने हिन्दी के विरुद्ध प्रचार करने लगे', 'उसने वहाँ से चल पड़ा', 'लड़के ने स्कूल गया', 'नेताओं ने इसे आवश्यक मानते हैं' आदि के स्थान पर 'उसने गाने का रियाज किया', 'क्या आपने भोजन कर लिया?', 'मैंने समझा कि वह अच्छा आदमी है', 'हमें चले जाना चाहिए', 'मैंने उसे पहचाना नहीं', 'मैंने कुछ का कुछ लिख दिया है', 'सरकार ने यह काम करवाना चाहा', 'हमने आपसे कहा था', 'उसने दवा माँगी', 'आपने अवश्य सुना होगा', 'उन्होंने अभी अभी खाना खाया है', 'मुझे उन्होंने एक पत्र नहीं लिखा', 'मैंने नहीं पहचाना', 'उसने नदी में डूबकर जान दे दी', 'मैंने पुस्तक ली', 'आप मुस्करा दिए', 'कृष्ण नाचा', 'अंग्रेज़ी के समर्थक हिन्दी के विरुद्ध प्रचार करने लगे', 'वह वहाँ से चल पड़ा', 'लड़का स्कूल गया', 'नेता इसे आवश्यक मानते हैं' जैसे वाक्य लिखने और बोलने चाहिए, क्योंकि पहले वाले रूप अशुद्ध हैं।

# अध्याय– 38

## विभक्ति चिन्ह

'को' एक विभक्ति चिन्ह है, जिसका प्रयोग मुख्य रूप से कर्म (ऑब्जेक्ट) के साथ किया जाता है। अन्य कई जगहों पर 'को' का प्रयोग होता है। कई बार कर्म के होने के बावजूद 'को' चिन्ह नहीं भी रहता है। कर्म की पहचान के लिए 'किसे', 'क्या' और 'किसको' जैसे प्रश्न किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए 'युद्ध ने हमें तबाह कर दिया' में 'किसे' का जवाब 'हमें' है, इसलिए यह कर्म है।

'राजू ने श्यामल को पीटा', 'माँ बच्चे को पढ़ाती है' जैसे वाक्यों में कर्म के बाद 'को' का प्रयोग होता है, लेकिन छोटी चीज़ों और निर्जीवों के बाद 'को' चिन्ह का लोप हो जाता है, जैसे 'वह नाटक देखता है', 'सीता भात खाती है' आदि।

समय की सूचना देने में 'को' का प्रयोग होता है, जैसे 'रविवार को आना', 'शाम को', '23 तारीख को', '15 अगस्त को', 'तृप्ति को लौटते रात हो जाएगी', 'आपके पिता को आए चार दिन हो गए', 'उनको गए एक साल हुआ' आदि। ध्यान रहे कि 'सुबह को', '4 बजे को आना' जैसे प्रयोग अच्छे नहीं हैं। इनकी जगह '4 बजे आना', 'कल सुबह आना', 'यह कार्यक्रम कल होगा' आदि लिखना और बोलना चाहिए।

आदेश, अधिकार, आदर, कामना आदि के वाक्यों में भी 'को' का प्रयोग होता है, जैसे 'नौकर को बुलाओ', 'बच्चे को खेलने दो', 'हरिप्रसाद सिंह को फाँसी दी जाय', 'खुदा आपको सलामत रखे', 'बड़ों को आदर दो', 'छोटों को प्यार करो'आदि।

'धोबी को कपड़े दो', 'छात्रों को किताबें दे दीजिए' जैसे देने के (दान) अर्थ वाले वाक्यों में भी 'को' का प्रयोग होता है।

किसको, जिसको, उसको, इसको, सबको, उनको, तुमको, आपको, मुझको, किनको उनको, जिनको, तुझको आदि में 'को' लगा रहता है। बिना 'को' वाले ऐसे ही शब्द मुझे, हमें, तुझे, तुम्हें, उसे, उन्हें, इसे, इन्हें, जिसे, जिन्हें, किसे, किन्हें आदि हैं।

चाहिए, छलना, पचना, पढ़ना, रुचना, दिखना, पड़ना, भासना, आना, लगना, भाना, मिलना, रुकना, सूझना, शोभना, होना, बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जगाना, भगाना आदि क्रियाओं के साथ 'को' का प्रयोग होता है; जैसे 'उसको पढ़ना चाहिए', 'तुमको जो रुचे, खा लेना', 'आपको कुछ सूझ ही नहीं रहा', 'पिता ने पुत्र को पुकारा', 'चोरों को भगाया गया', 'सुषमा ने ममता को जी भर कोसा', 'मैंने हरि को बुलाया', 'चाचा ने तपन को जगाया', 'यह व्यवहार आपको शोभा नहीं देता', 'रोहन को वह घड़ी भा गई है', 'उसको घी नहीं पचता है', 'आपको क्या लगता है' आदि।

'रमा को लड़का हुआ है', 'उसको चार लड़कियाँ हैं', 'तुमको मूँछें हैं', 'राजा को नौ पुत्र थे', 'पाण्डु को भीम हुआ' जैसे वाक्यों में 'को' का प्रयोग अनुचित है। हालाँकि यह प्रयोग बिहार और इसके आस पास प्रचलित है और सही माना जा सकता है। इनमें 'रमा को लड़का हुआ है' जैसे वाक्य प्रायः बोले जाते हैं। सही रूप 'रमा के लड़का हुआ है', 'उसके चार लड़कियाँ हैं', 'उसके मूँछें हैं' आदि हैं। 'उसकी चार लड़कियाँ हैं' के स्थान पर 'उसके चार लड़कियाँ हैं' का प्रयोग होना चाहिए।

'मारना' क्रिया का अर्थ जब 'पीटना' हो, तब कर्म के साथ 'को' लगता है और जब इसका अर्थ 'शिकार करना' या 'हत्या करना' हो, तब 'को' नहीं लगता; जैसे 'उसने बैल को मारा' और 'लोगों ने चोरों को मारा' में बैल या चोर की पिटाई हुई है, हत्या नहीं। 'उसने बाघ मारा' और 'तुमने बीस मछलियाँ मार दीं' में बाघ और मछलियों को जान से मारा गया है।

कर्म के बाद 'को' लगा हो, तो क्रिया हमेशा पुलिंग होती है; जैसे 'राम ने रोटी को खाया'। हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि कुछ वाक्यों में कर्म के अनुसार ही क्रिया का लिंग तय होता है। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि कर्म के साथ 'को' चिन्ह लगा हो, तो क्रिया कर्म के लिंग पर निर्भर नहीं रहती।

'को' के अनावश्यक प्रयोग के कुछ उदाहरण 'सब्जी को खूब पकी हुई होनी चाहिए', 'उनकी बात को मान लो', 'वह अपनी हार को स्वीकार करता है', 'मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ' आदि हैं। इनमें 'को' का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

'उसने राम को कहा', 'श्याम को परीक्षा देने की इच्छा थी', 'मैं वहाँ कुछ गणितज्ञों को मिला था', 'मनीष आपको कुछ कहना चाहता था' आदि वाक्यों में 'को' का प्रयोग अनुचित है। इनके सही रूप 'उसने राम से कहा', 'श्याम की परीक्षा देने की इच्छा थी', 'मैं वहाँ कुछ गणितज्ञों से मिला था', 'मनीष आपसे कुछ कहना चाहता था', 'मनीष आपको कुछ बताना चाहता था' आदि हैं।

'को' का प्रयोग नमस्कार, प्रणाम, सलाम, बधाई, धन्यवाद और अभिवादन तथा धिक्कार आदि के साथ भी होता है, जैसे 'आपको प्रणाम', 'शिव को नमस्कार है', 'सैनिकों को सलाम', 'आपको बहुत बहुत धन्यवाद', 'लेखक को इसके लिए बधाई' आदि। जिन्हें आदर से प्रणाम या नमस्कार किया जाता है, उनके साथ 'को' लगाया गया है। यह प्रयोग संस्कृत से लिया गया है। संस्कृत में इसी प्रकार के कुछ उदाहरण बहुत प्रचलित हैं, जैसे 'नमः शिवाय', 'गणेशाय नमः', 'गुरवे नमः', 'राधाकृष्णाभ्याम् नमः', 'बृहस्पतये नमः' आदि, लेकिन खास बात यह कि संस्कृत में 'को' का प्रयोग नहीं होता।

विस्मरण, संदेह या भूल जाने के अर्थ वाले वाक्यों में भी 'को' का प्रयोग होता है, जैसे 'भूपेश को देह की सुध ही नहीं रही', 'इसमें किसी को संदेह नहीं' आदि।

'वह तो मरने ही वाला है' के लिए 'वह तो मरने को है' का प्रयोग भी कई बार हम देखते हैं। हिन्दी में कई प्रकार के वाक्य अंग्रेज़ी के आधार पर बना लिए गए हैं। 'मैं जाने को हूँ' इसी का उदाहरण जान पड़ता है। 'वह रोने रोने को है', 'बच्चे को रोना आ गया', 'बुराई को अच्छाई से खत्म किया जा सकता है', 'लड़के को गाने आता है', 'रोहित को दिखाई नहीं देता', 'जाने को तो वह भी जा सकता है' जैसे वाक्य 'को' के प्रयोग के कुछ और उदाहरण हैं। कई बार 'के लिए' के लिए भी 'को' का प्रयोग होता है, जैसे 'बहुजन समाज पार्टी को अपना मत दें', 'विद्यालय को दान दें' आदि। भोजपुरी में 'के' से ही 'को' का काम चलाया जाता है।

## अध्याय– 39

### 'से' के प्रयोग

इस भाग में हम 'से' के प्रयोग पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

किसी काम में सहायक साधन के साथ 'से' का प्रयोग होता है, जैसे 'उसने पेंसिल से चित्र बनाया', 'राहुल ने खुरपी से गड्ढा खोदा' आदि।

प्रेरणा देकर काम करवाने पर कर्ता के साथ भी 'से' का प्रयोग होता है। 'वह मुझसे यह काम करवाता है', 'मैं ड्राइवर से गाड़ी चलवाता हूँ', 'शिक्षक छात्रों से पुस्तक पढ़वाते हैं' जैसे वाक्य उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं।

अलगाव, पृथक् होने, वियोग, टूटन, डर और दूरी का बोध होने पर भी 'से' का प्रयोग होता है, जैसे 'पेड़ से पत्ता गिरा', 'मोहन घर से आता है', 'रामू साँप से डरता है', 'छत से उतरी हुई लता', 'मोहन ने घड़े से पानी निकाला', 'वह घर से बाहर आया', 'गंगा हिमालय से निकलती है', 'चूहा बिल से बाहर निकला', 'दिल्ली से परे', 'सड़क से हटकर', 'घर से दूर', 'गाँव से आगे' आदि।

लेना, छिपना, लाना, बचना, रोकना, छूटना, माँगना आदि क्रियाओं के साथ भी 'से' का प्रयोग होता है, जैसे 'गाड़ी से बचकर', 'उसे जाने से रोकना चाहिए', 'पुलिस से छिपकर', 'मैं लोटे से जल निकालता हूँ', 'वह जेल से छूटते ही रामू के यहाँ गया' आदि।

'वह आपसे कुछ पूछना चाहता है', 'तुम उससे क्या कहोगे', 'वह तुमसे कुछ पूछता है' जैसे वाक्यों में भी 'से' का प्रयोग होता है।

'वह धीरे से बोलता है', 'धीरज से काम लो', 'तुम ध्यान से सुनते हो', 'मन से ईश्वर की प्रार्थना करो' जैसे वाक्यों में क्रिया करने के तरीके या खासियत में 'से' का प्रयोग होता है।

'छूने से बर्फ ठंडी मालूम पड़ती है', 'पढ़ने से किताब नीरस मालूम पड़ी' जैसे वस्तु स्थिति का ज्ञान कराने वाले वाक्यों में; 'वह कपडों से पादरी लग रहा था', 'पारस जाति से वैश्य है', 'कबीरदास स्वभाव से अक्खड़ थे' आदि जाति, लक्षण, प्रकृति आदि के निर्धारण वाले वाक्यों में; उत्पत्ति, निषेध, विकार, कारण आदि वाले वाक्य जैसे 'सूत से कपड़ा बनता है', 'वह एक पाँव से लाचार था', 'तरुण सुस्ती से वहाँ नहीं गया' में; 'लेन देन, भाव, व्यापार आदि की सूचना में, जैसे 'अरहर की दाल 200 रुपए प्रति किलो की दर से बिक रही है', 'उसने अपनी घड़ी से उसका रेडियो बदल लिया'; प्रेम, प्रयोजन (उद्देश्य ) आदि का भाव बताने में, जैसे 'उसे अपने देश से प्रेम है', 'मुझे भला हवाई जहाज से क्या काम होगा' आदि में और आधिक्यावस्था (कम्परेटिव डिग्री) में तथा अतिशयावस्था (सुपरलेटिव डिग्री) में, जैसे 'नेहरू दूसरे नेताओं से ज़्यादा वैज्ञानिक सोच के व्यक्ति थे', 'रोहिणी तुमसे कमजोर है', '99 दो अंकों की सबसे बड़ी संख्या है', 'वह सबसे सुंदर है' आदि में भी 'से' लगता है।

भिन्नता बताने में भी 'से' का प्रयोग' किया जाता है, जैसे 'आत्मा देह से भिन्न है', 'यह कपड़ा आपके कपड़े से अलग है' आदि।

दिशा बताने में, जैसे 'वह पूरब से आया है'; समय और स्थान की दूरी बताने में, जैसे 'आज से पाँच दिन पहले की घटना है', 'दिल्ली से पटना लगभग 900 किलोमीटर है', 'सुबह से शाम' आदि में भी 'से' का प्रयोग किया जाता है।

'से' का प्रयोग 'लेकर' के पहले भी होता है, जैसे 'बालक से लेकर बूढ़े तक', 'रूस से लेकर क्यूबा तक' आदि।

हीन, शून्य, रहित, भरा, पूरा, उदार, दुष्ट, कृपालु, दयालु, बिगड़ैल, क्रोधी आदि के साथ भी 'से' का प्रयोग किया जाता है, जैसे 'बल से हीन', 'ज्ञान से शून्य', 'जल से भरा', हृदय से दयालु', 'स्वभाव से उदार', 'धन से रहित', 'प्रकृति से दुष्ट' आदि।

'उसे बोला नहीं गया', 'लोग मुझे कहा करते थे', 'अपने हाथों काम करना अच्छा होता है', 'उसको रस्सी बाँध कर लाया गया' जैसे वाक्यों में 'से' का प्रयोग करना अधिक स्पष्टता लाता है। इन वाक्यों को इस प्रकार लिखा या बोला जाना चाहिए - 'उससे नहीं बोला गया', 'लोग मुझसे कहा करते थे', 'अपने हाथों से काम करना अच्छा होता है', 'उसको रस्सी से बाँध कर लाया गया'।

'तुम जल्दी से आ जाना', 'रहीम के हाथों से पत्र भिजवा देना, 'वह पैदल से गया है', 'जबरदस्ती से काम कराना चाहते हो!', 'यह दवा रोग समूल से नष्ट कर देगी', 'इसी बहाने से हमें आपके दर्शन हो गए' आदि में 'से' को हटा देना ही ठीक रहता है। 'तुम जल्दी आ जाना', 'रहीम के हाथों पत्र भिजवा देना', 'वह पैदल गया है', 'जबरदस्ती काम कराना चाहते हो!', 'यह दवा रोग को समूल नष्ट कर देगी', 'इसी बहाने हमें आपके दर्शन हो गए' ठीक रहेंगे।

कई बार 'से' का प्रयोग करना ठीक नहीं रहता, फिर भी 'से' जोड़ दिया जाता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-'यह किसी और काम से लगेगा' (यहाँ 'से' की जगह 'में' ठीक रहेगा), 'यह इस मूल्य से उपलब्ध नहीं हो सकता' (यहाँ 'से' के स्थान पर 'पर' या 'में' ठीक रहेगा), 'चिट्टी मेरे पते से भेजना' (यहाँ 'पर' का प्रयोग ठीक रहेगा), 'इससे मैं आपके पास नहीं आ पाया ' (यहाँ 'इससे' के स्थान पर 'इस कारण' का प्रयोग ठीक रहेगा), 'सबसे हमारा प्रणाम कहना' (यहाँ 'सबसे' की जगह 'सबको' ठीक रहेगा), 'मैं रहमत से सब कुछ समझा दूँगा' ( यहाँ 'से' की जगह 'को' ठीक रहेगा), 'पहली जुलाई से नया सत्र आरम्भ होगा' (यहाँ 'को' होना चाहिए), 'फिर कुछ देर से उसने उत्तर दिया' (यहाँ 'के बाद' होना चाहिए), 'यह स्कूल ईंटों से बना है' (यहाँ 'का' ठीक रहेगा), 'वह मुझ से क्रुद्ध है' (यहाँ 'पर' ठीक रहेगा), 'आपके विचार से क्या ऐसा हो सकता है' (यहाँ 'में' ठीक रहेगा), 'भाषा के द्वारा हम अपने भावों को एक दूसरे से व्यक्त कर सकते हैं' (यहाँ 'पर' होना चाहिए), 'इस तरह का सम्बन्ध साहित्य और संस्कृति से है' (यहाँ 'से' की जगह 'में' ठीक रहेगा) और 'आज तुम फिर इतनी देर से आए' (यहाँ 'में' होना चाहिए) आदि।

'प्रत्येक कार्य में उसकी योग्यता झलकती है' में 'में' की जगह 'से' का प्रयोग ठीक रहेगा।

'श्याम ने यह बात अपने एक मित्र के द्वारा सुनी है' में 'के द्वारा' के स्थान पर 'से' होना चाहिए। सही वाक्य 'श्याम ने यह बात अपने एक मित्र से सुनी है' होगा। इसी प्रकार 'मुझपर यह विपत्ति आँखों से आई है' और 'लड़ाई के द्वारा लोगों ने बहुत धन कमाया' का सही रूप क्रमशः 'मुझपर यह विपत्ति आँखों के कारण आई है' और 'लड़ाई के कारण लोगों ने बहुत धन कमाया' होगा। पहले वाक्य में 'आँखों के द्वारा' भी लिखना ठीक नहीं रहेगा।

भूख, प्यास, आँख, कान, पाँव, हाथ, जाड़ा आदि शब्दों के साथ 'से' लगता है, जबकि इनके बहुवचन रूप के साथ 'से' का प्रयोग नहीं किया जाता। इस बात को समझने के लिए हम कुछ उदाहरण लेते हैं। 'वह भूख से बेचैन है', लड़का प्यास से मर रहा है', 'मैंने अपनी आँख से यह घटना देखी', 'कान से सुनी बात का क्या भरोसा!', 'लड़की अब अपने पाँव से चलने लगी है' आदि में भूख, प्यास, पाँव आदि एकवचन हैं; इसलिए इन वाक्यों में 'से' का प्रयोग हुआ है। अब इन शब्दों के बहुवचन प्रयोग वाले कुछ उदाहरण लेते हैं। 'लोग भूखों बेचैन हैं', 'यात्री प्यासों मर रहे हैं', 'मैंने अपनी आँखों यह घटना देखी', 'कानों सुनी बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए', लड़की अब अपने पाँवों चलती है', 'तुम मेरे हाथों ही मरोगे' आदि में 'से' का प्रयोग नहीं हुआ है।

'से' के अर्थ वाले हिन्दी में 'के ज़रिये', 'द्वारा', 'के कारण', 'के द्वारा', 'वाया', 'मार्फत', 'के माध्यम से', 'बरास्ता' आदि कई और विकल्प मिलते हैं। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनका प्रयोग भी वाक्य और भाव के आधार पर होता है।

## अध्याय– 40

### उच्चारण और भाषा की शुद्धता

आज एक बार फिर से उच्चारण और भाषा की शुद्धता पर बात करते हैं। ताज़ा विवाद लालू प्रसाद यादव के बेटे के शपथ के दौरान 'अपेक्षित' को 'उपेक्षित' पढ़े जाने को लेकर है। हमारे यहाँ एक फ़ैशन चल पड़ा है हिन्दी को अपनी भाषा मानकर उसपर ध्यान न देने का! जब हजामत बनाने से लेकर चप्पल सीने तक सब कुछ सीखना पड़ता है, तो एक भाषा को लेकर यह रुख़ निस्संदेह चिन्ताजनक है। जो लोग अंग्रेज़ी में एक अक्षर की ग़लती को भारी अपराध मान बैठते हैं, वे हिन्दी में जबरदस्ती अंग्रेज़ी घुसा कर और जो मर्जी हो, वह बोल-लिख कर निश्चिंत रहते हैं।

अब सूचना तकनीक का मज़ा देखिए कि वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ के वक़्त के विडियो से पता लगा लिया गया है कि उन्होंने 'को अक्षुण्ण' को 'का अक्षण्ण' पढ़ा था! हमने भी सुना और इस आरोप को सच पाया। प्रधानमंत्री ने जो पढ़ा था, वह निरर्थक वाक्य था! क्या हम किसी रूसी, चीनी, फ़्रांसीसी, पुर्तगाली, जापानी, इतालवी, स्पेनी, अरबी या जर्मन भाषी प्रधानमंत्री या अन्य जनप्रतिनिधि को इस तरह शपथ लेते या बोलते सुन सकते हैं?

प्रधानमंत्री सहित अन्य नेताओं की भाषागत सुस्ती और लापरवाही पर अब हम विस्तार से नज़र डालते हैं। प्रधानमंत्री द्वारा 'मंदिर' को 'मंदीर' भी कहा गया था। हाल में बिहार में शपथ ग्रहण के वक़्त दो मंत्रियों द्वारा 'सम्यक्' को 'सम्पर्क' और 'संसूचित' को 'संचित' पढ़ा गया! यह बीमारी हम रोज़ कक्षाओं में देखते हैं। छात्र शब्दों को बिना पूरा पढ़े मिलते जुलते शब्द से बदल डालते हैं। यह बीमारी आगे भी रह जाती है और लोग इससे मुक्त नहीं हो पाते, यह एक आम व्यवहार है। हम इसे किसी भी क़ीमत पर सही और चलने लायक़ नहीं मान पाते। कुछ और उदाहरण लेते हैं- 'कृप्या करके', 'कृप्या', 'समाजिक', 'रसायनिक', 'अनाधिकार', 'अपराधिक', '' 'टिपण्णी', 'परिणिति', 'पूज्यनीय', 'श्रृंखला', 'समान्य', 'परिवारिक', षड़यंत्र', 'लघुत्तम', 'समुदायिक', 'छेत्र', 'सशक्तिकरण', तुष्टिकरण', 'परकार', 'परसाद', 'जदि', 'ब्यक्ति' आदि। ये सारे हमारे पत्रकारों तक द्वारा की जाने वाली रोज़ की ग़लतियाँ हैं।

'कृपा करके', 'कृपया', 'सामाजिक', 'रासायनिक', 'अनधिकार', 'आपराधिक', 'टिप्पणी', 'परिणति', 'पूजनीय', 'शृंखला', 'सामान्य', 'पारिवारिक', 'षड्यंत्र', 'लघुतम', 'सामुदायिक', 'क्षेत्र', 'सशक्तीकरण', 'तुष्टीकरण', 'प्रकार', 'प्रसाद', 'यदि', 'व्यक्ति' आदि सही प्रयोग हैं। यही हाल 'सोच', 'हाथ', 'शत्रुघ्न', 'मेधा', 'विद्युत', 'स्थान', 'श्लोक', 'वैचारिक', विज्ञान', 'कार्यक्रम', 'धराशायी', 'पद्म', 'इच्छा', 'टिप्पणी', 'स्रोत', 'स्वच्छ' आदि के उच्चारण का है। हम इन शब्दों की जगह 'सोंच', 'हाँथ', 'शत्रुध्न', 'मेघा', 'विधुत', 'अस्थान', 'अस्लोक', 'बैचारिक', 'बिज्ञान', 'कार्जक्रम', 'धराशाही', 'पदम', 'इक्छा', 'टिप्पड़ी', 'स्त्रोत', 'स्वक्छ' आदि बोलते हुए बहुत सारे लोगों को देख सकते हैं। ये ग़लतियाँ बहुत प्रतिष्ठित पत्रकारों और विद्वान् माने जाने वाले लोगों के द्वारा होती हुई देखी हैं हमने! जाहिर है, अगर ये लोग भी शपथ लेते, तो निश्चित रूप से ये ग़लतियाँ कर सकते थे! फिर आप उन्हें भी नौवीं या बारहवीं फेल कह सकेंगे? प्रधानमंत्री को भी?

जब अंग्रेज़ी के 'peace' और 'piece' में अन्तर है और वह ध्यान देने लायक है, तो 'सामान', 'समान' और 'सम्मान' पर ध्यान क्यों नहीं दिया जाना चाहिए? एक बार खुद की भी जाँच कर लेनी चाहिए कि कहीं 'अपेक्षा' को 'उपेक्षा' या 'अर्हता' को 'अहर्ता' (भूलवश ही सही) तो नहीं पढ़ रहे!

इनमें से कई ग़लतियों पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं और कुछ पर आगे करेंगे। यहाँ हमने वाक्यों पर नहीं, शब्दों पर ही ध्यान दिया है। हमने यहाँ शाब्दिक अशुद्धियों तक ही खुद को सीमित रखा है।

## अध्याय– 41

### 'का', 'के' और 'की' के प्रयोग

इस भाग में हम 'का', 'के' और 'की' के प्रयोग पर विस्तार से नज़र डालेंगे। 'की' पर हम पहले विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। 'मेरा', 'मेरी', 'मेरे', 'हमारे', 'हमारा', 'हमारी', 'तुम्हारे', 'तुम्हारा', 'तुम्हारी', 'अपना', 'अपनी', 'अपने' आदि के साथ 'उनका', 'उनकी', 'उनके', 'उसका', 'उसकी', उसके', 'आपके', 'आपका', 'आपकी', 'किसका', 'किसकी', 'किसके', 'जिसका', 'जिसकी', 'जिसके', 'जिनके', 'जिनका', 'जिनकी', 'जिनके' आदि के लिए भी वही सारी बातें लागू हो सकती हैं, जिनकी बात हम करने जा रहे हैं। स्वामित्व के भाव में, जैसे 'देश का राजा', 'सत्यम का घर' आदि; अंग, भाग, हिस्से, टुकड़े आदि के साथ, जैसे 'लड़की के केश', 'दस पन्ने की किताब', 'सुरेन्द्र का हाथ', 'तीन कमरे का मकान' आदि; उत्पत्ति या जन्म के कारक के साथ, जैसे 'मनोहर का पुत्र', 'ईश्वर की सृष्टि', 'आधुनिक भारत के निर्माता' आदि; रचना या कृति के साथ, जैसे 'किताब का लेखक', 'मार्क्स की पूँजी', 'रवि वर्मा के चित्र' आदि; नाते या रिश्ते के भाव में, जैसे 'महिला का पति', 'रामेश्वर की माता', 'चंचल की बुआ' आदि; प्रयोजन या मकसद के साथ, जैसे 'बैठने का कमरा', 'पीने का पानी', 'नहाने की जगह', 'दिये की बत्ती आदि; समय या काल के साथ, जैसे 'एक समय की बात है', 'पाँच हज़ार साल का इतिहास', 'छह महीने का बच्चा', 'चार दिन की चाँदनी', 'पचपन बरस का आदमी' आदि तथा परिमाण या मात्रा के साथ (जैसे 'दो हाथ की लाठी', 'दस बीघे का मैदान', 'कम ऊँचाई की दीवाल' आदि) 'का', 'के' और 'की' का प्रयोग किया जाता है।

किसी गाड़ी, बोझ या सवारी के साथ, जैसे 'कोल्हू के बैल', 'गधे का बोझ', 'ऊँट की सवारी' आदि; गुण, करनी या स्वभाव के साथ, जैसे 'नौकर का विश्वास', 'पढ़ाई का काम', 'मनुष्य की बुराई', 'भरोसे का आदमी' आदि; मोल या क़ीमत के साथ, जैसे 'चार रुपए की कलम', 'दो कौड़ी का आदमी', 'रुपए के सात सेर चावल' आदि; पेशा, सेवा, कर्मचारी, सेना आदि के साथ, जैसे 'भारत की सेना', 'ईश्वर का भक्त', 'हरि का नौकर', 'गाँव का किसान', 'स्कूल का मास्टर' आदि और उपादान (साधन या सामग्री, जिससे कोई चीज़ बनती है; जैसे 'लोहे की कील' में 'लोहा' तथा 'मिट्टी का खिलौना' में 'मिट्टी' उपादान हैं), कारण या मूल के साथ (जैसे 'सब उस दुष्ट के चलते हुआ है', 'राम का किया धरा है यह! ', 'चाँदी की अँगूठी', 'सोने का बिस्कुट', 'लकड़ी का घोड़ा' आदि) भी 'का', 'की' या 'के' का प्रयोग होता है।

'नगर के लोग', 'दूध का कटोरा', 'पानी की नहर', 'जाति का शूद्र', 'जय की ध्वनि', 'आषाढ़ का महीना', 'खजूर का पेड़' आदि भी इन विभक्ति चिन्हों के कुछ प्रयोग दिखाते हैं।

'मूर्ख का मूर्ख ही रहा वह!', 'दूध का दूध', पानी का पानी', 'ज्यों का त्यों', 'जैसे का तैसा', 'जहाँ का तहाँ' आदि में, जिनमें अपरिवर्तित रहने का भाव हो और 'सारा का सारा', 'गाँव के गाँव जल गए', 'शहर के शहर तबाह हो गए!', 'घर का घर' आदि में, जिनमें समस्तता का भाव हो; 'का', 'के' या 'की' का प्रयोग होता है।

कई बात अगर नियमित रूप से होती हो, जैसे 'महीने के महीने तनख्वाह' में तथा दशा बदलने की स्थिति में (जैसे 'कुछ का कुछ', 'राई का पहाड़', 'मंत्री का राजा होना' आदि) भी 'का', 'की' या 'के' का प्रयोग होता है।

क्रियाओं से जुड़े होने पर भी इन विभक्ति चिन्हों का प्रयोग होता है, जैसे 'भगवान् का दिया हुआ', 'कमल का खिलना', 'गाँव की लूट', 'नौकर का भेजा जाना', 'ऊँट की चोरी', 'भूख का मारा', 'चूने की छाप', 'दूध का जला', 'कवि की लिखी हुई पुस्तक', 'डाल का टूटा', 'जेल का भागा हुआ', 'मैं कब की पुकार रही हूँ', 'वह तो कब का आ चुका!', 'घर का बिगड़ा हुआ', 'पहाड़ का चढ़ना', 'गोद का खिलाया लड़का', 'खेत का उपजा हुआ अनाज' आदि।

'आँख का अंधा', 'नाम की भूख', 'बात का पक्का', 'धन की इच्छा', 'जन्म का पागल' आदि में भी हम 'का', 'की' या 'के' का प्रयोग करते हैं।
निश्चय के भाव में, जैसे 'मेरा विचार जाने का नहीं था', 'यह करने का मन नहीं है' आदि और 'तपन के यह कहते ही सब शान्त हो गए', 'मेरे रहते किसी का सामर्थ्य नहीं है' आदि के साथ भी ये सम्बन्ध वाचक विभक्ति चिन्ह ('का', 'की' और 'के') होते हैं।

कई बार इन चिन्हों का प्रयोग करना आवश्यक होता है, फिर भी इन्हें छोड़ दिया जाता है, जो ठीक नहीं माना जा सकता। 'यहाँ हिन्दी प्रयोग आवश्यक है', 'भक्त राम नाम लेकर चल पड़े', 'विशिष्ट व्यक्तियों में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं', 'उसने एक उपन्यास अनुवाद किया है', 'हिन्दूवादी आंदोलनों से देश सर्वनाश हो रहा है' आदि में आवश्यक होने पर भी इन विभक्ति चिन्हों को छोड़ दिया गया है। इनकी जगह 'यहाँ हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है', 'भक्त राम का नाम लेकर चल पड़े', 'विशिष्ट व्यक्तियों में निम्नलिखित के नाम उल्लेखनीय हैं', 'उसने एक उपन्यास का अनुवाद किया है' और 'हिन्दूवादी आंदोलनों से देश का सर्वनाश हो रहा है' का प्रयोग बेहतर होगा।

कई बार इन विभक्ति चिन्हों की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन इनका प्रयोग कर दिया जाता है, जैसे 'निःस्वार्थ की भावना', 'घमासान का युद्ध हुआ', 'नाव में पानी के भर जाने से', 'इस मकान के बनवाने में 2,00,000 रुपए लग गए', 'विपत्तियों के आने पर लोग घबरा जाते हैं', 'चार बोरी चीनी की भिजवा देना', 'वह बात के बनाने में दक्ष है', 'उच्च पद के प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति अभिमानी हो जाता है', 'समारोह का आयोजन करने में अवरोध आते हैं', 'इस काम के करने में परेशानी होती है' आदि। इनकी जगह क्रमशः 'निःस्वार्थ भावना', 'घमासान युद्ध हुआ', 'नाव में पानी भर जाने से', 'यह मकान बनवाने में 2,00,000 रुपए लग गए', 'विपत्तियाँ आने पर लोग घबरा जाते हैं', 'चार बोरी चीनी भिजवा देना', 'वह बात बनाने में दक्ष है', 'उच्च पद प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति अभिमानी हो जाता है', 'समारोह आयोजित करने में अवरोध आते हैं', 'यह काम करने में परेशानी होती है' का प्रयोग बेहतर होगा।

'अरुण ने अपने दोस्त की दावत दी', 'व्यापार में रामू के कोई घाटा नहीं हुआ', 'मैंने उसे बैठने की कुर्सी दी', 'भाषा भावों की अभिव्यक्तीकरण का माध्यम होती है', 'जिसका उधार लिया होता है...', 'दो ईसाई देशों की टक्कर हो गई', 'उसने इस बात की आपत्ति उठाई', 'राम की पुस्तकें खरीदी गईं', 'उसका इच्छानुसार कार्य सम्पन्न नहीं हुआ' और 'परेश ने अपनी पत्नी का गला घोंटकर मार दिया' आदि वाक्यों के सही रूप क्रमशः 'अरुण ने अपने दोस्त को दावत दी', 'व्यापार में रामू को कोई घाटा नहीं हुआ', 'मैंने उसे बैठने के लिए कुर्सी दी', 'भाषा भावों के अभिव्यक्तीकरण का माध्यम होती है', 'जिससे उधार लिया होता है...', 'दो ईसाई देशों में टक्कर हो गई', 'उसने इस बात पर आपत्ति उठाई', 'राम के लिए पुस्तकें खरीदी गईं', 'उसकी (या उसके) इच्छानुसार कार्य सम्पन्न नहीं हुआ' और 'परेश ने अपनी पत्नी को (उसका) गला घोंटकर मार दिया' हैं।

'मयंक को भाई हुआ है', 'गिरिजा को बेटी हुई है' जैसे प्रयोग नहीं किए जाते। इनमें 'को' की जगह 'के' का प्रयोग होता है, जैसे 'मयंक के भाई हुआ है' और 'गिरिजा के बेटी हुई है' आदि। इसपर भी पीछे चर्चा हो चुकी है।

लगातार दो बार सम्बन्ध वाचक 'का' का प्रयोग अच्छा नहीं माना जा सकता, जैसे 'राम का घर का', 'नदियों का पानी का रंग' आदि। इसके स्थान पर 'राम के घर का', 'नदियों के पानी का' का प्रयोग होना चाहिए। ऐसे प्रयोगों के कई जोड़े बन सकते हैं:-

1) का (शब्द) का (शब्द) : ऐसे प्रयोग नहीं होते। पहले 'के', फिर 'का' होना चाहिए, जैसे 'सोहन के घर का पता', 'किताब के पन्ने का आकार' आदि। 'रामलाल का घर का रास्ता' जैसे प्रयोग उचित नहीं हैं।

2) का (शब्द) की (शब्द) : यह प्रयोग भी नहीं होता। पहले 'के', फिर 'की' होता है, जैसे 'श्याम के घर की हालत', 'उसके दावे की पोल' आदि। 'श्याम का घर की हालत', 'उसका दावा की पोल' जैसे प्रयोग नहीं होने चाहिए।

3) का (शब्द) के (शब्द) : यह प्रयोग भी नहीं होता। दोनों जगह 'के' का प्रयोग होता है, जैसे 'सोहन के घर के क़रीब', 'मंगला के बेटे के घर' आदि सही हैं, जबकि 'सोहन का घर के क़रीब' और 'मंगला का बेटे के घर' अनुचित प्रयोग हैं।

4) की (शब्द) की (शब्द) : यह प्रयोग होता तो है, लेकिन अधिकांश वाक्यों में पहले 'के' और फिर 'की' का प्रयोग बेहतर होता है। 'लड़कियों की पढ़ाई की व्यवस्था', 'बिल्ली की आँखों की चमक' आदि की तुलना में 'लड़कियों के पढ़ाई की व्यवस्था', 'बिल्ली के आँखों की चमक' आदि बेहतर प्रयोग हैं।

5) की (शब्द) का (शब्द) : यह प्रयोग किया जा सकता है। 'माँ की साड़ी का रंग', 'आपकी आँखों का जादू' आदि इसके उदाहरण हैं।

6) की (शब्द) के (शब्द) : यह प्रयोग भी निश्चिन्त होकर किया जा सकता है। 'आपकी आँखों की मस्ती के दीवाने हज़ारों हैं', 'मेरी मूर्खता के कारण आप इस हालत में हैं', 'शीतल की किताब के पन्ने' आदि उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं।

'के' के साथ 'का', 'की' और स्वयं 'के'; ये तीनों प्रयोग हो सकते हैं। 'राम के घर के पास', 'सीता के माँ की हालत', 'त्रिभुज के आकार का खेत', 'विजय के बेटे के साथ' आदि उदाहरण के लिए देखे जा सकते हैं।

'मनोहर का हरि के साथ घूमना अच्छा नहीं है', 'सुरेश का मनोहर की बस्ती में जाना ठीक नहीं', 'ऐसे आदमी का भारत का प्रधानमंत्री होना एक दुर्घटना ही है' जैसे प्रयोग भी होते हैं, जिनमें ऊपर बताए नियम का उल्लंघन हो रहा है; ऐसा लगता है। ध्यान देने की बात यह है कि 'का' के बाद कोई शब्द रहे और फिर दूसरे शब्द के साथ क्रिया हो (जैसे घूमना, जाना, होना आदि), तो आगे 'का', 'की' या 'के' का प्रयोग हो सकता है।

'राम का दोस्त का भाई की पत्नी चल बसी', 'वह लीला का पति का दोस्त का घर गया है', 'किशोर की पत्नी का भाई का दोस्त का घर का पता क्या है', 'तारिणी हरीश का दोस्त का घर का पता चाहता है' आदि वाक्यों में दो बार से ज़्यादा सम्बन्धवाचक विभक्ति चिन्ह आए हैं। ये वाक्य अशुद्ध हैं। इनके शुद्ध रूप 'राम के दोस्त के भाई की पत्नी चल बसी', 'वह लीला के पति के दोस्त के घर गया है', 'किशोर की पत्नी के भाई के दोस्त के घर का पता क्या है', 'तारिणी हरीश के दोस्त के घर का पता चाहता है' आदि हैं। वाक्य, भाव और अर्थ के अनुसार ही शब्दों का प्रयोग होता है, यह स्पष्ट माना जाना चाहिए और भाषा में हर जगह गणित के सूत्रों की तरह सूत्र नहीं तलाशने चाहिए।

भोजपुरी में 'का' और 'की' का प्रयोग नहीं होता, कभी कभार 'का' का प्रयोग भी कर लेते हैं, लेकिन मुख्यतः 'के' से ही काम चलाया जाता है। संस्कृत, मैथिली, बांग्ला आदि में इस तरह के सम्बन्धसूचक शब्द अलग से नहीं जोड़े जाते, जैसे 'रामस्य' (संस्कृत, अर्थ- राम का, राम की या राम के), 'कमलायाः' (संस्कृत, अर्थ- कमला का, कमला की या कमला के), 'रामक गाँव' (मैथिली, राम का गाँव), 'मिथिलाक संस्कृति' (मैथिली, मिथिला की संस्कृति), 'विज्ञानेर इतिहास' (बांग्ला, विज्ञान का इतिहास) आदि। पंजाबी में 'का' और 'की' के लिए 'दा' और दी' का प्रयोग होता है, जैसे 'राम दी चिड़िया, राम दा खेत' (राम की चिड़िया, राम का खेत) आदि; तो गुजराती में 'ना', 'नी' आदि का प्रयोग होता है! अंग्रेज़ी में 'ऑफ़' ही इनका मुख्य विकल्प है।

## अध्याय– 42

### 'में' के प्रयोग

इस भाग में हम विभक्ति चिन्ह 'में' के प्रयोग पर चर्चा करेंगे।

'में' का प्रयोग भावों या गुणों की मौजूदगी में, जैसे 'दूध में मिठास', 'मन में दया' आदि; आवास या वास में, जैसे 'वन में रहना', 'समुद्र में रहना', 'नदी में नहाना' आदि; मोल या खरीद-बिक्री में, जैसे 'किताब सौ रुपए में मिली', 'अपनी गाय कितने में बेचोगे', 'तुषार ने बीस हज़ार में यह ज़मीन सुरेश से ली' आदि; मेल और अन्तर बताने में, जैसे 'किशन और हरदेव में कोई अन्तर नहीं है', 'भाई भाई में प्रेम है', 'दोनों में अनबन हो गई', 'नरेश और महेश में कहा सुनी हो गई' आदि; निर्धारण या चयन में, जैसे 'अंधों में काने राजा', 'भारत की नदियों में गङ्गा सर्वाधिक दूषित है', देवताओं में कौन अधिक पूज्य है', 'घर में सबसे छोटा' आदि; रुचि, विषय, क्षेत्र आदि बताने तथा काम में जुटे रहने पर या मन की स्थिति बताने में, जैसे 'धर्म में रुचि', 'गणित में दिलचस्पी', 'वह तो अपनी धुन में था', 'पढ़ाई में मन नहीं लगता', 'होश में रहो', 'फ़िल्मों में दिलचस्पी', 'चिन्ता में' और निश्चित काल (समय) की स्थिति में, जैसे 'वह एक दिन में आ जाएगा', 'कई दिनों में', '1934 में अकाल पड़ा', 'प्राचीन समय में', 'दिन में चार बार', 'वह आठ दिनों में लौटेगा' आदि किया जाता है।

भरना, समाना, घुसना, मिलना, मिलाना आदि क्रियाओं के साथ भी 'शामिल होने' यानी 'मौजूदगी' के अर्थ में 'में' का प्रयोग होता है, जैसे 'घड़े में पानी भरना', 'धरती में समाना', 'बिल में घुसना', 'मिट्टी में मिलाना', 'रास्ते में मिलना' आदि।

'में' के प्रयोग के कुछ उदाहरण 'लड़का कमरे में है', 'वह घर में नहीं आता', 'मैं रात के समय गाँव में पहुँचा', 'चोर जंगल में जाएगा' आदि हैं। 'वह घर में गया' और 'वह घर को गया' के अर्थ में अन्तर है। यहाँ 'घर में' का अर्थ 'घर के भीतर से' है, जबकि 'घर को' का अर्थ से 'घर की सीमा तक जाने से है'; इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

'में' का प्रयोग हमेशा उचित नहीं रहता। 'आप भीतर में जाकर देख लें', 'दरअसल में वह सनकी है', 'पिछले दिनों में तपस्या बहुत पढ़ती रही', 'तुम्हारे हाथ में क्या आया', 'तृप्ति मन ही मन रोने लगी', 'बच्चे विद्यालय में जाते हैं', 'जिस समय में वह आया था, उस समय में मैं नहीं था', 'परस्पर में सहयोग होना चाहिए', 'कल रात में वर्षा नहीं हुई' आदि वाक्यों में 'में' का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

'वह आसन में बैठा है', 'वे लोग रात में जागते रहे', 'वह सबमें शक्तिशाली है', 'रात में 10 बजे बैठक होगी', 'वह नदी में पानी भरने गया', 'आज की बैठक आपके निवास में होगी', 'वह पढ़ने में जी चुराता है', 'अनेक स्थलों में यह स्पष्ट किया गया है', 'उनकी दृष्टि चित्र में गड़ी थी', 'वह किताब में आँख गड़ाए पढ़ रही थी', 'समुद्र में सैर करने चलें', 'भीष्म शरशय्या में थे', 'पुलिस ने हरेन्द्र में आरोप लगाया है', 'मनोहर जी गणित में मर्मज्ञ हैं', 'प्रथम विश्वयुद्ध 1914 और 1918 में हुआ', 'वह क्रोध में भर कर बोला', 'उसे आने में रोका गया', 'उसकी योग्यता काम में प्रकट होती है' आदि वाक्यों में 'में' के स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग करना ठीक रहेगा। 'वह आसन पर बैठा है', 'वे लोग रात भर जागते रहे', 'वह सबसे शक्तिशाली है', 'रात को 10 बजे बैठक होगी', 'वह नदी से पानी भरने गया', 'आज की बैठक आपके निवास पर होगी', 'वह पढ़ने से जी चुराता है', 'अनेक स्थलों पर यह स्पष्ट किया गया है', 'उनकी दृष्टि चित्र पर गड़ी थी', वह किताब पर आँख आँख गड़ाए पढ़ रही थी', 'समुद्र की सैर करने चलें', 'भीष्म शर शय्या पर थे', 'पुलिस ने हरेन्द्र पर आरोप लगाया है', 'मनोहर जी गणित के मर्मज्ञ हैं', 'प्रथम विश्वयुद्ध 1914 और 1918 के बीच में हुआ था' ('1914 से 1918 तक' भी हो सकता है), 'वह क्रोध से भर कर बोला', 'उसे आने से रोका गया है', 'उसकी योग्यता काम से प्रकट होती है' आदि वाक्य सही प्रयोग दिखाते हैं।

'दिल्ली और श्रीनगर के बीच दंगे हुए', 'बाबू लोग हिन्दी वाक्यों के बीच अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग कर देते हैं' जैसे वाक्यों में 'के बीच' की जगह 'में' का प्रयोग करना ठीक रहेगा।

'हमारे धर्मशास्त्रों के अन्दर बहुत कुछ पड़ा है', 'हमारी पाठ्यपुस्तक के अन्दर लिखा हुआ है' आदि वाक्यों में 'के अन्दर' की जगह 'में' का प्रयोग करना चाहिए। इसी तरह 'उस गाँव के भीतर दो कुएँ हैं', 'कल संसद के भीतर इस पर बहस होगी', 'वह संकटों के भीतर घबराने वाला नहीं है' आदि वाक्यों में 'के भीतर' की जगह 'में' का प्रयोग करना चाहिए।

'यहाँ', 'वहाँ', 'किनारे', 'आसरे', 'दरवाजे' आदि के बाद 'में' का प्रयोग नहीं होता।

हम ग़लती से 'में' की बिन्दी को अनुस्वार मान लेते हैं, जो चन्द्रबिन्दु है।

## अध्याय– 43

### विभक्ति चिन्ह 'पर'

इस भाग में हम विभक्ति चिन्ह 'पर' की चर्चा करेंगे।

सामान्यतः 'में' अंतः स्थिति का बोध कराता है और 'पर' बाह्य स्पर्श का। 'पे' या 'पै' भी 'पर' के स्थान पर (ब्रजभाषा वग़ैरह में) कई बार लिखा और बोला जाता है।

आधार के लिए, जैसे 'घोड़े पर बैठना', 'खाट पर सोना', 'सड़क पर चलना', 'पेड़ पर चढ़ना' आदि; दूरी का बोध कराने के लिए, जैसे 'एक कोस पर', 'चार हाथ की दूरी पर', 'एक एक हाथ के अन्तर पर', 'कुछ आगे जाने पर' आदि; आधार के पास होने (सामीप्याधार) पर, जैसे 'मेरा घर सड़क पर है', 'लड़का द्वार पर खड़ा है', 'फाटक पर सिपाही रहता है', 'तेरे दर पर', 'दरवाजे पर ही' आदि ; कारण बताने में, जैसे 'अच्छा करने पर इनाम मिलेगा', 'तो इस बात पर झगड़ा हो गया!', 'मेरे बोलने पर वे अप्रसन्न हो गए'; निश्चित काल के लिए, जैसे 'समय पर वर्षा नहीं हुई', 'नौ बजकर पैंतालीस मिनट पर', 'एक एक घंटे पर दवा ले लेना' आदि और 'तारीख पर तारीख', 'तगादे पर तगादा', 'दिन पर दिन भाव चढ़ रहे हैं', 'सिपाहियों पर सिपाही' जैसे आधिक्य या दोहराव (द्विरुक्ति) की स्थिति में 'पर' का प्रयोग किया जाता है।

'नौकरों पर दया', 'कन्या पर मोहित', 'आप पर विश्वास', 'वह अपनी जाति पर गया है', 'अपनी बात पर रहना', 'जहाँ अभी तालाब है, वहाँ पर किसी समय मन्दिर था' आदि में भी 'पर' का प्रयोग किया जाता है।

निरन्तरता या सातत्य (किसी बात के लगातार होते रहने पर) में भी 'पर' का प्रयोग होता है, जैसे 'बात पर बात निकलती है।

'छोटा होने पर भी', 'वह समझाने पर भी नहीं रुका', 'यह दवा चमड़े की बीमारियों पर भी काम करेगी' जैसे प्रयोग भी 'पर' के लिए देखे जा सकते हैं।

'चढ़ना', 'मरना', 'इच्छा करना', 'छोड़ना', 'घटना', 'निछावर', 'निर्भर' आदि के साथ 'पर' का प्रयोग होता है, जैसे 'नाम पर मरना', 'आज का काम कल पर छोड़ना', 'उसका जाना तुम्हारे जाने पर निर्भर है', 'पहाड़ पर चढ़ना' आदि।

'वे तालाब के किनारे पर बैठ गए', 'वह घर पर नहीं है', 'अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली', 'वह यहाँ पर नहीं है', 'हम तो आपके भरोसे जीवित हैं' आदि में 'पर' लगाना आवश्यक रहता है, लेकिन इसे अक्सर छोड़ दिया जाता है, जिसे उचित नहीं माना जाएगा।

'सारा दोष अपने सिर पर लेना', 'आप कहाँ पर थे' और 'आड़े हाथों पर लेना', 'मैं उसके दरवाजे पर कभी नहीं गया', 'उस जगह पर बहुत भीड़ थी', 'हम आपके पाँव पड़ते हैं' आदि में 'पर' का प्रयोग करना ठीक नहीं है।

कई बार 'पर' का प्रयोग कर दिया जाता है, जबकि उसके स्थान पर दूसरे शब्द आने चाहिए। इसके उदाहरण के लिए 'वह मरने पर है' (यहाँ 'को' होना चाहिए), 'इस युग में विज्ञान पर बड़ा महत्त्व दिया जा रहा है ' (यहाँ 'को' होना चाहिए), 'कश्मीर की नीति पर मंत्री ने एक वक्तव्य दिया' (यहाँ 'पर' के स्थान पर 'के सम्बन्ध में' का प्रयोग करना चाहिए), 'मुझ पर कोई लाचारी नहीं है' (यहाँ 'मुझपर 'की जगह 'मेरी' होना चाहिए), 'पत्र लम्बा होने पर माफी चाहता हूँ' ('की' या 'के कारण' होना चाहिए), 'किशोर पर मुझे सहानुभूति है' ('किशोर के साथ' या 'किशोर से' होना चाहिए), 'राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी पर बड़ा उपकार किया' ('का' होना चाहिए), 'उस पर क्या दोष है' ('उसका' होना चाहिए), 'तुम पर क्या दोष दियी जाय' ('तुमको' होना चाहिए), 'वह खेत पर चौकीदारी करता है' (यहाँ 'की' होना चाहिए), 'सामान दुकान पर है' ('में' होना चाहिए), 'हरदेव ने इस विषय पर अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया

है' ('का' होना चाहिए), 'ऐसा करने पर कोई नुक़सान नहीं होगा' ('में' होना चाहिए), 'वह राजमहल पर चला गया' (यहाँ 'के ऊपर' होना चाहिए), 'इस कुएँ पर एक टीन डाल दें, तो अच्छा होगा' (यहाँ भी 'के ऊपर ' होना चाहिए) आदि देखे जा सकते हैं।

## अध्याय– 44

### 'के भीतर', 'के अन्दर', 'के ऊपर'

इस भाग में हम 'के भीतर', 'के अन्दर', 'के ऊपर', 'हे', 'रे', 'अरे' आदि के प्रयोग पर बात करेंगे।

'के भीतर' या 'के अन्दर' का प्रयोग तब होता है, जब कर्ता (सब्जेक्ट) पहले से उपस्थित न रहे और कथन के समय क्रियाशील (सक्रिय) रहे, जैसे 'वह घर के अन्दर चला गया'। 'में' का प्रयोग करना यहाँ ठीक नहीं रहेगा। 'वह घर में है' में पहले से उपस्थित होने का अर्थ मिलता है। अंग्रेज़ी की बात करें, तो 'में' के लिए इन (in), 'के अन्दर' या 'के भीतर' के लिए इनटू (into), 'पर' के लिए ऑन (on), 'के ऊपर' के लिए अपॉन (upon) और अबव या एबॅव (above) के प्रयोग को देखा जा सकता है।

'गाँव के भीतर दो स्कूल हैं', 'विधानसभा के भीतर बड़ा हंगामा हुआ', 'पेट के अंदर दर्द हो रहा है' आदि में 'के अंदर' या 'के भीतर' का प्रयोग उचित नहीं है। इन वाक्यों में 'के अंदर' या 'के भीतर' के स्थान पर 'में' का प्रयोग होना चाहिए।

'पर' और 'के ऊपर' में थोड़ा अन्तर है। 'पर' में आधार और आश्रित का स्पर्श होता है, जबकि 'के ऊपर' में आधार और आश्रित एक-दूसरे को स्पर्श नहीं करते। 'छत सिर पर है' और 'छत सिर के ऊपर है', इन दो वाक्यों के अर्थ से यह अन्तर स्पष्ट समझा जा सकता है। 'हृदयेश ने सिर पर छाता तान रखा है' में 'पर' का प्रयोग न करके, 'के ऊपर' का प्रयोग होना चाहिए, क्योंकि छाता सर को स्पर्श नहीं कर रहा, सर के ऊपर है। इसी प्रकार 'उसने आँगन पर छप्पर डाल लिया है' और 'युद्ध के दौरान नगर पर वायुयान मँडराते हैं' में 'पर' की जगह 'के ऊपर' का प्रयोग करना ठीक रहेगा।

'मेरे ऊपर दया कीजिए महाराज!', 'तुम्हारी पीठ के ऊपर चाकू के निशान हैं', 'कानून और व्यवस्था का बोझ पुलिस के ऊपर है', 'भगतसिंह के ऊपर यह आरोप लगाया गया', 'यह तो इस बात के ऊपर निर्भर है', 'कल बजट के ऊपर बहस होगी', 'भगवान् के ऊपर विश्वास करो', 'तुम्हारे मन के ऊपर भारी बोझ है', 'किताब मेज के ऊपर है', 'अपराधी की पीठ के ऊपर कोड़े लगाए गए', 'समारोह की पूरी ज़िम्मेदारी आपके ऊपर है', 'मेरे मन के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा' आदि वाक्यों में 'के ऊपर' का प्रयोग उचित नहीं है। इनके सही रूप क्रमशः 'मुझ पर दया कीजिए महाराज!', 'तुम्हारी पीठ पर चाकू के निशान हैं', 'कानून और व्यवस्था का बोझ पुलिस पर है', 'भगतसिंह पर यह आरोप लगाया गया', 'यह तो इस बात पर निर्भर है', 'कल बजट पर बहस होगी', 'भगवान् पर विश्वास करो', 'तुम्हारे मन पर भारी बोझ है', 'किताब मेज पर है', 'अपराधी की पीठ पर कोड़े लगाए गए', 'समारोह की पूरी ज़िम्मेदारी आप पर है' और 'मेरे मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा' हैं।

'अरे' और 'हे' का प्रयोग सम्बोधन में होता है, जैसे 'हे भगवान्, इस गरीब की रक्षा कीजिए', 'अरे, श्याम तुझे क्या हो गया?' आदि। 'ओ', 'ऐ', अरे' और 'रे' का प्रयोग डाँटने, आश्चर्य व्यक्त करने आदि में भी होता है। सम्बोधन में हमेशा इन शब्दों का प्रयोग नहीं होता, जैसे 'भाइयो और बहनो', 'मोहन, कहाँ थे तुम!' आदि।

कई बार 'हे' या 'ओ' के साथ आने वाले संस्कृत के शब्दों में कुछ परिवर्तन भी होता है। शब्द एकवचन हो और उसके अन्त में इकार, ईकार या आकार हो, तो वह एकार में बदल जाता है, जैसे 'हे विधे', 'हे प्रिये', 'हे बालिके', 'ओ लड़के', 'ओ बच्चे', 'हे सीते', 'हे देवि' और 'हे नदि' में क्रमशः 'विधि', 'प्रिया', 'बालिका', 'लड़का', 'बच्चा', 'सीता', 'नदी' और 'देवी' में बदलाव हुआ है। हिन्दी में 'हे नदी' या 'हे देवी' भी लिखा जा सकता है, लेकिन संस्कृत में नहीं। अन्त में उकार होने पर वह ओकार में बदल जाता है, जैसे 'हे साधो', 'हे बन्धो' आदि। ध्यान रहे कि ऐसा हर बार नहीं होता।

अब 'सहित', 'साथ' आदि के भी कुछ उदाहरण देखते हैं। 'उसने बड़े ध्यान के साथ मेरी बातें सुनीं', 'तुम्हें लगन या धैर्य के साथ अपना काम करना चाहिए', 'मैंने नम्रता के साथ केवल इतना कहा कि... ' आदि में

'के साथ' की जगह 'से' का प्रयोग होना चाहिए। 'आपकी कलम धन्यवाद सहित लौटा दी थी' में 'सहित' के स्थान पर 'पूर्वक' होना चाहिए।

'भोग विलास के लिए धन नष्ट न करो', 'इस रोग के लिए कोई इलाज नहीं', 'स्वान्तः सुखाय के लिए', 'वे सन्तान को लेकर दुखी हैं', 'वह अपनी पुस्तक की अपेक्षा दूसरे की उठा लाया', 'उन समान दूसरा कोई नहीं', 'मेरे आगे कौन ठहर सकता है?', ''उसके विरुद्ध मुकदमा चलाया गया' आदि के सही रूप 'भोग विलास पर धन नष्ट न करो', 'इस रोग का कोई इलाज नहीं', 'स्वान्तः सुखाय' (इसमें 'के लिए' का भाव पहले से ही मौजूद है), 'वे सन्तान के कारण दुखी हैं', 'वह अपनी पुस्तक के बदले दूसरे की उठा लाया', 'उनके समान कोई नहीं', 'मेरे सामने कौन ठहर सकता है?' और 'उस पर मुकदमा चलाया गया' हैं।

## अध्याय– 45

### उपसर्ग

'अनाधिकार' हिन्दी और संस्कृत में कोई शब्द ही नहीं है, फिर भी इसका प्रयोग जमकर होता है। आप कहीं भी लिखा देख सकते हैं - अनाधिकार प्रवेश निषेध। इस भाग में हम विलोम (विपरीत यानी उल्टा अर्थ वाले शब्द; विपरीतार्थक शब्द; अंग्रेज़ी में एंटोनिम) शब्दों और हिन्दी के कई उपसर्गों पर चर्चा करेंगे।

हिन्दी में आने वाले जो शब्द स्वर वर्ण से शुरू होते हैं (मुख्य रूप से संस्कृत के शब्द) , उनमें कई बार 'अन्' जोड़कर विलोम बनाया जाता है, जैसे अनिच्छा (अन् + इच्छा), अनुदार (अन् + उदार), अनन्त (अन् + अन्त), अनन्तिम (अन् + अन्तिम), अनधिकार (अन् + अधिकार), अनुपमा (अन् + उपमा), अनुपयोगी (अन् + उपयोगी), अनेक (अन् + एक), अनीश्वरवादी (अन् + ईश्वरवादी), अनाचार (अन् + आचार), अनूह (अन् + ऊह), अनैच्छिक (अन् + ऐच्छिक), अनौपचारिक (अन् + औपचारिक), अनृत (अन् + ऋत) आदि। 'अनधिकार' को 'अन्-धिकार' न पढ़कर, 'अनधि-कार' पढ़ना चाहिए। 'न' का पूरा उच्चारण (अ के साथ) होना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी आधे व्यंजन में स्वर वर्ण मिलने पर संगत मात्रा जुड़ जाती है, जैसे क् में आग के मिलने पर काग होगा, द् में ओना मिलने पर दोना बनेगा। द (पूरा अ मिला द) में ओना मिलने से दोना नहीं, दौना बनेगा; इसी कारण अन् में अधिकार के मिलने पर अनधिकार बनता है, न कि अनाधिकार।

संस्कृत से हिन्दी में आए उस शब्द में, जो व्यंजन से शुरू होता है; 'अ' या दूसरा उपसर्ग लगाकर विलोम बनाया जाता है, जैसे शुद्ध से अशुद्ध, ज्ञात से अज्ञात आदि। अनमोल, अनगिनत, अनपढ़, अनहित (अहित शब्द होना चाहिए, लेकिन यह भी चलन में है), अनजान आदि में 'अन' उपसर्ग लगा है, 'अन्' नहीं। अनजान को अंजान नहीं लिखा जाना चाहिए।

एक शब्द 'अभिज्ञ' है, जिसे 'भिज्ञ' का विलोम मान लिया जाता है, 'भिज्ञ' शब्द हिन्दी में है ही नहीं। मूल शब्द 'अभिज्ञ' है, जिसका विलोम 'अनभिज्ञ' ('अभिज्ञ' में 'अन्' जोड़ने से बना) होता है। यह भी दिलचस्प है कि 'असुर' का मूल अर्थ 'राक्षस' नहीं, 'देवता' था, लेकिन अब यह 'सुर' के विलोम के रूप में ही माना और समझा जाता है।

शब्दों के विलोम कई प्रकार से बनते हैं। लिंग बदल कर, जैसे माता से पिता, बेटा से बेटी, गाय से बैल और भिन्न शब्द द्वारा, जैसे लाभ से हानि, उत्थान से पतन, कृष्ण से शुक्ल आदि विलोम शब्द बनते हैं।

विलोम बनाने का एक तरीका उपसर्ग जोड़ना है। अब हम विलोम बनाने वाले उपसर्गों पर नज़र डालते हैं।

1) अप - इसका प्रयोग बुरा, हीन, अभाव, छोटा या लघु, विरुद्ध आदि के अर्थ में होता है। यश से अपयश, मान से अपमान आदि इसके प्रयोग से बने विलोम के उदाहरण हैं। अपहरण, अपकार, अपव्यय, अपवाद आदि इससे बने कुछ और शब्द हैं।

2) अव- अनादर, हीनता, पतन या नीचे के अर्थ वाला यह उपसर्ग रोह से अवरोह, मानना से अवमानना, मूल्यन से अवमूल्यन जैसे शब्द बनाता है। इसकी जगह 'औ' भी मिलता है कई बार, जैसे औढर।

3) आ- यह सीमा, समेत, ओर, विपरीत, कमी या तक का अर्थ देता है। गमन से आगमन इसके कारण बनता है। आजन्म, आजीवन, आमरण आदि शब्द इससे बने हैं। आजन्म, आमरण और आजीवन, तीनों एक ही भाव बताते हैं।

4) दुर् और दुस्- दुर्गम, दुर्जेय, दुर्दशा, दुर्लभ, दुष्कर्म, दुर्गुण आदि इनके उदाहरण हैं। बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन आदि इन उपसर्गों के अर्थ हैं। दुष्, दुश् और दु भी इसी तरह के उपसर्ग हैं। वास्तव में दुस् के दो अन्य रूप दुष् और दुश् हैं।

5) निर् और निस्- निषेध या बाहर का अर्थ देने वाले ये उपसर्ग निर्भय, निष्फल, निष्काम, निस्सहाय, निस्संकोच, निर्दोष, निरपराध, निर्मल जैसे शब्द बनाते हैं। इनकी जगह 'नि' भी कई बार आता है, जैसे निढाल, निकम्मा आदि। निष् और निश् भी निस् के ही रूप हैं।

6) वि- यह विशेषता, हीनता, भिन्नता, असमानता आदि का अर्थ देता है। विदेश, विस्मरण, वियोग, विमुख आदि इससे बने विलोमों के उदाहरण हैं। ज्ञान, शुद्ध, वाद, भाग, नाश, भिन्न आदि से बने विज्ञान, विशुद्ध, विवाद, विभाग, विनाश, विभिन्न जैसे शब्द मूल शब्द को विशेष अर्थ देते हैं।

7) अ- अथाह, अज्ञात, अशान्त, अनाम आदि बनाने वाला यह उपसर्ग अभाव या निषेध का अर्थ देता है।

8) अन- अनपढ़, अनजान, अनमोल, अनबीता जैसे शब्द बनाने वाला यह उपसर्ग भी निषेध या अभाव का अर्थ देता है। यह ध्यान रहे कि अन और अन् दोनों अलग अलग हैं।

9) कु- बुराई या हीनता के अर्थ का यह उपसर्ग कुपुत्र, कुमार्ग, कुपात्र, कुरूप जैसे शब्द बनाता है। कई बार इसकी जगह 'क' भी होता है, जैसे कपूत।

10) बिन- अभाव का अर्थ देने वाला यह उपसर्ग बिनदेखा, बिनब्याहा जैसे शब्दों में देखा जा सकता है।

11) न- नास्तिक, नपुंसक, नग जैसे शब्द बनाने वाला यह उपसर्ग अभाव और निषेध का अर्थ रखता है।

12) ग़ैर- निषेध या विरोध के अर्थ वाला यह उपसर्ग ग़ैरकानूनी, ग़ैरसरकारी, ग़ैरवाजिब जैसे शब्द बनाता है।

13) ना- नहीं या अभाव के अर्थ वाले इस उपसर्ग से नालायक, नामुमकिन, नाराज, नापसन्द, नाचीज जैसे शब्द बनते हैं।

14) बद- बदनाम, बदकिस्मत, बदबू, बदहजमी, बदसूरत जैसे शब्द बनाने वाला यह उपसर्ग 'बुरा' अर्थ देता है।

15) बे- इसका अर्थ बिना है और इससे बेईमान, बेइज्जत, बेरहम, बेतरह जैसे शब्द बनते हैं।

16) ला- इसका अर्थ भी बिना है। लाइलाज, लाजवाब, लावारिस, लापरवाह, लापता जैसे शब्द इससे बनते हैं।

17) बिला- यह भी 'बिना' के अर्थ का शब्द बनाता है, जैसे बिलाशक।

18) अन- यह अंग्रेज़ी के शब्दों में जोड़ा जाता है। अनफ़िट, अनबैलेंस जैसे शब्द इससे बनते हैं।

19) नन- यह भी अंग्रेज़ी का ही उपसर्ग है और ननमैट्रिक, ननसेंस, ननटेक्निकल जैसे शब्द बनाता है। इल, इर, इम, ए आदि भी इसी तरह के उपसर्ग माने जा सकते हैं।

20) परा- उल्टा, अनादर, नाश, अधिक आदि के अर्थ के इस उपसर्ग से पराजय जैसे शब्द बनते हैं।

21) प्रति- प्रत्येक, बदले में, विरोध, बराबरी, परिवर्तन आदि के अर्थ के इस उपसर्ग से प्रतिकार, प्रतिक्रिया, प्रतियोगिता, प्रतिवाद, प्रतिदान आदि बनते हैं।

अ, अन, क और बिन हिन्दी के अपने उपसर्ग हैं, जबकि ना, बद और बे फ़ारसी के। ग़ैर, बिला और ला अरबी के उपसर्ग हैं। अन, नन आदि अंग्रेज़ी के उपसर्ग हैं। निर्, निस्, वि आदि संस्कृत के उपसर्ग हैं। इन सबका प्रयोग हिन्दी में होता है।

कई बार उपसर्गों को बदलने से विलोम बनता है, जैसे आदान से प्रदान, सुलभ से दुर्लभ, आयात से निर्यात, संयोग से वियोग आदि।

शब्दों के अन्त में प्रत्यय जोड़कर भी विलोम शब्द बनाया जाता है। हीन, शून्य, रहित, लेस आदि प्रत्ययों के प्रयोग से बने विलोम शब्द बुद्धिहीन, गंधहीन, रंगहीन, स्वादहीन, विवेकशून्य, बैकलेस, आदि हैं।

केन्द्राभिगामी का विलोम केन्द्रापसारी है। 'बेफजूल', 'निखालिस', 'बेवाहियात' जैसे शब्दों में उपसर्गों का चुनाव ग़लत है। फजूल, खालिस, वाहियात शब्द बिना उपसर्ग के ही अपने अर्थ स्पष्ट करते हैं। 'बेजिम्मेदार' की जगह 'ग़ैरज़िम्मेदार' होना चाहिए।

## अध्याय– 46

### उपसर्ग

शायद आपने वह चुटकुला सुना हो, जिसमें पिता अपने बच्चे को बताता है कि सु लगाने से अच्छे का बोध होता है और कु लगाने से बुरे का। एक दिन कुँअर जी को बच्चा पिता के सामने ही सुअर जी कह देता है। यह प्रयोग 60 दिनों में धाराप्रवाह 'अंग्रेज़ी बोलना सीखें' गुट के लिए हो सकता है, जो समझता है कि कोई भाषा शुद्धता और गुणवत्ता के साथ इतनी जल्दी सीखी जा सकती है! न तो घंटे भर में कोई डॉक्टर बन सकता है और न ही चार दिन में बढ़ई! भाषा पर भी बिना ध्यान और समय दिए अधिकार नहीं पाया जा सकता। हमने एक उपसर्ग के नासमझी भरे प्रयोग का उदाहरण लिया है। यहाँ हिन्दी के कई उपसर्गों पर नज़र डालते हैं।

1) अति- अधिक, उस पार, ऊपर आदि के अर्थ का यह उपसर्ग अतिक्रमण, अतिरंजित, अत्यन्त, अत्याचार, अत्यधिक जैसे शब्द बनाता है।

2) अधि- अधिक, बड़ा, ऊपर, स्थान में श्रेष्ठ आदि के अर्थ वाला यह उपसर्ग अधिनियम, अधिनायक, अधिग्रहण, अध्यक्ष, अध्यात्म, अधिवक्ता, अधीक्षक जैसे शब्द बनाता है।

3) अनु- पीछे या बाद, छोटे, क्रम, समानता आदि के अर्थ के इस उपसर्ग से अनुसंधान, अनुशासन, अनुराग, अनुज, अनुचर, अनुदान, अनुपूरक, अनुप्रयोग, अनुरूप, अनुसूची, अनुक्रम आदि बनते हैं।

4) अभि- अभयारण्य जैसे शब्द को प्रायः अभ्यारण्य लिख और बोल दिया जाता है, जो उचित नहीं है। अभि उपसर्ग अधिकता, सामीप्य (निकटता), ओर, सामने, इच्छा प्रकट करने आदि के भाव में आता है और अभिनेता, अभिज्ञ, अभिमत, अभिमान, अभिलेख, अभियोग, अभ्यास, अभ्यर्थी जैसे शब्द बनाता है।

5) उत् या उद्- उत्कर्ष, ऊपर आदि के अर्थ वाले उद्गम, उत्तोलक, उत्पात, उद्बोधन, उद्भेदन, उन्नत, उन्नायक आदि इससे बने हैं। उत्पीड़न, उद्घोषणा, उद्भट आदि में अधिक या प्रबल होने का अर्थ है, जबकि उद्दंड, उद्बोधन, उन्नति आदि में ऊपर उठे होने का अर्थ है।

6) उप- इससे उपवन, उपमुख्यमंत्री, उपग्रह, उपाख्यान, उपाध्यक्ष, उपायुक्त, उपसंपादक, उपभोग, उपलब्ध, उपहार, उपहास आदि बने हैं, जो मूल शब्द को छोटा, निकट, समीप, सहायक, हीनता आदि के भाव से संयुक्त करते हैं। उपग्रह, उपवन, उपभाषा, उपबंध आदि छोटा के अर्थ में हैं, तो उपस्थित, उपभोग आदि पास या निकट का अर्थ देने वाले हैं।

7) प्र- आगे, अधिक, ऊपर, यश आदि के अर्थ वाले प्रक्रिया, प्रकृति, प्रयोग, प्रबल, प्रगति आदि इससे बने हैं।

8) परि- चारों ओर, घेरा, पूरा, त्याग, अतिशय आदि के अर्थ वाले शब्द परिक्रमा, परिमाप, परिमिति, परिकलन, परिभाषा, परिमार्जन, परियोजना, परिरक्षण, परिवर्धन, पर्यावरण आदि इस उपसर्ग से बनते हैं।

यह अक्सर देखा जाता है कि लोग परीक्षा का अर्थ पर + इच्छा = परीक्षा यानी दूसरे की इच्छा लगाते हैं। यह मूर्खतापूर्ण और आधारहीन है। पर में इच्छा मिलाने पर परेच्छा बनेगा, परीक्षा नहीं। परीक्षा में न तो पर है, न इच्छा; वास्तव में परि उपसर्ग ईक्षा (अर्थ- दृष्टि, विचार, जाँच) से मिलकर परीक्षा बनाता है।

9) सु- सुखी, सुन्दर, अच्छा, श्रेष्ठ, सहज आदि भाव वाले सुगंध, सुगम, सुदर्शन, सुपुत्र, सुभाष, सुयश, सुरक्षा, सुलभ, सुसंगति, सुसंस्कृत, स्वागत आदि शब्द इस उपसर्ग से बने शब्द हैं।

10) सम्- संयोग, साथ या इकट्ठा के भाव वाले संचार, समारोह, सम्मेलन आदि और पूर्णता, सौन्दर्य के भाव वाले संगीत, सम्मोहन, समालोचना, समीक्षा, सम्बोधन, सम्मान, सम्प्रेषण, संचालन, संक्रमण आदि इससे बने हैं।

11) अध- अपूर्ण या आधे के अर्थ वाले अधपका, अधमरा, अधखुला आदि इस उपसर्ग से बने हैं।

12) उन- एक कम का भाव रखने वाला यह उपसर्ग उनचास, उनसठ, उनतीस, उनहत्तर, उन्नीस, उनतालीस जैसे शब्द बनाता है।

13) भर- भरपेट, भरमार, भरपूर, भरसक आदि पूरा या ठीक का अर्थ रखने वाले शब्द इससे बने हैं।

14) पर- दूसरा का अर्थ देने वाला और स्व (निज) का विलोम यह उपसर्ग पराधीन, परलोक, परतंत्र, परजीवी, परदेस, परोपकार, परदादा जैसे शब्द बनाता है।

15) कम- फ़ारसी का यह उपसर्ग अल्प, न्यून, हीन आदि का अर्थ देता है; जैसे कमनसीब, कमजोर, कमअक़्ल, कमबख़्त आदि।

16) खुश- यह भी फ़ारसी का अच्छा या श्रेष्ठ के भाव का उपसर्ग है। खुशनुमा, खुशनसीब, खुशबू, खुशमिजाज, खुशगवार, खुशकिस्मत, खुशखबरी आदि इससे बने शब्द हैं।

17) नेक- यह भी 'अच्छा' के भाव का फ़ारसी उपसर्ग है, जो नेकनीयत, नेकदिल जैसे शब्द बनाता है।

18) ब- अनुसार, साथ, से आदि के भाव के लिए फ़ारसी के इस उपसर्ग का इस्तेमाल बनाम, बदस्तूर, बखूबी जैसे शब्द बनाने के लिए करते हैं।

19) बा- साथ, सहित के भाव के इस उपसर्ग से बाकायदा, बाइज़्ज़त जैसे शब्द बनते हैं। यह भी फ़ारसी का उपसर्ग है।

20) हम- बराबर, अपना आदि के अर्थ का यह फ़ारसी का उपसर्ग हमवतन, हमराह, हमदर्द, हमशक्ल, हमनाम, हमउम्र आदि बनाता है।

21) डबल- अंग्रेज़ी का यह उपसर्ग दुगना का अर्थ देता है। डबलरोटी इसका उदाहरण है।

22) हेड- मुख्य के अर्थ के साथ लिए यह हेडमास्टर, हेडक्लर्क जैसे शब्द बनाता है।

इसके अतिरिक्त डिप्टी (उप के लिए) से डिप्टी साहब, डिप्टी कमिश्नर; फुल से फुल स्वेटर; सब (अर्थ- अवर) से सब रजिस्ट्रार;हाफ; हाफ से हाफ शर्ट आदि; रि (दुबारा या पुनः के अर्थ में) से रिचार्ज, रिचेक, रिमेक जैसे शब्द बनते हैं।

हर, सर, बर जैसे फ़ारसी के उपसर्ग हर दिन, हर रोज़, हरदम, हरसाल, सरपंच, सरताज, सरज़मीन, सरफ़रोश, सरहद, बरक़रार, बरखास्त, बरदाश्त, बरअक्स, बरखिलाफ, बरबाद, जैसे शब्द बनाते हैं।

दो बातों का ध्यान हमेशा रखना चाहिए-

1) पहली यह कि एक ही अर्थ कई उपसर्ग दे सकते हैं, लेकिन सबका प्रयोग हर बार नहीं कर सकते, जैसे ज्ञान में दुर् मिलाकर दुर्ज्ञान नहीं होता, अ लगाकर अज्ञान होता है।

2) संस्कृत शब्दों में संस्कृत का, अंग्रेज़ी शब्दों में अंग्रेज़ी का, हिन्दी में हिन्दी का और उर्दू (हम फ़ारसी और अरबी कह सकते हैं) में उर्दू का उपसर्ग लगाना ठीक रहता है। सुनसीब (बदनसीब की जगह), फुलपेट (भरपेट की जगह), खुशदर्शन (सुदर्शन की जगह) जैसे प्रयोग बेहूदा और भद्दे हैं। अत्यन्त खूबसूरत की जगह बेहद खूबसूरत, बेहद कठिन की जगह बहुत मुश्किल का प्रयोग अच्छा और जायज़ रहता है।

भोजपुरी में बेदरूप (बदरूप) का प्रयोग भी लोग करते हैं।

ज़िलाधिकारी, लाठीचार्ज, रेलगाड़ी, पॉकेटमार, टिकटघर, रामइक़बाल, जेलयात्रा, डाल्टेनगंज, घड़ीसाज, चौकीदार, समझदार, राजमहल, चमकदार आदि दो भाषाओं से मिलकर बने कुछ बहुप्रचलित शब्द हैं।

## अध्याय– 47

### जो उपसर्ग नहीं हैं

अंतर्राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय में अर्थभेद है, लेकिन पहले शब्द का प्रयोग ही अधिक प्रचलित है। हम पहले भी अंतः और अंतर के अर्थ और उसके प्रभाव पर बात कर चुके हैं, इसलिए यहाँ थोड़े शब्दों में कह कर आगे बढ़ते हैं। अंतर दो या अधिक के बीच में होना चाहिए, जबकि अंतः (अंतर्) एक के ही अंदर का अर्थ देता है, जैसे अंतरदेशीय का अर्थ दो या अधिक देशों के बीच से होना चाहिए और अंतर्देशीय का अर्थ एक ही देश के अन्दर होना चाहिए। वैसे अंतर्देशीय (पत्र के लिए इसका प्रयोग होता था) अब बीते दिनों की बात हो चुका है।

हिन्दी में ऐसे कई शब्द (या शब्दखंड) हैं, जो उपसर्ग नहीं हैं, लेकिन उपसर्ग की तरह शब्द बनाते हैं। अंतर् (अंतः) और अंतर भी इसी प्रकार के शब्द हैं। हम अब ऐसे ही कुछ शब्दों पर एक नज़र डालते हैं।

अंतः- अपने में, मध्य या भीतर का अर्थ देता है। इससे बने शब्द अंतःकोण, अंतर्गत, अंतर्जातीय, अंतर्निहित, अंतस्तल, अन्तःप्रेरणा आदि हैं।

अधः- अधो या अधः का अर्थ नीचे है। अधोलिखित, अधोवस्त्र, अधःपतन आदि इससे बने शब्द हैं।

विसर्ग और उपविराम (:) में अंतर समझना ज़रूरी है। 'अधःपतन' में 'अधः' के बाद बिना स्थान छोड़े 'पतन' लिखते हैं, जबकि 'हिन्दी : एक परिचय' में 'हिन्दी' के बाद स्थान छोड़कर उपविराम (अंग्रेज़ी में कोलोन) लगाते हैं और फिर एक अक्षर का स्थान छोड़ देते हैं। 'अंतःकरण' सही है और 'अंत :करण' या 'अंत: करण' ग़लत है। जिन शब्दों के बीच में विसर्ग आता है, उनमें विसर्ग के बाद बिना खाली स्थान छोड़े अगला वर्ण लिखना और छापना चाहिए। 'अंतः प्रेरणा', 'अधः शयन' आदि को 'अंतःप्रेरणा', 'अधःशयन' लिखना या छापना चाहिए।

चिर- यह पुराना, बहुत या देर तक का अर्थ देता है और चिरकाल, चिरनिद्रा, चिरयुवा, चिरपरिचित, चिरंजीवी या चिरजीवी जैसे शब्द बनाता है।

तत्- यह उसी या वही का अर्थ देता है। कहीं कहीं यह तन् या तद् में भी बदल जाता है। तत्काल, तत्कालीन, तत्पश्चात्, तद्रूप, तद्भव, तन्मय, तत्पर आदि इससे बने शब्द हैं।

पुनः- फिर के अर्थ का यह शब्द पुनर् या पुनश् में बदलता है। पुनर्विचार, पुनरावृत्ति, पुनरीक्षण, पुनरुत्थान, पुनरुद्धार, पुनर्जन्म, पुनर्जागरण, पुनर्रचना, पुनर्मुद्रण, पुनर्वास, पुनर्विवाह, पुनश्च जैसे शब्द इससे बनते हैं।

पूर्व- पहले या पीछे के अर्थ का यह शब्द पूर्वज, पूर्वजन्म, पूर्वानुमान, पूर्वाभ्यास जैसे शब्द बनाता है।

बहु- बहुज्ञ, बहुदर्शी, बहुभाषी, बहुपति, बहुमत, बहुमूल्य, बहुविवाह, बहुसंख्यक, बहुरूपिया, बहुपद, बहुभुज, बहुमंज़िला, बहुराष्ट्रीय, बहुउद्देशीय आदि इससे बनते हैं और बहुत या अधिक का अर्थ देते हैं।

सत्- सत्कर्म, सत्संग, सच्चरित्र, सज्जन, सद्भावना, सदाचार, सद्गति, सन्मार्ग, सन्निकट जैसे शब्दों को बनाने वाला यह शब्द 'अच्छा' अर्थ देता है। इसके रूप सन् और सद् आदि भी हैं।

सह- साथ के अर्थ वाले इस शब्द से सहकर्मी, सहजात, सहभागी, सहपाठी, सहयोग, सहमति, सहानुभूति, सहवास, सहोदर, सहचर आदि बनते हैं। स भी इसी अर्थ का शब्दखंड है, जो सक्रिय, सक्षम, सचेत, सजल, सजातीय, सजीव, सदेह, सपरिवार, सफल, सशस्त्र, सश्रम, सानंद जैसे शब्द बनाता है।

स्व- इससे अपना, स्वयं या अपने आप के अर्थ वाले स्वदेश, स्वभाव, स्वराज्य, स्वशासन, स्वरूप, स्वचालित, स्वतंत्र, स्वावलम्बन, स्वेच्छा, स्वाधीनता आदि बनाते हैं।

अर्ध (अर्द्ध)- यह आधा का अर्थ देता है और अर्धनिर्मित, अर्धवार्षिक, अर्धवृत्त, अर्द्धांगिनी जैसे शब्द बनाता है।

आविः- इससे आविष्कार, आविर्भाव जैसे शब्द बनते हैं और यह दिखाई पड़ने या बाहर होने का भाव रखता है।

तिरः (तिरस्)- दिखाई नहीं पड़ना, परे होना आदि के अर्थ वाले इस शब्दखंड से तिरस्कार, तिरोहित, तिरोभाव जैसे शब्द बनते हैं।

पुरा- पहले के अर्थ के इस शब्द से पुरातत्त्व, पुरापाषाण, पुरालेख आदि इतिहास से सम्बन्धित शब्द बनते हैं।

बहिः (बहिष्)- बाहर के अर्थ वाले बहिष्कार, बहिर्भाग, बहिर्जगत् जैसे शब्द इससे बनते हैं।

सर्व- सभी के अर्थ वाले सर्वनाश, सर्वदलीय, सर्वप्रथम, सर्वभक्षी, सर्वाहारी, सर्वमान्य, सर्वशक्तिमान्, सर्वसत्तावाद आदि इससे बनते हैं।

महा- अच्छा, बड़ा, महान् आदि का अर्थ रखने वाला यह शब्दखंड महात्मा, महाकवि, महादेश, महानगर, महाद्वीप, महापुरुष, महामहिम, महामंत्री, महारथी, महाराज, महाराष्ट्र, महावीर, महविद्यालय, महाडाकपाल, महाधिवक्ता आदि शब्द बनाता है। महामूर्ख, महामारी जैसे बुरे अर्थ वाले शब्द भी इससे बने हैं।

स्वयं- इससे स्वयंसेवक, स्वयंवर स्वयंसिद्ध जैसे शब्द बनते हैं, जो खुद या खुदपसन्द का अर्थ रखते हैं।

सूक्ष्म- बहुत छोटा का अर्थ रखने वाला यह शब्द सूक्ष्मजीव, सूक्ष्मदर्शी जैसे शब्द बनाता है।

हिमपात, हिमखंड, हिमवृष्टि, हस्तकला, हस्तक्षेप, हस्तगत, हस्तरेखा, स्वर्णकार, स्वर्णपदक, स्वर्णमुद्रा, सुखकर, सुखदायक, सारहीन, सारगर्भित, समाजवाद, समाजशास्त्र, समाजसेवा, समबाहु, समतल, समकोण, समरूप, श्रमजीवी, श्रमदान, शोधकर्ता, शोधग्रंथ, शुभकामना, शुभचिंतक, शीतयुद्ध, शीतनिद्रा, शिक्षाविद्, शिक्षापद्धति, वृत्तचित्र, वृत्तखंड, विश्वकोश, विश्वयुद्ध, विचारधारा, विचारपूर्ण, वायुदाब, वायुमंडल, वायुयान, वनवासी, वनमानुष, वंशवृक्ष, वंशज, लोकसभा, लोकतंत्र, लोकप्रिय, रूपांतर, रूपवती, राष्ट्रवाद, राष्ट्रगान, राजनीति, राजतंत्र, राजमाता, रणनीति, रणभूमि, रणपोत, रंगकर्म, रंगभूमि, योगदान, योगनिद्रा, मेघनाद, मेघनाथ, मानवनिर्मित, मानवशास्त्र, मनमुटाव, मनमौजी, मनपसंद, मनोबल, मनोकामना, मनश्चिकित्सा, मतदान, मतपेटी, भूतकाल, भूतपूर्व, भूकंप, भूविज्ञान, बुद्धिजीवी, बुद्धिमत्ता, परमहंस, परमाणु, पदभार, पदच्युत, न्यायपालिका, न्यायविद्, नामकरण , नामधारी, नवजात, नवयुवती, धर्मगुरु, धर्मपत्नी, द्विखंडित, द्विपद, द्विध्रुवीय, देशद्रोह, देशवासी, देवदूत, देवनागरी, दृष्टिकोण, दृष्टिहीन, दूरगामी, दूरदर्शी, दूरभाष, दीर्घकाल, दीर्घसूत्रता, दिलदार, दिलकश, दिलफेंक, दिनकर, दिनचर्या, दरबान, दरगाह, दरकार, त्रिशंकु, त्रिभुज, तापमान, तापक्रम, जीवकोष, जीवविद्या, जनतंत्र, जनवाद, जनसंहार, चौपाया, चौपहिया, चरित्रहीन, चरित्रवान, चतुष्कोण, चतुर्भुज, गृहत्याग, गृहकार्य, गुणधर्म, गुणगान, गतिविधि, गतिशील, गणतंत्र, गणराज्य, क्षेत्रमिति, क्षेत्रफल, कीटनाशक, कीटाणु, कुलपति, कुलवधू, कार्यक्रम, कार्यकाल, कार्यकारिणी, कामचोर, कामगार, कामधेनु, कामदेव, कर्मचारी, कर्मभूमि, एकाधिक, एकाग्र, आत्मघाती, आत्मज, अग्रज, अग्रलिखित, जलमग्न, जलज, राज्यपाल, राज्यसभा आदि में हिम, हस्त, स्वर्ण, सुख, सार, समाज, सम, श्रम, शोध, शुभ, शीत, शिक्षा, वृत्त, विश्व, विचार, वायु, वन, वंश, लोक, रूप, राष्ट्र, राज, रण, राज्य, योग, मेघ, मानव, मन, मनः (मनश्, मनो) , मत, भूत, भू, बुद्धि, परम, पद, न्याय, नाम, नव, दृष्टि, दूर, दीर्घ, दिल, दिन, दर, त्रि, ताप, जीव, जन, चौ, चरित्र, चतुः (चतुष् या चतुर्), गृह, गुण, गति, क्षेत्र, कीट, कुल, कार्य, कर्म, काम, एक, गण, आत्म, अग्र, जल जैसे शब्द उपसर्गों की तरह ही आए हैं।

## अध्याय– 48

### प्रत्यय

पूज्यनीय हिन्दी या संस्कृत में कोई शब्द नहीं है, लेकिन इसका प्रयोग अक्सर लोग कर देते हैं। या तो पूज्य कहा जा सकता है या फिर पूजनीय! पूज्यनीय में एक साथ समान अर्थ देने वाले दो प्रत्यय लगा दिया गए हैं, जो अनुचित है। ऐसा ही मान्यनीय के साथ है। मान्य या माननीय हो सकता है, मान्यनीय नहीं। पूजा से पूज्य, पाठ से पाठ्य, काट से काट्य, खाना से खाद्य, बजाना से वाद्य आदि बनते हैं। अनीय (संस्कृत में अनीयर्) एक प्रत्यय है और पठनीय, दर्शनीय, स्मरणीय, अनुकरणीय, स्थानीय जैसे शब्द बनाता है। यह ज़रूर ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्यय शब्द के अन्त में तो लगते ही हैं, वे शब्द में कुछ दूसरे बदलाव (जैसे पहले वर्ण में) भी कर सकते हैं। हिन्दी में 200 से अधिक प्रत्यय हैं। इनमें कुछ संस्कृत के, कुछ फ़ारसी के, कुछ अरबी के और कुछ अंग्रेज़ी के हैं। इनके अतिरिक्त सैकड़ों शब्द ऐसे हैं, जो किसी दूसरे शब्द के अन्त में लगकर नया शब्द बनाते हैं और अर्थ परिवर्तन करते हैं। अंग्रेज़ी में भी बहुत से प्रत्यय (सफ़िक्स - suffix) हैं, जैसे नेस (ness), लेस (less), इङ्ग (ing), एड (ed), फुल (ful), हूड (hood), इकल (ical) आदि।

हम यहाँ सबपर विस्तृत चर्चा नहीं करेंगे।

ता प्रत्यय लगाने से सुन्दर सुन्दरता में, सम समता में, निर्धन निर्धनता में बदल जाता है। सुन्दरता, समता और निर्धनता आदि के लिए सौन्दर्य, साम्य, नैर्धन्य जैसे शब्द भी हैं। ऐसे शब्दों की संख्या हिन्दी में काफी है। हमने पहले ही विस्तार से इक प्रत्यय पर चर्चा की है। अ या आ सम्बन्ध आ से; इ या ई का सम्बन्ध ए, ऐ और य् से; उ या ऊ का सम्बन्ध ओ, औ और व् से तथा ऋ का सम्बन्ध अर् और र् से ह। यह इतनी महत्त्वपूर्ण बात है कि संस्कृत सीखनी हो, तो यह आपकी मेहनत को बहुत कम कर सकती है और हिन्दी में हज़ारों शब्दों की संरचना, अर्थ और रूप को स्पष्ट कर सकती है। इस सूत्र को हम शब्दों के निर्माण में कैसे लागू करेंगे, इसके कुछ उदाहरण देखते हैं –

सुन्दर के पहले वर्ण में उकार है, इसे सौ (उ का सम्बन्ध औ से है) बनाकर सौन्दर शब्द बनाते हैं। अगले चरण में अन्तिम वर्ण को आधा कर उसमें य जोड़ते हैं। इस तरह सौन्दर्य शब्द बन जाता है। यह सुन्दरता का समानार्थी (समान अर्थ वाला) है।

विषम में इकार है, तो वि को वै (इ का सम्बन्ध ऐ से है) बनाते हैं, फिर अन्तिम वर्ण म को म् बनाकर य जोड़ते हैं और इस तरह वैषम्य शब्द बनता है।

धीर, सुजन, एक, अधिक, दरिद्र, उदार, विविध, भाषा आदि से क्रमशः धैर्य, सौजन्य, ऐक्य, आधिक्य, दारिद्र्य, औदार्य, वैविध्य, भाष्य आदि इसी तरह बनते हैं। पाश्चात्य, शौर्य, आर्य, मान्य, त्याज्य, पाठ्य, धार्य, आचार्य जैसे शब्दों में भी हम उपरोक्त सूत्र को लागू होते हुए देख सकते हैं।

संस्कृत की शरण में चलकर कुछ उदाहरण देखते हैं। लिख् से लेखक या लेखन, दृश् से दर्शक, कृ से कारक, स्मृ से स्मारक, वच् से वाचक या वाचिका, पठ् से पाठक या पाठिका आदि बनते हैं। दृश् से द्रष्टा, नी (ले जाने) से नेता, श्रु से श्रोता, हृ से हरण, चि से चयन, श्रु से श्रवण ,बुध् से बोध आदि में भी हम इस सूत्र को पा सकते हैं।

रघु से बने राघव, गुरु से बने गौरव, लघु से बने लाघव, पाण्डु से बने पाण्डव, यदु से बने यादव, मधु से बने माधव, मनु से बने मानव, कुरु से बने कौरव आदि में हम देखते हैं कि शुरू के वर्ण के साथ ही अन्तिम वर्ण में भी उपरोक्त सूत्र के अनुसार बदलाव हो रहा है। कुन्ती से बना कौन्तेय हो या बुद्ध से बना बौद्ध, पृथा से बना पार्थ हो या पुत्र से बना पौत्र, शिव से बना शैव हो या व्याकरण से बना वैयाकरण, इन्द्र से बना ऐन्द्र हो या विष्णु से बना वैष्णव; हम हर जगह सूत्र को काम करते हुए देखते हैं। वसुदेव, कश्यप, भरत, मगध, मथुरा, मिथिला, शिशु, भरद्वाज आदि से बने वासुदेव, काश्यप, भारत, मागध,

माथुर, मैथिल, शैशव, भारद्वाज आदि भी इस सूत्र के अनुसार बने हैं। इनमें संतान या 'से सम्बन्धित' का अर्थ मिलता है। भरत की संतान भारत या कुरु की संतान कौरव होगी। महाभारत में पाण्डव भी कौरव (कुरु वंश के कारण) ही हैं, लेकिन धृतराष्ट्र के पुत्रों के लिए कौरव शब्द स्थिर कर लिया गया है। सिंधु, पशु, वस्तु आदि से बने सैंधव, पाशविक, वास्तव, वास्तविक आदि भी उ से व बनने के नियम की पुष्टि करते हैं। पंडित, पुरुष आदि से बने पांडित्य, पौरुष आदि भी सूत्र के प्रयोग उदाहरण हैं।

तर, तम, आलु, इष्ठ, इमा, त्व, दा, था, आनी आदि प्रत्यय उच्चतर, निकटतम, महत्तम, लघुतम, दयालु, कृपालु, गरिष्ठ, कनिष्ठ, महिमा, गरिमा, लघुत्व, महत्त्व, यदा, सर्वदा, सर्वथा, तथा, रुद्राणी, इन्द्राणी, भवानी आदि बनाते हैं। लघुतम को लघुत्तम और महत्तम को महतम नहीं कहा जा सकता। महत् शब्द में त् होने से वह महत्तम, महत्ता और महत्त्व बनाता है; जबकि लघु बिना त के द्वित्व के लघुत्व, लघुतम, लघुता आदि बनाता है। महती में त का द्वित्व नहीं होता।

वान् या मान् को जोड़ने का नियम स्पष्ट है। शब्द के अन्त में इ, ई, उ, ऊ और ऋ की मात्रा रहने पर मान् लगता है और अ या आ रहने पर वान् लगता है। बुद्धि, श्री, अंशु, मातृ आदि से बुद्धिवान्, श्रीवान्, अंशुवान्, मातृवान् नहीं बना सकते। बुद्धिमान्, श्रीमान्, अंशुमान्, मातृमान्, शक्तिमान् आदि शब्दों का निर्माण उचित है। श्रद्धा, भग, बल, रूप, गुण, धन, दया, ज्ञान आदि के अन्त में अकार या आकार होने से इनमें वान् जोड़ेंगे, न कि मान्। रूपवती, पुत्रवती, गुणवत्ता, अर्थवत्ता आदि शब्दों में भी यह नियम लागू होता है। वान् का नियम वती, वत्ता आदि पर भी लागू होता है। मान् का नियम मत्ता, मती आदि के लिए भी सही है। श्रीमती, बुद्धिमत्ता, शक्तिमत्ता आदि इसके उदाहरण हैं। मान् या वान् का अर्थ 'वाला' है, जैसे धनवान् का अर्थ धन वाला या शक्तिमान् का अर्थ शक्ति वाला है। विद्यमान् संस्कृत की क्रिया से बना है और इस कारण वह अपवाद जैसा है। आयुष्मान् और आयुष्मती भी इसी तरह अपवाद जैसे हैं। प्रमाण या परिमाण को मान् से नहीं जोड़ सकते। इनमें मान है, मान् नहीं। लोकभाषा भोजपुरी में फूलमती जैसे नाम भी मिलते हैं। मधुमती नाम से दिलीप कुमार की फ़िल्म भी है। रमावती, कलावती, सत्यवती जैसे शब्द भी मिलते हैं।

आगार से मिलकर शस्त्र, कारा, कोश आदि शस्त्रागार, कारागार, कोशागार आदि बनाते हैं।

इत प्रत्यय लगाने पर शब्द के पहले वर्ण में कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि इक लगाने पर पहले वर्ण की मात्रा बदलती है। परिभाषा से पारिभाषिक और परिभाषित बनेंगे, लेकिन परिभाषिक और पारिभाषित नहीं बन सकते। इत संस्कृत के शब्दों में ही लगता हैं।

तव्य की मदद से कर्तव्य, गन्तव्य, वक्तव्य, द्रष्टव्य, ज्ञातव्य आदि बनेंगे। तव्य 'के योग्य' या 'चाहिए' का अर्थ देता है।

## अध्याय– 49

### शुद्ध अशुद्ध

'सदृश्य' शब्द का प्रयोग अक्सर लोग कर देते हैं, जबकि सही शब्द 'सदृश' है। 'सदृश्य' का प्रयोग अनुचित है, क्योंकि यह अर्थहीन है; लेकिन एक दूसरा शब्द 'सादृश्य' है, जिसका अर्थ समानता, बराबरी, तुल्यता या तुलना है। 'सदृश' का अर्थ समान या बराबर है।

महत्व शब्द अशुद्ध है, लेकिन इसपर ध्यान नहीं दिया जाता। महत् में त्व मिलने से महत्त्व बनता है, न कि महत्व। यहाँ त का द्वित्व नहीं रहे, तो शब्द अशुद्ध माना जाएगा। सौन्दर्य या सुन्दरता ही सही हैं, सौन्दर्यता या सौन्दर्यत्व नहीं। मौलिकता की तर्ज पर सौन्दर्यता जैसे शब्द बनाना ठीक नहीं है।

इस भाग में हम कुछ और प्रत्ययों पर विचार करेंगे। साथ ही प्रत्ययों के ग़लत प्रयोग के कुछ उदाहरणों पर भी बात करेंगे।

विद् का अर्थ जानना होता है। यह प्रत्यय की तरह कई शब्द बनाता है, जैसे शिक्षाविद्, विज्ञानविद्, पुरातत्त्वविद्, भौतिकीविद्, प्राच्यविद् आदि। यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द के अन्तिम वर्ण के आधा होने पर उसके बहुवचन में आधा वर्ण पूरे वर्ण में बदल जाएगा, जैसे शिक्षाविद् से शिक्षाविदों बनेगा और इसमें द् (हलयुक्त या आधा) नहीं होगा।

इज़्म, आइट, अर, इक जैसे कई प्रत्यय अंग्रेज़ी के हैं और नक्सलाइट, सोशलिज़्म, पेंटर, मेकेनिक आदि बनाते हैं।

इयत अरबी का प्रत्यय है और काबिलियत, इन्सानियत, हैवानियत आदि बनाता है। बीन फ़ारसी का प्रत्यय है और खुर्दबीन, दूरबीन, तमाशबीन जैसे शब्द बनाता है। गिरी से दादागिरी, चमचागिरी, नेतागिरी, गुंडागिरी जैसे शब्द बनते हैं। यह भी फ़ारसी का प्रत्यय है। आलु से शंकालु, दयालु, कृपालु आदि बनते हैं, तो आलू से झगड़ालू जैसे शब्द।

वाँ और वीं से पाँचवाँ, सातवाँ, नौवाँ, दसवीं, बारहवीं आदि बनते हैं। शः से शतशः, क्रमशः, कोटिशः आदि बनते हैं। तया से पूर्णतया, सामान्यतया, विशेषतया, साधारणतया आदि बनते हैं। तः से अंशतः, पूर्णतः, सामान्यतः, स्वतः, मूलतः आदि बनते हैं।

द (देने वाला), ज (उत्पन्न), ज्ञ (जानने वाला), घ्न (को मारने वाला) आदि से जलद, सुखद, दुखद, जलज, अंडज, अग्रज, सर्वज्ञ, नीतिज्ञ, शत्रुघ्न, कृतघ्न आदि बनते हैं। दा और जा क्रमशः द और ज के स्त्रीलिंग हैं और ज्ञानदा, शैलजा, गिरिजा, अग्रजा आदि बनाते हैं। यह दा सर्वदा, सदा, यदा, कदा आदि के दा (समय का बोध कराने वाला) से अलग है।

अध्यक्ष, अधीन, अतीत, आशय, अंतर, अर्थ, उन्मुख, ग्रस्त, चर, दायक, प्रिय, मय, धार, जीवी, जन्य, घात, कालीन, वीर, शाली, उत्तर आदि कुछ प्रत्यय की तरह प्रयुक्त शब्द या शब्दखंड हैं। इनसे सेनाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, पराधीन, विचाराधीन, कालातीत, आशातीत, जलाशय, महाशय, गर्भाशय, देशांतर, कालांतर, विषयांतर, परमार्थ, प्रकाशनार्थ, ह्रासोन्मुख, मरणोन्मुख, रोगग्रस्त, नभचर, जलचर, उभयचर, फलदायक, लाभदायक, लोकप्रिय, रहस्यमय, सूत्रधार, मँझधार, परजीवी, बुद्धिजीवी, शोकजन्य, पांचजन्य, आघात, प्रतिघात, संघात, अल्पकालीन, दीर्घकालीन, समकालीन, मौर्यकालीन, दानवीर, कर्मवीर, वैभवशाली, शक्तिशाली, लोकोत्तर, पूर्वोत्तर आदि बने हैं।

इतर से बने मानवेतर को मानवेत्तर नहीं समझना चाहिए। विवाहेतर, साहित्येतर आदि शब्द 'इतर' से बने हैं, जो 'से परे', 'भिन्न' या 'दूसरा' का अर्थ देता है। यहाँ उत्तर की तरह त का द्वित्व नहीं है।

अब हम कुछ शब्दों के अशुद्ध (लेकिन आम तौर पर प्रचलित) और उनके शुद्ध रूपों को (कोष्ठक में) यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं - आधीन (अधीन), एकत्रित (एकत्र), गोपित (गुप्त), त्रिवार्षिक (त्रैवार्षिक), धैर्यता (धैर्य, धीरता), अभ्यन्तरिक (आभ्यन्तरिक), तत्व (तत्त्व), द्विवार्षिक (द्वैवार्षिक), प्रफुल्लित (प्रफुल्ल),

प्रतिनिधिक (प्रातिनिधिक), बुद्धिमानता (बुद्धिमत्ता), लब्धप्रतिष्ठित (लब्धप्रतिष्ठ), वैमनस्यता (वैमनस्य), सम्पर्कित (सम्पृक्त), निरपराधी (निरपराध), पौरुषत्व (पौरुष), पैत्रिक (पैतृक), व्यवहारित (व्यवहृत), वास्तविक में (वास्तव में, वस्तुतः), षष्ठम (षष्ठ), अनाथिनी (अनाथा), कोमलांगिनी (कोमलांगी), सुलोचनी (सुलोचना), श्वेतांगिनी (श्वेतांगी), गोपिनी (गोपी), विहंगिनी (विहंगी), अज्ञानता (अज्ञान), बाहुल्यता (बाहुल्य, बहुलता), पांडित्यता (पांडित्य), निरोग्य (नीरोग), आवश्यकीय (आवश्यक), अक्षुण्य (अक्षुण्ण), निर्दोषी (निर्दोष), शहरीय (शहरी), गोप्यनीय या गोप्यपूर्ण (गोप्य, गोपनीय), निराशपूर्ण (निराशापूर्ण), स्वस्थ्य (स्वस्थ), निर्लोभी (निर्लोभ), सकुशलपूर्वक (कुशलतापूर्वक, सकुशल), सानन्दपूर्वक (सानन्द, आनन्दपूर्वक), कवित्री या कवियत्री (कवयित्री), प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी), भिखारिणी (भिखारिन), सिंहिनी (सिंहनी), अभिशापित (अभिशप्त), अभीष्टित (अभीष्ट), सलज्जित (सलज्ज, लज्जित), पड़ोसन (पड़ोसिन), पिशाचिनी (पिशाची), ग्रामीणवासी (ग्रामीण, ग्रामवासी), सुबोधपूर्ण (सुबोध), सुनयनी (सुनयना), भुजंगिनी (भुजंगी), सम्राटिनी या साम्राज्ञी (सम्राज्ञी), जापानीय (जापानी), अमेरिकीय (अमेरिकी), सार्वभौमिक (सार्वभौम), अमानुषी (अमानुष), अचम्भित (चकित), आकर्षित (आकृष्ट), अनुवादित (अनूदित), क्रोधित (क्रुद्ध), गठित (गठा हुआ), व्यापित (व्याप्त), विश्वासित या विश्वसित (विश्वस्त), आश्वासित (आश्वस्त), संयमित (संयत), हतोत्साहित (हतोत्साह), निरुत्साहित (निरुत्साह), निर्दयी (निर्दय), लाचारी हालत (लाचार हालत), शक्तिशील (शक्तिशाली)...

इनमें एकत्रित, आकर्षित, क्रोधित, संयमित, पिशाचिनी, त्रिवार्षिक, तत्व आदि ज़्यादा प्रचलित हैं। ये इतनी बार लिखे और पढ़े गए हैं कि हमें सहज और सही प्रतीत होते हैं। भविष्य में भी ये चलते ही रहेंगे, ऐसा लगता है। शब्दकोशों में ये सब मिल भी सकते हैं।

इक प्रत्यय के सम्बन्ध में यह देखने को मिलता है कि जब यह नीति, मिति आदि के साथ लगता है, तब इन्हें नैतिक, मैतिक आदि में न बदलकर नीतिक, मितिक आदि में बदलता है। कूटनीतिक, ज्यामितिक, मनोमितिक, रणनीतिक, राजनीतिक (इसके लिए राजनैतिक शब्द भी स्वीकृत है, कहीं कहीं राजनीतिक को शुद्ध और राजनैतिक को अशुद्ध माना गया है) आदि इसके लिए देखे जा सकते हैं।

प्रथम, पंचम, षष्ठम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम आदि में 'म्' नहीं होता। दश को दस ही लिखा जाता है। संस्कृत के शब्दों में दश लिखते हैं, जैसे दशम, एकादश, दशानन, दशमलव, दशांश आदि। दशहरा में श होता है, स नहीं।

## अध्याय– 50

शुरू में पोस्टें छोटी रहीं, लेकिन विषय के कारण और स्पष्ट करने के उद्देश्य से बाद में उनका आकार बढ़ने लगा। जिन्हें इस कारण परेशानी हुई, उनसे माफी चाहेंगे। हाथी बेचारा कितना भी दुबला हो, चूहा तो बन नहीं सकता। :-) कई लोगों ने हमें व्याकरण का कोई विद्वान् या लेखक ही मान लिया, जो सच नहीं है। हम इस मामले में मामूली और थोड़ी सी रुचि रखने वाले आदमी हैं।)

पक्षीगण, प्राणीमात्र, प्राणीवृन्द, मन्त्रीमंडल, योगीराज, विद्यार्थीगण, राजापथ, कालीदास आदि दो पदों (शब्दों) से मिलकर बने हैं। संस्कृत के नियम से ये अशुद्ध हैं। पहले पद का अन्त दीर्घ मात्राओं से हुआ है, तो उन्हें ह्रस्व में बदलना होगा, तब शब्द शुद्ध बनेगा। पक्षिगण, योगिराज, विद्यार्थिगण, महात्मगण, मनीषिगण, मन्त्रिवर, मन्त्रिमंडल, मन्त्रिपरिषद्, प्राणिशास्त्र, प्राणिमात्र, स्वामिभक्त, प्राणिवृन्द, राजपथ, पक्षिराज, कालिदास आदि सही हैं। वीणापाणि, श्रीराम, रसोईघर, सभाभवन, कन्यादान महाकाव्य, गौरीशंकर, चिड़ीमार, तुलसीकृत आदि में ऐसा नहीं होता।

इसी तरह शब्द के दूसरे पद के अन्त में भी आ, ई और ऊ को अ, इ और उ कर दिया जाता है, जैसे अहोरात्रि से अहोरात्र, महाराजा से महाराज, दिवारात्रि से दिवारात्र आदि बनते हैं। सहजीवी, गगनचुम्बी, नरभक्षी, सप्तशती, दुअन्नी, सतसई, बैलगाड़ी, देशवासी आदि में ऐसा नहीं होता।

माताहीन, भ्रातागण, नेतागण, पिताभक्ति, माताभूमि, माताभाषा, मातासत्ता आदि के सही रूप मातृहीन, भ्रातृगण, नेतृगण, पितृभक्ति, मातृभूमि, मातृभाषा, मातृसत्ता आदि हैं।

नाश्तालय, कांग्रेसाध्यक्ष, रेलाश्रय, ननतकनीकी जैसे शब्द नहीं बनाए जाते, क्योंकि इनके दोनों पद दो अलग भाषाओं के हैं। जिलाधीश, जिलाधिकारी, लाठीचार्ज जैसे कुछ शब्द अपवाद हैं।

पुस्तकालय को पुस्तक आलय, महाशय को महा आशय या पीताम्बर को पीत अम्बर नहीं कहा जाना चाहिए।

दो पदों से बने कुछ शब्दों के अशुद्ध और शुद्ध रूप (कोष्ठक में) निम्न हैं-

उन्नतशील (उन्नतिशील), दृढव्रती (दृढव्रत), निःस्वार्थी (निःस्वार्थ), राज्यनैतिक (राजनैतिक), राजपाल (राज्यपाल), राज्यधानी (राजधानी), शान्तमय (शान्तिमय), तीनगुना (तिगुना), दोगुनी (दुगनी), चारराहा (चौराहा), आमचूर (अमचूर), मूसलाधार (मूसलधार), हिन्दी अभाषी (अहिन्दीभाषी), सौभाग्यशील (सौभाग्यशाली), स्वतन्त्रप्रिय (स्वतन्त्रताप्रिय), सगुणी (सगुण), मनकामना (मनोकामना), सतोगुण (सत्त्वगुण), युधष्ठर (युधिष्ठिर), तीनभुज (त्रिभुज), चारपाया (चौपाया), सत्यनाश (सत्यानाश), विश्वमित्र (विश्वामित्र), जलसिंचित (जलसिक्त) ...

चारपाई का अर्थ खाट है, लेकिन चौपाई एक छन्द!

सिंचित शब्द अशुद्ध है। सही शब्द सिक्त है, जिसका अर्थ है सींचा हुआ। अकाट्य शब्द भी अशुद्ध है। अकाट्य की जगह अखण्डनीय का प्रयोग होना चाहिए। इन दोनों के शुद्ध रूपों के कारण के लिए संस्कृत का सहारा लेना पड़ेगा।

मरना, छोड़ना, सुनना, कहना, देखना, पढ़ना आदि हिन्दी की क्रियाएँ हैं। इनसे मरित, छोड़ित, सुनित, कहित, देखित, पढ़ित जैसे शब्द नहीं बना सकते। इनके लिए मृत, त्यक्त, श्रुत, कथित, दृष्ट, पठित जैसे शब्द आते हैं। इसी तरह सींचना से सींचित या सिंचित नहीं बना सकते। संस्कृत के शब्दों में ही इत या य प्रत्यय लगाते हैं, हिन्दी में नहीं।

कई बार दो शब्द साथ चलते हैं, जैसे- एड़ी-चोटी, आगे-पीछे, घर-द्वार, कपड़ा-लत्ता, मेल-मिलाप, मार-पीट, जीव-जन्तु, भला-बुरा, भात-दाल, धन-दौलत, आस-पास, भाई-बहन, लेन-देन, हाथी-घोड़ा, भीड़-भाड़, लूला-लंगड़ा, काम-धाम, काम-काज, बाल-बच्चे, ठीक-ठाक, आमने-सामने, दौड़-धूप, टेढ़ा-मेढ़ा, यश-अपयश, मान-सम्मान, जीवन-मरण, थोड़ा-बहुत, लोटा-डोरी, माँ-बाप, गाय-बैल, बात-चीत, मोटा-

ताजा, कंकड़-पत्थर, चढ़ाव-उतार, नाम-धाम, हाथ-पैर, कागज-कलम, रुपया-पैसा, घास-फूस, कूड़ा-कचरा, भूत-प्रेत, भला-चंगा, भूल-चूक, भूल-भुलैया, ऊँच-नीच, पालन-पोषण, चमक-दमक, खट्टा-मीठा, दिन-रात, माता-पिता, अन्न-जल, भूख-प्यास, ऋषि-मुनि, वाद-विवाद, इधर-उधर, जहाँ-तहाँ, जब-तब, कभी-कभार, देशी-विदेशी, जैसे-तैसे, यहाँ-वहाँ, दाल-रोटी, थका-माँदा, आठ-दस, स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन, देर-सबेर, सड़ा-गला, समझ-बूझ, नौकर-चाकर, दीन-दुखी, हाट-बाजार, नपा-तुला, मान-मर्यादा, हिसाब-किताब, मिलना-जुलना, जी-जान, जीत-हार आदि।

कई बार शब्दों का दुहराव होता है, जैसे घर-घर, बूँद-बूँद, बड़े-बड़े, जाते-जाते, धीरे-धीरे, वाह-वाह, टन-टन, गड़-गड़ आदि।

अंट-शंट, टीम-टाम, अंड-बंड, अनाप-शनाप, आँय-बाँय जैसे निरर्थक प्रयोग भी मिलते हैं।

## अध्याय - 51

### संस्कृत के बिना हिन्दी

संस्कृत के बिना हिन्दी या अन्य आर्यभाषाओं (पंजाबी, गुजराती, मराठी, बांग्ला आदि) का उद्भव नहीं हो सकता था। इस भाग में हम संस्कृत की कुछ बातों पर चर्चा करेंगे। वर्णों के मेल यानी संधि पर भी विचार करेंगे।

संस्कृत में 14 माहेश्वर सूत्र हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि ये हिन्दुओं के देवता शंकर (महेश) द्वारा बताए गए हैं। यह विशुद्ध रूप से काल्पनिक बात है। इन 14 सूत्रों को इसी क्रम में लिखा और याद किया जाता है, क्योंकि क्रम बदलने से ये अपना गुण और लक्ष्य दोनों खो देंगे। इनमें से शुरू के छह सूत्रों को याद करना हज़ारों शब्दों को समझने में, हिन्दी, संस्कृत आदि को सीखने में काम आ सकता है। ये छह सूत्र इस प्रकार हैं - 1) अइउण् 2) ऋलृक् 3) एओङ् 4) ऐऔच् 5) हयवरट् और 6) लण्

इनसे हम प्रत्याहार बनाते हैं। प्रत्याहार कुछ निश्चित वर्णों को पहले और अन्तिम वर्ण के सहारे बताने को ही कहते हैं। अंग्रेज़ी में 'ए टू जेड', जिसे 'A-Z' लिख सकते हैं या हिन्दी में '6 से 10 तक', जिसे '6-10' लिख सकते हैं कुछ-कुछ प्रत्याहार की तरह ही है। अंग्रेज़ी के शॉर्ट फॉर्म की तुलना हम प्रत्याहार से कर सकते हैं। अब हम कुछ प्रत्याहारों को देखते और समझते हैं। 'अक्' प्रत्याहार अ, इ, उ, ऋ और लृ के समूह से बनेगा। 'अक्' का मतलब है अ से क् तक के सारे वर्ण। प्रत्याहार में किसी भी सूत्र के अन्तिम अक्षर को नहीं लेते। 'इक्' प्रत्याहार में इ से शुरू करेंगे, लेकिन ण् और क् को छोड़ देंगे। इस प्रकार हमें इ, उ, ऋ और लृ; ये चार वर्ण मिलेंगे। हिन्दी में लृ का प्रयोग नहीं होता, इसलिए इसे हम अलग कर देते हैं। 'यण्' प्रत्याहार में य, र, ल और व होंगे, तो 'एच्' में ए, ओ, ऐ और औ।

सजातीय वर्ण एक ही उच्चारण स्थान से उच्चारित होते हैं। अ और आ सजातीय वर्ण हैं। इ-ई तथा उ-ऊ तथा ऋ-ॠ सजातीय वर्णयुग्म हैं। ऋ के दीर्घ रूप को ॠ लिखते हैं। यह संस्कृत में कुछ शब्दों में है, लेकिन हिन्दी में इसका प्रयोग नहीं होता। प्रत्याहार में अ, इ, उ, ऋ आदि का मतलब इनके दोनों ही रूपों (ह्रस्व और दीर्घ) से होता है।

दो स्वर वर्णों के मिलने पर क्या होगा? पुस्तक और आलय के मिलने से पुस्तकालय कैसे बन जाता है? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए हमें स्वर सन्धि और उसके पाँच सूत्रों को समझना होगा। स्वर सन्धि दो स्वरों के मिलने से हुए बदलाव या विकार को कहते हैं। इसके पाँच सूत्र इस प्रकार हैं-

1) अकः सवर्णे दीर्घः- अक् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ और लृ) के किसी भी वर्ण से सजातीय वर्ण मिले, तो उसका दीर्घ होता है। अ या आ के अ या आ (किसी एक से) के मिलने पर आ होता है। इसी तरह किसी इ (ह्रस्व या दीर्घ) के किसी इ से मिलने पर ई तथा किसी उ (ह्रस्व या दीर्घ) के किसी उ से मिलने पर ऊ होता है। रवीश, कवीन्द्र, रवीन्द्र, योगीन्द्र आदि शब्द इसके उदाहरण हैं। इनमें रवीश और रवीन्द्र प्रायः अशुद्ध लिख दिए जाते हैं। इनमें वी की जगह वि लिखना ग़लत है। परि और ईक्षा मिलकर परीक्षा बनाते हैं। विश्वामित्र को इस सन्धि से नहीं बना सकते।

2) इको यणचि- इक् (इ, उ, ऋ) के बाद यदि भिन्न अक्षर आए, तो यण् (य्, व्, र्) होता है। उदाहरण- अति और अन्त मिलकर अत्यन्त बनाते हैं। यहाँ ति का इ अ से मिलकर य् (य नहीं) में बदलता है और ति को त्य बनाता है। अन्त का न्त ज्यों का त्यों रहता है। इस तरह अत्यन्त बनता है। यहाँ इ के बाद अ आया है, जो इ से भिन्न है। इति + आदि = इत्यादि, अति + अधिक = अत्यधिक, उपरि + उक्त = उपर्युक्त आदि इसके उदाहरण हैं। अत्याधिक लिखना या बोलना ग़लत है। उपयुक्त और उपर्युक्त दो भिन्न शब्द हैं। उपयुक्त का अर्थ 'उपयोगी' है, लेकिन उपर्युक्त का अर्थ 'ऊपर या पहले कहा गया' है।

अनु + एषण = अन्वेषण, प्रति + एक = प्रत्येक, सु + आगत = स्वागत, पितृ + आदेश = पित्रादेश, मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश आदि इसके कुछ और उदाहरण हैं।

रि और उ मिलकर र्यु, तृ और उ मिलकर त्रु, सु और आ मिलकर स्वा, नु और ए मिलकर न्वे, ति और अ मिलकर त्य आदि बनते हैं। दूसरे शब्द के पहले स्वर की मात्रा ही नये शब्द में रहती है। अति में आवश्यक जुड़े, तो ति और आ मिलकर त्या बनाएँगे। इससे अत्यावश्यक बनेगा। अति और उत्तम के ति और उ मिलकर त्यु बनाते हैं और नया शब्द अत्युत्तम बनता है। अत्याचार, ध्वन्यात्मक, प्रत्युत्तर, प्रत्यक्ष, यद्यपि, व्युत्पत्ति, व्याकुल, व्याख्या, व्यर्थ आदि में यही सूत्र काम करता है।

3) एङ् गुणः- अ या आ के बाद कोई दूसरा स्वर (ए, ऐ, ओ और औ को छोड़कर) आए तो इ-ई का ए, उ-ऊ का ओ तथा ऋ का अर् होता है। एङ् प्रत्याहार ए और ओ को बताता है। इस तरह की सन्धि को गुण सन्धि कहते हैं। रमा और ईश के मिलने से रमेश बनेगा। मा के आ और ईश के ई मिलकर ए बनाते हैं और इस तरह मा तथा ई 'मे' में बदल जाते हैं। देव + उत्थान = देवोत्थान, देव + इन्द्र = देवेन्द्र, सूर्य + उदय = सूर्योदय, पर + उपकार = परोपकार, महा + ऋषि = महर्षि, देव + ऋषि = देवर्षि, धर्म + उपदेश = धर्मोपदेश, सप्त + ऋषि = सप्तर्षि, पर + इच्छा = परेच्छा, स्व + इच्छा = स्वेच्छा, एक + ईश्वर = एकेश्वर, झण्डा + उत्तोलन = झण्डोत्तोलन, पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम, दीप + उत्सव = दीपोत्सव, महा + उत्सव = महोत्सव, सन्तान + उत्पत्ति = सन्तानोत्पत्ति, पूर्व + उत्तर = पूर्वोत्तर, विवाह + इतर = विवाहेतर, बाल + इन्दु = बालेन्दु, जल + ऊर्मि = जलोर्मि, लोक + उक्ति = लोकोक्ति, सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम आदि इसके उदाहरण हैं।

इसके अपवाद स्व + ईर = स्वैर, अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी, प्र + ऊढ = प्रौढ, सुख + ऋत = सुखार्त, दश + ऋण = दशार्ण आदि हैं।

4) वृद्धिः एचि- अ या आ के बाद एच् (ए, ओ, ऐ और औ) रहने पर वृद्धि (ऐ और औ में बदल जाना) होती है। ए का दूसरा बड़ा रूप ऐ और ओ का दूसरा बड़ा रूप औ है। इस सन्धि को वृद्धि सन्धि कहते हैं। तथा और एव मिलकर तथैव बनाते हैं। एक और एक मिलकर एकैक बनाते हैं। इसमें क का अ एक के ए से मिलकर कै बनाता है। सदा + एव = सदैव, मत + ऐक्य = मतैक्य, परम + औषधि = परमौषधि, जल + ओघ = जलौघ आदि इसके उदाहरण हैं।

अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ इसका अपवाद है। वैसे यह अधरौष्ठ भी हो सकता है।

5) एचो अय् अव् आय् आवः (अयवायावः)- इसे याद करना थोड़ा कठिन है। हमने पहले बताया है कि इ का सम्बन्ध ए और य से तथा उ का सम्बन्ध ओ और व से है। अगर यह बात ध्यान रहे, तो गुण सन्धि को भी बिना श्रम के याद रखा जा सकता है। यहाँ भी हम इसी सूत्र की सहायता लेंगे। एच् (ए, ओ, ऐ और औ) के बाद भिन्न स्वर* रहने पर क्रमशः अय्, अव्, आय् या आव् हो जाता है। हम इसे अपने पुराने सूत्र से समझते हैं। ए का सम्बन्ध य से है और ए ऐ का छोटा रूप है, इसलिए अय् हो जाएगा। छोटे रूपों (ए और ओ) के लिए शुरू में अ जोड़ लेंगे और बड़े रूपों (ऐ और औ) के लिए आ। यहाँ इतना ही ध्यान रहे कि य और व की जगह य् और व् लिखें। ने + अन = नयन, चे + अन = चयन, गै + अक = गायक, पो + इत्र = पवित्र, पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक, नौ + इक = नाविक, भौ + उक = भावुक, विनै + अक = विनायक, नै + अक = नायक, रौ + अण = रावण आदि इसके उदाहरण हैं। पौ के औ के बाद अक का अ (भिन्न स्वर) है, तो पौ पाव् में बदला और पावक बना।

गायन, शयन, पावन आदि भी इसके उदाहरण हैं।

*संस्कृत में 'भिन्न स्वर' की जगह 'किसी भी स्वर के रहने पर' होता है। हरि + ए = हरये, मुने + ए = मुनये इसके उदाहरण हैं, जिनमें ए के बाद ए ही आता है।

नोट

मैं आपकी इस बात से सहमत नहीं हूँ कि अयादि संधि के लिए बाद वाला वर्ण भिन्न स्वर होना चाहिए | ........... अगर ऐसा होगा तब तो "ए + ए", "ऐ + ऐ", "ओ + ओ" और "औ + औ" के लिए संधि

संभव ही नहीं हो पाएगा; जबकि किसी भी दो स्वर के बीच संधि होनी चाहिए (जहाँ संधि होने पर कोई परिवर्तन न हो, वे सब भी प्रकृतिभाव जैसे रूप में परिभाषित हैं) | ........... संस्कृत में पूर्वरूप, प्रकृतिभाव आदि जो अतिरिक्त स्वर संधियाँ हैं, उनसे ये सब संधियाँ ("ए + ए", "ऐ + ऐ", "ओ + ओ" और "औ + औ") नहीं हो पाएँगीं | ..................................... दीर्घ संधि केवल अक् के योग में होता है, क्योंकि केवल अ, इ, उ, ऋ और लृ के ही दीर्घ होते हैं, इनके अतिरिक्त और कोई ह्रस्व वर्ण नहीं है |

## अध्याय - 52

### वर्णों के उच्चारण

वर्णों के उच्चारण स्थान पर हम शुरू में ही चर्चा कर चुके हैं। यहाँ संस्कृत के आसान से कुछ सूत्रों पर बात करते हैं, जिन्हें याद करने से उच्चारण स्थानों को याद रखना आसान होगा। सूत्रों में कु, चु, टु, तु और पु से पूरे वर्ग का बोध होगा, जैसे कु से कवर्ग, चु से चवर्ग। एक स्वर से दूसरे सजातीय स्वर का भी बोध होता है।

1) अकुहविसर्जनीयानाम् कण्ठः - अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह का उच्चारण कण्ठ से होता है।

2) इचुयशानाम् तालुः - इ, ई, चवर्ग, य और श तालु से उच्चारित होते हैं।

3) ऋटुरषाणाम् मूर्धा - ऋ, टवर्ग, र और ष मूर्धा से उच्चारित होते हैं।

4) लृतुलसानाम् दन्ताः - लृ, तवर्ग, ल और स दन्त्य वर्ण हैं।

5) उपूप्ध्मानीयानाम् ओष्ठौ - उ, ऊ और पवर्ग होंठ की मदद से बोले जाते हैं।

6) ञमङ्णनानाम् नासिका - पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न और म) और चंद्रबिन्दु का उच्चारण नाक की मदद से होते हैं।

7) एदैतोः कण्ठतालू - ए और कण्ठ तथा तालु से उच्चारित होते हैं।

8) ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - ओ और और कण्ठ तथा होंठ से उच्चारित होते हैं।

9) वकारस्य दन्तौष्ठम् - व का उच्चारण दाँत और होंठ से होता है।

इन सूत्रों के कारण हम यह समझ पाते हैं कि समान उच्चारण स्थान वाले वर्ण कौन कौन से हैं! सन्धि को समझने में इस जानकारी का लाभ मिलता है। यहाँ हमारा मकसद सन्धि पर चर्चा करना ही था।

जब व्यंजन वर्ण का मेल स्वर या व्यंजन से होता है, तो सन्धि व्यंजन सन्धि कही जाती है।

व्यंजन सन्धि के भी कई सूत्र हैं। हम उनमें से कुछ की ही चर्चा करेंगे।

जब वर्गों के पहले अक्षर (क, च, ट, त या प) का मेल किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग, ज, ड, द और ब) चौथे (घ, झ, ढ, ध और भ) वर्ण, य, र, ल, व या किसी स्वर से होता है, तब पहला अक्षर अपने वर्ग के तीसरे अक्षर में बदल जाता है। सत् और गति में सत् का त द् में बदल जाता है, क्योंकि त् अपने वर्ग का पहला अक्षर है और गति का ग अपने वर्ग का तीसरा अक्षर है। जगत् + गुरु = जगद्गुरु, तत् + रूप = तद्रूप, षट् + दर्शन = षड्दर्शन, दिक् + गज = दिग्गज, जगत् + ईश = जगदीश, जगत् + आनन्द = जगदानन्द, दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम, भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति, षट् + यंत्र = षड्यंत्र आदि इसके उदाहरण हैं।

किसी वर्ग का प्रथम वर्ण (क, च, ट, त या प) किसी वर्ग के पंचम वर्ण से मिलकर पहले वाले वर्ण के पंचम में बदल जाता है। जगत् + नाथ = जगन्नाथ, तत् + मय = तन्मय, उत् + नति = उन्नति, प्राक् + मुख = प्राङ्मुख, षट् + मुख = षण्मुख, मृत् + मय = मृण्मय, सत् + मति = सन्मति, यज् + न = यज्ञ आदि में पहले पद का अन्तिम वर्ण प्रथम वर्ण है और दूसरे पद का प्रथम वर्ण पंचमाक्षर। इसलिए क् ङ् में, त् न् में तथा ट् ण् में बदल गया है।

सन्मान, सन्मुख जैसे शब्द अशुद्ध हैं। सही रूप सम्मान और सम्मुख हैं। सन्यास शब्द भी वास्तव में अशुद्ध है। संन्यास सही शब्द है। हिन्दी में सन्यास का प्रचलन है।

स्वर के बाद छ आने पर च्छ हो जाता है, जैसे अनु और छेद मिलकर अनुच्छेद बनाते हैं। यहाँ अनु का उ स्वर है। वि + छेद = विच्छेद, आ + छादन = आच्छादन, छत्र + छाया = छत्रच्छाया, परि + छेद = परिच्छेद, राज + छत्र = राजच्छत्र, स्व + छन्द = स्वच्छन्द, एक + छत्र = एकच्छत्र, प्र + छन्न = प्रच्छन्न, प्रति + छाया = प्रतिच्छाया आदि इसके उदाहरण हैं। देवीछाया, लक्ष्मीछाया जैसे शब्द भी हो सकते हैं।

त् या द् के स्थान पर

1) च् होता है यदि आगे च् या छ् हो (जैसे सत् + छत्र = सच्छत्र, शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र, सत् + चरित्र = सच्चरित्र आदि)

2) ज् होता है यदि आगे ज् या झ् हो (जैसे सत् + जन = सज्जन, उत् + ज्वल = उज्ज्वल आदि)

3) ट् होता है यदि आगे ट् या ठ हो (जैसे तत् + टीका = तट्टीका)

4) ड् होता है, यदि आगे ड् या ढ् हो (जैसे उत् + डयन = उड्डयन)

5) च् होता है, यदि आगे श् हो और साथ ही श् छ् में बदल जाता ह (जैसे उत् + श्वास = उच्छवास, उत् + शृंखल = उच्छृंखल, उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट, सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र आदि)

और 6) ल् होता है, यदि आगे ल् हो। (जैसे तत् + लीन = तल्लीन, उत् + लेख = उल्लेख, उत् + लास = उल्लास आदि)

यदि ष् के बाद तवर्ग हो, तो तवर्ग टवर्ग में बदल जाता है, जैसे पृष् + थ = पृष्ठ, आकृष् + त = आकृष्ट, षष् + थ = षष्ठ, कृष् + न = कृष्ण आदि। इनमें त ट में, थ ठ में तथा न ण में बदल गया है। यहाँ यह देखा जा सकता है कि वर्ण अपने संगत वर्ण (नये वर्ग के) में ही बदलते हैं, जैसे थ् तवर्ग का दूसरा वर्ण है, तो यह टवर्ग के दूसरे वर्ण ठ में बदलता है। इसी तरह न तवर्ग का अन्तिम वर्ण है, तो यह टवर्ग के अन्तिम वर्ण ण में ही बदलता है।

अगर हम ध्यान से देखें, तो बार बार यह पाएँगे कि वर्णों में अपने उच्चारण स्थान से ही उच्चारित होने वाले वर्णों के साथ रहने की प्रवृत्ति दिख सकती है। ष् के बाद त् हो, तो उसके ट् में बदलने का ही उदाहरण लेते हैं। ष् मूर्धन्य वर्ण है, तो यह त् को ट् में बदल रहा है, क्योंकि ट् भी मूर्धन्य वर्ण है।

अहन् के बाद कोई वर्ण जुड़े तो, न् र् में बदल जाता है, जैसे अहन् + मुख = अहर्मुख, अहन् + गुण = अहर्गुण, अहन् + निश = अहर्निश आदि; लेकिन रात्रि, रूप जैसे शब्द मिलने पर अहन् अहो बन जाता है, जैसे अहन् + रूप = अहोरूप, अहन् + रात्र = अहोरात्र आदि।

नोट

उत्+ ज्वल = उज्ज्वल | यह उस नियम का उदाहरण नहीं समझा जा सकता, जिसके अंतर्गत यह रखा गया है | अगर यह उस नियम के अंतर्गत होता तो उत्+ ज्वल = उद्ज्वल होता |

अगर देवीछाया, लक्ष्मीछाया जैसे शब्द भी हो सकते हैं, तो क्या ये कथित नियम के अपवाद हैं, या स्वर के बाद छ आने पर च्छ हो जाना वैकल्पिक है? अगर देवीच्छाया, लक्ष्मीच्छाया लिखा जाए, तो इन्हें अशुद्ध माना जाएगा या शुद्ध ?

उत् + शिष = उच्छिष्ट में टाइपिंग त्रुटि है, आप कहना चाहते हैं : उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट |

## अध्याय - 53

### सन्धि

यह भाग सन्धि का आखिरी भाग है।

हमने 6 माहेश्वर सूत्रों को देखा है। बाकी के 8 सूत्र इस प्रकार हैं- 7) ञमङणनम् 8) झभञ् 9) घढधष् 10) जबगडदश् 11) खफछठथचटतव् 12) कपय् 13) शषसर् 14) हल्।

इन सूत्रों से खर्, अच् और हश् (हयवरट् के ह् से शुरू कर जबगडदश् के श् तक) प्रत्याहार बनाकर हम सन्धि के तीसरे प्रकार विसर्ग सन्धि को समझेंगे।

विसर्ग सन्धि में विसर्ग का मेल स्वर या व्यंजन से होता है।

विसर्ग सन्धि में सन्धि के परिणामस्वरूप विसर्ग की जगह श्, ष्, स्, र्, ओ आदि वर्ण आते हैं।

खर् प्रत्याहार का वर्ण यदि विसर्ग के बाद आए, तो वह स् (संगत उच्चारण स्थान के अनुसार श्, ष् या स् में से एक) हो जाता है। इसके तीन भाग हैं-

विसर्ग के बाद

1) यदि श् या चवर्ग (मुख्य रूप से च या छ) का कोई वर्ण आए, तो विसर्ग श् में बदल जाता है। निः + चय = निश्चय, निः + छल = निश्छल, निः + शेष = निश्शेष, दुः + शासन = दुश्शासन आदि इसके उदाहरण हैं।

2) ष् या टवर्ग (मुख्य रूप से ट या ठ) का कोई वर्ण आए, तो विसर्ग ष् में बदल जाता है, जैसे धनुः और टंकार मिलकर धनुष्टंकार बनाते हैं।

3) स् या तवर्ग (मुख्य रूप से त या थ) आए, तो विसर्ग स् में बदल जाता है।

निः + तार = निस्तार, निः + तेज = निस्तेज आदि इसके उदाहरण हैं।

विसर्ग के बाद श, ष या स में जो भी आता है, वह सन्धि के बाद ज्यों का त्यों भी रह सकता है और विसर्ग का विसर्ग भी हो सकता है। दुश्शासन, निश्शुल्क, निस्संकोच, निश्शब्द, निश्शक्त, निस्संदेह आदि भी सही हैं और दुःशासन, निःशुल्क, निःसंकोच, निःशब्द, निःशक्त, निःसंदेह आदि भी।

विसर्ग के पहले अ या आ हो, तो आगे क, ख, प या फ आने पर विसर्ग स् में बदल सकता है।

नमः + कार = नमस्कार, भाः + कर = भास्कर, पुरः + कार = पुरस्कार, मनः + कामना = मनस्कामना आदि इसके उदाहरण हैं। इसके उलट नियम यह है कि विसर्ग का विसर्ग ही रह जाता है, जैसे अन्तः + करण = अन्तःकरण, रजः + कण = रजःकण आदि। प्रातःकाल, अन्तःपुर आदि भी ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं। न तो नमःकार सही है, न रजस्कण। वैयाकरण बाद वाले को नियम और पहले को अपवाद मानते हैं।

विसर्ग के पहले इकार या उकार हो, तो आगे क, ख, प या फ आने पर विसर्ग ष् में बदलता है, जैसे निः + कपट = निष्कपट, निः + फल = निष्फल, दुः+ कर्म = दुष्कर्म, निः + काम = निष्काम, परिः + कार = परिष्कार आदि।

विशेष नियम यह है कि दुः के बाद ख आने पर ष् नहीं होता। दुःख सही है, दुष्ख नहीं। दो महाप्राणों का योग वैसे भी नहीं होता।

विसर्ग के पहले अ हो और आगे वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण, य, र, ल, व या ह में से कोई एक हो, तो विसर्ग ओ में बदल जाता है। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि अकार युक्त विसर्ग के बाद हश् प्रत्याहार का वर्ण होने पर विसर्ग का ओकार हो जाता है। अधः + गति = अधोगति, यशः + दा = यशोदा, मनः + योग = मनोयोग, तेजः+ राशि = तेजोराशि, तेजः + मय = तेजोमय, वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध, मनः + हर = मनोहर आदि इसके उदाहरण हैं।

मनोकामना शब्द इस नियम के अनुसार ग़लत है। वनोवास शब्द अशुद्ध माना जाता है।

कई बार यदि विसर्ग के पहले अ हो और बाद में भी अ हो तो विसर्ग ओ में बदल जाता है तथा बाद का अ लुप्त हो जाता है। इसी नियम से मनः और अनुकूल मिलकर मनोनुकूल बनाते हैं। मनः और अनुसार मिलकर मनोनुसार बनाते हैं।

यदि विसर्ग के पहले अ या आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और आगे अच् (कोई स्वर) या हश् प्रत्याहार (वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण, य, र, ल, व और ह) का कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का र् होता है, जैसे निः + आशा = निराशा, दुः + उपयोग = दुरुपयोग, निः + दोष = निर्दोष आदि।

अ के बाद विसर्ग हो और बाद में कोई स्वर हो, तो विसर्ग का र् होता है। पुनः + उक्ति = पुनरुक्ति, पुनः+ उत्थान = पुनरुत्थान, पुनः + ईक्षण पुनरीक्षण आदि इसके उदाहरण हैं।

यदि इकार या उकार के बाद विसर्ग हो और आगे र हो, तो इकार और उकार का दीर्घ हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है। निः + रोग = नीरोग, निः + रज = नीरज, निः + रस = नीरस, निः + रव = नीरव, दुः + राज = दूराज आदि इसके उदाहरण हैं।

निः, दुः आदि को निर्, दुर् भी लिखा जा सकता है।

अकार के बाद विसर्ग हो और उसके बाद अ को छोड़कर दूसरा स्वर हो, तो कई बार विसर्ग का लोप हो जाता है और सन्धि नहीं होती, जैसे अतः + एव = अतएव।

हिन्दी में सन्धि के नियम पूरी तरह संस्कृत पर आधारित हैं। हिन्दी की अपनी सन्धि कुछ अलग प्रवृत्ति रखती है। कुछ प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं-

1)तब + ही = तभी, अब + ही = अभी, सब + ही = सभी

2) मुझ + ही = मुझी, उस + ही = उसी, यहाँ + ही = यहीं, कहाँ + ही = कहीं, वहाँ + ही = वहीं

3) डाकू + ओं = डाकुओं, बहू + एँ = बहुएँ

4) नदी + आँ = नदियाँ, रोटी + आँ = रोटियाँ

5) तुम + ही = तुम्हीं, उन + ही = उन्हीं

6) दीन + नाथ = दीनानाथ, सत्य + नाश =सत्यानाश

विसर्ग सन्धि के नियम कुछ कठिन लग सकते हैं। यहाँ कुछ शब्दों के प्रचलित रूप और कोष्ठक में उनके संगत शुद्ध रूप प्रस्तुत हैं-

अधस्पतन या अधोपतन (अधःपतन), पुनरोत्थान (पुनरुत्थान), पुरष्कार (पुरस्कार), मनःयोग (मनोयोग), यशगान (यशोगान), स्वतस्सिद्ध (स्वतःसिद्ध), दुशासन (दुश्शासन, दुःशासन), अन्तर्रात्मा (अन्तरात्मा), दुरावस्था (दुरवस्था), नभमंडल (नभोमंडल), दुसाध्य (दुस्साध्य) सद्यजात (सद्यःजात या सद्योजात) आदि।

"खर् प्रत्याहार का वर्ण यदि विसर्ग के बाद आए, तो वह स् हो जाता है।" कृपया इस कथन को शुद्ध करके लिखिए |

## अध्याय - 54

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

'सोच' शब्द पुलिंग शब्द है, लेकिन इसे दशकों से किताबों, फ़िल्मों, अखबारों आदि में स्त्रीलिंग बनाकर रखा गया है। राहुल सांकृत्यायन की किताब में हमें इसका प्रयोग पुलिंग के रूप में ही दिखा। इस भाग से हम लिंग पर चर्चा शुरू कर रहे हैं। संस्कृत, मराठी, गुजराती आदि में तीन लिंग हैं। अंग्रेज़ी में चार लिंग हैं। हिन्दी में पुलिंग और स्त्रीलिंग, दो ही लिंग हैं। लिंग हिन्दी के सबसे कठिन माने जाने वाले विषयों में एक है। यह भी कह सकते हैं कि इक्के दुक्के उदाहरणों को छोड़ हिन्दी का कोई वाक्य इसके ज्ञान के बिना शुद्ध नहीं बन सकता! अंग्रेज़ी में सबसे बड़ा बोझ अगर हर शब्द के हिज्जे (स्पेलिंग) रटना है, तो हिन्दी में शब्द के लिंग को याद रखना। जिन सजीवों में नर और मादा दोनों जातियाँ हैं, उनके लिए लिंग निर्णय आसान है। मुश्किल तब होती है, जब शब्द से नर या मादा का भाव स्पष्ट नहीं होता, जैसे मक्खी, मछली आदि। अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग ज्ञान जानकारों के लिए भी चुनौती है। वास्तव में ऐसा कोई नियम नहीं बताया जा सकता, जिसके आधार पर हम शब्दों का लिंग पता लगा लें। जितने नियम या सूत्र विद्वानों, वैयाकरणों या भाषाविदों ने बताए हैं, प्रायः सबके अपवाद हमारे सामने हैं। लिंग की बात करें, तो संस्कृत से सरल हिन्दी है। वास्तव में संस्कृत हिन्दी से जटिल भाषा है। सामान्यतः हिन्दी में क्रियाएँ कर्ता के लिंग से तय होती हैं। 'ने' चिन्ह पर चर्चा करते समय हमने उन स्थितियों की चर्चा की थी, जिनमें क्रियाओं का लिंग कर्म के आधार पर तय होता है।

हिन्दी में संस्कृत, अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी आदि के शब्द भी बड़ी संख्या में हैं। यहाँ हम संस्कृत के शब्दों (इन्हें तत्सम कहते हैं) के लिंग के लिए कुछ सामान्य नियम प्रस्तुत कर रहे हैं।

हिन्दी में संस्कृत के पुलिंग शब्द प्रायः पुलिंग ही रह गए हैं।

अकार से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः पुलिंग हैं, जैसे क्रोध, मोह, पाक, त्याग, दोष, स्पर्श, अध्याय, अन्याय, आकार, उपहार, उपाय, उल्लास, खंड, ध्यान, नियम, विकार, विकास, विस्तार, संसार, समय, समुदाय, सागर, हास, स्वप्न, विनय आदि। जय, पराजय, आय, विजय, पुस्तक, शरण, संस्कृत, सन्तान, देह आदि इसके अपवाद हैं और स्त्रीलिंग हैं।

त्र से समाप्त होने वाले शब्द पुलिंग हैं। अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, मित्र, गोत्र, चरित्र, चित्र, नेत्र, पात्र, क्षेत्र आदि इसके उदाहरण हैं। संस्कृत में ये सब नपुंसकलिंग हैं।

न से समाप्त होने वाले शब्द पुलिंग हैं, जैसे आमंत्रण, उत्पादन, क्रन्दन, गमन, दमन, नन्दन, नयन, पालम, पोषण, परिवर्तन, परिमार्जन, परिवहन, भ्रमण, वंदन, वचन, विधान, व्याख्यान, शयन, शोषण, श्रवण, हरण, संस्करण आदि। पवन (हवा) का प्रयोग स्त्रीलिंग में भी होता रहा है हिन्दी में।

ज से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः पुलिंग हैं, जैसे अंडज, पिंडज, उरोज, जलज, सरोज, स्वेदज, आत्मज, अंबुज आदि।

गुण, धर्म, अवस्था आदि शब्दों के अन्त में यदि त्व, त्य, व या र्य हों, तो वे पुलिंग होते हैं। महत्त्व, सतीत्व, कृत्य, पांडित्य, लाघव, साहित्य, नृत्य, दासत्व, कार्य, धैर्य, माधुर्य, गौरव आदि इसके उदाहरण हैं।

त या ख से समाप्त होने वाले शब्द भी पुलिंग होते हैं, जैसे चरित, फलित, गणित, मत, गीत, स्वागत, नख, मुख, दुःख, लेख, शंख, सुख आदि।

कमल, खग, गिरि, देवता, मनुष्य, मेघ, वृक्ष, वायु, सागर आदि के पर्यायवाची शब्द (बदले में आने वाले शब्द) पुलिंग होते हैं।

आकार, नाकार, ईकार या इकार से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे आज्ञा, उपासना, कन्या, कला, काया, क्रिया, कृपा, गणना, गवेषणा, घटना, क्षमा, दया, माया, सभा, शोभा, लज्जा, प्रार्थना, वेदना, प्रस्तावना, रचना, निद्रा, प्रजा, भाषा, भूमिका, मंत्रणा, मान्यता, रक्षा, लता, विद्या, विधा,

व्याख्या, याचना, शाखा, सहायता, संवेदना, सीमा, सेना, सेवा, आरती, गोष्ठी, नदी, लक्ष्मी, देवी, भारती, अंजलि, अग्नि, उपाधि, केलि, गति, ग्लानि, जाति, ज्योति, छवि, निधि, परिधि, बुद्धि, मणि, मति, रति, रश्मि, राशि, रीति, सिद्धि, वृद्धि, हानि, रुचि आदि। चन्द्रमा, दाता, पिता, दंडी, ब्रह्मचारी, संन्यासी, विद्यार्थी, पति, कवि, गिरि, मुनि, यति, रवि, वारि, वारिधि, उदधि, पाणि आदि अपवाद हैं और पुलिंग हैं। आत्मा स्त्रीलिंग है, लेकिन इससे बने परमात्मा, जीवात्मा, विश्वात्मा पुलिंग हैं, तो प्रेतात्मा स्त्रीलिंग है।

उकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे वायु, रेणु, रज्जु, आयु, मृत्यु, वस्तु, धातु, ऋतु आदि। अश्रु, तालु, मधु, साधु, मेरु, साधु, सेतु, हेतु, गुरु, पशु, शिशु, बंधु, रिपु, शंभु, बिंदु आदि अपवाद हैं और पुलिंग हैं। अग्नि, वायु, मृत्यु और ऋतु संस्कृत में पुलिंग हैं।

ता से समाप्त होने वाले भाव, गुण, धर्म या अवस्था वाचक शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे गुरुता, जड़ता, मूर्खता, ममता, महत्ता, लघुता, विनम्पता, साधुता, सुन्दरता, एकता, पशुता, समता, प्रभुता आदि।

तिथियों, नदियों और नक्षत्रों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, कावेरी, कृष्णा, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, ताप्ती, भरणी, रोहिणी, अश्विनी आदि इसके उदाहरण हैं। सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, दामोदर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त आदि इसके अपवाद हैं।

ति, द्धि, नि या इमा से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे गति, मति, रीति, विज्ञप्ति, युक्ति, शक्ति, हानि, ग्लानि, योनि, बुद्धि, शुद्धि, कालिमा, गरिमा, महिमा, लालिमा, प्रतिमा आदि।

नदी, पृथ्वी, बुद्धि, वाणी, रात्रि, लता, सरिता, स्त्री आदि के पर्यायवाची शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

पुलिंग को पुंलिंग, पुल्लिंग और पुंल्लिंग भी लिखा जाता रहा है।

## अध्याय– 55

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

चर्चा (फ़ारसी) उर्दू में पुलिंग है, लेकिन हिन्दी में स्त्रीलिंग। कलम उर्दू (अरबी) में पुलिंग है, लेकिन हिन्दी में स्त्रीलिंग। फ़ारसी और अरबी के शब्द हिन्दी में उर्दू के माध्यम से आए हैं। इन शब्दों के हिन्दी में प्रायः वही लिंग हैं, जो उर्दू ने स्वीकार किए हैं। इसके बहुत कम अपवाद हैं।

इस भाग में हम हिन्दी के उन शब्दों के लिंग पर बात करेंगे, जो अरबी और फ़ारसी से हिन्दी में आए हैं।

जिन शब्दों के अंत में 'इश' है, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे आजमाइश, पैदाइश, ख्वाहिश, कोशिश, नालिश, नुमाइश, परवरिश, मालिश, सिफारिश, साजिश, फरमाइश, गुजारिश, गुंजाइश आदि।

आर, आन, आब, बन्द, बान, दान, वान, वाँ, कार, इस्तान (स्थानवाचक शब्दों में) आदि से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः पुलिंग होते हैं। उदाहरण के लिए बाजार, इकरार, इश्तिहार, इनकार, इन्तज़ार, परवरदिगार, हक़दार, रोज़गार, अखबार, मकान, सामान, इम्तहान, इतमीनान, अहसान, कबाब, ख्वाब, खिजाब, जवाब, गुलाब, नवाब, तेजाब, सैलाब, सवाब, हिसाब, कमरबन्द, मेहरबान, बाग़बान, बाग़ान, कलमदान, पीकदान, रोशनदान, कारवाँ, पच्चीकार, फनकार, काश्तकार, पेशकार, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान जैसे शब्द देखे जा सकते हैं। इनके कई अपवाद भी हैं, जैसे तकरार, सरकार, दरकार, दूकान, किताब, शराब, ताब, मिहराब (मेहराब), आनबान आदि। ये सब स्त्रीलिंग है।

आकार से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः पुलिंग हैं, जैसे परदा, गुस्सा, किस्सा, तमगा, चश्मा, आईना, नुस्खा, मज़ा, पेशा, रोजा, दगा आदि। इन्तिहा, खता, तमन्ना, दवा, बला, रजा, वफा, हया, हवा, दुनिया, सजा जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं।

ईकार से समाप्त होने वाले भाव या दशा बताने शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे ग़रीबी, सरदी, गर्मी, बीमारी, चालाकी, तैयारी, नवाबी, अमीरी, फकीरी, माली आदि।

अत, आत या ह से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे इज्जत, कयामत, कुदरत, तबीयत, दहशत, दावत, नफरत, रहमत, तोहमत, हुकूमत, मुहब्बत, मुखालिफत, हालत, अदावत, अदालत, कसरत, कीमत, दौलत, अस्मत, हसरत, मुलाकात, हवालात, शुरूआत, तहकीकात, सुबह, राह, तरह, आह, सुलह, सलाह आदि। गुनाह, माह आदि पुलिंग हैं। शरबत, वक़्त, बन्दोबस्त, दस्तखत, तख्त, दरख्त आदि पुलिंग हैं।

कागजात, सवालात जैसे शब्द पुलिंग हैं और कागज, सवाल आदि के बहुवचन हैं। दिलचस्प बात यह है कि हालत स्त्रीलिंग है, लेकिन इसका बहुवचन हालात पुलिंग है।

श से समाप्त होने वाले जोश, होश, ताश आदि पुलिंग हैं, लेकिन तराश, लाश, तलाश जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं।

म से खत्म होने वाले खानम, बेगम जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं।

ईद से खत्म होने वाले शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे ईद, बकरीद, ताकीद, रसीद आदि।

जख्म, तमाशा, तार, दिमाग़, तोता, परवाना, बाज, बुत, रुख, सितम, हाल, आब ओ दाना जैसे शब्द पुलिंग हैं और आबरू, आब ओ हवा, औकात, खता, चिलम, जिन्दगी, तौबा, दास्तान, बू, रफ्तार, रस्म, दीवार, तकदीर, तकरीर, तहसील, ताकीद, जागीर, तामील, तस्वीर जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं।

दो शब्दों से मिलकर बने नये शब्द (पद) का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है, जैसे आबोहवा में हवा अन्तिम शब्द है, इसलिए आबोहवा स्त्रीलिंग है। शिकारगाह स्त्रीलिंग है, क्योंकि गाह स्त्रीलिंग है। दवा स्त्रीलिंग है और ख़ाना पुलिंग; इसलिए दवाख़ाना पुलिंग होगा।

## अध्याय -56 (क)

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

संस्कृत, अरबी और फ़ारसी के शब्दों के लिंग पर चर्चा करने के बाद हम हिन्दी के शब्दों पर विचार करेंगे। शब्दों को प्राणिवाचक (सजीवों का बोध कराने वाले, लेकिन पेड़ पौधों को छोड़कर) और अप्राणिवाचक (चीज़ों, स्थानों, भाषाओं आदि के नाम), दो वर्गों में बाँटकर हम चर्चा शुरू करते हैं।

मनुष्यों, बड़े पशुओं आदि में जो नर के बोध कराने वाले शब्द हैं, वे पुलिंग और जो मादा का बोध कराने वाले हैं, वे स्त्रीलिंग हैं। ऊँट, बूढ़ा, बच्चा, युवक, लड़का, हाथी, बाघ, गधा, साँप आदि पुलिंग हैं और बूढ़ी, युवती, बच्ची, गाय, महिला, बकरी, लड़की, ऊँटनी आदि स्त्रीलिंग हैं।

कुछ जानवरों, छोटे पक्षियों और कीड़ों आदि में जोड़े (नर और मादा) का भेद करना कठिन होता है। कोयल, गिलहरी, गौरैया, चील, जोंक, बुलबुल, मछली, बटेर, तितली, मैना, मक्खी, दीमक, साही,अबाबील, जूँ आदि हमेशा स्त्रीलिंग रहते हैं, चाहे नर का बोध हो या मादा का। उल्लू, कौआ, खटमल, गिद्ध, गिरगिट, झींगुर, बिच्छू, मच्छर, चमगादड़, चीता, भेड़िया, केंचुआ, तेंदुआ, पिल्ला, पक्षी, झींगा, तीतर, भालू, गरुड़, नीलकंठ, बया, शुतुरमुर्ग, घोंघा, फतिंगा, जुगनू, ढील (जूँ), कठफोड़वा, गोजर, केंकड़ा आदि शब्द पुलिंग ही माने जाते हैं, बोध चाहे किसी का हो।

प्रायः जिन वस्तुओं से बल, श्रेष्ठता, कठोरता आदि गुणों का पता चलता है, वे पुलिंग और जिनसे नम्रता, कोमलता, सुंदरता, हीनता आदि का पता चलता है, वे स्त्रीलिंग माने गए हैं। यह हमारे समाज में पितृसत्ता का एक प्रमाण भी कहा जा सकता है, जहाँ स्त्री दोयम दर्जे की मानी गई है! कम से कम तब का तो कहा ही जा सकता है, जब भाषा का विकास तेज़ी से हो रहा होगा! 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' किताबी और मिलावटी बात रही है।

माता-पिता, माँ-बाप, भाई-बहन, राधा-कृष्ण, सीता-राम, दाल-भात, नर-नारी, राजा-रानी, शिव-पार्वती जैसे दो पदों वाले शब्द पुलिंग होते हैं।

अब अप्राणिवाचक शब्दों की ओर रुख करते हैं।

पेड़ों, वनस्पतियों, रत्नों, धातुओं, अनाजों, तरल पदार्थों, फूलों आदि के नाम पुलिंग होते हैं, जैसे पीपल, अनार, बाँस, आम, देवदार, सागवान, बड़, चीड़, शीशम, कटहल, अमरूद, नीबू, अशोक, शरीफा, सेब, अखरोट, अंगूर, मोती, नीलम, पन्ना, हीरा, जवाहर, मूँगा, लाल, पुखराज, तांबा, लोहा, सीसा, सोना, पीतल, राँगा, टीन, जौ, गेहूँ, चावल, बाजरा, चना, मटर, तिल, उड़द, इत्र, कहवा, पानी, घी, काढ़ा, तेल, दूध, दही, मधु, शरबत, सिरका, अवलेह, आसव, अर्क, रायता, कमल, गुलाब, गेंदा, चम्पा, धतूरा, नरगिस आदि। इसके अपवाद नीम, जामुन, लीची, नारंगी, नाशपाती, इमली, मणि, चाँदी, मकई, ज्वार, अरहर, खेसारी, मूँग, चाय, स्याही, कॉफी, शराब, कढ़ी, छाछ, गुलमेहंदी, चमेली, जूही आदि हैं।

जलीय, स्थलीय या भौगोलिक नाम, पहाड़ों, आकाशीय पिंडों, दिनों, महीनों, महादेशों, राज्यों आदि के नाम पुलिंग हैं, जैसे देश, नगर, रेगिस्तान, द्वीप, पर्वत, समुद्र, सरोवर, पाताल, वायुमंडल, प्रान्त, राज्य, चाँद, बुध, शनि, एशिया, युरोप, अमेरिकी, चीन, भारत, रूस, बिहार, केरल, पंजाब, तारा, सूर्य, ग्रह, सोमवार, चैत, जेठ, पूस, सावन, ध्रुव आदि। झील, घाटी, पृथ्वी, जमीन, भूमि आदि इसके अपवाद हैं।

शरीर के अंगों से सम्बन्धित कान, मुँह, दाँत, ओठ, हाथ, पाँव, गाल, मुक्का, तालु, नाखून, पेट, पैर, बाल, सिर, रोम, नख, चमड़ा, नथुना, अँगूठा आदि पुलिंग हैं, तो आँख, नाक, काँख, गर्दन, छाती, जीभ, जाँघ, टाँग, ठोड़ी, दाढ़ी, नाड़ी, पीठ, बाँह, मूँछ, हथेली, उँगली, कोहनी, कलाई, नस, हड्डी, खाल, इन्द्रिय, चमड़ी आदि स्त्रीलिंग। बाहु और श्वास संस्कृत में पुलिंग हैं, लेकिन हिन्दी में बाँह और साँस स्त्रीलिंग हैं।

भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग हैं, जैसे हिन्दी, भोजपुरी, संस्कृत, तमिल, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, तुर्की आदि।

नदियों के नाम स्त्रीलिंग हैं, जैसे गंगा, यमुना, सतलुज आदि। ब्रह्मपुत्र जैसे अपवाद भी हैं, जो पुलिंग हैं।

खाने-पीने और किराने के दुकान की चीज़ें स्त्रीलिंग हैं, जैसे लौंग, इलायची, मिर्च, दालचीनी, हल्दी, सुपारी, हींग, राई, कचौड़ी, पूरी (पूड़ी), खीर, दाल, रोटी, चपाती, पकौड़ी, तरकारी, सब्जी, खिचड़ी आदि। धनिया, जीरा, प्याज, लहसुन, नमक, केसर, कपूर, तेजपात (तेजपत्ता), हलवा, भात, पराँठा (पराठा) आदि इसके अपवाद हैं।

अक्षरों में इ, ई, ऋ, र और ड़ को छोड़कर सारे अक्षर पुलिंग माने जाते हैं।

अप्राणिवाचक शब्द, जो ईकार से समाप्त होते हैं, प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे कटोरी, कस्तूरी, गंजी, घड़ी, गाड़ी, चटनी, चोटी, चिट्ठी, छड़ी, चौकी, थाली, धोती, लाठी, साड़ी आदि। घी, मोती, दही, जी, पानी आदि इसके अपवाद हैं।

आ, आन, अक्कड़, आक, आकू, आप, आव, आवा, इयल, इया, ऊ, ऐरा, ऐया, ऐत, ओड़, औता, औना, औवल, वैया, वाहा, वाला आदि प्रत्यय वाले ऐसे शब्द, जो किसी क्रिया से बने हों, पुलिंग होते हैं। घेरा, खान, नहान, मिलान, पान, लगान, उठान, पियक्कड़, बुझक्कड़, लड़ाकू, मिलाप, तैराक, घुमाव, बहाव, पहनावा, छलावा, भुलावा, सड़ियल, धुनिया, खाऊ, उड़ाऊ, लुटेरा, गवैया, हँसोड़, समझौता, खिलौना, बुझौवल, मनौवल, चरवाहा, छिलका, खानेवाला आदि इसके उदाहरण हैं। उड़ान और चट्टान स्त्रीलिंग हैं।

आई, ई, औती, आवनी, ती, नी, आवट, आहट, की, त, क, न, अन्त, अ आदि प्रत्ययों से बने वैसे शब्द, जो क्रियाओं से बनते हैं, स्त्रीलिंग होते हैं। पढ़ाई, लड़ाई, बोली, मनौती, गिनती, सजावट, लिखावट, घबराहट, धमकी, बचत, बढ़ती, चढ़ती, चलती, करनी, छावनी, हँसी, बैठक, भिड़न्त, चमक, उड़ान, सूजन, उलझन, छाप, जलन, जीत, पहचान, मार, समझ, हार, मिलावट, छटपटाहट, पुकार, दौड़, रहन आदि इसके उदाहरण हैं। चलन, बोल, नाच, रुझान, मेल, उतार, बिगाड़ आदि पुलिंग हैं।

गाना, पढ़ना, बोलना, रोना, लिखना, हँसना, होना, बनना जैसे शब्द जो क्रियासूचक हैं, पुलिंग होते हैं, जब इनका प्रयोग क्रिया की तरह नहीं होता, जैसे 'खेलना हमारा काम है' और 'उनका वहाँ होना बुरा नहीं है' में खेलना और होना क्रिया नहीं है।

हम अगले भाग में भी लिंग की चर्चा जारी रखेंगे।

अधिकांश शब्द हिन्दी और उर्दू दोनों में समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं लेकिन इनमें से कई शब्द उर्दू में 'स्त्रीलिंग' व 'पुल्लिंग' दोनों रूपों में इस्तेमाल किये जाते हैं । जैसे - दिलासा, रहगुज़र आदि (और भी कई हैं जो अभी याद नहीं आ रहे हैं)......और तो और, उर्दू शायरी में कई बार स्त्री को भी मर्दाना सम्बोधन दे दिया जाता है। जैसे, प्रेमिका को आते देखकर शायर कहता है - "मेरा मेहबूब आ गया".

## अध्याय -56 (ख)

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

आपने शायद वह चुटकुला सुना हो, जिसमें कहा जाता है कि राहुल को रहुलवा, बेटा को बेटवा, मोहन को मोहनवा कहने की जो परम्परा भारत की हिन्दी पट्टी में है, वह आस्ट्रेलिया में भी है और मार्कवा, स्टीववा जैसे नाम वहाँ भी हैं। मार्क वॉ और स्टीव वॉ के नाम पर यह हास्य चल निकला है। हिन्दी में वास्तव में न्यूनवाचक शब्दों को बनाने की व्यवस्था है। न्यूनवाचक (ऊनवाचक) यानी कमी, न्यूनता, छोटापन आदि का बोध कराने वाले शब्द। खाट से खटिया, चूहा से चुहिया, पिंकी से पिंकिया, पूजा से पूजवा आदि का बनना न्यूनवाचक शब्दों के उदाहरण हैं। 'या' से समाप्त होने वाले न्यूनवाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे कुटिया, खटिया, चुटिया, डिबिया, नदिया, नथिया, हँड़िया, गुड़िया, पुड़िया आदि। कई बार स्त्रीलिंग शब्दों को और कमजोर बनाने के लिए 'या' (कई बार इया) प्रत्यय जोड़ते हैं। नथ, खाट आदि स्त्रीलिंग हैं और इनसे बने नथिया, खटिया भी स्त्रीलिंग ही हैं। वैसे तो कुत्ता, बूढ़ा आदि पुलिंग शब्दों से कुतिया, बुढ़िया जैसे स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं, लेकिन ये वास्तव में न्यूनीकरण ही है। इसमें हिन्दी पट्टी के संस्कार भी दिखते हैं।

पिछली बार हमने क्रियाओं से बने भिन्न-भिन्न प्रत्ययों वाले शब्दों के लिंग पर विचार किया। इस भाग में हम कुछ प्रत्ययों से बने ऐसे शब्दों पर विचार करेंगे, जो क्रियाओं से न बनकर, दूसरे शब्दों से बनते हैं। लिंग पर थोड़ा विस्तार देने के इरादे ने 56वें भाग को कई उपविभागों में प्रस्तुत करने की विवशता उत्पन्न की है। यह भाग 56 का दूसरा उपविभाग है।

पन और पा से समाप्त होने वाले भाववाचक शब्द पुलिंग होते हैं, जैसे छुटपन, बचपन, बड़प्पन, लड़कपन, अपनापन, कमीनापन, बुढ़ापा, मोटापा आदि।

आँ से समाप्त होने वाले शब्द (नाम या संज्ञा) प्रायः पुलिंग होते हैं। धुआँ, कुआँ, रोआँ आदि।

आ, आऊ, आका, आटा, आना, आर, आरी, आड़ी, आरा, आलू, आसा, ओट, ओटा, औड़ा, ओला, ईला, उआ, एरा, एड़ी, एला, ऐला, ऐत, पना, ला, वान, वाला, वाँ, वा, सरा, हर, हरा, वन्त, हारा आदि से समाप्त होने वाले शब्द पुलिंग होते हैं। धमाका, फटाका, सन्नाटा, खर्राटा, पैताना (वह दिशा जिधर पैर फैलाकर सोया जाए), भिखारी, जुआरी, खिलाड़ी, हत्यारा, घसियारा, झगड़ालू, मुँहासा, लँगोट, चमोटा (नरम चमड़े का टुकड़ा), हथौड़ा, सुनार, मँझोला, सँपोला, जहरीला, टहलुआ (सेवक), सँपेरा (सपेरा), गँजेड़ी, भँगेड़ी, अधेला, बनैला, डकैत, बचपना, मँझला, सातवाँ, गाड़ीवान, टोपीवाला, छठा, दूसरा, तीसरा, खंडहर, इकहरा, चुड़िहारा, पीहर आदि इसके उदाहरण हैं।

आइन, आनी, आई, आवट, आस, औड़ी, इन, एली, की, टी, ड़ी, री, ली आदि प्रत्ययों से बने शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे पंडिताइन, सेठानी, जेठानी, भलाई, जमावट, मिठास, हथौड़ी, चुनौटी, धोबिन, हथेली, दमड़ी, चाँदनी, बाँसुरी, टिकली आदि।

आकार से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः पुलिंग होते हैं। आटा, कपड़ा, खीरा, गन्ना, गुटका, घड़ा, घाघरा, चना, चेला, छाता, जूता, झुमका, पन्ना, पेड़ा, पैसा, बखेड़ा, बच्चा, बीड़ा, मेला, मोजा, लोटा, रुपया, हीरा, हुक्का आदि इसके उदाहरण हैं। यहाँ इया प्रत्यय अलग से ध्यान देने लायक है। पहिया, बनिया, मुखिया आदि शब्द पुलिंग हैं और इनमें इया अन्त में आता है। 'इया' प्रत्यय पुलिंग शब्द के साथ स्त्रीलिंग शब्द भी बनाता है। एल, क जैसे प्रत्यय दोनों ही लिंगों के शब्द बनाते हैं। फूल में एल मिलकर फुलेल (पुलिंग) बनाता है, तो नाक से नकेल (स्त्रीलिंग) बनाता है। क प्रत्यय जब संख्या वाचक शब्दों में मिलता है, तब पुलिंग शब्द बनाता है और दूसरे शब्दों में लगने पर स्त्रीलिंग शब्द बनाता है। चौक, पंचक, सप्तक, अष्टक, दशक आदि पुलिंग हैं और ठंडक, धमक आदि स्त्रीलिंग।

ऊ, ख, त, स और चन्द्रबिन्दु से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे लू, दारू, ईख, काँख, आँख, कोख, चीख, भूख, लाख (लाह, चपड़ा), साख, राख, रात, बात, लात, छत, भीत, पत, गत, रीत, आस, फाँस, मिठास, साँस, बास, प्यास, खड़ाऊँ, चूँ, सरसों, जूँ, भौं (भौंह) आदि। आँसू, आलू, टेसू, रतालू, पंख, भात, खेत, सूत, दाँत, पूत, काँस, निकास, कुआँ, गेहूँ, कोदों, धुआँ आदि अपवाद हैं।

हिन्दी में कई शब्द दोनों ही लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। इसका कारण अर्थ भेद है। कुछ ऐसे ही शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं-

1) कल- यह आगामी दिन के अर्थ में पुलिंग और चैन या आराम के अर्थ में स्त्रीलिंग है। 'तुम्हारा कल कब आएगा' और 'रोगी को अभी कल पड़ी है' जैसे वाक्य दोनों को स्पष्ट करते हैं।

2) टीका-'कल टीका लगेगा' में तिलक का अर्थ मिलता है और 'उपनिषदों की टीका' में अर्थ, व्याख्या, टिप्पणी का अर्थ मिलता है। इंजेक्शन के अर्थ में भी टीका पुलिंग ही होता है।

3) पीठ- संस्कृत में यह पीढ़ा, स्थान के अर्थ में पुलिंग है और शरीर के अंग पीठ के लिए हिन्दी में स्त्रीलिंग। 'यह विद्या का पीठ है' और 'हमारी पीठ में दर्द है', इन दोनों वाक्यों से अंतर समझा जा सकता है।

4) कोटि-'मनुष्य की अनेक कोटियाँ हैं' में कोटि का अर्थ श्रेणी, प्रकार आदि से मिलता है। कोटि का दूसरा अर्थ करोड़ है, जिसे पुलिंग माना जा सकता है।

5) विधि- यह ब्रह्मा के लिए पुलिंग और प्रणाली या ढंग के लिए स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है। 'विधि न्याय करेगा' और 'इसकी विधि पुरानी है' इसके दोनों रूपों को स्पष्ट करते हैं।

6) हार- यह पराजय के अर्थ में स्त्रीलिंग और माला के अर्थ में पुलिंग है। 'तुम्हारी हार' और 'काँटों का हार' दोनों लिंगों में इसके प्रयोग को स्पष्ट करते हैं।

7) यति- यह शब्द संन्यासी के लिए पुलिंग और विराम के लिए (छन्द में ठहराव के लिए) स्त्रीलिंग में होता है।

8) शाल- यह कक्ष, हॉल या वृक्षविशेष के अर्थ में पुलिंग और चादर के अर्थ में स्त्रीलिंग है। चादर के अर्थ का शाल शब्द फ़ारसी का है।

9) शान- यह ठाट-बाट या प्रभुत्व के अर्थ में स्त्रीलिंग और हथियार या औजार तेज करने के पत्थर के अर्थ में पुलिंग है। प्रभुत्व का अर्थ अरबी शब्द शान देता है और पत्थर का अर्थ शान (शाण) देता है, जो संस्कृत और हिन्दी का है।

10) बाट- यह बटखरा या बट्टा (वजन करने या तौलने में प्रयुक्त) के अर्थ में पुलिंग है और राह, रास्ता, मार्ग, इन्तज़ार आदि के अर्थ में स्त्रीलिंग है। 'तुम्हारा बाट ठीक नहीं' और 'मैं तुम्हारी बाट जोहता रहा' से दोनों प्रयोगों को समझा जा सकता है।

11) कलम- यह लिखने के उपकरण (लेखनी या पेन) के अर्थ में स्त्रीलिंग है और आम की टहनी आदि के अर्थ में पुलिंग है।

12) चाँद- यह खोपड़ी (भोजपुरी में चानी) के अर्थ में स्त्रीलिंग और चंद्रमा के अर्थ में पुलिंग है।

13) बाल- केश, बच्चा आदि के अर्थ में यह पुलिंग है, लेकिन पौधों के डंठल के अगले भाग (यानी बाली) के रूप में स्त्रीलिंग है।

14) लगन- विवाह के दिन के अर्थ में यह पुलिंग है और गहरे प्रेम, ध्यान, लगाव आदि के अर्थ में स्त्रीलिंग।

15)भंग- यह खंड, टूटना आदि के अर्थ में पुलिंग और भाँग (एक पौधा) के अर्थ में स्त्रीलिंग।

सुमन, सरोज, तारा जैसे शब्द पुलिंग हैं, लेकिन लड़कियों के नाम के रूप में होने पर स्त्रीलिंग होते हैं। कई नाम तो लड़के और लड़कियों दोनों के रखे जा रहे हैं, जैसे रिंकू, बिट्टू, सोनू आदि।

सविता एक दिलचस्प उदाहरण है। यह पुलिंग शब्द है, लेकिन इसे नाम के रूप में पुरुष नहीं रखते। यह नाम स्त्रियों के लिए ही रखा जाता है। अश्विनी का भी कुछ ऐसा ही हाल है। यह स्त्रीलिंग है, लेकिन नाम के रूप में इसे पुरुष अपनाते हैं।

## अध्याय-56 (ग)

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

दो शब्दों से बने शब्दों (पदों) के लिंग का निर्णय सामान्यतः अन्तिम शब्द के आधार पर किया जाता है। यह हम अरबी और फ़ारसी के शब्दों पर चर्चा के समय देख चुके हैं।

व्यायामशाला, पाठशाला आदि स्त्रीलिंग हैं, क्योंकि इनमें अन्तिम शब्द स्त्रीलिंग है। इसी तरह पुस्तकालय पुलिंग है, क्योंकि आलय पुलिंग है। इस नियम का पालन कई बार नहीं भी होता। देन स्त्रीलिंग है, लेकिन लेनदेन पुलिंग है। मणि स्त्रीलिंग है, लेकिन नीलमणि पुलिंग। दल पुलिंग है, लेकिन दलदल स्त्रीलिंग। निधि स्त्रीलिंग है, लेकिन जलनिधि, क्षीरनिधि, नीरनिधि आदि पुलिंग हैं। राह और मंजिल स्त्रीलिंग हैं, लेकिन चौराहा और तिमंजिला या दुमंजिला पुलिंग हैं। वैसे पुलिंग के साथ होने पर मंजिला लगाते हैं और स्त्रीलिंग के साथ होने पर मंजिली, जैसे दुमंजिला मकान, दुमंजिली इमारत आदि। आना पुलिंग है, लेकिन दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी स्त्रीलिंग हैं। इसी तरह माप स्त्रीलिंग है, लेकिन परिमाप पुलिंग। वैसे परि स्वतंत्र शब्द के रूप में नहीं चलता।

कई बार एक ही अर्थ देने वाले हिन्दी (यहाँ हिन्दी से संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, तुर्की आदि भाषाओं के शब्दों का भी अर्थ लिया जाय) शब्द भी लिंगभेद प्रदर्शित करते हैं। नेत्र पुलिंग है, तो आँख स्त्रीलिंग। मार्ग पुलिंग है, तो बाट स्त्रीलिंग। ग्रंथ पुलिंग है, तो पुस्तक स्त्रीलिंग। शरीर पुलिंग है, तो देह स्त्रीलिंग। पैर पुलिंग है, तो टाँग स्त्रीलिंग। प्रात पुलिंग है, तो भोर स्त्रीलिंग।

एक ही जैसे दिखने के शब्दों के लिंग में भी अन्तर हो सकता है। यहाँ ऐसे कुछ शब्द प्रस्तुत हैं, जिनके तुक में समानता है, लेकिन लिंग में भिन्नता। घी पुलिंग, तो कंघी स्त्रीलिंग; कंघा पुलिंग, तो जंघा स्त्रीलिंग; जी पुलिंग, तो गंजी स्त्रीलिंग; मोती पुलिंग, तो धोती स्त्रीलिंग; दही पुलिंग, तो मही स्त्रीलिंग; तकिया पुलिंग, तो खटिया स्त्रीलिंग; पहिया पुलिंग, तो पुड़िया स्त्रीलिंग; नाद पुलिंग, तो खाद स्त्रीलिंग; प्रात और भात पुलिंग, तो रात और बात स्त्रीलिंग; आरा पुलिंग, तो कारा स्त्रीलिंग; निकास पुलिंग, तो मिठास स्त्रीलिंग; मटर पुलिंग, तो गाजर स्त्रीलिंग; सहन पुलिंग, तो बहन स्त्रीलिंग; कंपन और मधुवन पुलिंग, तो सिहरन और चितवन (अर्थ- दृष्टि) स्त्रीलिंग; रुझान पुलिंग, तो थकान स्त्रीलिंग; बाँस पुलिंग, तो साँस स्त्रीलिंग; भाग पुलिंग, तो आग स्त्रीलिंग; उत्पल पुलिंग, तो चप्पल स्त्रीलिंग; पाख पुलिंग, तो राख स्त्रीलिंग; बाल पुलिंग, तो खाल स्त्रीलिंग; सींग पुलिंग, तो हींग स्त्रीलिंग; किनारा पुलिंग, तो धारा स्त्रीलिंग; मंजीर (नूपुर, घुँघरू) पुलिंग, तो जंजीर स्त्रीलिंग; करताल पुलिंग, तो हड़ताल स्त्रीलिंग; नफा पुलिंग, तो दफा स्त्रीलिंग; खटमल पुलिंग, तो मलमल स्त्रीलिंग; खेल पुलिंग, तो रेल स्त्रीलिंग; ताश पुलिंग, तो लाश स्त्रीलिंग; पाप पुलिंग, तो माप स्त्रीलिंग; आहार पुलिंग, तो हार स्त्रीलिंग; कहार पुलिंग, तो बहार, फुहार और गुहार स्त्रीलिंग; वितान (फैलाव, तंबू) पुलिंग, तो तान स्त्रीलिंग; दहेज पुलिंग, तो सेज स्त्रीलिंग; मोर पुलिंग, तो भोर स्त्रीलिंग; जलधि, पयोधि और उदधि पुलिंग, तो निधि, समाधि और व्याधि स्त्रीलिंग; मोड़ पुलिंग, तो दौड़ स्त्रीलिंग; सविता पुलिंग, तो कविता स्त्रीलिंग; फ़ीता पुलिंग, तो गीता स्त्रीलिंग; चीर पुलिंग, तो खीर स्त्रीलिंग; भाल पुलिंग, तो दाल स्त्रीलिंग; जाल पुलिंग, तो डाल स्त्रीलिंग; सप्ताह और अल्लाह पुलिंग, तो आह, सलाह और कराह स्त्रीलिंग; हाल (समाचार) पुलिंग, तो चाल स्त्रीलिंग; अमरूद पुलिंग, तो बारूद स्त्रीलिंग; जूट पुलिंग, तो लूट स्त्रीलिंग; नमक पुलिंग, तो चमक स्त्रीलिंग; खत पुलिंग, तो लत स्त्रीलिंग; दाँत पुलिंग, तो आँत स्त्रीलिंग; डैना पुलिंग, तो मैना स्त्रीलिंग; दल पुलिंग, तो दलदल स्त्रीलिंग; आक (मदार) पुलिंग, तो धाक स्त्रीलिंग; बखिया पुलिंग, तो डिबिया स्त्रीलिंग; बीमा पुलिंग, तो सीमा स्त्रीलिंग; प्यार पुलिंग, तो बयार स्त्रीलिंग; सीप पुलिंग, तो जीप स्त्रीलिंग; बाज़ पुलिंग, तो गाज (बिजली); सुरमा पुलिंग, तो रमा स्त्रीलिंग; छोर पुलिंग, तो कोर स्त्रीलिंग; पलंग पुलिंग, तो तरंग स्त्रीलिंग; मृदंग और संग (साथ, पत्थर) पुलिंग, तो भंग और गंग (गंगा) स्त्रीलिंग; नीड़ पुलिंग, तो

भीड़ स्त्रीलिंग; कछार पुलिंग, तो मँझधार स्त्रीलिंग; तराजू पुलिंग, तो आरजू स्त्रीलिंग; ख़सम पुलिंग, तो क़सम स्त्रीलिंग; रबर (रबड़) पुलिंग, तो खबर स्त्रीलिंग; बंधक पुलिंग, तो ठंडक स्त्रीलिंग; बाँध पुलिंग, तो सड़ाँध (सड़ायँध, बदबू) स्त्रीलिंग; ताज पुलिंग, तो लाज स्त्रीलिंग; अलबम पुलिंग, तो शबनम स्त्रीलिंग; ताबीज़ पुलिंग, तो तजवीज (तजबीज) स्त्रीलिंग, ओंकार पुलिंग, तो झंकार स्त्रीलिंग; मत पुलिंग, तो हिम्मत स्त्रीलिंग; चना पुलिंग, तो वंचना स्त्रीलिंग; पाला पुलिंग, तो माला स्त्रीलिंग; क़ब्ज़ पुलिंग, तो नब्ज़ स्त्रीलिंग; संदूक़ पुलिंग, तो बंदूक स्त्रीलिंग; हौज़ पुलिंग, तो फ़ौज स्त्रीलिंग; करोड़ पुलिंग, तो मरोड़ स्त्रीलिंग।

पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों का उपयोग किया जाता है। ई प्रत्यय लगाकर अकार और आकार से समाप्त होने वाले पुलिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है, जैसे देव से देवी, पुत्र से पुत्री, मामा से मामी, दास से दासी, कुमार से कुमारी, ब्राह्मण से ब्राह्मणी, पौत्र से पौत्री, राक्षस से राक्षसी, पंचम से पंचमी, मानव से मानवी आदि। अधिक प्रेम, घृणा आदि प्रकट करने के लिए ई की जगह इया प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, जैसे कुत्ता से कुतिया, बूढ़ा से बुढ़िया आदि। पशु या पक्षी का बोध कराने वाले अकारान्त शब्दों में नी प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं, जैसे मोर से मोरनी, शेर से शेरनी आदि।

कई बार अकार से समाप्त होने वाले संस्कृत शब्दों के अंत में आकार लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं, जैसे पंडित से पंडिता, महाशय से महाशया, मध्यम से मध्यमा, सूर्य से सूर्या, प्रथम से प्रथमा, द्वितीय से द्वितीया, बाल से बाला, शान्त से शान्ता आदि।

अक से समाप्त होने वाले शब्द के अंत में अक को इका बनाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं, जैसे पाठक से पाठिका, बालक से बालिका, गायक से गायिका, शिक्षक से शिक्षिका आदि।

व्यवसाय वाचक पुलिंग शब्दों के अंत में इन लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं, जैसे धोबी से धोबिन, सुनार से सुनारिन, जमादार से जमादारिन आदि। उपनाम (टाइटल या जाति सूचक शब्द) वाले पुलिंग शब्दों के अंत में आइन लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है, जैसे पंडित से पंडिताइन, ठाकुर से ठकुराइन, पाँड़े से पँड़ाइन आदि। कुछ शब्दों में आनी जोड़कर स्त्रीलिंग बनाते हैं, जैसे नौकर से नौकरानी, जेठ से जेठानी, देवर से देवरानी, सेठ से सेठानी आदि।

कुछ शब्दों के स्त्रीलिंग रूप बिलकुल भिन्न होते हैं, जैसे पिता का माता, भाई का बहन, वर का वधू, पुरुष का स्त्री, बैल का गाय आदि।

'दलदल' पुल्लिंग है और 'मटर' स्त्रीलिंग। 'ताश' और 'सविता' उभयलिंगी हैं।

## अध्याय- 56 (घ)

### पुलिंग और स्त्रीलिंग

फ़िल्मी गानों, कविताओं, कहावतों, मुहावरों और शेरों की मदद से हम शब्दों के लिंग भी जान सकते हैं। ख़ास तौर पर पुराने गानों की भाषायी शुद्धता का तो जवाब नहीं! अब के गानों को तो पूछिए मत! इस भाग में हम बहुत सारे गानों, कविताओं, मुहावरों, कहावतों आदि के हिस्से देखेंगे और उनसे शब्दों के लिंग जानने की कोशिश करेंगे।

शब्दों के लिंग जानने के लिए वाक्य या पँक्ति में शब्द और उसके दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध पर विचार कर लेते हैं। खासियत बताने वाले शब्द के अन्त में यदि आकार रहे तथा वह पुलिंग हो, तो आगे का शब्द पुलिंग होगा और अन्त में ईकार रहे, तो आगे का शब्द स्त्रीलिंग होगा। अच्छा घर में घर के पहले अच्छा है, जो घर की खासियत बता रहा है और अच्छा के अन्त में आकार है। इसलिए घर पुलिंग है। काली कलम में कलम के पहले काली है, जिसके अन्त में ईकार है। इसलिए कलम स्त्रीलिंग है। गुलाबी छाता, गुलाबी आँखें आदि में यह स्पष्ट नहीं है, क्योंकि गुलाबा शब्द नहीं है, जिससे गुलाबी बन सके। जिन खासियत बताने वाले शब्दों के अन्त में अकार (आकार आदि को छोड़कर) होता है, उनके बाद वाले शब्द का लिंग देखकर नहीं बताया जा सकता, जैसे क़ीमती छड़ी, क़ीमती मोती, क़ीमती किताब आदि में क़ीमती की सहायता से हम किताब, मोती, कलम आदम के लिंग नहीं जान पा रहे।

की या ईकार के बाद आने वाला शब्द स्त्रीलिंग होता है और का या आकार के बाद वाला पुलिंग। 'मेरी कहानी' से यह स्पष्ट है कि कहानी स्त्रीलिंग है, क्योंकि उसका सम्बन्ध मेरी (इसके अन्त में ईकार है) से है। इसी तरह 'तेरा इन्तज़ार' से यह स्पष्ट है कि इन्तज़ार पुलिंग है, क्योंकि इसका सम्बन्ध तेरा (आकारान्त) से है।

जिन बहुवचन वाले शब्दों के अन्त में एँ, आएँ आदि हों, वह स्त्रीलिंग हैं, जैसे बहारें, यादें, ख्वाहिशें, जंजीरें, दीवारें, राहें, मंजिलें, हवाएँ, कविताएँ आदि। जिन बहुवचन शब्दों के अन्त में ए हो, वे पुलिंग हैं, जैसे चेहरे, नजारे, आईने आदि।

क्रियासूचक शब्द भी लिंग का बोध कराते हैं। 'याद आ गई' में ईकार वाली क्रिया याद को स्त्रीलिंग साबित करती है। रहती, गई, थी, थीं, हुईं, होती, बीती, जाऊँगी, रही, चुकी आदि में अन्त में ईकार या ईं है और सम्बन्धित शब्द या कर्ता (कौन, किसने आदि के जवाब कर्ता बताते हैं) को स्त्रीलिंग साबित करते हैं। 'आपका आना' में आना आकारान्त है, इसलिए यह पुलिंग है। रहा, गया, चुका, जाएगा, था, थे, होता, जाता, देखे, गए आदि आकार या एकार से समाप्त होने वाले शब्द क्रियासूचक हैं और पुलिंक का बोध कराते हैं।

अब हम कुछ गीतों, कविताओं, मुहावरों आदि के हिस्सों से लिंग जानने का प्रयास करते हैं।

1) 'साँस थमती गई नब्ज़ जमती गई' के 'गई' से यह पता चलता है कि साँस और नब्ज़ स्त्रीलिंग हैं।

2) 'मेरा गीत अमर कर दो' के 'मेरा' से गीत पुलिंग है, यह पता चलता है।

3) 'हमने तो बस कलियाँ माँगीं, काँटों का हार मिला' में 'माँगीं' से कलियाँ स्त्रीलिंग है, यह पता चलता है। इसमें 'का' से हार पुलिंग है, यह भी पता चलता है।

4) 'मेरे देश की धरती' में 'की' से धरती स्त्रीलिंग है, यह पता चलता है।

5) 'आईने के सौ टुकड़े करके हमने देखे हैं' में 'के' या 'देखे' से टुकड़े के पुलिंग होने का पता चलता है।

6) 'बहती हवा सा था वो' में 'बहती' के चलते हवा के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

7) 'छोड़ो कल की बातें' में 'की' से 'बातें' (बात) के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

8) 'तेरी-मेरी दोस्ती प्यार में बदल गई' में 'तेरी-मेरी' या 'गई' से दोस्ती के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

9) 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है' में 'रही' से गाड़ी के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

10) 'आती रहेंगी बहारें' में 'रहेंगी' से बहारें स्त्रीलिंग हैं, यह पता चलता है।

11) 'देखा एक ख्वाब तो' में 'देखा' से यह पता चलता है कि ख्वाब पुलिंग है।

12) 'दिल का सूना साज तराना ढूँढ़ेगा' में 'का' या 'ढूँढ़ेगा' से साज के पुलिंग होने का पता चलता है।

13) 'जिंदगी की न टूटे लड़ी' में 'की' से लड़ी के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

14) 'लिखे जो ख़त तुझे' में 'लिखे' से पता चलता है कि खत पुलिंग है।

15) 'कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे' में 'तुम्हारा' से पता चलता है कि हृदय पुलिंग है।

16) 'आए हो मेरी जिंदगी में तुम' में 'मेरी' से पता चलता है कि जिंदगी स्त्रीलिंग है।

17) 'जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाए थोड़ी सी छाया' में 'की' से गर्मी के स्त्रीलिंग, 'जलते हुए' से तन के पुलिंग और 'थोड़ी सी' से छाया के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

18) 'मीत ना मिला रे मन का' में 'का' से मीत के पुलिंग होने का पता चलता है।

19) 'ये पब्लिक है, सब जानती है' में 'जानती' से पब्लिक के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

20) 'दिल के अरमाँ आँसुओं में बह गए' में 'के' या 'गए' से यह स्पष्ट होता है कि अरमान पुलिंग है।

21) 'दिल की आरज़ू' से आरज़ू के स्त्रीलिंग होने का पता 'की' से चलता है।

22) 'मेरा तो जो भी कदम है, वो तेरी राह में है' में 'मेरा' से कदम के पुलिंग होने का तथा 'तेरी' से राह स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

23) 'कारवाँ गुज़र गया' में 'गया' से यह पता चल जाता है कि कारवाँ पुलिंग है।

24) 'छूने पाए न सीता का दामन कोई' से यह स्पष्ट है कि दामन पुलिंग है। 'का' से यह पता चलता है।

25) 'ये दुनिया, ये महफिल मेरे काम की नहीं' में दुनिया और महफिल स्त्रीलिंग हैं, यह 'की' से पता चलता है।

26) 'तेरी उम्मीद, तेरा इन्तज़ार करते हैं' में 'तेरी' से उम्मीद के स्त्रीलिंग और 'तेरा' से इन्तज़ार के पुलिंग होने का पता चलता है।

27) 'चलो रे डोली उठाओ कहार, पिया मिलन की रुत आई' में 'की' रुत को स्त्रीलिंग बता रहा है। 'रे' से कहार के पुलिंग होने का पता चलता है।

28) 'खइके पान बनारस वाला' में 'वाला' पान को पुलिंग साबित कर रहा है।

29) 'तेरा नाम लेने की चाहत हुई है' में नाम 'तेरा' के कारण पुलिंग और चाहत 'की' के कारण स्त्रीलिंग है।

30) 'इंसाफ़ की डगर पे' में डगर के स्त्रीलिंग होने का पता 'की' से लगता है।

31) 'मंजिलें अपनी जगह रास्ते अपनी जगह' में 'एँ' से मंजिल के स्त्रीलिंग होने, 'अपनी' से जगह के स्त्रीलिंग होने और 'ए' से रास्ते (रास्ता) के पुलिंग होने का पता चलता है।

32) 'झुमका गिरा रे बरेली के बाजार में' में 'गिरा' झुमके को पुलिंग साबित कर रहा है।

33) 'तेरा ग़म अगर न होता' में 'तेरा' ग़म को पुलिंग साबित कर रहा है।

34) 'बच्चे मन के सच्चे सबकी आँखों के तारे' में 'सबकी' से आँखों के स्त्रीलिंग होने का और 'के' से तारे (तारा) के पुलिंग होने का पता चलता है।

35) 'लो बन गया नसीब' में 'गया' से नसीब के पुलिंग होने का पता चलता है।

36) 'गाता रहे मेरा दिल' या 'ये मेरा दिल प्यार का दीवाना' में 'गाता', 'मेरा', 'रहे' आदि दिल को पुलिंग साबित कर रहे हैं।

37) 'मत कहो आकाश में कोहरा घना है, यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है' एक कविता का अंश है। इसमें 'घना' से कोहरा के पुलिंग होने का और 'की' से आलोचना के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

38) 'क्षमा शोभती उस भुजंग को' में 'शोभती' से यह पता चलता है कि क्षमा स्त्रीलिंग है।

39) 'अति का भला न बोलना' में 'भला' से बोलना के पुलिंग होने का पता चलता है।

40) 'जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है' में 'छाता' नाश को और 'जाता' विवेक को पुलिंग साबित करते हैं।

41) 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' में 'ऊँचा' और 'हमारा' झंडा को पुलिंग साबित करते हैं।

42) 'लहरा लो तिरंगा प्यारा' में 'प्यारा' तिरंगा को पुलिंग साबित कर रहा है।

43) 'वीरों ने हैं प्राण गँवाए' में 'गँवाए' से प्राण के पुलिंग होने का पता तो चलता ही है, यह भी पता चलता है कि प्राण बहुवचन है।

44) 'तेरे होंठों के दो फूल प्यारे-प्यारे' में 'तेरे' से होंठ के पुलिंग और बहुवचन होने का पता चलता है। 'के' से यह भी पता चलता है कि 'फूल' पुलिंग है और फूल का बहुवचन फूल ही है।

45) 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' में 'फोड़ता' चना को पुलिंग साबित करता है।

46) 'चोर की दाढ़ी में तिनका' में 'की' दाढ़ी को स्त्रीलिंग बता रहा है।

47) 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' में 'जिसकी' और 'उसकी' क्रमशः लाठी और भैंस को स्त्रीलिंग बता रहे हैं।

48) 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद' में 'का' स्वाद को पुलिंग साबित कर रहा है।

49) 'रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई' में 'गई' रस्सी और ऐंठन को स्त्रीलिंग बता रहा है।

50) 'ऊँची दुकान फीका पकवान' में 'ऊँची' दुकान को स्त्रीलिंग और 'फीका' पकवान को पुलिंग बता रहे हैं।

51) 'घर का जोगी जोगड़ा' के 'का' से जोगी के पुलिंग होने का पता चलता है।

52) 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी' में 'रहेगा' बाँस को पुलिंग और 'बजेगी' बाँसुरी को स्त्रीलिंग बता रहे हैं।

53) 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' का 'टेढ़ा' आँगन को पुलिंग साबित कर रहा है।

54) 'चण्डूखाने की गप' के 'की' से गप के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

55) 'किसी', 'कोई', 'जो', 'कुछ', 'क्या' आदि जबतक किसी शब्द (जैसे लड़के, लोग, लड़की, चीज़ आदि) के साथ नहीं होते, पुलिंग माने जाते हैं। 'कोई कहता है, कोई छुपाता है' से यह स्पष्ट हो सकता है। 'कोई कहती है' नहीं कहा जाता। 'क्या हो रहा है' को 'क्या हो रही है' नहीं लिख या बोल सकते, क्योंकि 'क्या' पुलिंग है।

56) 'सुहाना सफ़र और ये मौसम हसीं' में 'सुहाना' सफ़र को पुलिंग साबित कर रहा है।

57) 'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' में 'की' तमन्ना को स्त्रीलिंग बता रहा है।

58) हमें मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के खुश रखने को ग़ालिब ये ख़याल अच्छा है।

यह ग़ालिब का मशहूर शेर है। इसमें 'की' से हक़ीक़त के स्त्रीलिंग और 'अच्छा' से ख़याल के पुलिंग होने का पता चलता है।

59) कुछ करो फ़िक्र मुझ दीवाने की
धूम है फिर बहार आने की।

मीर के इस शेर में 'की' से फ़िक्र और 'धूम' के स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।

60) ग़र चिरागों की हिफ़ाजत फिर उन्हें सौंपी गई
रौशनी मर जाएगी, खाली धुआँ रह जाएगा।

नीरज के इस शेर में 'की' या 'गई' से हिफ़ाजत स्त्रीलिंग है, यह पता चलता है। 'जाएगी' से रौशनी के स्त्रीलिंग होने का और 'जाएगा' से धुआँ के पुलिंग होने का पता भी इस शेर से चलता है।

अच्छी और शुद्ध छपाई की किताबों को पढ़ते रहना ही लिंग विषयक जानकारी को बढ़ाने का अन्तिम और ज़रूरी उपाय है।

नोट

'मेहबूब', 'सनम' आदि शब्द जो कि पुल्लिंग हैं, को कई गीतों में स्त्री-वाचक बनाकर (यानि प्रेमिका के लिए) इस्तेमाल किया गया है। पूरी उर्दू-शायरी भी इस तरह के उदाहरणों से भरी पड़ी है।

## अध्याय- 56 (ङ)

### शब्दों के लिंग

इस भाग में हम उन शब्दों के लिंग की जानकारी दे रहे हैं, जो दैनिक जीवन से जुड़े हैं, जैसे अन्न या भोजन से सम्बन्धित शब्द, इमारतें और उनके अंग, औजार या यन्त्र, आभूषण, पहनने या ओढ़ने के वस्त्र आदि से जुड़े शब्द आदि।

अन्न या भोजन से सम्बन्धित पुलिंग शब्द हैं- अचार, आटा, कहवा, खोआ (खोया), गेहूँ, घी, चना, चावल, चिवड़ा (चिड़वा, चिउड़ा या चूड़ा), चोकर, छेना, जलपान, जौ, जूस, तिल, तेल, दही, दूध, धान, पनीर, बाजरा, भात, भुट्टा, भोज, मट्ठा, मक्खन, माँड़, मांस, मुरब्बा, मूँग, मैदा, लावा, शरबत आदि। कढ़ी, चटनी, चपाती, चाय, चीनी, जई, तरकारी, दाल, पावरोटी, बर्फ, मकई, मलाई, मिठाई, मिसरी (मिस्री), रेंडी, रोटी, शक्कर, लाई, शराब, सरसों आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं।

मसालों और औषधियों आदि से सम्बन्धित अदरक, कत्था (खैर), कपूर, केसर, खमीर, चंदन, जायफल, जीरा, तूतिया, तेजपात (तेजपत्ता), नमक, मिर्चा, लवँग, लोबान, शोरा, संखिया, साबूदाना, सिरका, सोहागा आदि शब्द पुलिंग हैं। अजवाइन, अफीम, इलायची, कस्तूरी, खड़िया, तुलसी, दालचीनी, फिटकिरी, मेथी, सनाय, सुपारी, सोंठ, सौंफ, हल्दी, हर्र, हींग आदि स्त्रीलिंग हैं।

फल, फूल, वृक्ष और उनके अवयवों से सम्बन्धित शब्दों में अंकुर, अंगूर, अंजीर, अखरोट, अनार, अमरूद, आम, आलू, ककड़ी, कटहल, कद्दू, कमल, काँटा, काजू, काठ, कुुकुरमुत्ता, केला, खरबूजा, खीरा, गन्ना, गुलाब, गुलाबजामुन, गूदा, गेंदा, चम्पा, चिड़चिड़ा, चुकन्दर, चीड़, छिलका, जामुन, जैतून, तना, तम्बाकू, तरबूज, धड़, धतूरा, नरगिस, नारियल, नीबू, नील, पटुआ, पपीता, पराग, परागकेशर, पान, पालक, पिस्ता, पुदीना, पोस्ता, पौधा, प्याज, फूल, बबूल, बरगद, बाँस, बादाम, बीज, बेंत, बैंगन, भोजपत्र, महोगनी, मुनक्का, रस, रेशा, लहसुन, शरीफा, शहतूत, शकरकन्द, शफ़तालू (सतालू), सन, सागवान, सेब, सेमल आदि पुलिंग हैं। इमली, ककड़ी, कली, किशमिश, केतकी, खूबानी, गाजर, गुठली, गुलमेहंदी, घास, चमेली, छाल, जटा, जड़, डाल, धनिया, नस, नारंगी, नाशपाती, पत्ती, फूलगोभी, बन्दगोभी, भिंडी, मिरची, मूँगफली, मूली, मेहंदी, रुई, लता आदि स्त्रीलिंग हैं।

गृहस्थी की वस्तुओं में कनस्तर, खरल, गगरा, गिलास, चकला, चिमटा, चूल्हा, छाता, जाँता, डिब्बा, ढपना (ढक्कन), तकिया, तंदूर, तराजू, तार, ताला, दर्पण, पलँग, फानूस, बक्स (बक्सा), बर्तन, ब्रुश, बोरा, रस्सा, लोटा, लोढ़ा, संदूक, सरौता, साबुन, हुक्का आदि पुलिंग हैं। अलमारी, कंघी, किश्ती, कीप (टीप), ओखली, चटाई, चलनी (छलनी), चादर, चाभी (चाबी या ताली), चारपाई, चिमनी, छड़ी, जाली, टोकरी, ताली, तिजोरी, तिपाई, तोशक, थाली, दँतखोदनी, दवात, दियासलाई, बत्ती, बाल्टी, बेंच, बोतल, मसनद, मोमबत्ती, रस्सी, शीशी, सलाई, सिकड़ी, सुराही, सूई, सँड़सी आदि स्त्रीलिंग हैं।

औजारों में करघा, कोल्हू, छुरा, पेंच (पेच), पेचकस, फरसा, फावड़ा, बरमा, बसूला, उत्तोलक, रन्दा, लंगर, साहुल, हल आदि पुलिंग हैं और आरी, करनी, कुल्हाड़ी, कैंची, छेनी (टाँकी), निहाई, पतवार, फन्नी, बंसी, भाथी, रुखानी, रेती, हथौड़ी आदि स्त्रीलिंग हैं।

पहनने और ओढ़ने से जुड़े अँगरखा, अँगोछा, अस्तर, ऊन, कपड़ा, कमरबंद, कम्बल, किरमिच, कोट, गद्दा, गुलूबन्द, घूँघट, निक्कर, ताग़ा, तौलिया, दुपट्टा, दुशाला, पतलून, फलालीन, बटन, मखमल, मुरेठा, मोजा, रफू, रेशम, लबादा, लहँगा, साफा, सूत आदि शब्द पुलिंग हैं। अँगिया, आस्तीन, कमीज, चादर, छींट, टोपी, फ़तूही, मलमल, रुई, साटन आदि स्त्रीलिंग हैं।

रत्नों या आभूषणों में कंगन, कड़ा, जवाहिरात, तमगा (मेडल), नीलम, पन्ना, पुखराज, बाजू, मुकुट, मूँगा, मोती, लटकन (लॉकेट), हार, हीरा आदि पुलिंग हैं, लेकिन अँगूठी, चूड़ी, नथुनी, पेटी (बेल्ट), पैंजनी, माला, सिकड़ी, हँसुली आदि स्त्रीलिंग हैं।

खनिजों, धातुओं, मिश्रधातुओं आदि में अभ्रक, काँसा, कोयला, चकमक, जस्ता, ताँबा, तूतिया, पारा, पीतल, राँगा (टिन), संखिया, संगमरमर, सिंदूर, सीसा, सुरमा, लोहा आदि पुलिंग हैं और खड़िया, खान, गंधक, चाँदी, शिलाजीत आदि स्त्रीलिंग हैं।

बाजों (वाद्य) में घंटा, नगाड़ा, पियानो, बिगुल, सितार, हारमोनियम आदि पुलिंग हैं, लेकिन डुगडुगी, तुरही, दुंदभि, बाँसुरी, बेला, सीटी आदि स्त्रीलिंग हैं।

लिखने-पढ़ने या दफ्तर या स्टेशनरी से जुड़े अखबार, अड्डा, कलमतराश, काग, कागज, कार्ड, कोश, खाता, तार, नक्शा, परकाल (परकार), पोस्टकार्ड, फ़ीता, रबर, रूलर, लिफाफा, सरेस, होल्डर जैसे शब्द पुलिंग हैं। आरामकुर्सी, आलपीन, कलम, खड़िया, गड्डी, गोंद, चिमटी, चोंच, चौकी, तिपाई, निब, पेंसिल, फ़ाइल, मुहर, रोशनाई आदि स्त्रीलिंग हैं।

इमारतें और उनके अंगों से जुड़े आँगन, अस्पताल, कमरा, कारखाना, किला, खलिहान (खलियान), गलियारा, गुम्बज, चबूतरा, चूना, छप्पर, छात्रावास, झरोखा, डंडा, तहखाना, दरवाजा, दफ्तर, नाबदान, पत्थर, परनाला, पुस्तकालय, फर्श, फव्वारा, बँगला, बरामदा, बूचड़खाना, मकान, मठ, मंदिर, महल, रसोईघर, विद्यालय, शहतीर, होटल आदि शब्द पुलिंग हैं। अँगीठी, इमारत, ईंट, खपरैल, खिड़की, खूँटी, गली, चौखट, छत, जाली, जंजीर, झोंपड़ी, ड्योढ़ी, दहलीज, धरन (शहतीर), नींव, मस्जिद, मीनार, मुँडेर, मेहराब, रंगभूमि, सीढ़ी आदि स्त्रीलिंग हैं।

जीव-जंतुओं से सम्बन्धित पुलिंग शब्द अंडा, अजगर, उल्लू, ऊँट, कछुआ, कठफोड़वा, कबूतर, केंकड़ा, केंचुआ, कौआ, खच्चर, खटमल, खरगोश, खुर, गरुड़, गिद्ध, गिरगिट, गैंडा, गोजर, गोबरैला, घड़ियाल, घोंघा, चमगादड़, चीता, चीलर, छछूँदर, जुगनू, झींगुर, टिड्डा, ढील, तीतर, तेंदुआ, नीलकंठ, नेवला, पंख, पंजा, पक्षी, पर, फतिंगा, फन, बया, बाज, बिच्छू, भालू, भेड़िया, मगर, मच्छर, मकड़ा, मुर्गा, मृग, मेढक, लंगूर, लकड़बग्घा, शंख, शुतुरमुर्ग, साँड़, सारस, सियार, सींग, सुग्गा आदि हैं। अबाबील, केंचुली, कोयल, गाय, गिलहरी, गौरैया, चिड़िया, चील, चींटी, छिपकिली, जूँ, जोंक, तितली, दीमक, दुम, बटेर, बर्र, बुलबुल, मक्खी, मकड़ी, मधुमक्खी, लीख, लोमड़ी, साही आदि स्त्रीलिंग हैं। सीप दोनों लिंगों में हो सकता है।

शरीर के अंग, अवस्था और बीमारियों से जुड़े पुलिंग शब्द हैं- अम्लपित्त, अतिसार, ओठ, कंधा, कद, कफ, कान, कृमि, कोढ़, खसरा, गर्भ, गर्भाशय, गला, गाल, गुर्दा, घाव, घुटना, चक्कर, चमड़ा, चूतड़, चेहरा, जबड़ा, जिगर, जुकाम, जूड़ा, जोड़, ज्वर, तलवा, थूक, थूथुन, दमा, दर्द, दस्त, दाँत, दिमाग़, नख, नाखून, नथुना, नासूर, पसीना, पित्त, पेट, पेड़ू, पैर, पाँव, प्रदर, फेफड़ा, फोड़ा, बलगम, बहुमूत्र, बाल, बुखार, भगंदर, भेजा, मसूड़ा, मस्सा, मुख, मुहासा, मूत्र, मूत्राशय, मोतियाबिंद, रोग, रोवाँ, लकवा, ललाट, लहू, लिंग, शिश्न, शीतज्वर, स्वर, हृदय, हैजा आदि। अनामिका, अंगुली, आँख, उबासी, आँत, एड़ी, कँखौरी, कनपटी, कमर, कलाई, काँख, कोहनी, क़ै (कय), खाँसी, खोपड़ी, गर्दन, गर्मी, गिल्टी, गोद, चोट, चोटी, छाती, छींक, जँभाई, जाँघ, जीभ, डकार, ठुड्डी, दाढ़, दाढ़ी, दाद, दूरदृष्टि, धमनी, नली, नस, नाक, नाभि, नींद, पथरी, पलक, पसली, पीब, पेचिश, प्यास, पोर, प्लीहा, पीठ, पुतली, पेशी, फुंसी, बदहजमी, बवासीर, बाँह, भग, भूख, भौंह, मन्दाग्नि, मरोड़, महामारी, मिरगी, मुट्ठी, मूँछ, योनि, लार, विष्ठा, राजयक्ष्मा, शिरा, शीतला, साँस, सूजन, हड्डी, हथेली, हिचकी आदि स्त्रीलिंग हैं।

अतिथि, अध्यापक, अभियंता, गुरु, ग्राहक, चेला, जमींदार, दामाद, दोस्त, दुश्मन, मित्र, शत्रु, साईस, सम्पादक, संगतराश, सुनार, सौदागर, हज्जाम, कसाई, कारीगर, परीक्षक, किसान, कुँजड़ा, कुली, कोचवान, खजानची (खजाँची), गाड़ीवान, जर्राह, जुलाहा, जिल्दसाज, जौहरी, ठेकेदार, तांत्रिक, दर्जी, दलाल, दुकानदार, धुनिया, धोबी, नानबाई, पहरेदार, प्रकाशक, बढ़ई, भंडारी, माली, मल्लाह, भिक्षुक, मुनीम, मुंशी, मेहतर, मोची, मोदी, राजगीर, रंगरेज, रंगसाज, लिपिक, वकील, लोहार, वैद्य, शिक्षक,

रोगी, व्यापारी, मुवक्किल, यार, यजमान, वारिस, विद्यार्थी, परीक्षक, मेज़बान (अतिथि सेवक) आदि पेशे, जाति या सम्बन्धी आदि के सूचक शब्द पुलिंग हैं। दाई, नर्स आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं। ईकार से समाप्त होने वाले शब्द पेशे या जाति के सूचक हों, तो प्रायः पुलिंग होते हैं। प्रेमी, मित्र, दुश्मन, दोस्त, डॉक्टर, अधिकारी आदि का प्रयोग कर्ता के अनुसार दोनों ही लिंगों में हो रहा है।

नोट

'कंघी' स्त्रीलिंग, 'कंघा' पुल्लिंग, 'पेटी' स्त्रीलिंग व समानार्थी 'बक्सा' पुल्लिंग है। 'लौंग' हमारी तरफ़ उभयलिंगी है। कोई 'खा ली है' कहता है तो कोई कहता है कि 'लौंग खा लिया है' या 'काढ़े में लौंग डाला है तो कोई कहता है कि 'डाली है'।

व्यापारी, मुवक्किल, यार, यजमान, वारिस, विद्यार्थी, मेज़बान, डॉक्टर, अधिकारी, मित्र, दोस्त - इन शब्दों को उभयलिंगी मान सकते हैं। प्रचिलित मान्यता के अनुसार ये सभी पुरुषोचित सम्बोधन हैं किन्तु स्त्री के लिए भी इन संबोधनों का स्वरूप नहीं बदलना पड़ता है।

## अध्याय-56 (च)

### शब्दों के लिंग

यह भाग लिंग विषयक चर्चा का अन्तिम भाग है। इसमें हम अंग्रेज़ी के उन शब्दों पर चर्चा करेंगे, जिनका प्रयोग हिन्दी में बहुत ज़्यादा होने लगा है। बेचारा 'विद्यालय' 'स्कूल' से विस्थापित हो गया! अब गली गली, गाँव गाँव स्कूल ही है, विद्यालय शब्दकोश में चल रहे हैं। इस भाग में हम विशेष रूप से तीसरे लिंग की चर्चा करने जा रहे हैं, जिन्हें हम हिन्दी पट्टी में हिजड़ा या किन्नर कहते हैं। कर्ता पुलिंग और स्त्रीलिंग हो सकता है, तो तीसरा लिंग भी हो सकता है। हम इन्हें ट्रांसजेंडर शब्द से भी जानने लगे हैं। राहुल जाता है और गीता जाती है, लेकिन इस तीसरे लिंग के आदमी के लिए हमारी भाषाएँ मौन हैं! हम इनके लिए कुछ सुझाव देने का दुस्साहस यहाँ करने जा रहे हैं।

पहले अंग्रेज़ी शब्दों के लिंग पर आते हैं। अर्थ की समानता के आधार पर अंग्रेज़ी के कई शब्दों के लिए उनके हिन्दी पर्याय के लिंग ही स्वीकार किए गए हैं। अंक, जूता, दीया, व्याख्यान, चालान, अँगरखा आदि पुलिंग शब्दों के अंग्रेज़ी पर्याय नम्बर, बूट, लैम्प, लेक्चर, वारंट, कोट आदि भी पुलिंग माने जाते हैं। दक्षिणा, सभा, मंडली, साँकल आदि स्त्रीलिंग शब्दों के अंग्रेज़ी पर्याय फीस, मीटिंग, कम्पनी, चेन आदि भी स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

अकार, आकार तथा ओकार से समाप्त होने वाले अंग्रेज़ी के शब्द हिन्दी में आम तौर पर पुलिंग माने जाते हैं, जैसे अल्कोहल, अल्टिमेटम, ऑर्डर, ऑपरेशन, ऑयल, ऑफिस, इंजन, इंजीनियर, एक्सप्रेस, कमीशन, कार्ड, कार्बन, कारपोरेशन, कॉलर, क्रिकेट, केन, कैम्प, कैरम, कैलेंडर, कैंसर, कोट, कोर्ट, क्लब, क्वार्टर, गजट, ग्रामोफोन, गैलन, ग्लास, चॉकलेट, टाइपराइटर, टायफायड, टायर, ट्रांजिस्टर, टिकट, ट्यूब, टेबुल, टेलीप्रिंटर, टेलीविजन, टेलीफोन, ड्राम, डायनामाइट, थर्मस (थरमस), नाइट्रोजन, नोट, परमिट, पाउडर, प्लेग, प्लेट, प्लेटिनम, प्लेटफॉर्म, फॉर्म, फ्रॉक, फुटपाथ, फुटबॉल, फुलपैंट, फेनाइल (फिनाइल), फैशन, फ्लैट, बजट, ब्रश, ब्रॉडकास्ट, बाथरूम, बिल, बैंक, बैडमिंटन, बोनस, ब्लेड, ब्लैडर, ब्लॉक, ब्लॉग, मलेरिया, मिनट, मैच, रबर, रॉकेट, राशन, रिकॉर्ड, रिबन, रेजर, लाइसेंस, लिंटर, लिपस्टिक, लीटर, लेजर, सार्जेंट, सिगनल, सिंडिकेट, सीमेंट, सेंट, सेंसर, सेकेंड, सैलून, स्कूल, स्कूटर, स्टाम्प, स्टीमर, स्टील, स्टेशन, हाइड्रोजन, हाइफन, हारमोनियम, हॉल, हॉस्पिटल, हेलिकॉप्टर, हैंगर, कॉलेज, कॉलबेल, काउंटर, केस, क्लिनिक, चार्टर, टाइम, ट्रैक्टर, टेंडर, टैक्स, डांस, पासपोर्ट, पार्लियामेंट, पेपर, फ्लोर, फ्रेम, फैन, बोर्ड, बल्ब, बम, रूल, वार्ड, वाउचर, स्टेज, स्टोव, स्विच, लेटर, हेयर, मनिऑर्डर, हैंडिल, मीटर, बॉल, पेन, रूम, रूल, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, मार्च, अगस्त, सितम्बर, एक्सरे, एडमिशन, फर्नीचर, ओवरटाइम, इनफ्लुएंजा, कोटा, कॉलरा, ड्रामा, डेल्टा, निमोनिया, कैमरा, सोडा, प्रोपेगेंडा, सिनेमा, फाइलेरिया, हॉर्निया, हिस्टीरिया, जीरो, डायनेमो, पियानो, मेमो, मोटो, रेडियो, सैंडो, स्टूडियो, हीरो, स्नो आदि। इसके अपवाद अपील, कार, कांग्रेस, कान्फ्रेंस, कौंसिल, गैस, जीप, टीम, ट्रेन, नोटिस, पॉलिश, पिक्चर, पेन, पुलिस, पेंशन, पेंसिल, फ़ाइल, फ़िल्म, फीस, मशीन, मिल, मोटर, बस, बेंच, बोतल, रिपोर्ट, रेल, लालटेन, वारनिंग, लीग, साइकिल, सिनेट, शर्ट, शूटिंग, वायलिन, क्लिप, लाइट, लाइन आदि हैं।

ईकार से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः स्त्रीलिंग हैं, जैसे एलोपैथी, एसेम्बली, कमिटी, कॉपी, केतली, गारंटी, गैलरी, चिमनी, केमेस्ट्री, जनवरी, मई, जुलाई, जरसी, ज्योमेट्री, टाई, ट्रॉली, ट्रेजरी, ट्रेजेडी, कॉमेडी, डायरी, डिग्री, डेमोक्रेली, डिप्लोमेसी, डिसेंट्री, पार्टी, पॉलिसी, पेनाल्टी, फिलासफी, फैकल्टी, फैक्टरी, बायोलॉजी, बैटरी, म्युनिसिपैल्टी, यूनिवर्सिटी, रैली, लॉटरी, लेबोरेटरी, हॉकी, होमियोपैथी, हिस्ट्री, लाइब्रेरी, मेमोरी, डिक्शनरी, थियरी (थ्योरी) आदि। अर्दली, जूरी, ट्रस्टी, संतरी, सेक्रेटरी आदि पुलिंग शब्द हैं।

क्लास, बॉल आदि पुलिंग शब्द हैं, लेकिन इनका प्रयोग स्त्रीलिंग में ही हो रहा है। गेंद या मेज़ के स्त्रीलिंग होने से बॉल या टेबुल को स्त्रीलिंग ही मान लिया जाता है। टिकट का प्रयोग तो दोनों ही लिंगों में हो रहा है। सेक्रेटरी, ट्रस्टी वगैरह शब्द रोज़गार में स्त्रियों के उतरने की वजह से दोनों लिंगों में प्रयोग हो सकते हैं। पोस्ट शब्द स्त्रीलिंग है, चाहे वह पद या ओहदे के अर्थ में रहे या डाक के अर्थ में! फ़ेसबुक जैसी जगह पर भी पोस्ट स्त्रीलिंग ही है। फ़ोटो शब्द पुलिंग है, लेकिन इंटरनेट और इसके बाहर की दुनिया में इसे स्त्रीलिंग बना दिया गया है। मेल रेल से सम्बन्धित शब्द है, यह स्त्रीलिंग है। ईमेल के अर्थ में मेल पुलिंग भी बन गया है।

अब हम तीसरे लिंग के लिए क्रियारूपों का प्रस्ताव रखना चाहते हैं। परम्परा से पुलिंग क्रिया में के अन्त में आकार और स्त्रीलिंग क्रिया के अन्त में ईकार जोड़ते हैं, जैसे रमण गया था, वह जाएगा, सूरज जा रहा है, चुका है, होगा, जाता है आदि पुलिंग का बोध कराते हैं और जाती, चुकी, गई, थी, होगी, रही आदि स्त्रीलिंग का। तीन दीर्घ मात्राओं में से आ और ई का प्रयोग हो रहा है। एक दीर्घ ऊ बचता है, तो हम कहना चाहते हैं कि तीसरे लिंग (यह सिर्फ मानव के लिए होना चाहिए; वस्तुओं और अन्य शब्दों के लिए दो लिंग ही रहने देते हैं।) के लिए ऊकार का प्रयोग हो सकता है। हम यहाँ सभी कालों में, दोनों वचनों में हर तरह के वाक्य से तीसरे लिंग के लिए क्रिया रूपों का उदाहरण रख रहे हैं। हम कोई वैयाकरण या भाषाविद् होने का दावा नहीं कर रहे, लेकिन तीसरे लिंग के लिए इस सदी में भी हम कोई भाषाई इंतजाम न करें, यह ठीक नहीं लगता। हम आकार और ईकार के स्थान पर ऊकार का प्रयोग करेंगे। जहाँ पुलिंग क्रिया एकार से समाप्त होगी, हम वहाँ भी ऊकार का प्रयोग करेंगे। हैं, हूँ जैसे प्रयोग ज्यों के त्यों रहेंगे। हिन्दी में पुलिंग बहुवचन में एकार का प्रयोग होता है, जैसे जाते हैं, गए, आए थे, होंगे, करेंगे, रहे हैं, थे आदि। हम तीसरे लिंग के लिए एकार का प्रयोग न कर, ऊकार का ही प्रयोग करने का प्रस्ताव रख रहे हैं। अंग्रेज़ी में ही और शी के बाद फी (Phee) का प्रयोग तीसरे लिंग के लिए किया जा सकता है। फिम (phim), फिज (pher), फर्स (phers) का प्रयोग अंग्रेज़ी के थर्ड पर्सन सिंगुलर के संगत शब्दों क्रमशः him या her, his या her और his या hers के अर्थ में तीसरे लिंग के लिए किया जा सकता है।

ऊकार के प्रयोग से बने क्रिया रूपों के उदाहरण इस प्रकार हैं -

1) वह जातू है। वे दोनों जातू हैं। रोमा, सामी और गीता जातू हैं। हमने जाता और जाती के क्रम में जातू का प्रयोग किया है। मैं जातू हूँ। हम जातू हैं। तू जातू है। आप जातू हैं। तुम जातू हो। तुम लोग जातू हो। हैं का प्रयोग जारी रखा गया है।

2) मैं पढ़ रहू हूँ। हम पढ़ रहू हैं। वह पढ़ रहू है। वे तीनों पढ़ रहू हैं। तुम पढ़ रहू हो। आप पढ़ रहू हैं। तू पढ़ रहू है।

3) मैं खातू हूँगू (होऊँगू)। हम खातू होंगू। वह खातू होगू। वे सब खातू होंगू। तुम खातू होगू। आप सब खातू होंगू। रोमा जा रहू होगू। रोमा, सोमा और पानो जा रहू होंगू। मैं जा रहू हूँगू। हम सब जा रहू होंगू। वह जा रहू होगू। तुम जा रहू होगू। तुमलोग जा रहू होगू। वे तीनों जा रहू होंगू। (होऊँगा, हूँगा आदि से मिलाकर समझें।)

4) मैंने पढ़ू। (मैं कहूँ, मैं सुनूँ आदि की तरह पढ़ू में चंद्रबिन्दु नहीं है) हम सबने कहू। तुमने कहू। तुम सबने कहू। उसने कहू। उनलोगों ने कहू। आपने कहू। आपलोगों ने कहू।

5) मैंने पढ़ू है। हम सबने देखू है। मैंने कई उपन्यास पढ़े हैं। तुमने पढ़ू है। तुमने किताब पढ़ी है। उन्होंने यह किया है।

6) मैंने पढ़ू थू। हम सबने पढ़ू थू। तुमने पढ़ू थू। तुम सबने पढ़ू थू। उनलोगों ने पढ़ू थू।

7) मैं जा चुकू हूँ। हम सब जा चुकू हैं। वह जा चुकू है। वे सब जा चुकू हैं। मैं जा चुकू थू। हमसब जा चुकू थू। वह तो कब का आ चुकू। रात को ही वह गाने लगू। वह नहीं आ सकू। हम सब नहीं आ सकू। पाँचों गाने लगू।

8) रोमा वहाँ पढ़ने गऊ थू। रोमा, पोना और तानी ने गाने सुनाऊ थू। हम सब वहाँ फँसू थू। आप निकलू थू।

(हमने गाने सुनाए थे, आप निकले थे आदम से मिलाकर समझें।)

9) वह पढ़तू थू। वे पढ़तू थू। मैं पढ़तू थू। हम सब पढ़तू थू। तू पढ़तू थू। तुम सब पढ़तू थू। आप जातू थू।

(वहा पढ़ता था, वे पढ़ते थे आदि से मिलाकर देखें।)

10) वह खा रहू थू। वे खा रहू थू। तुम खा रहू थू। तुम सब खा रहू थू। मैं खा रहू थू। हम नहीं खा रहू थू।

(वह खा रहा था, वे खा रहे थे आदि से मिलाकर देखें। थे या थीं की जगह थूँ का विचार त्याग दिया क्योंकि चंद्रबिन्दु का प्रयोग पहले से स्त्रीलिंग में थीं, रहीं, सकीं, लगीं, गईं आदि में होता है।)

11) उसने पढ़ू होगू। तुमने पढ़ू होगू। वह गऊ होगू। वे गऊ होंगू। मैं गऊ होगा। हमसब गऊ होंगे। (गऊ गया, गए और गई के स्थान पर है) आग गऊ होंगे। (आदरसूचक आप)

(उसने पढ़ा होगा, वे गए होंगे आदि से मिलाकर देखें। बहुवचन का बोध कराने वाले होंगू में हो के बाद बिन्दी को स्वीकार करने का कारण यह है कि स्त्रीलिंग होंगी और पुलिंग होंग, दोनों में हो के बाद बिन्दी होती है।)

12) अगर मैं पढ़तू! अगर हम पढ़तू! तुम पढ़तू तो! तू पढ़तू तो! तुम लोग सुनतू तो! वह आतू तो! वे लोग आतू तो! आप कहतू तो! आपसब कहतू तो हम आ जाते!

(अगर वह आता, तुम कहते तो आदि से मिलाकर देखें।)

13) मैं जाऊँगू। हम जाऊँगू। तुम जाओगू। तुम सब जाओगू! वह जाएगू। वे लोग जाएँगू। आप लोग कहेंगू। तू जाएगू।

(मैं जाऊँगा, तुम जाओगे, वे लोग जाएँगे आदि से मिलाकर देखें।)

14) मैं पढ़ूँ, हम पढ़ें, तू पढ़े, तुम पढ़ो, वह पढ़े, वे पढ़ें जैसे वाक्य पुलिंग और स्त्रीलिंग दोनों के लिए हैं, तो यहाँ भी स्वीकार कर लेने चाहिए।

15) पढ़, खाऊँ, खाएँ, खाओ, जाए, गाए, खाय, जाय, खावें, जा, खा जैसी क्रियाएँ सभी लिंगों के लिए हैं।

भोजपुरी में पहले से ही आकार, ईकार ओर ऊकार तीनों प्रयोग में हैं क्रिया के मामले में! उसमें अलग व्यवस्था हो सकती है।

## अध्याय- 57

मध्यप्रदेश में व्यापम घोटाले ने दर्जनों लोगों को मौत की नींद सुला दी। व्याप मंडल को व्यापमं, व्यापम जैसे कई नामों से हिन्दी में लिखा और जाना गया। व्यावसायिक परीक्षा मंडल को संक्षेप में क्या कहा जाय? पीएचडी को हिन्दी में दर्शन महाविज्ञ कहा जाता है। क्या इसे 'दम' कह सकते हैं? हिन्दी साहित्य को हिंसा, भूटानी साहित्य को भूसा कह सकता है कोई? लोगों के लिए यह हास्य का सबब (कारण) बन जाएगा! हम इस भाग में हिन्दी में शब्दों या पदों के संक्षिप्त रूप पर चर्चा करेंगे। साथ ही ये और ए तथा यी और ई के प्रयोग की भी चर्चा करेंगे।

अंग्रेज़ी का कुछ असर हिन्दी पर इस तरह पड़ा है कि हम उससे मुक्त होने की बस कल्पना ही कर सकते हैं। इसमें कुछ बुरा भी नहीं है। भाषाएँ जब सम्पर्क में आती हैं, तो एक दूसरे पर असर डालती ही हैं। हाँ, यह ज़रूर हुआ कि हिन्दी ने अंग्रेज़ी पर बहुत कम असर डाला। बात हम शब्दों के संक्षिप्त रूप की करें, तो हिन्दी में यह सीधे अंग्रेज़ी से आया है। हम भारतीयों की पुरानी बीमारी है कि हम हर क्षेत्र में भारत को पहला घोषित करते रहते हैं। संक्षिप्त रूपों को भी संस्कृत सूत्रों में खोजने वाले विद्वान् यहाँ हुए हैं। ऐसा नहीं है कि बीमार आदमी सब कुछ ग़लत ही कहता है! संक्षिप्तीकरण की परम्परा संस्कृत में उस रूप में तो बिलकुल नहीं रही है, जो अंग्रेज़ी में प्रचलित है!

अंग्रेज़ी के चलते नामों को रोमन में लिखकर उनके प्रत्येक भाग के पहले अक्षर को मिलाकर अन्तिम भाग से जोड़कर कहने और लिखने की परम्परा हिन्दी में शुरू हुई। रामचंद्र प्रसाद सिंह को आरसी प्रसाद सिंह या आर सी पी सिंह कहा जा सकता है। राचंप्र सिंह या राचं प्रसाद सिंह या राच प्रसाद सिंह या फिर राचप्र सिंह कहना या लिखना असहज करता है! हिन्दी में गेट, नेट, सेट, फिक्की, सेबी, एड्स, एसोचैम, नाको, सेल, एम्स, कैट, इसरो, सेल, वैट, पैन, सिम, ट्राइ, ट्रिप्स, रडार, सार्क, टाडा, पोटा, पेटा, मीसा, कैग, यूनेस्को आदि शब्द अंग्रेज़ी के शॉर्ट फ़ॉर्म से ज्यों के त्यों लेकर चल रहे हैं! सार्क के लिए दक्षेस जैसे शब्द हिन्दी से लेकर भी चलाए जा रहे हैं। अंग्रेज़ी के शॉर्ट फ़ॉर्म में स्वर वर्ण रहने पर उसे एक स्वतंत्र शब्द की तरह बोलने और लिखने में आसानी होती है, लेकिन व्यंजन से भरे रहने पर पद के हर शब्द के पहले अक्षर को लिखना और बोलना ही सुविधाजनक होता है, जैसे डीएम, यूएसएसआर, जीएसएलवी, एचटीएमएल, बीएसएनएल, जीपीएस, जेआरएफ, पीडब्ल्यूडी, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू, बीबीसी आदि। कई बार स्वर के रहने पर भी पद के हर शब्द का पहला अक्षर मिलाकर बोला जाता है, जैसे यूएसए, यूएस, एनआरआइ, आइएसआइ, एलआइसी, यूके, ओएमआर, ओसीआर, आइएमएफ आदि। अंग्रेज़ी में बड़े अक्षरों से संक्षिप्त रूपों को दिखाते हैं। डॉक्टर के डीआर (Dr.), प्रोफेसर के लिए पीआरओएफ (Prof.) जैसे एक से अधिक अक्षरों का प्रयोग भी अंग्रेज़ी के संक्षिप्त रूप में होता है। हिन्दी में अंग्रेज़ी के संक्षिप्त रूपों की चर्चा का कारण इनका हिन्दी में भी प्रचलित होना है। हमारी सरकारें अपने पाखंड का परिचय मुद्रा, प्रगति, नीति जैसे हिन्दी नामों वाली योजनाओं से भी देती हैं। अंग्रेज़ी और हिन्दी के मिलावटी कचरे के रूप में ही हम इस नौटंकी को देखते हैं। महात्मा गाँधी अंग्रेज़ी में एम के गाँधी और हिन्दी में मो. क. गाँधी नाम से हस्ताक्षर करते रहे। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को हिन्दी पत्रकारिता के जिन्न पीएम और सीएम बना चुके हैं, यह चैनलों पर देखा जा सकता है और अखबारों में भी। नमो, सुमो जैसे शब्द भी चलन में हैं। कई लोग तो पूरे नाम की जगह संक्षिप्त रूप वाले नाम से ही जाने जाते हैं, जैसे ए० पी० जे० अब्दुल कलाम, ए आर रहमान, सी० एफ़० एण्ड्रयूज आदि।

हिन्दी के लिए संक्षिप्त रूप मात्राओं के कारण सहज और सरल नहीं हो पाते! भारतीय रिजर्व बैंक को भारिबै, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) को भाप्रविबो, किसान क्रेडिट कार्ड को किक्रेका, राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) को राकृग्राविबै, विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) को विआक्षे, राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी) को राताविनि, सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) को सशिअ,

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) को राप्रसस, एनसीईआरटी को राशैप्रअप जैसे रूपों को हिन्दी में व्यक्त करना कठिन भी है और बेतुका भी। हर भाषा की अपनी तमीज होती है। हर व्यक्ति के जूते की नाप अलग है। इसी तरह संक्षेपण के लिए हिन्दी बहुत सक्षम और सरल भाषा नहीं है। राजनीतिक दलों के लिए तो यह आसान बन गया, लेकिन अन्य संस्थानों और पदों आदि को व्यक्त करने में सामान्य व्यवहार नहीं बच पाया। राजद, राकांपा, सपा, भाजपा, माकपा, भाकपा, माले, तेदेपा, द्रमुक, लोजपा, बसपा, मनसे जैसे शब्द तो हिन्दी में सहज रहे; लेकिन तृणमूल कांग्रेस के लिए तृका, असम गण परिषद् के अगप, शिव सेना के लिए शिसे आदि नहीं चल पाए। आम आदमी पार्टी के लिए आआपा की जगह अंग्रेज़ी प्रभाव का आप (एएपी) ही चल रहा है। भाजपा के लिए चुनावी रणक्षेत्र में भारतीय जुमला पार्टी का प्रयोग भी किया गया। यह हिन्दी के भाजपा से नहीं, अंग्रेज़ी के बीजेपी से बना है। हिन्दी से बनने पर यह भाजुपा हो जाता! पंडित, डॉक्टर, प्रोफेसर, प्रसाद, कुमार वग़ैरह के लिए पं०, डॉ०, प्रो०, प्र०, कु० आदि चल रहे हैं और सामान्य माने जा सकते हैं। जनेवि (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय) तो चल रहा है, लेकिन क्या विज्ञान स्नातक के लिए विस्ना, कला स्नातक के लिए कस्ना जैसे रूप बीएससी, बीए की तरह चल सकते हैं? हमारी समझ में हिन्दी यह प्रवृत्ति बहुत सीमित मामलों में रखती है और संक्षिप्त रूप अंग्रेज़ी प्रभाव में ही स्वीकार्य और व्यवहार्य हैं।

शब्द के पहले अक्षर के बाद अगर आधा अक्षर हो, तो उसे संक्षिप्त रूप में लिखते समय पहला अक्षर ही लिखना ठीक रहेगा, जैसे मंडल या सेंटी में म या से के बाद ण् है, तो मं या सें लिखना ठीक नहीं रहेगा। इसलिए सेंटीमीटर को सेंमी न कहकर सेमी कहना ही ठीक है। व्यावसायिक परीक्षा मंडल को व्यापमं न कहकर व्यापम कहना और लिखना चाहिए या व्याप मंडल कहना लिखना चाहिए। संगठन, संस्थान आदि के सं की जगह स का ही प्रयोग ठीक रहेगा। शब्दों के अन्त में अनुस्वार का उच्चारण म् होता है, जैसे स्वयं, एवं, अहं आदि में। व्यापमं को इस लिहाज से व्यापमम् पढ़ना होगा, जबकि अन्त में मंडल है। व्यापमण् तो पढ़ नहीं सकते, क्योंकि ण् से कोई शब्द समाप्त होता नहीं! वैसे भी अन्त में आधा अक्षर (हल् वाले वर्ण) संस्कृत के ही शब्दों में हैं, न कि अंग्रेज़ी, हिन्दी, फ़ारसी आदि के शब्दों में।

संक्षिप्त रूप के लिए हर अक्षर (मात्रायुक्त हो, तो मात्रा के साथ, जैसे वि०, डॉ० आदि) के बाद ० (नागरी का शून्य), 0 (ज़ीरो), . (अंग्रेज़ी का फुल स्टॉप), o (अंग्रेज़ी वर्णमाला का छोटा ओ), O (अंग्रेज़ी वर्णमाला का बड़ा ओ) आदि लगाया जाता है। इन संकेतों के बिना भी एक से ज़्यादा शब्दों वाले पद के संक्षिप्त रूप की परंपरा है, जैसे जनेवि। हिन्दी में नागरी के शून्य का प्रयोग ही संक्षिप्त रूपों में करना चाहिए, न कि ओ, ज़ीरो या फुल स्टॉप का, जैसे डॉ0, डॉ., डॉo, डॉO आदि की जगह डॉ० का। यहाँ '०' को ठीक से पहचाना जा सकता है। वैसे हिन्दी में अब '.' का प्रयोग जमकर हो रहा है, इसे भी स्वीकार कर सकते हैं। कई प्रकाशन समूह, सॉफ्टवेयर और व्यक्ति हिन्दी के पूर्ण विराम (पाई) की जगह फुल स्टॉप का प्रयोग कर रहे हैं, इसलिए हम नागरी के शून्य की ही अनुशंसा करेंगे, फुल स्टॉप की नहीं।

अब हम यी या ई और ये या ए के मसले पर आते हैं।

सामान्यतः य का प्रयोग शब्द के बीच में होना चाहिए, न कि इ या ई का, जैसे राजनयिक, स्थायित्व, दायित्व आदि को राजनइक, स्थाइत्व, दाइत्व आदि नहीं लिखना चाहिए। दवाई, दिखाई, ईसा, मई, हलवाई, बनाई, कसाई, खाई, सुनवाई, पुरवाई, ईद, ईंट, मिठाई, कोई, सच्चाई, पढाई आदि को दवायी, यीसा, मयी, हलवायी, कसायी, यीद, यींट, कोयी, मिठायी आदि नहीं लिखना चाहिए। यहाँ पढाई, सुनवाई आदि क्रियासूचक नहीं हैं। स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाते समय शब्द के अन्त में यें न जोड़कर, एँ जोड़ना चाहिए। वस्तुयें, कवितायें, बहुयें, समस्यायें आदि की जगह वस्तुएँ, कविताएँ, बहुएँ, समस्याएँ आदि का प्रयोग ठीक है। कीजिए, लीजिए, जाइएगा, खाइएगा, आइए, जाइए, खाइए आदि में ए का प्रयोग होना चाहिए, न कि ये का। भविष्य, संभावना या कामना सूचक क्रियाओं में ए का प्रयोग

करना चाहिए न कि ये का। इसे 'शायद वह आए', 'कहीं वह आ जाए', 'राम दस साल और जिए' आदि वाक्यों को देखकर समझा जा सकता है। हुआ से हुए, हुई, हुईं आदि बनेंगे; हुये, हुवे, हुयी, हुवी आदि नहीं। भूतकाल को बताने वाली क्रियाओं में बहुवचन में अंत में ए, स्त्रीलिंग एकवचन में ई और स्त्रीलिंग बहुवचन में ईं जोड़ते हैं, जब क्रिया के पुलिंग एकवचन के अन्त में आ आता है। अगर पुलिंग एकवचन की क्रिया भूतकाल में या से समाप्त होती हो, तो स्त्रीलिंग एकवचन में यी, पुलिंग बहुवचन में ये और स्त्रीलिंग बहुवतन में यीं का प्रयोग होता है। आया, गया, खाया, गाया, पाया, लाया आदि से आयी, आये, आयीं, गयी, गये, गयीं आदि बनेंगे। ध्यान रहे कि आए संभावना सूचक है और आये भूतकाल का संकेत करता है। 'लिए' भूतकाल की क्रिया की जगह जब विभक्ति चिन्ह आदि के रूप में हो, तब ये नहीं, ए का प्रयोग होगा; जैसे किसलिए, लिए, तुम्हारे लिए, इसलिए आदि। नया जैसे विशेषता बताने वाले शब्द से नयी, नये आदि बनते हैं। होना क्रिया से जुड़े होने पर ए, ई जोड़कर आती हुई लड़की, जाते हुए लड़के आदि बनेंगे, न कि आते हुये या जाती हुयी जैसे शब्द।

भारत में मानक हिन्दी के लिए ये और यी की जगह ए और ई को ही स्वीकार किया गया है। शब्द के अन्त में यी, ये की जगह ई, ए का प्रयोग इस दुविधा से मुक्त कर सकता है। कम से कम क्रिया सूचक शब्दों में तो ए, ई का प्रयोग हिन्दी को मानक बनाने में मदद करता ही है। अव्ययीभाव, अनुयायी, भाषायी जैसे शब्दों में ई का प्रयोग ठीक नहीं माना जाता।

अन्तिम रूप से यी और ये का प्रयोग न हो, तो कोई नुक़सान नहीं दिखता। हाँ, लाई, पाई, खाई जैसे शब्दों के दो दो अर्थ हो जाएँगे। लाना, पाना, खाना क्रिया से लायी, पायी, खायी जैसे शब्द बनते हैं। ई के प्रयोग से खाने वाली लाई, गड्ढे के अर्थ वाला खाई और पूर्ण विराम के अर्थ वाला पाई और क्रियासूचक लाई, खाई और पाई एक जैसे दिखने लगेंगे।

## अध्याय- 58 (क)

### चिन्हों की चर्चा

इस भाग में हिन्दी में इस्तेमाल हो रहे कुछ विराम चिन्हों की चर्चा की जाएगी। हिन्दी में पूर्ण विराम या पाई (।) को छोड़कर बाकी सारे विराम चिन्ह अंग्रेज़ी से लिए गए हैं। दोहों और चौपाइयों में एक '।।' चिन्ह भी सदियों से इस्तेमाल हो रहा है। यह अंग्रेज़ी से नहीं आया। इसका प्रयोग पद्य में होता है, गद्य में नहीं।

हिन्दी के महत्त्वपूर्ण विराम चिन्हों की चर्चा हम अल्पविराम (,) से शुरू करेंगे। पहले हम विराम चिन्हों के महत्त्व पर नज़र डाल लेते हैं। एक वाक्य देखते हैं- "जाओ मत बैठो।" बिना अल्पविराम के इसका अर्थ क्या होगा? 'जाओ, मत बैठो' या 'जाओ मत, बैठो', इन दो वाक्यों में अल्पविराम ने अर्थ बदल दिया। पहले का अर्थ है 'तुम चले जाओ, यहाँ मत बैठो ', जबकि दूसरे का भाव है- 'तुम जाओ नहीं, बल्कि यहाँ बैठो।' विराम चिन्ह वाक्य के भाव को स्पष्ट करते हैं। एक और उदाहरण लेते हैं।

राम गया। (सामान्य अर्थ)

राम गया? (प्रश्न)

राम गया! (आश्चर्य)

तीनों वाक्य विराम चिन्हों के कारण तीन अर्थ देते हैं। विराम चिन्हों के कारण एक ही वाक्य अर्थ भी बदल लेता है, यह हम देख रहे हैं। विराम चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए और इसपर ध्यान भी दिया जाना चाहिए।

अल्पविराम को हिन्दी में भी ज़्यादातर लोग कॉमा ही कहते हैं। यह थोड़ी देर रुकने का संकेत देता है। पढते वक़्त यह मिले, तो थोड़ी देर रुककर अगला शब्द बोलना चाहिए।

जब एक ही प्रकार के तीन या उससे अधिक शब्द, पद या वाक्यांश साथ (समूह या समुच्चय का, सेट का बोध कराते हों) हों और उनके बीच में 'और', 'यदि' जैसे शब्द न हों, तो अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे- राम, मोहन और अरुण स्कूल जा रहे हैं। नहाकर, खाकर, विश्राम कर पढने आना। वह गोरा, स्वस्थ, सुशील और मिलनसार लड़का है। जोर-जोर से रोती, छाती पीटती, तेज़ी से दौड़ती लड़की वहाँ पहुँची।

'और' के पहले अल्पविराम अंग्रेज़ी में तो लगाने का नियम है, लेकिन हिन्दी में नहीं। कुछ प्रकाशन और लेखक हिन्दी में भी 'और' के पहले अल्पविराम लगाते हैं। जैसे राम, श्याम, और हरि जा रहे हैं। हिन्दी में ऐसा प्रयोग नहीं होना चाहिए।

जहाँ शब्दों का दुहराव हो और विशेष बल देना हो, वहाँ भी अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे- नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। जा, जा, तेरे जैसे कितने आकर गए। वह दूर से, बहुत दूर से आ रहा है।

सम्बोधन के बाद अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे- ओ सुनील, जरा इधर तो आना। मोहन, तुम अब जा सकते हो। देवियो और सज्जनो, हम आपसे एक ज़रूरी बात कहना चाहते हैं।

'कि' के स्थान पर भी अल्पविराम होता है, जब किसी की उक्ति (कहे) का जिक्र हो। जैसे- गुरुजी ने कहा, जबतक जिओ, पढते रहो। मोहन ने कहा, "मैं कल आगरा जाऊँगा।"

कि के बाद अल्पविराम का प्रयोग ठीक नहीं है। जैसे- राम ने कहा कि, मैं कल पटना जा रहा हूँ।

यह, वह, अब, तब, तो, सो, वैसा आदि के लुप्त रहने पर अल्पविराम का प्रयोग हो सकता है। जैसे- जब चाहो, आ जाना। (तब का लोप)

जो करेगा, भरेगा। (सो का लोप)

जैसा चाहो, ले लेना। (वैसा का लोप)

जो वस्तु चोरी गई थी, मिल गई है। (वह का लोप)

मैं जो कहता हूँ, कान खोलकर सुनो। (वह का लोप)

समझाना था सो समझा दिया, तुम जानो। (अब का लोप)

बस, हाँ, नहीं, सचमुच, अतः, अच्छा, वस्तुतः, अवश्य, ज़रूर, क्यों नहीं आदि से शुरू होने वाले वाक्य में इनके बाद अल्पविराम होका है। जैसे-

हाँ, तुमने ठीक कहा। नहीं, ऐसा मत करना। बस, हो गया, रहने दीजिए। सचमुच, तुम बड़े नादान हो। अच्छा, तो हम चलते हैं। ज़रूर, मगर जल्दी आना।

जब किसी लम्बे वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र वाक्यांश हों, तो अल्पविराम का प्रयोग ज़रूर होता है। जैसे- चाहती थी, ऐसे बोलूँ, जैसे कोयल प्रथम किरण से बोलती है, जब वह उसमें स्पर्श की सरसराहट भर देती है, ऐसे बोलूँ, जैसे कचनार के फूलों के बीच से वह बुलबुल बोल रही है, जो जितना भी धीरे बोलती है, फूलों के खुले मुँह से उतने ही मुखर बोल झर-झर पड़ते हैं।

वाक्य के मध्य में पर, परन्तु, किंतु, अतः, क्योंकि, तथापि, जिससे, इसी से, इसलिए, लेकिन, तो भी, फिर भी आदि हों, तो अल्पविराम का प्रयोग इनसे पहले होता है। जैसे-

ऐसा कोई काम न करो, जिससे तुम्हारी बदनामी हो। वह नहीं आया, क्योंकि उसकी तबीयत खराब थी। लिपियाँ अलग रह सकती हैं, पर भाषा हिन्दी ही रहे। मैं कल ज़रूर आता, किंतु ज़रूरी काम में लग जाने से न आ सका।

अंग्रेज़ी में दो समान विकल्पों के बीच ऑर (or) होने पर इसके पहले अल्पविराम लगता है, लेकिन हिन्दी में 'अथवा', 'या' आदि के पहले अल्पविराम का प्रयोग नहीं किया जाता। जैसे-

पाटलिपुत्र या कुसुमपुर भारत की राजधानी थी। कल दीपक अथवा शशिकांत यहाँ आएगा।

नाम, पद, पता में हर पद के बाद अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

राहुल सांकृत्यायन, कोहिमा विश्वविद्यालय, कोहिमा।

राज्यपाल, तमिलनाडु।

यदि वाक्य में जो, जिसका, जिसे, जिन्हें, जिनका, जिनमें, जिसमें आदि शब्दों से किसी का सम्बन्ध बताना हो, तो इन शब्दों के पहले अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

दो यात्री, जो रेल दुर्घटना के शिकार हुए थे, अब अच्छे हैं। यह फ़िल्म, जो दिहाड़ी मजदूरों की हालत पर बनी है, बहुत गम्भीर है। वह चतुर्भुज, जिसकी सभी भुजाएँ समान लम्बाई की हों और सभी कोण बराबर माप के हों, वर्ग कहलाता है।

अंग्रेज़ी में व्यक्ति का परिचय देते समय उसक़ नाम के पहले और बाद में अल्पविराम की परंपरा है। जैसे-

Eliot, the great poet and critic, was a scholar.

हिन्दी में "इलीयट, महान् कवि और आलोचक, बड़े विद्वान् थे" नहीं लिखा जाना चाहिए। इसे इस तरह कहना चाहिए- महान् कवि और आलोचक इलियट बड़े विद्वान् थे।

वाक्य के बीच में इस तरह के वाक्यांश हों, तो उनके पहले और बाद में, दोनों तरफ अल्पविराम का प्रयोग होना चाहिए-

चिन्ता, चाहे जिस प्रकार की हो, तनाव पैदा करती है। हिटलर, जर्मनी का तानाशाह, अपने भाग्य को कोसता रहा! सेठ अमरचंद, अपने जमाने का करोड़पति, सोने की खानों का मालिक, इस हालत में!

एक ही व्यक्ति या वस्तु को बताते शब्दों के बाद अल्पविराम होता है, जैसे-

लंका का राजा, क्रूर, अत्याचारी रावण। मैं, अब्दुल रज़ा, ग्रामीण विकास मंत्री, बिहार यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। मैं, सोनम वर्मा शपथपूर्वक कहती हूँ।

"मैं सोनम वर्मा" की जगह "मैं, सोनम वर्मा" होना चाहिए।

छन्दों में यति (ठहराव) पर अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

न्यायालय में हम गए, आज देखने न्याय।

सज़ा मिली निर्दोष को, दोषी को गुड बॉय।।

संख्याओं में अल्पविराम की चर्चा गणित से जुड़े विशेष भाग में की जाएगी।

तारीख वग़ैरह में एक भाव (दिन, तारीख आदि) के पूर्ण होने पर अल्पविराम होता है। जैसे- '16 जून, 2014', '15 अगस्त, 1947, शुक्रवार' आदि।

वाक्य में कई शब्दयुग्मों का प्रयोग हो, तो अंतिम को छोड़कर सभी के बाद अल्पविराम होता है। जैसे- सुख-दुःख, हार-जीत, विरह-मिलन सब जीवन के साथी हैं।

पत्र, प्रार्थनापत्र आदि में श्रीमान्, महोदय, प्रिय भाई आदि सम्बोधन के बाद अल्पविराम होता है।

'और' के लिए भी कई बार अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे- वह हर रविवार को आता है, किताबें देकर चला जाता है।

उदाहरण देते समय 'यथा', 'जैसे' आदि के साथ भी अल्पविराम का प्रयोग होता है।

प्रगति प्रकाशन, मास्को सहित कई प्रकाशन और लेखक इत्यादि या आदि के पहले अल्पविराम का प्रयोग करते हैं, जो ठीक नहीं है। इत्यादि और आदि के पहले अल्पविराम का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

पूर्णविराम का प्रयोग सामान्य वाक्य में, जिससे प्रश्न, आश्चर्य आदि का बोध न हो, अंत में होता है। जैसे- हम जाएँगे। वह खाता है।

वस्तु या व्यक्ति के सजीव वर्णन करना हो, तो वाक्यांशों के अंत में भी पूर्णविराम का प्रयोग करते हैं। जैसे- गेहुँआ रंग। छरहरा बदन। बड़ी-बड़ी आँखें।

पूर्णविराम स्वतंत्र वाक्यों के बाद आता है।

हिन्दी में इसके लिए पाई (।) का प्रयोग होता है, जो अंग्रेज़ी से नहीं लिया गया है। अंग्रेज़ी के फुल स्टॉप का प्रयोग भी हंस (पत्रिका), प्रभात खबर (अखबार), दिल्ली प्रेस (प्रकाशन) आदि के द्वारा किया जा रहा है। कुछ लेखक और विद्वान् यह मानते हैं कि सारे विराम चिन्ह अंग्रेज़ी से लिए गए हैं, तो हिन्दी में पूर्णविराम के लिए अंग्रेज के ही फुल स्टॉप (.) का प्रयोग होना चाहिए। यह कोई वैज्ञानिक तर्क नहीं है। गूगल जैसी सॉफ़्टवेयर कम्पनियाँ भी फुल स्टॉप का ही प्रयोग करवाना चाहती हैं और लिखने या टंकण के सॉफ़्टवेयर में पाई का चिन्ह दे ही नहीं रही हैं। बिन्दी हिन्दी में अनुस्वार, चंद्रबिन्दु, नुक़्ता, संक्षिप्त रूप, ढ़ और ड़ में पहले से ही इस्तेमाल में है। रासायनिक समीकरणों में या गणित में गुणा या जोड़ के लिए बिन्दी (.) का प्रयोग होता है। तारीख में (जैसे 12.12.2012) और दशमलव के रूप में पहले से ही बिन्दी प्रयोग में है। अंतर अक्षर के साथ प्रयोग का है- अनुस्वार आदि में ऊपर; ड़, ढ़ में नीचे; नुक़्ते के रूप में अक्षर के बायीं ओर और संक्षिप्त रूप वग़ैरह में दायीं ओर। कई लोग कम्प्यूटर, मोबाइल, टैबलेट जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पाई (।) की जगह '|' चिन्ह का प्रयोग कर देते हैं। यह पाइप चिन्ह कहलाता है और पाई से मोटा और लम्बा होता है। पाई की जगह इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता। हालांकि इसके लिए दोषी सॉफ़्टवेयर कम्पनियाँ हैं, क्योंकि वे फुल स्टॉप ही रखती हैं। हिन्दी में फुल स्टॉप समस्या पैदा करता है और कई बार अर्थ ही बदल डालता है।

प्रश्नवाचक या प्रश्नसूचक चिन्ह (?) का प्रयोग प्रश्न पूछने, अनिश्चय की स्थिति में, व्यंग्य में, शुद्ध-अशुद्ध या सही-ग़लत के संदेह आदि में करते हैं। जैसे- तुम्हारा नाम क्या है? कहाँ गए थे? (प्रश्न)

आप शायद पटना के रहनेवाले हैं? (अनिश्चय)

जहाँ ऐसा अंधविश्वासी प्रधानमंत्री है, वहाँ विज्ञान कैसे बढ़ सकता है? (व्यंग्य)

हिन्दी की पहली कहानी 'उसने कहा था' (?) कही जाती है। (सही या ग़लत होने की जानकारी स्पष्ट नहीं है, तो प्रश्नचिन्ह लगा दिया गया है।)

क्या आप वहाँ जाएँगे? (यहाँ प्रश्नसूचक चिन्ह है, तो क्या लिखने की ज़रूरत नहीं है। प्रश्नसूचक चिन्ह में क्या का भाव पहले से मौजूद है।)

अच्छा, तुम बताओ। (यहाँ प्रश्न पूछा गया है, लेकिन प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं होगा। प्रश्न आज्ञा के रूप हो, तो प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं लगाते।)

मुझे क्या पता कि वे लोग कहाँ गए हैं। (यहाँ प्रश्न नहीं पूछा जा रहा, इसलिए प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं होगा। बिना भाव जाने कहाँ, कब, कैसे, क्यों आदि को देखते ही प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं लगाना चाहिए। जाने कब उससे बात होगी। न जाने क्यूँ वह बहुत याद आता है। जाने कहाँ गए वे दिन! इन सबमें प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं होगा, क्योंकि वक्ता अपनी बात कह रहा है, प्रश्न नहीं पूछ रहा किसी से।)

अब कुछ ऐसे वाक्य, जिनमें पूर्णविराम, अल्पविराम या प्रश्नसूचक चिन्ह का प्रयोग ठीक से नहीं किया गया है, प्रस्तुत हैं। सही प्रयोग के संकेत दिए जा रहे हैं।

छात्र, हिंसा में लिप्त न हों। डॉ० शशिकांत, पत्नी और पुत्र सहित मारे गए। बच्चे, पति-पत्नी के संबंधों को और भी मधुर बनाते हैं। भारत, जापान से पीछे है। राजेश, महेश को बहुत चाहता है।

इनमें अल्पविराम नहीं होगा। राजेश के बाद अल्पविराम का प्रयोग यह अर्थ देगा कि कोई राजेश और महेश को बहुत चाहता है। अल्पविराम नहीं रहने से अर्थ निकलेगा कि राजेश महेश को बहुत चाहता है।

विश्वम्भर की अवस्था अब 50 के लगभग है शिखा को छोड़ उसके सिर के बाल छोटे-छोटे हैं उसका शरीर दुर्बल है। यहाँ है और हैं के बाद पूर्णविराम होना चाहिए। कई बार लोग बिना पूर्णविराम लिखते े चले जाते हैं।

वह स्कूल नहीं गया। क्योंकि वह बीमार है। यहाँ क्योंकि के पहले पूर्णविराम नहीं होगा। दूसरा वाक्य स्वतंत्र वाक्य है ही नहीं। दोनों को मिलाकर एक स्वतंत्र वाक्य बनता है, इसलिए क्योंकि के पहले अल्पविराम लगाकर लिखना चाहिए। इसी तरह 'जब तक हिन्दी में सारा काम नहीं होता। हम आगे नहीं बढ़ सकते।' में होता के बाद अल्पविराम होना चाहिए। 'कृपया यह बताने का कष्ट करें। कि हम क्या पढ़ें।' में कि के पहले अल्पविराम होगा, पूर्णविराम नहीं। यहाँ क्या पढ़ें के बात प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं होना चाहिए।

'साठ मील चौड़ी दुनिया की सबसे बड़ी झील यही है।' यहाँ चौड़ी के बाद अल्पविराम होना चाहिए, नहीं तो अर्थ हो जाएगा कि दुनिया 60 मील चौड़ी है।

'जाओगे कि, नहीं' में कि के बाद अल्पविराम नहीं होगा।

'न जाने अब क्या होगा?', 'वह नहीं जानता कि तू कौन है?', 'अभी तक पता नहीं चला कि मनोहर कहाँ है?' आदि में प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं होना चाहिए, क्योंकि पूरा वाक्य कथन मात्र है, प्रश्न नहीं।

विराम चिन्ह का प्रयोग अक्षरों के बाद एक स्थान छोड़कर भी किया जाता है और बिना स्थान छोड़े भी। हमारी समझ में बिना एक स्थान छोड़े विराम चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए। 'क्या हुआ ?' , 'तुम जाओ ।', 'कमलेश , गौतम और तरुण आ रहे हैं ।' आदि में विराम चिन्हों के बाद एक स्थान खाली छोड़ा गया है। ऐसा नहीं होना चाहिए। आम तौर पर हिन्दी में अल्पविराम के लिए खाली स्थान नहीं छोड़ा जाता, तो बाकी चिन्हों के लिए क्यों छोड़ा जाए! अंग्रेज़ी में भी फुल स्टॉप के पहले खाली स्थान नहीं छोड़ा जाता।

कम्प्यूटर के आने के बाद तीन डॉट (...) का प्रयोग भी पूर्ण विराम या वाक्य की समाप्ति के लिए लोग करने लगे हैं।

विराम चिन्ह की चर्चा के अगले हिस्से में दूसरे कई विराम चिन्हों पर नज़र डालेंगे।

## अध्याय-58 (ख)

### चिन्हों की चर्चा

विराम चिन्हों की चर्चा का यह अन्तिम भाग है। हम पहले योजक चिन्ह (-) पर विस्तार से बात करेंगे। योजक चिन्ह को हाइफ़न भी कहते हैं और यह ऋण यानी घटाव (माइनस) के चिन्ह जैसा ही है। इसके प्रयोग की आवश्यकता को 'कुशासन' और 'भूतत्व' जैसे शब्दों से समझ सकते हैं। 'कुशासन' के दो अर्थ हैं- पहला 'कुश से बना हुआ आसन' और दूसरा 'बुरा शासन'; अगर हम 'कु' के बाद योजक चिन्ह लगा दें, तो खराब शासन वाला अर्थ स्पष्ट हो जाएगा। इसी तरह 'भूतत्व' के भी दो अर्थ हैं...

इस भाग में विराम चिन्हों की चर्चा आगे बढ़ा रहे हैं।

अंग्रेज़ी का कोलोन (':') हिन्दी में विसर्ग की तरह दिखता है। इसे हिन्दी में उपविराम कहते हैं। इसका प्रयोग पुस्तक, निबंध आदि के शीर्षक में करते हैं। विसर्ग अक्षर से सटा रहता है, लेकिन उपविराम नहीं। उदाहरण के लिए देखें—

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य : एक अध्ययन

गोदान : भारतीय किसानों का महाकाव्य

विस्मयसूचक या विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) का प्रयोग आनन्द, विस्मय (आश्चर्य), उत्साह, घृणा, शोक, करुणा, भय, क्रोध आदि भावों को व्यक्त करने के लिए होता है। जैसे,

वाह! क्या बात है!

शाबाश! तुमने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

रे! अंधा है!

सम्बोधन, सम्मान, शुभकामना प्रकट करने में भी इस चिन्ह का प्रयोग होता है, जैसे —

हे राम!

हे भगवान्!

दीर्घायु हो! खुश रहो!

प्रिय मनोहर, स्नेहाशीर्वाद!

नमस्कार!

प्रणाम!

जहाँ बढ़ता हुआ मनोविकार (विकार का केवल नकारात्मक अर्थ ही नहीं होता) हो, वहाँ दोहरे या तिहरे या विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग होता है यानी इसकी आवृत्ति (दुहराव) बढ़ती है, जैसे —

शोक! महाशोक!!

जय हिन्द! जय भारत!!

इंकलाब ज़िन्दाबाद! साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!!

नहीं! नहीं!! नहीं!!!

इस चिन्ह का प्रश्न पूछने के लिए भी प्रयोग होता है, लेकिन प्रश्न पूछने वाला उत्तर की अपेक्षा नहीं करता। जैसे— राम गया!

'अरे! तुम फिर आ गए!' यहाँ 'अरे' आश्चर्यसूचक शब्द है। इसलिए 'अरे' के बाद और वाक्य के पूर्ण होने के बाद भी आश्चर्यसूचक चिन्ह लगाना चाहिए। यहाँ गए के बाद पूर्णविराम नहीं लगाना चाहिए।

सम्बोधन वाले वाक्य में सम्बोधन के अंत में '!' होना चाहिए, न कि वाक्य के अंत में। जैसे–

"रागिनी! जरा इधर आना।"

हर्ष व्यक्त करना हो, तो हर्षसूचक शब्द और हर्षसूचक वाक्य, दोनों के बाद '!' चिन्ह होना चाहिए। जैसे—'वाह! तुमने तो कमाल कर दिया!' इसी तरह प्रशंसा का भाव हो, तो '!' का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—'धन्य हैं आप!'

दुख और क्षोभ का भाव हो, तो शब्द और वाक्य के अंत में '!' का प्रयोग करना चाहिए। जैसे— 'अरे! वह नहीं रहा' आदेश या डाँटने में भी वाक्य के अंत में '!' का प्रयोग होना चाहिए। जैसे—'यहाँ से निकल जाओ!'

विवरण चिन्ह (:—) में कोलोन और डैश दो संकेत मिले रहते हैं। डैश ऋण या घटाव (-) के चिन्ह से ज़्यादा लम्बाई का होता है! किसी वस्तु का विस्तार से वर्णन करना हो, तो इसका प्रयोग करते हैं जैसे,

इस देश में कई बड़ी बड़ी नदियाँ हैं। जैसे :— गंगा, सिन्धु, कावेरी, गोदावरी आदि।

उद्धरण चिन्ह के दो रूप हैं— इकहरा (' ') और दुहरा (" ")

इकहरे उद्धरण चिन्ह को सिंगल इनवर्टेड कॉमा और दुहरे उद्धरण चिन्ह को डबल इनवर्टेड कॉमा कहा जाता है। हिन्दी पट्टी में भी विराम चिन्हों को अंग्रेज़ी नामों से ही जाना जाता है। कई इलेक्ट्रानिक उपकरणों में ये थोड़े अलग दिखते हैं।

किसी लेखक या पुस्तक के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए दुहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग कथन के दोनों ओर करते हैं। जैसे—

"अस्थिरता नशे की खासियत है।"— प्रेमचंद

लेखक का उपनाम, पुस्तक का नाम, अखबार, निबंध, कविता, कहानी आदि के शीर्षक का हवाला देते समय इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे—

'दिनकर' हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे।

'मज़दूर बिगुल' मज़दूरों और पीड़ितों का अखबार है।

कमला बक़ाया की 'क्यों' कविता हर आदमी को पढ़नी चाहिए।

'पूँजी'कार्ल मार्क्स की लिखी किताब है।

महत्त्वपूर्ण कथन, कहावत, वाक्य आदि को उद्धृत करने के लिए दुहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे—

मार्क्स ने कहा था, "पूँजीवाद अपनी मौत खुद मरेगा।"

"कॉफी एक प्रकार के बीज से तैयार की जाती है।"— बहुतों को मालूम नहीं है।

उद्धरण के भीतर उद्धरण देने में इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे—

दिव्य प्रकाश ने कहा—"जब तुम 'हाँ'कहते हो, तो मेरा मन 'ना'कहता है।"

संक्षिप्तीकरण पर चर्चा के दौरान हम लाघव चिन्ह (० एब्रिविएशन मार्क) पर बात कर चुके हैं।

टीकासूचक या तारक चिन्ह (* एस्टेरिस्क) का प्रयोग तब होता है, जब किसी विषय के बारे में विशेष सूचना या निर्देश देना हो। पृष्ठ पर सबसे नीचे (फुटर या नीचे के हाशिये में) रेखा खींचकर तारक चिन्ह लगाकर उसका विवरण दिया जाता है। तारक चिन्ह अक्षर से थोड़ी ऊँचाई पर रहता है, जैसे कोणों की माप में डिग्री का चिन्ह रहता है। कंप्यूटर क्षेत्र में सामान्य अक्षरों से थोड़ी अधिक ऊँचाई को सुपरस्क्रिप्ट कहते हैं। वर्ग, घन या अन्य घातों के लिए भी यही व्यवस्था अपनाई जाती है। इसी तरह फुटनोट (पादटिप्पणी) के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों या वाक्यों के अंत में संख्याएँ लिखी जाती हैं। जैसे—

इलियड*

त्रुटि चिन्ह (^ या ∧ कैरेट या ओमिशन मार्क) का प्रयोग अक्षर, पद, वाक्य आदि के छूट जाने पर छूटे अंश को ऊपर लिखने के लिए करते हैं। जैसे—

किताबें
राम ने ∧ खरीदीं।

योग चिन्ह (+) का प्रयोग शब्दों आदि को जोड़ने के लिए करते हैं। संधि में यह जमकर प्रयुक्त होता है। जैसे—

वात + अनुकूलित = वातानुकूलित
परि + ईक्षा = परीक्षा

तुल्यतासूचक चिन्ह (=) समानता को सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। उपरोक्त उदाहरण में संधि के बाद इसका प्रयोग किया गया है।

पुनरुक्तिसूचक चिन्ह („ „ मार्क ऑफ रिपीटेशन) का प्रयोग किसी शब्द या वाक्य की पुनरुक्ति (दोहराव) से बचने के लिए होता है। जैसे—

डॉ० हिमेश कौशलेंद्र, मुबारकपुर
„ „ तपस्वी „

लोप चिन्ह (× × ×) का प्रयोग तब होता है, जब वाक्य या अनुच्छेद (पैराग्राफ) का कोई अंश छोड़ देना हो। जैसे—

गुजरात दंगे में हिन्दुओं के नेता मनोहर उपाध्याय ने सतीश को × × × कहकर गाली दी।

## अध्याय- 58 (ग)

### चिन्हों की चर्चा

विराम चिन्हों की चर्चा का यह अन्तिम भाग है। हम पहले योजक चिन्ह (-) पर विस्तार से बात करेंगे। योजक चिन्ह को हाइफ़न भी कहते हैं और यह ऋण यानी घटाव (माइनस) के चिन्ह जैसा ही है। इसके प्रयोग की आवश्यकता को 'कुशासन' और 'भूतत्व' जैसे शब्दों से समझ सकते हैं। 'कुशासन' के दो अर्थ हैं- पहला 'कुश से बना हुआ आसन' और दूसरा 'बुरा शासन'; अगर हम 'कु' के बाद योजक चिन्ह लगा दें, तो खराब शासन वाला अर्थ स्पष्ट हो जाएगा। इसी तरह 'भूतत्व' के भी दो अर्थ हैं- पहला 'भूमि या पृथ्वी से सम्बद्ध तत्त्व' और दूसरा 'भूत होने का भाव'; पहले अर्थ के लिए योजक चिन्ह भू के बाद लगा देने से स्पष्टता आती है। योजक चिन्ह का प्रयोग न करने पर, भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसलिए इसका प्रयोग करना और सीखना ठीक रहेगा। यह चिन्ह भी अंग्रेज़ी से हिन्दी में लिया गया है। संस्कृत में 'पुनः पुनः', 'शनैः शनैः' जैसे प्रयोग हैं, जिनमें योजक चिन्ह नहीं है। हिन्दी में यह स्वीकार्य भी है और प्रचलित भी।

दो विपरीतार्थक शब्दों के बीच योजक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, जैसे- देश-विदेश, जीवन-मरण, जीना-मरना, बेटा-बेटी, हानि-लाभ, पाप-पुण्य, हार-जीत, आयात-निर्यात, गुण-दोष, ऊँच-नीच आदि।

साथ लिखे या बोले जाने वाले शब्दों (सहचर शब्द) में भी योजक चिन्ह का प्रयोग होता है, जैसे- भूल-चूक, दाल-रोटी, चाय-पानी, खान-पान, दही-बड़ा, घर-बार, घर-द्वार, फल-फूल, मान-सम्मान, हाट-बाजार, हाव-भाव, सड़ा-गला, रुपया-पैसा, शोर-गुल, हिसाब-किताब, चमक-दमक, जी-जान, बाल-बच्चा, नौकर-चाकर, हँसी-खुशी, कपड़ा-लत्ता, चाल-चलन, जीव-जंतु, सजा-धजा, नपा-तुला आदि।

जब दो शब्दों में एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो, तब भी योजक चिन्ह या संयोजक का प्रयोग करते हैं, जैसे- पानी-वानी, अनाप-शनाप, झूठ-मूठ, उलटा-पुलटा, खाना-वाना आदि।

दो क्रियाओं के साथ रहने पर संयोजक का प्रयोग होता है, जैसे- उठना-बैठना, मिलना-जुलना, पीना-पिलाना, खाना-पीना आदि।

शब्दों के दुहराव या पुनरुक्ति में भी योजक चिन्ह का प्रयोग करते हैं, जैसे- गाँव-गाँव, घर-घर, बच्चा-बच्चा, गली-गली, कोना-कोना, बूँद-बूँद, कण-कण, रोम-रोम आदि।

दो संख्यावाचक शब्दों के साथ होने पर भी इसका प्रयोग होता है, जैसे- दो-चार, दस-बीस, आठ-दस, सौ-पचास आदि।

'ही', 'का', 'न', 'से' के दोनों ओर शब्द हों, तब इनके दोनों ओर इस चिन्ह का प्रयोग होता है, जैसे- आप-ही-आप, मन-ही-मन, ज्यो-का-त्यों, कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ, कम-से-कम, अधिक-से-अधिक आदि।

'से', 'सा', 'सी', 'ब', 'ए', 'दर' वग़ैरह का प्रयोग करते समय भी इसका प्रयोग करते हैं, जैसे-

बड़े-से घर में

छोटा-सा बच्चा

नन्हीं-सी जान

शहीद-ए-आजम

अंजुमन-ए-इस्लाम

रोज-ब-रोज

साल-ब-साल

साल-दर-साल आदि।

जब दो खासियत बताने वाले शब्द साथ हों, तब भी योजक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, जैसे- थका-माँदा, भूखा-प्यासा, अन्धा-बहरा, लूला-लंगड़ा आदि।

अंत में 'सम्बन्धी' जोड़ने पर भी इसका प्रयोग करते हैं, जैसे- भाषा-सम्बन्धी, विद्यालय-सम्बन्धी, पृथ्वी-सम्बन्धी आदि।

दो शब्दों के बीच का, के, की जैसे सम्बन्धकारक शब्दांश लुप्त हों, तो दोनों के बीच योजक चिन्ह लगाया जाता है, जैसे- शब्द-भेद, मानव-शरीर, लेखन-कला, कृष्ण-लीला, रावण-वध, प्रकाश-स्तंभ आदि।

मन-माना, मन-गढंत, देश-निकाला, काम-चोर, तिल-चट्टा, पद-च्युत, रसोई-घर, जल-मग्न, गंगा-जल, डाक-घर, घुड़-दौड़, चरण-कमल, धर्म-शाला, भव-सागर, चंद्र-मुख, यथा-संभव, त्रि-भुवन, नव-ग्रह, चौ-पाया, सप्त-वर्षीय, उप-कुलपति, प्रधान-मंत्री, राष्ट्र-पति, राज्य-पाल, आकाश-वाणी, लख-पति, करोड़-पति, यथा-शक्ति, भारत-वासी, मातृ-भाषा, मुँह-तोड़ आदि में योजक चिन्ह नहीं होना चाहिए। इसी तरह 'भूतपूर्व सैनिक' या 'हिन्दू विवाह' को 'भूतपूर्व-सैनिक' और 'हिन्दू-विवाह ' नहीं लिखा जाना चाहिए।

रूपी, स्वरूप, पूर्वक, हीन, मय, युक्त, गण, पूर्ण, मात्र, व्यापी आदि शब्द के अंत में हों, तो योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जैसे- श्रद्धा-पूर्वक, मानव-मात्र, परिणाम-स्वरूप, मंगल-मय, बल-हीन, कृष्ण-रूपी, अश्रु-पूर्ण आदि में योजक चिन्ह नहीं होना चाहिए। ना, बे, अन आदि नहीं अर्थ वाले शब्दांशों के बाद योजक चिन्ह नहीं चाहिए, जैसे- ना-खुश, बे-शुमार, अन-गिनत, बे-बुनियाद आदि में योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं होता है।

दशकों पहले कार्य-क्रम, योग-दान, रक्त-दान, आत्म-विश्वास जैसे शब्द हिन्दी में चल रहे थे। इनकी जगह अब बिना योजक चिन्ह वाले शब्द चल रहे हैं।

उपसर्गों के बाद योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं किया जाता, लेकिन जब अर्थ स्पष्ट करना हो, तो किया जा सकता है, जैसे कु-शासन।

अर्धविराम (;) को सेमी कोलन कहा जाता है। इसका प्रयोग तब होता है, जब अधिक ठहराव की ज़रूरत हो या कह सकते हैं कि जहाँ पूर्णविराम से कम और अल्पविराम से कुछ अधिक रुकना हो।

जब एक वाक्य में कई वर्गों (किस्मों, प्रकारों) की बात हो, तब हर वर्ग के बाद अर्धविराम का प्रयोग होता है। मेरे लिए कुछ किताबें, कॉपियाँ और कलमें; साबुन, तेल और कंघी; जूते, चप्पल और मोजे तथा कमीजें, पैंट आदि निकाल लीजिएगा। इस वाक्य में लेखन सामग्री, नहाने-धोने की चीज़ें, पैर में पहनने की चीज़ें और शरीर पर पहनने की चीज़ें; चार वर्ग या प्रकार की वस्तुएँ हैं। इन वर्गों को अलग करने के लिए अर्धविराम का प्रयोग किया गया है।

जब वाक्य में कई खंड (अर्थ दे सकने वाले, लेकिन प्रायः स्वतंत्र व पूर्ण वाक्य नहीं) हों, तब उनके बीच अर्धविराम होता है; जैसे- वह फिर आएगा; सबको मार भगाएगा; किसी की नहीं सुनेगा। यह सोचना पड़ेगा कि पढ़ाई का स्तर कैसा हो; परीक्षाओं में नकल कैसे बंद हो; पुस्तकालयों की व्यवस्था कैसी हो और शिक्षक कैसे छात्रों की मदद करें।

वाक्य में कई अल्पविराम हों, तो भ्रम से बचने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं; जैसे- दिव्यकांत का भाई रविकांत, आना चाहे तो आ जाए; बस शर्त यह है कि मेहनत से अपना काम करे।

वास्तव में इस चिन्ह का प्रयोग अल्पविराम से बहुत अलग नहीं हो पाया है और इसका प्रयोग भी कम ही लोग करते हैं। संख्याओं में इसके बिना भ्रम बना रह सकता है। 123, 24,145 को ही लेते हैं। यहाँ स्पष्ट नहीं है कि एक सौ तेईस के बाद चौबीस है, उसके बाद 145 है यानी तीन संख्याएँ हैं या 123 और 24 हज़ार 145; केवल दो संख्याएँ हैं! यहाँ साफ़ समझा जा सकता है कि संख्याओं को अलग-अलग

दिखाना हो और अल्पविराम से अर्थ स्पष्ट न हो, तो अर्धविराम का प्रयोग ज़रूर करना चाहिए। हम आगे गणित पर चर्चा करते समय संख्याओं में अल्पविराम और अर्धविराम के प्रयोग पर प्रकाश डालेंगे।

कोष्ठक चिन्ह '( )' का प्रयोग किसी वाक्य में किसी पद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए करते हैं। जैसे-

सुमित्रानंदन (लक्ष्मण) के क्रोध से तुम नहीं डरते!

जिजीविषा (जीने की इच्छा) मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराती।

नाटकीय संवादों में हावभाव, मनोभाव, स्थिति आदि सूचित करने तथा रंगमंचीय निर्देश के लिए शब्दों को कोष्ठक में रखा जाता है। जैसे-

गिरिजेश - (हँसते हुए) तुम मुझे मारोगे!

(पर्दा गिरता है।)

(सब चले जाते हैं।)

क्रमसूचक अंकों, संख्याओं, अक्षरों आदि के साथ भी इसका प्रयोग होता है। जैसे-

कोण के विचार से त्रिभुज तीन प्रकार के होते हैं -

(1) न्यूनकोण त्रिभुज, (2) समकोण त्रिभुज और (3) अधिककोण त्रिभुज।

क्रिया के दो भेद हैं-

(क) सकर्मक और (ख) अकर्मक।

कई बार वाक्य में अर्थ स्पष्ट करने के लिए या अतिरिक्त सूचना देने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं। जैसे -

श्रृंखला, अनाधिकार, आवश्यक्ता (ये सब ग़लत हैं)

राजा अनेक्सांद्रिदस (560 ई० पू० के लगभग) ने 29 बार विवाह किए।

हेरोडोटस (प्राचीन यूनानी इतिहासकार)

रेखिका या रेखांकन चिन्ह (अंडरलाइन मार्क) का प्रयोग शब्दों या वाक्यों पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए करते हैं। इसमें शब्दों या वाक्यों के नीचे '______'

प्रकार की रेखा खींच दी जाती है।

अब कुछ ऐसे वाक्य प्रस्तुत हैं, जो विराम चिन्हों के सही प्रयोग को समझने में सहायक होंगे। कोष्ठक में सही प्रयोग के संकेत हैं।

नेताजी ने कहा तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा। (नेताजी ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।")

महात्मा गाँधी ने कहा, सत्य ही ईश्वर है। (महात्मा गाँधी ने कहा, "सत्य ही ईश्वर है।")

न जाने क्या-क्या लाया है? (न जाने क्या-क्या लाया है।)

वह बीस साल का है, उसकी आँखें नीली हैं, उसका रंग गोरा है। (वह बीस साल का है। उसकी आँखें नीली हैं। उसका रंग गोरा है।)

विद्या से विनय, विनय से योग्यता, योग्यता से धन, धन से धर्म तथा धर्म से सुख मिलता है। (यहाँ अल्पविराम की जगह अर्धविराम का प्रयोग ठीक रहेगा। लम्बे वाक्य में विचारों को स्पष्ट करना ठीक रहता है। यहाँ अल्पविराम पिछले पद या शब्द से अलगाव दिखाता है और अर्धविराम कुछ जुड़ाव।)

भारत 15, अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ। (15 अगस्त, 1947 होना चाहिए)

आज तुमलोगों को डॉ० अशफ़ाक एम० ए० पढ़ाएँगे। (डॉ० अशफ़ाक के बाद अल्पविराम होना चाहिए।)

इस वर्ष दीपावली 23 अक्टूबर सोमवार, 2016 को पड़ेगी। (इस वर्ष दीपावली 23 अक्टूबर, 2016, सोमवार को पड़ेगी।)

अमीर गरीब हिन्दू मुसलमान भारत में कौन नहीं है? (अमीर-गरीब, हिन्दू-मुसलमान; भारत में कौन नहीं है!)

मनोकामना, सिंचित और अकाट्य तीन बहुप्रचलित शब्द हैं हिन्दी और लोकभाषाओं में। ये तीनों ही अशुद्ध हैं। सही रूप मनःकामना, सिक्त और अखण्डनीय हैं। जिन्हें विशेष रुचि है, वे नीचे पढ़ें।

1) मनः + कामना = मनःकामना

ओकार के लिए जिन अक्षरों का विधान है, उनमें क नहीं है। वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ण, य, र, ल, व और ह के लिए ओ का नियम है।

2) सिच् मूल धातु है, जिसका अर्थ है सींचना। इसमें क्त प्रत्यय लगाने से बनेगा सिक्त। मुच्, त्यज्, भुज्, पठ्, लिख् आदि से मुक्त, त्यक्त, भुक्त, पठित, लिखित आदि क्त लगाने से ही बनते हैं।

3) काटना हिन्दी की क्रिया है। संस्कृत में काटना नहीं कृन्त्, छिद् आदि धातुएँ हैं। ण्यत् और यत् प्रत्यय संस्कृत में 'के योग्य' का अर्थ देने वाले प्रत्यय हैं। पाठ्य, कार्य, हास्य, मान्य, पूज्य, आर्य (सम्मान योग्य), गम्य, मद्य, गद्य, श्रव्य, नम्य जैसे शब्द इनके कारण बनते हैं। काटना संस्कृत में धातु ही नहीं है, इस कारण काटना से काट्य और अकाट्य नहीं बन सकते।

## बढ़िया संस्कृत नामों के अटपटे अर्थ

| पुरुष नाम | स्त्री नाम |
|---|---|
| 1) अक्षय - बेघर, दरिद्र या संन्यासी।<br>(अ+क्षय=बे+घर)... घर के अर्थ में क्षय का प्रयोग वाल्मीकि रामायण में कई जगह है।<br>2) अत्रि - खानेवाला।<br>3) अनिरुद्ध - गुप्तचर।<br>4) अभिनव - नौसिखिया।<br>5) अमित - असंस्कृत।<br>6) अमृत - गिलोय।<br>7) अम्बरीष - अथरी, जिसमें भड़भूजे दाना भूनते हैं।<br>8) अरुण - गुड़, आक का पौधा।<br>9) अर्जुन - आँख का जाला।<br>10) अश्विनी - जटामांसी।<br>11) असित - शनिग्रह।<br>12) आदर्श - दर्पण।<br>13) आनंद - मदिरा।<br>14) उदय - नफा, ब्याज।<br>15) ऋषभ - बैल, सांड, बकरा, मगरमच्छ या सूअर की पूँछ।<br>16) कपिल - कुत्ता, आग, शिलाजित।<br>17) कश्यप - कछुआ।<br>18) कृष्ण - कौआ, काला अंगूर।<br>19) कौशिक - उल्लू, नेवला, सपेरा।<br>20) चंद्र - कपूर।<br>21) जीवन - पानी, गिलोय, कल दुहे गये दूध का मक्खन।<br>22) तरुण - एरंड, जीरा।<br>23) दीपक - भूख बढ़ानेवाला।<br>24) नंद या नंदन - मेढ़क।<br>25) निर्मल - अभ्रक। | 43) अदिति - ग़रीबी, मौत।<br>44) अमृता - आंवला, गिलोय, हरड़।<br>45) इंदु - कपूर<br>46) इरा - शराब।<br>47) इला - गाय।<br>48) उमा - अलसी।<br>49) कनक - धतूरा।<br>50) कला - सूद, ब्याज।<br>51) कांता - बड़ी इलायची।<br>52) कामिनी - शराब।<br>53) कीर्ति - कीचड़।<br>54) कुसुम - आँख की फूली।<br>55) कृष्णा - काला जीरा, एक प्रकार की जोंक।<br>56) क्षमा - खैर का पेड़।<br>57) गौरी - हल्दी, गोरोचन।<br>58) चित्रा - ककड़ी, चितकबरी गाय।<br>59) जया - भांग, पटसन, हरड़।<br>60) ज्योत्स्ना - सौंफ, सफेद फूल वाली तुरई।<br>61) दीप्ति - कांसा, लाख।<br>62) दुर्गा - नारियल का पेड़, नील का पौधा।<br>63) नलिनी - नारियल की शराब।<br>64) निशा - हल्दी।<br>65) मंदिरा - अस्तबल।<br>66) मल्लिका - मछली की एक किस्म, मदिरा पीने का पात्र।<br>67) माधवी - सौंफ, महुए की शराब। |

| | |
|---|---|
| 26) प्रकाश - कांसा।<br>27) बलभद्र - नर नीलगाय।<br>28) भरत - कांसा, बुनकर।<br>29) भार्गव - कुम्हार।<br>30) मदन - मोम, धतूरा पिस्ता।<br>31) माधव - महुए का पेड़, वैशाख का महीना।<br>32) मोहन - धतूरा<br>33) रंजन - मूंज घास।<br>34) रोहित - रोहू मछली, लोमड़ी, लाल घोड़ा।<br>35) वरुण - जीरा।<br>36) वर्धन - कटाई-छिलाई, क़त्ल।<br>37) वसंत - अतिसार रोग।<br>38) शंकर - भीमसेनी कपूर, मजीठ (एक लता, जिसके फल से लाल रंग तैयार होता है)।<br>39) शिव - फिटकरी, पारा।<br>40) शीतल - तारपीन का तेल।<br>41) शील - अजगर।<br>42) सिद्धार्थ - सफेद सरसों। | 68) रश्मि - लगाम।<br>69) रोहिणी - गलगंड रोग।<br>70) लक्ष्मी - हरड़।<br>71) वैदेही - गोरोचन, हरड़, वणिक् स्त्री।<br>72) शुभा - वंशलोचन।<br>73) शुभ्रा - फिटकरी।<br>74) शोभा - हल्दी, गोरोचन।<br>75) श्यामा - गुग्गल, सावां धान।<br>76) संध्या - करार, हद।<br>77) सीता - खेती, कृषि उपज।<br>78) सुधा - चूना।<br>79) सुंदरी - हल्दी।<br>80) रेणु - धूल। |